श्रीमान हनुमान जी का जीवन चरित्र

ठाकुर सुखराम दास चौहान

लाहोर १९०१

हिन्दी रूपांतरण

सञ्जय मोहन मित्तल

विचार

अतीत की धूल में खोये हुए इस रत्न पर मेरी नजर अनायास ही पडी। विषय विवादित परन्तु बेहद दिलचस्प जान पडा। इसकी प्रति इंटरनेट पर मिल गई परन्तु समस्या ये आई की उर्दू लिपी से मैं बिल्कुल अनभिज्ञ था। इसको पढने की ललक ऐसी जागी की आनन फानन दो सप्ताह मे उर्दू पढनी सीखी और इस रूपांतरण में जुट गया।

अपनी पत्नी श्रीमती अल्पना जी और चँद उदार हृदय मुसलमान हितैषियों का मैं हृदय से आभारी हूँ। इन्होने इस प्रयास में मेरी बहुत सहायता की है। और आज मकर संक्राती के दिन मैं इसको उन सब तक पहुँचाने में सफल हो रहा हूँ जो उर्दू नहीं जानते।

आशा है कि सब अपने पूर्वाग्रहों को छोड खुले दिमाग से इस को पढ लाभ उठाएँगे।

सञ्जय मोहन मित्तल

१४ जनवरी २०१९

श्रीमान

हनुमान जी

का

जीवन चरित्र

बतर्जे नावल

महाराजा रामचन्द्र जी के सिपहसालार की स्वनय उम्री। एक बहादुर मशहूर आलिम (ज्ञानी), शूरवीर और उसके वालदैन (माता पिता) के हालात। वानर लोग जो जंग लंका में शामिल थे, कौन थे? इसके मुताल्लिक (सम्बन्धित) पूरी पूरी तहकीकात। अंगरेजी मौरिखों की शहादते। मुख़्तलिफ़ (अलग अलग) रामायणों के हवाले। नई मालुमात सच्चे और दिलचस्प वाकियात वगैरहा

मुसन्फा

ठाकुर सुखराम दास मुसन्निफ जीवन लाभ

सन १९०१

किशन चन्द्र प्रेस लाहोर मे शाय हुई

जमला हकूक बजर बब रजिसटरी महफूज हैं

रादल ... कीमतद फसजलबद १२ र

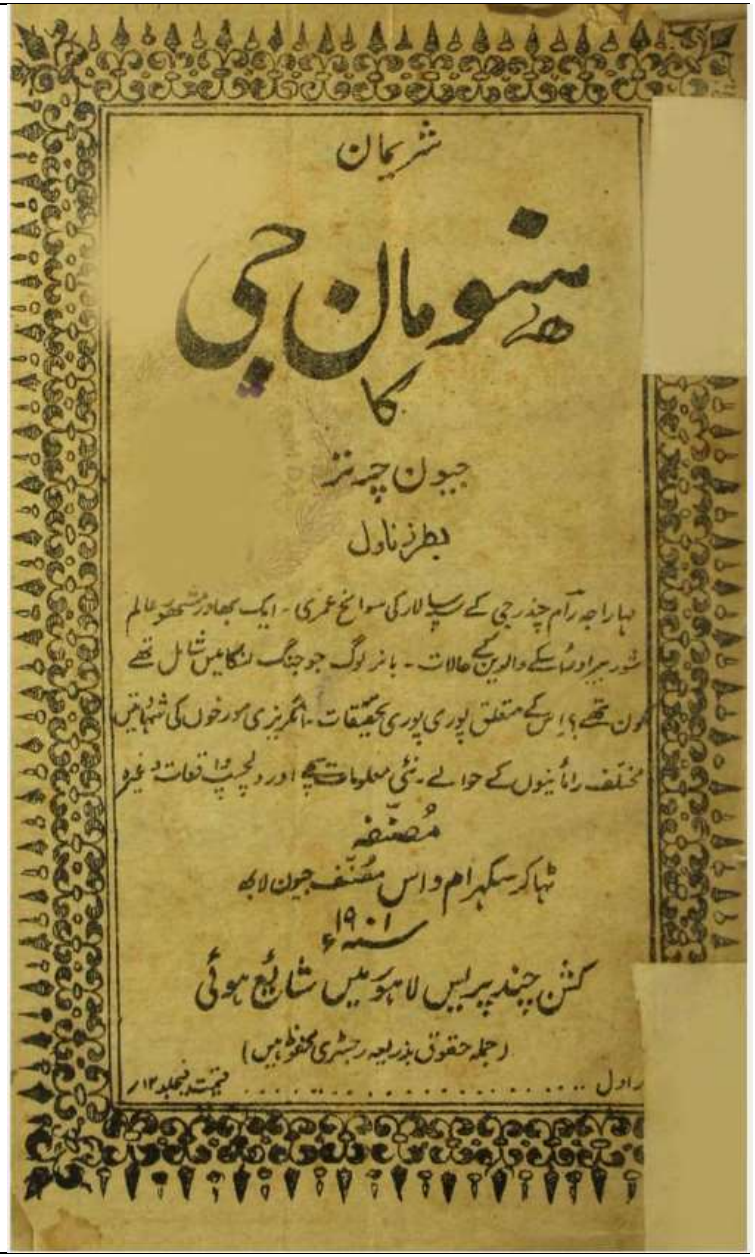
شریمان

ہنومان جی

کا

جیون چرتر

بطرز ناول

مہاراجہ رام چندر جی کے سپہ سالار کی سوانح عمری - ایک بہادر مشہور عالم
شوہر برادر اسکے والدین کے حالات - بانر لوگ جو جنگ لنکا میں شامل تھے
کون تھے؟ اس کے متعلق پوری پوری تحقیقات - انگریزی مورخوں کی شہادتیں
مختلف رامائنوں کے حوالے - نئی معلومات سچے اور دلچسپ واقعات وغیرہ

مصنفہ

ٹھاکر سکھرام داس مصنف جیون لابھ

سنہ ۱۹۰۱ء

کشن چند پریس لاہور میں شائع ہوئی

(جملہ حقوق بذریعہ رجسٹری محفوظ ہیں)

رادل ..... قیمت فی جلد ۱۲ر

जनाब ठाकुर अक्षर चन्द साहिब मुसन्निफ (लेखक)

रामायण बतर्जे नावल की राय

हमने जीवन चरित्र हनुमान का अच्छी तरह मुतालिया ( ) किया। वो तमाम खूबियाँ जो एक अख़्लाकी (नैतिक) नावल मे होनी चाहिये सब इसमे मौजूद हैं। मुसन्निफ की मेहनत जो इस किताब के सच्चे हालात की तफतीश (जाँच पडताल) मे खर्च हुई कबिले कद ( ) है। इबारत (गद्य) ज्यादा है मगर सच्चे और दिलचस्प मजमून (विषय वस्तु) गो काईनात (सृष्टि) की तरह ऐसे झलक रहे हैं जिस तरह अबर (बादल) के तुकडो से आफताब (सूरज)। जहां ताब ( ) की तेज और रोशन किरणे। किताब का ज्यादातर दिलचस्प हिस्सा वो हिस्सा है जिसमे अञ्जना देवी की मुसीबत का बयान है। जिस मुस्तकिल (दृढता) मे दाजी ( ) और आली (सर्वोच्च) हौसलगी से इसने अपनी सख्ती के दिन काटे, एक हैरत नाज नजारा पेश करते हैं। बाकी ऐसी पतिव्रता स्त्रियों का फख्रा(गौरव) अगर किसी मुल्क को हासिल है तो सिर्फ हिन्दुस्तान को। इसके अलावा वानर लफ्ज की पूरी पूरी तशरीह(व्याख्या) करके एक ऐसी आलमगीर(महत्वपूर्ण) गलती को रफह किया है जिसकी तरफ आज तक किसी मुस्सन्निफ की तवज्जा ही नहीं हुई थी। ये किताब बहैसियत अपने कीमती मजमूनो के एक आले दर्जे की किताब है। लिहाजा हम सिफारिश करते हैं कि अहले हिंद के हर एक घर मे इसकी एक एक जिल्द जरूर मौजूद रहनी चाहिये।

ठाकुर इच्छर चन्द शाहपुरिया

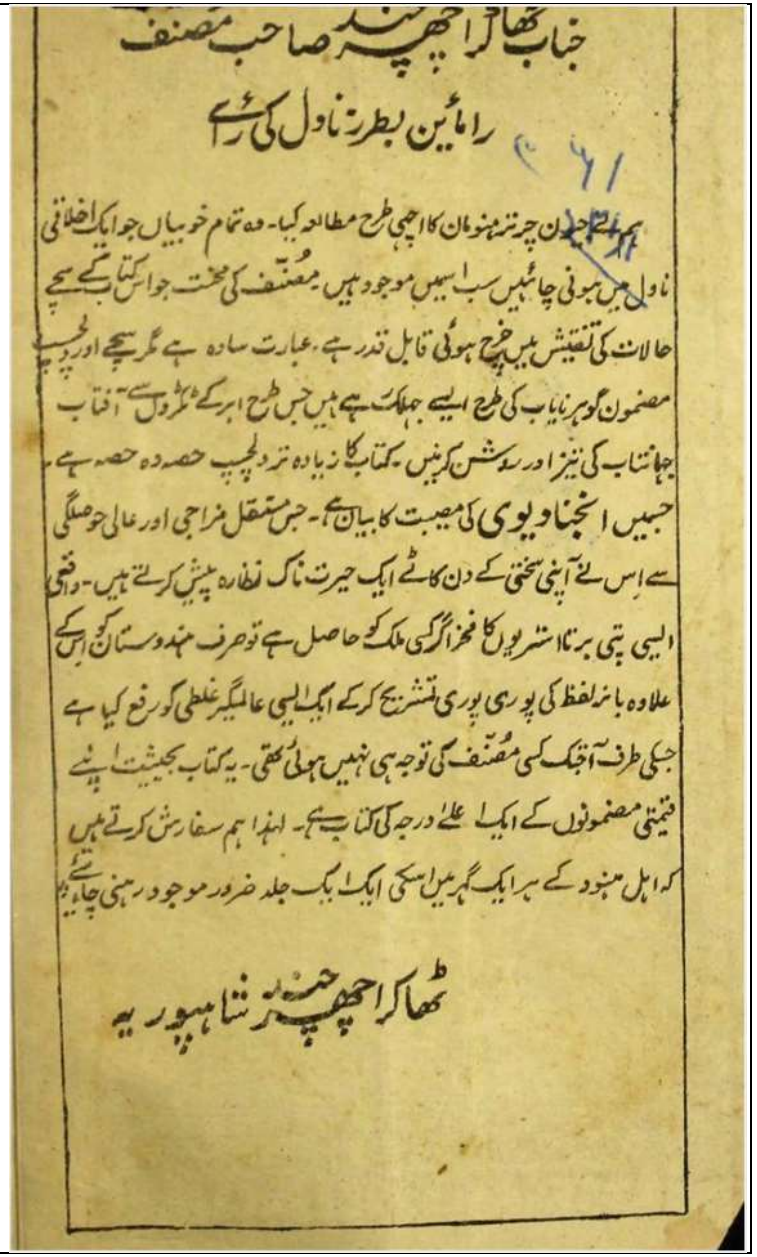

جناب ٹھاکر اچھر چند صاحب مصنف

رامائین بطرز ناول کی رائے

ہم نے جیون چرتر ہنومان کا اچھی طرح مطالعہ کیا۔ وہ تمام خوبیاں جو ایک اخلاقی ناول میں ہونی چاہئیں سب اسمیں موجود ہیں۔ مصنف کی محنت جو اس کتاب کے سچے حالات کی تفتیش میں خرچ ہوئی قابل قدر ہے۔ عبارت سادہ ہے مگر سچے اور دلچسپ مضمون گوہر نایاب کی طرح ایسے جھلک رہے ہیں جس طرح ابر کے ٹکڑوں سے آفتاب جہانتاب کی تیز اور روشن کرنیں۔ کتاب کا زیادہ تر دلچسپ حصہ وہ حصہ ہے جسمیں انجنا دیوی کی مصیبت کا بیان ہے۔ جس مستقل مزاجی اور عالی حوصلگی سے اس نے اپنی سختی کے دن کاٹے ایک حیرت ناک نظارہ پیش کرتے ہیں۔ واقعی ایسی پتی برتا استریوں کا فخر اگر کسی ملک کو حاصل ہے تو صرف ہندوستان کو۔ اس کے علاوہ بانر لفظ کی پوری پوری تشریح کر کے ایک ایسی عالمگیر غلطی کو رفع کیا ہے جسکی طرف آجتک کسی مصنف کی توجہ ہی نہیں ہوئی تھی۔ یہ کتاب بحیثیت اپنے قیمتی مضمونوں کے ایک اعلےٰ درجہ کی کتاب ہے۔ لہذا ہم سفارش کرتے ہیں کہ اہل ہنود کے ہر ایک گھر میں اسکی ایک ایک جلد ضرور موجود رہنی چاہئے۔

ٹھاکر اچھر چند شاہپوریہ

जीवन परवर हनुमान शबीह (झलक) मरवजा आवाम श्रीमान हनुमान जी	

तस्वीर मतद शबीह (झलक) असली श्रीमान हनुमान जी	

१

दिबाचा (भूमिका)

रामायण जैसे ग्रन्थ को पढ कर कौन सा आदमी होगा जिसकी तबियत खुश ना होती हो और महाराजा रामचन्द्र की स्तुति किये बगैर चुप रह सके। वैदिक धर्म के सच्चे उत्साही यही महाराजा हुये हैं जिन्होने तमाम दुनिया की नैमतों को छोडा और पिता की आज्ञा को सुन चौदह बरस का वनवास इख्तियार किया और बाप का कौल पूरा करके दुनिया में शोहरत हान्सिल की। लेकिन जब इस बहादुर महाराजा के सिपहसालार के हालात पढते हैं तो एक हैरत अंगेज नजारा दिखाई देता है। कहाँ ऐसा बहादुर ज्ञानवान महाराजा रामचन्द्र और कहाँ उनका सिपहसालार हनुमान जो बन्दर की जात से मौसूफ ( ) किया गया है।

प्यारे सज्जनो! क्या ये ताज्जुब देने वाला नजारा नहीं है? क्या हनुमान जी के काम जो उन्होने अपनी जिन्दगी में किये जाहिर करते हैं कि वो पशु थे? हर्गिज नहीं! उनसे तो साफ मालूम होता है की वो एक शूरवीर विद्वान और दाना आदमी थे। न कि बन्दर। तो फिर ये कलंक उनको क्यों लगाया जाता है? क्या उनके वालदैन के हालात जाहिर करते हैं कि वो बन्दर थे? नहीं! मुत्तलिक ( ) नहीं! आओ पहले इनके जन्म का हाल, जिन्दगी के वाक्यात और महाराजा रामचन्द्र जी की राय से दरयाफ्त करें की इनसे क्या साबित होता है।

अव्वल (पहला)। अगरचे वाल्मीकि और तुलसी रामायण कई एक बातों में मुत्तफिक (सहमत) नहीं। लेकिन दोनों में हनुमान जी के बाप का नाम पवन और माँ का नाम अञ्जना बयान किया है। अञ्जना का अप्सरा होकर केसरी वानर की स्त्री होना

*देखो तुलसी का कृत रामायण सफा २५० किष्किन्धा काण्ड

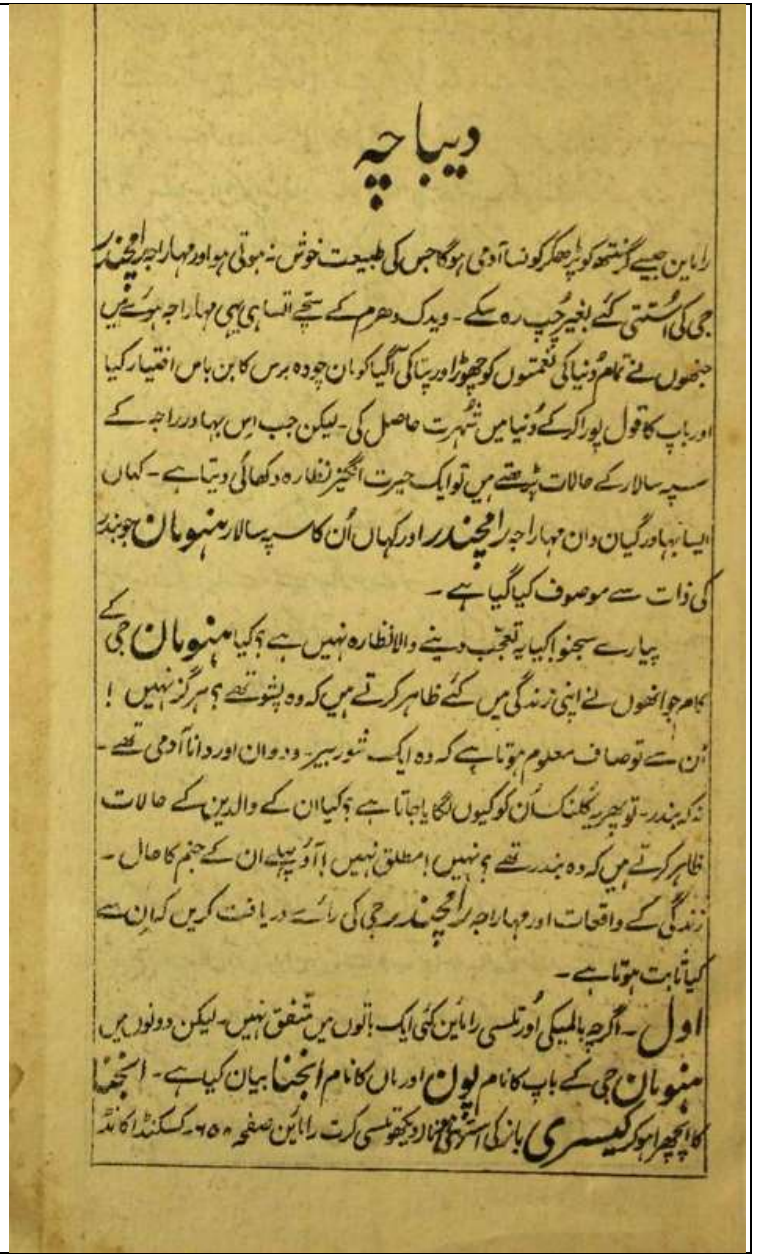

دیباچہ

رامائن جیسے گرنتھ کو پڑھکر کونسا آدمی ہوگا جس کی طبیعت خوش نہ ہوتی ہو اور مہاراجہ رامچندر
جی کی اُستتی کئے بغیر چپ رہ سکے۔ ویدک دھرم کے سچے اتساہی یہی مہاراجہ ہوئے ہیں
جنھوں نے تمام دُنیا کی نعمتوں کو چھوڑا اور پتا کی آگیا کو مان چودہ برس کا بن باس اختیار کیا
اور باپ کا قول پورا کرکے دُنیا میں شُہرت حاصل کی۔ لیکن جب اس بہادر راجہ کے
سپہ سالار کے حالات پڑھتے ہیں تو ایک حیرت انگیز نظارہ دکھائی دیتا ہے۔ کہاں
ایسا بہادر گیان وان مہاراجہ رامچندر اور کہاں اُن کا سپہ سالار ہنومان جو بندر
کی ذات سے موصوف کیا گیا ہے۔

پیارے سجنو! کیا یہ تعجب دینے والا نظارہ نہیں ہے؟ کیا ہنومان جی کے
تمام جو انھوں نے اپنی زندگی میں کئے ظاہر کرتے ہیں کہ وہ پشو تھے؟ ہرگز نہیں!
اُن سے تو صاف معلوم ہوتا ہے کہ وہ ایک شور بیر۔ ودوان اور دانا آدمی تھے۔
نہ کہ بندر۔ تو پھر یہ کلنک اُن کو کیوں لگایا جاتا ہے؟ کیا ان کے والدین کے حالات
ظاہر کرتے ہیں کہ وہ بندر تھے؟ نہیں! مطلق نہیں! آؤ پہلے ان کے جنم کا حال۔
زندگی کے واقعات اور مہاراجہ رامچندر جی کی رائے دریافت کریں کہ ان سے
کیا ثابت ہوتا ہے۔

اول۔ اگرچہ بالمیکی اور تلسی رامائن کئی ایک باتوں میں متفق نہیں۔ لیکن دونوں میں
ہنومان جی کے باپ کا نام پون اور ماں کا نام انجنا بیان کیا ہے۔ انجنا
کا اپچھرا ہو کر کیسری بانر کی استری ہونا دیکھو تلسی کرت رامائن صفحہ ۶۵۰ کسکندا کانڈ

२

मतर्जुमा ज्वाला प्रसाद मिश्र छाप बम्बई

साबित करता है कि केसरी मनुष्य था। क्योंकि ये कुदरती बात यह है कि जिस नस्ल से कोई होता है उसी को पसन्द करता है ना कि गैर को। लफ्ज अप्सरा से जाहिर होता है कि वो एक आली दर्जे की हसीन औरत थी तो किस तरह यकीन हो सकता है कि उसने हैवान को अपना खाविंद बनाया हो। इसी जगह कश्यप ऋषि ने साफ तौर पर वाजया ( ) कर दिया है कि अञ्जना और केसरी इन्सान थे। क्योंकि उसमे लिखा है कि केसरी इस वन का राजा था और जब उसने हाथी को मार कर जमीन पर गिरा दिया तो कश्यप ऋषि ने उसको ब्राह्मण पालक कहा है, और यह लफ्ज सिर्फ इन्सान पर ही आयद होता है न कि हैवान पर क्योंकि उसको तो अपनी ही सहायता करनी मुश्किल है। आदमी का पालन किस तरह कर सकता है। आगे चलकर मुसन्निफ ने बिल्कुल आईना कर दिया है। वो कहता है कि हनुमान के जन्म लेने से दोनो स्त्री पुरुष सुख मान कर उनको बहार करने लगे। ये लफ्ज स्त्री पुरुष का हमारे रहे सहे शकूक को भी इस तरह साफ कर देता है, जैसे सुहागा सोने को।

दोएम (दूसरा)। वाल्मीकि रामायण मे लिखा है (देखो वाल्मीकि रामायण किष्किन्धा काण्ड सफा ७५ सुर्ग ६२ मुतरज्जम पर श्री दयाल) कि जब अञ्जना ऋषि की बद्दुआ से बन्दरी हो गई तो साथ ही ऋषि ने उसको अप्सरा रूपी स्वरूप धारण करने का वर भी दे दिया था। इससे वाजिया होता है कि अञ्जना ने एक घडी भी बन्दरी का स्वरूप न रहने दिया होगा और उसी वर की ताकत से फौरन स्त्री बन गई होगी क्योंकी कोई इन्सान खुशी से हैवान का जिस्म पसन्द नहीं कर सकता। आगे चलकर लिखा है कि अञ्जना हार शृंगार कर सुन्दर वस्त्र पहने पर्वत की चोटी पर बैठी थी और यहाँ उसका पवन देवता से मिलाप हुआ अब और गौर का मुकाम है कि हैवान को भी हार शृंगार या वस्त्रों का शौक होता है या नहीं? अब जवाब होगा हर्गिज नहीं! भला एक बन्दर की स्त्री याने बन्दरी को सुर्मा कंघी दातुन वगैहरा सोलह शृंगार की क्या तमीज हो सकती है।

सोइम (तीसरा)। अगर ये कहा जावे कि हनुमान जी बमुचे हर रामायण पवन देवता के वीर्य

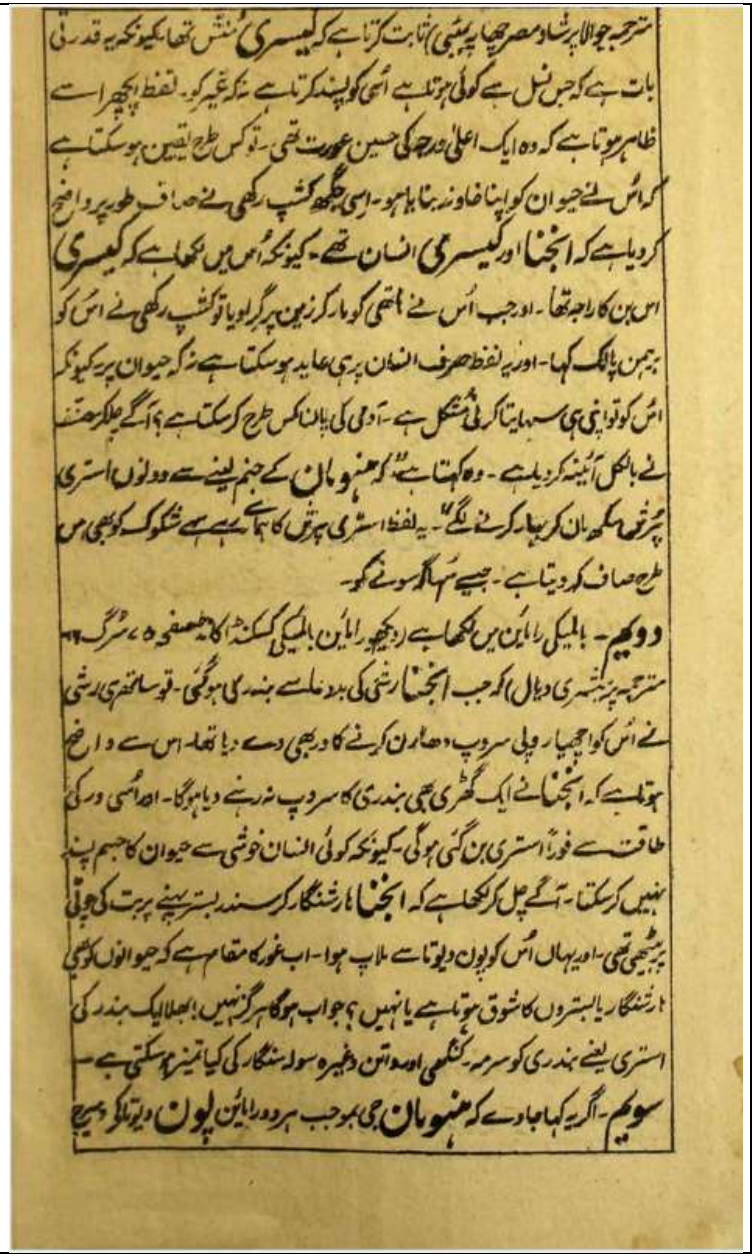
مترجمہ جوالا پرشاد مصر چھاپہ بمبئی) ثابت کرتا ہے کہ کیسری منش تھا کیونکہ یہ قدرتی
بات ہے کہ جس نسل سے کوئی ہوتا ہے اُسی کو پسند کرتا ہے نہ کہ غیر کو۔ لفظ اپچھرا سے
ظاہر ہوتا ہے کہ وہ ایک اعلیٰ درجہ کی حسین عورت تھی۔ تو کس طرح یقین ہو سکتا ہے
کہ اُس نے حیوان کو اپنا خاوند بنایا ہو۔ اسی لیے کشپ رکھی نے صاف طور پر واضح
کر دیا ہے کہ انجنا اور کیسری انسان تھے۔ کیونکہ اُس میں لکھا ہے کہ کیسری
اس بن کا راجہ تھا۔ اور جب اُس نے ہاتھی کو مار کر زمین پر گرا دیا تو کشپ رکھی نے اُس کو
برہمن پالک کہا۔ اور یہ لفظ صرف انسان پر ہی عاید ہو سکتا ہے نہ کہ حیوان پر کیونکہ
اُس کو تو اپنی ہی سہایتا کرنی مشکل ہے۔ آدمی کی پالن کس طرح کر سکتا ہے؟ آگے چلکر مصنف
نے بالکل آئینہ کر دیا ہے۔ وہ کہتا ہے "کہ ہنومان کے جنم لینے سے دونوں استری
پرش سکھ مان کر بہار کرنے لگے"۔ یہ لفظ استری پرش کا ہمارے رہے سہے شکوک کو بھی اس
طرح صاف کر دیتا ہے۔ جیسے سہاگہ سونے کو۔

دویم۔ بالمیکی رامائن میں لکھا ہے (دیکھو رامائن بالمیکی کسکندھا کانڈ صفحہ ۷۵ سرگ ۶۲
مترجمہ پرنشری دیال) کہ جب انجنا رشی کی بددعا سے بندری ہو گئی۔ تو ساتھ ہی رشی
نے اُس کو اچھیا روپی سروپ دھارن کرنے کا ور بھی دے دیا تھا۔ اس سے واضح
ہوتا ہے کہ انجنا نے ایک گھڑی بھی بندری کا سروپ نہ رہنے دیا ہوگا۔ اور اُسی ور کی
طاقت سے فوراً استری بن گئی ہوگی۔ کیونکہ کوئی انسان خوشی سے حیوان کا جسم پسند
نہیں کر سکتا۔ آگے چل کر لکھا ہے کہ انجنا ہار شنگار کر سندر بستر پہنے پربت کی چوٹی
پر بیٹھی تھی۔ اور یہاں اُس کو پون دیوتا سے ملاپ ہوا۔ اب غور کا مقام ہے کہ حیوانوں کو بھی
ہار شنگار یا بستروں کا شوق ہوتا ہے یا نہیں؟ جواب ہوگا ہرگز نہیں! بھلا ایک بندر کی
استری یعنے بندری کو سرمہ۔ کنگھی اور دانتن وغیرہ سولہ سنگار کی کیا تمیز ہو سکتی ہے۔

سویم۔ اگر یہ کہا جاوے کہ ہنومان جی بموجب ہر دو رامائن پون دیوتا کے بیج

३

से उत्पन्न हुए हैं केसरी के वीर्य से नहीं तो हम बडी खुशी से मान लेंगे क्योंकि वामुचे ( ) पुराणों के पवन को देवता माना गया है तो किस तरह हो सकता है इन के वीर्य से हैवान पैदा हो? इस तरह शिव पुराण मे हनुमान जी की पैदाइश शिव जी के वीर्य के करार दी गई है जिसको मानकर उनका पशु होना कभी भी सदा नहीं हो सकता। चहारम (चौथा)। जब सुग्रीव और रामचन्द्र जी की मित्रता हुई उस वक्त हनुमान ने आग जलाई जिसके गिर्द फेरा कर रामचन्द्र जी और सुग्रीव ने ओहदा पैमान () किया (देखो वाल्मीकि रामायण किष्किन्धा काण्ड ४ सुर्ग) अब गौर तलब ये बात है कि आया बन्दर आग जला सकता है या नहीं? जो अब जरूर ये होगा कि बन्दर आग नहीं जला सकता। पस इससे साबित होता है कि हनुमान मनुष्य था न कि बन्दर। पंचम। महाराजा रामचन्द्र जी ने साफ तौर पर बतलाया है कि हनुमान जी ऋग्वेद यजुर्वेद और सामवेद का जानने वाला था। और व्याकरण भी उमदा जानता था। (देखो उर्दू वाल्मीकि रामायण सफा ५ किष्किन्धा काण्ड मुअतरज्जम पर्वतदयाल) ये भी बयान किया है कि हनुमान जी रावण और बाली से ज्यादा बलवान और वर्न गोवैस गराज और विष्णु से ज्यादा बहादुर थे। जो अलामात पण्डित और बुद्धिमान की शास्त्रों में दर्ज की है, रामचन्द्र जी ने सब हनुमान जी में बयान की हैं। बडे अफसोस की बात है, कि महाराजा रामचन्द्र जी के कौल पर इतबार न करके हनुमान जी को बन्दर करार दिया जावे। तमाम बातों को छोडकर सिर्फ इसी एक बात को लिया जावे तो आप मान लेंगे कि हैवान में और सब बाते हो सके तो हो सके लेकिन वेद शास्त्रों का पढना बिल्कुल नामुमकिन है। और कोई भी इस बात को तसलीम न करेगा कि हैवान भी इस विद्या को हासिल कर सकता है। इसलिए यहाँ साफ मालुम होता है हनुमान जी मनुष्य थे न कि बन्दर। चूँकि हमारे बहादुर जरनैल हनुमान जी का ताल्लुक सुग्रीव से भी है और उनको भी सतत बन्दर करार दिया गया है। लिहाजा मुनासिब मालूम हुआ कि इनके

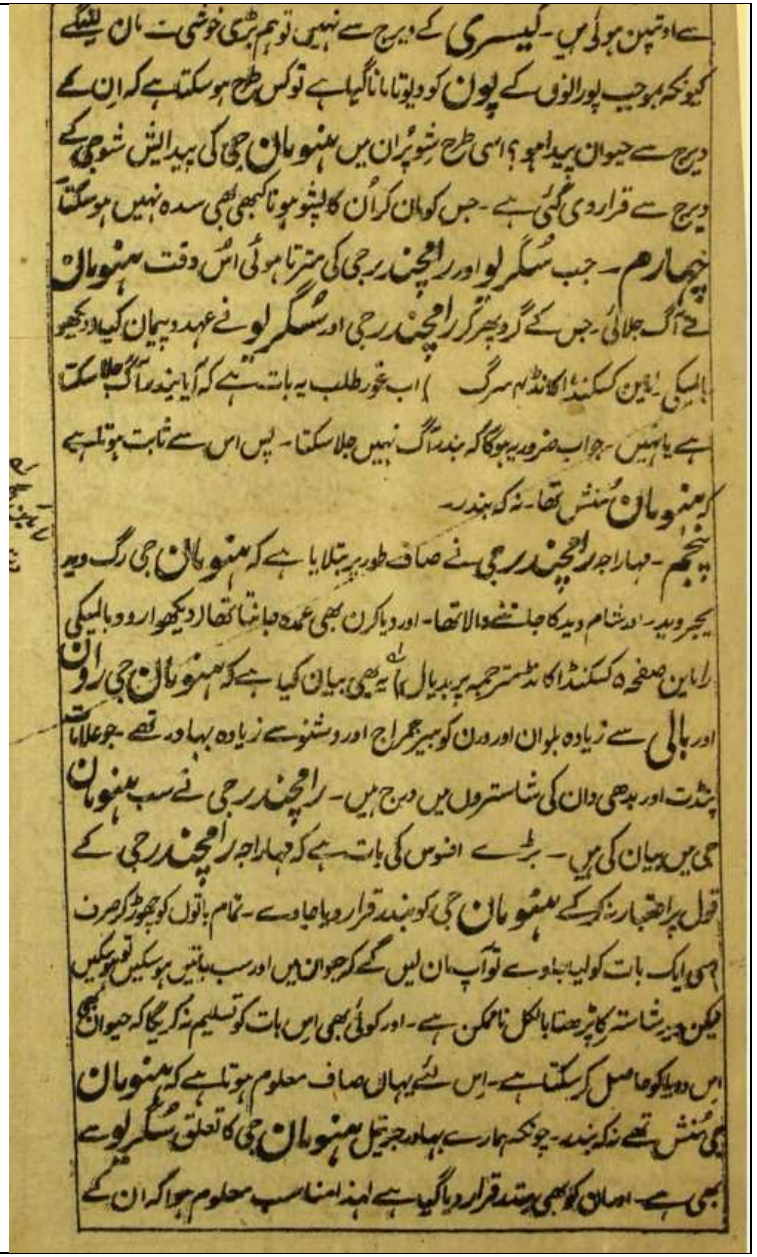
سے اوتپن ہوئی ہیں۔ کیسری کے ویرج سے نہیں تو ہم بڑی خوشی سے مان لینگے
کیونکہ بموجب پورانوں کے پون کو دیوتا مانا گیا ہے تو کس طرح ہو سکتا ہے کہ ان کے
ویرج سے حیوان پیدا ہو؟ اسی طرح شیو پران میں ہنومان جی کی پیدائش شو جی کے
ویرج سے قرار دی گئی ہے۔ جس کو مان کر ان کا پشو ہونا کبھی بھی سدھ نہیں ہو سکتا
چہارم۔ جب سگریو اور رامچندر جی کی متر تا ہوئی اس وقت ہنومان
نے آگ جلائی۔ جس کے گرد پھر کر رامچندر جی اور سگریو نے عہد و پیمان کیا دیکھو
والمیکی رامائن کسکندا کانڈ ۴ سرگ) اب غور طلب یہ بات ہے کہ آیا بندر آگ جلا سکتا
ہے یا نہیں۔ جواب ضرور یہ ہوگا کہ بندر آگ نہیں جلا سکتا۔ پس اس سے ثابت ہوتا ہے
کہ ہنومان منش تھا۔ نہ کہ بندر۔
پنجم۔ مہاراجہ رامچندر جی نے صاف طور پر بتلایا ہے کہ ہنومان جی رگ وید
یجر وید۔ اور شام وید کا جاننے والا تھا۔ اور ویاکرن بھی عمدہ جانتا تھا دیکھو اردو والمیکی
رامائن صفحہ ۵ کسکندا کانڈ مترجمہ پربدیال) یہ بھی بیان کیا ہے کہ ہنومان جی راون
اور بالی سے زیادہ بلوان اور ورن کوبیر جمراج اور وشنو سے زیادہ بہادر تھے۔ جو علامات
پنڈت اور بدھی وان کی شاستروں میں درج ہیں۔ رامچندر جی نے سب ہنومان
جی میں بیان کی ہیں۔ بڑے افسوس کی بات ہے کہ مہاراجہ رامچندر جی کے
قول پر اعتبار نہ کرکے ہنومان جی کو بندر قرار دیا جاوے۔ تمام باتوں کو چھوڑ کر صرف
ہمی ایک بات کو لیا جاوے تو آپ مان لیں گے کہ حیوان میں اور سب باتیں ہو سکیں تو ہو سکیں
لیکن وید شاستر کا پڑھنا بالکل ناممکن ہے۔ اور کوئی بھی اس بات کو تسلیم نہ کریگا کہ حیوان بھی
اس وید کو حاصل کر سکتا ہے۔ اس لئے یہاں صاف معلوم ہوتا ہے کہ ہنومان
جی منش تھے نہ کہ بندر۔ چونکہ ہمارے بہادر جرنیل ہنومان جی کا تعلق سگریو سے
بھی ہے۔ اور ان کو بھی بندر قرار دیا گیا ہے لہذا مناسب معلوم ہوا کہ ان کے

४

हालात की भी तफतीश की जावे कि वो भी हैवान थे या इन्सान? और इस शक को दूर करने के लिये रामायण से बढकर और कोई मोतवर किताब नहीं हो सकती। अगरचे हनुमान जी की पैदाइश की तरह बाली और सुग्रीव की पैदाइश का हाल भी निराला दिखाई देता है जो कानून कुदरत के बरखिलाफ है। और मालूम नहीं मुसन्निफ ने किस तरंग मे आनकर ऐसा बयान किया है। खैर कुछ भी क्यों न हो लेकिन दोनो देवता के वीर्य से पैदा हुए हैं (देखो वल्मीकि रामायण उत्तर काण्ड सफा ३९) इसलिए कोई वजह नहीं कि उनको बन्दर माना जावे। और इस बात की तक़्वियत (तसल्ली) के लिये जैल के नोटों को गौर से मुलाहिजा किजिए।

१ जब रावण बाली से युद्ध करने आया तो उस वक्त बाली सन्ध्या कर रहा था (देखो वाल्मीकि रामायण उत्तर काण्ड सफा ३५) क्या एक हैवान को सन्ध्या वगैहरा के अदा करने का ज्ञान हो सकता है? कभी नहीं।

(देखो वाल्मीकि रामायण किष्किन्धा काण्ड सफा २४ सुर्ग १७)

२ जब रामचन्द्र जी ने बाली को तीर मारा तो उसने अपने मारे जाने की वजह दरयाफ्त की। जिस पर उन्होने जवाब दिया की तुमने सुग्रीव की स्त्री को ग्रहण किया है, जो धर्मशास्त्र के बरखिलाफ है। इसलिये तुम्हारे मारने का कोई गुनाह नहीं (देखो वाल्मीकि रामायण किष्किन्धा काण्ड सफा ३५) नाजरीन हैवानों को ये तमीज कहाँ? उसमे औरत खाविंद का कोई वाबस्ता (आबद्ध) रिश्ता नहीं होता। धर्म शास्त्रो का डंडा इन्सानो के लिए मुकर्रर किया गया है न कि हैवानों के लिए। जब ये बात है तो महाराजा रामचन्द्र जी जैसे विद्वान बाली को कभी भी कत्ल न करते। अगर रामचन्द्र जी ने हैवान समझकर ये सलूक किया था तो आज दुनिया के तमाम हैवान कत्ल के सजावार हैं जो माँ बहन या लडकी वगैरा को ग्रहण कर लेते हैं।

३ जब बाली रामचन्द्र जी के हाथ से मारा गया अंगद ने शास्त्र मर्यादा से मृतक संस्कार कराया (देखो वाल्मीकि रामायण किष्किन्धा काण्ड सफा ३७) नाजरीन क्या आप अब भी बाली और सुग्रीव को बन्दर समझते हैं? अगर यही ख्याल है तो आजकल किसी बन्दर या हैवान की क्रिया कर्म वगैहरा

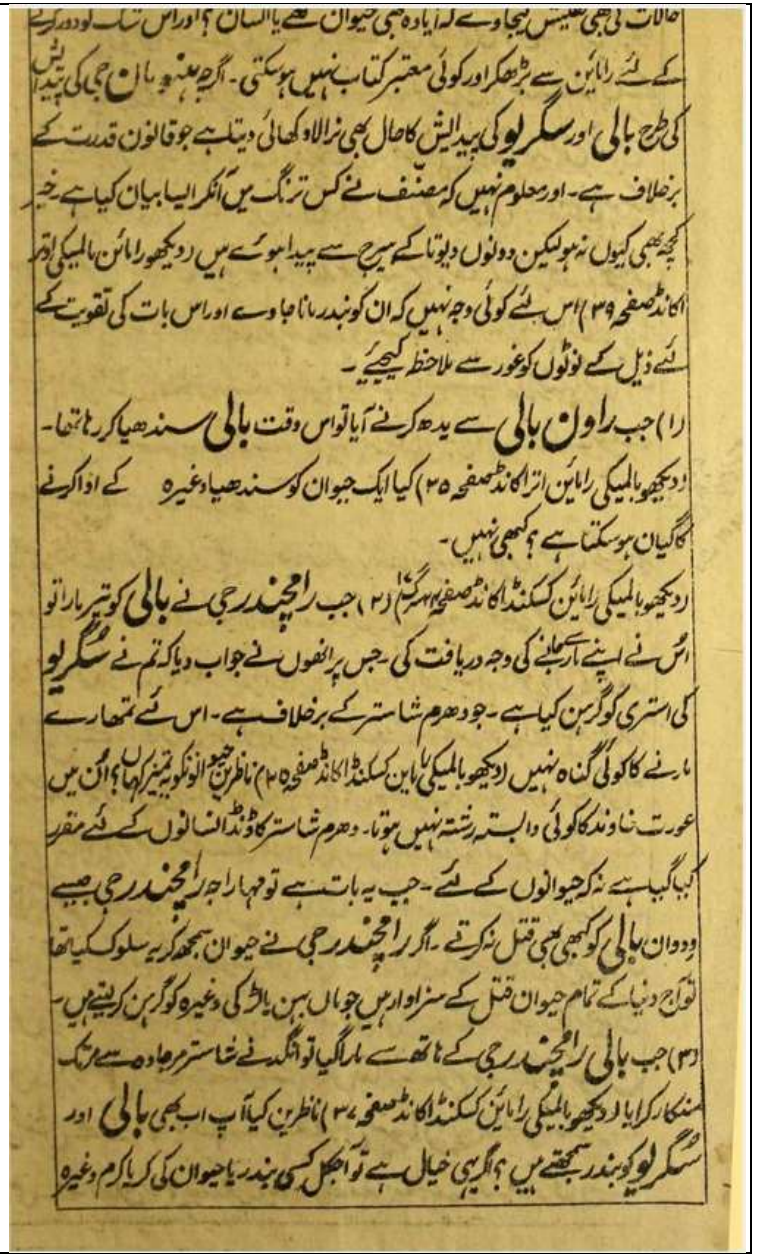
حالات کی بھی تفتیش کیجاوے کہ آیا وہ بھی حیوان تھے یا انسان؟ اور اس شک کو دور کرنے
کے لئے رامائن سے بڑھکر اور کوئی معتبر کتاب نہیں ہوسکتی۔ اگرچہ ہنومان جی کی پیدائش
کی طرح بالی اور سگریو کی پیدائش کا حال بھی نرالا دکھائی دیتا ہے جو قانون قدرت کے
برخلاف ہے۔ اور معلوم نہیں کہ مصنف نے کس ترنگ میں آنکر ایسا بیان کیا ہے۔ خیر
کچھ بھی کیوں نہ ہو لیکن دونوں دیوتا کے سرج سے پیدا ہوئے ہیں (دیکھو رامائن بالمیکی اوتر
اکانڈ صفحہ ۳۹) اس لئے کوئی وجہ نہیں کہ ان کو بندر مانا جاوے اور اس بات کی تقویت کے
لئے ذیل کے نوٹوں کو غور سے ملاحظہ کیجیے۔

(۱) جب راون بالی سے یدھ کرنے آیا تو اس وقت بالی سندھیا کر رہا تھا۔
(دیکھو بالمیکی رامائن اترا کانڈ صفحہ ۳۵) کیا ایک حیوان کو سندھیا وغیرہ کے ادا کرنے
کا گیان ہوسکتا ہے؟ کبھی نہیں۔

(دیکھو بالمیکی رامائن کسکنڈا کانڈ صفحہ ۱۴ سرگ ۱۷) (۲) جب رامچندر جی نے بالی کو تیر مارا تو
اس نے اپنے مارے جانے کی وجہ دریافت کی۔ جس پر انھوں نے جواب دیا کہ تم نے سگریو
کی استری کو گرہن کیا ہے۔ جو دھرم شاستر کے برخلاف ہے۔ اس لئے تمھارے
مارنے کا کوئی گناہ نہیں (دیکھو بالمیکی رامائن کسکنڈا کانڈ صفحہ ۲۵) ناظرین جیو انکو یہ تمیز کہاں؟ ان میں
عورت خاوند کا کوئی وابستہ رشتہ نہیں ہوتا۔ دھرم شاستر کا ڈنڈ انسانوں کے لئے مقرر
کیا گیا ہے نہ کہ حیوانوں کے لئے۔ جب یہ بات ہے تو مہاراجہ رامچندر جی جیسے
ودوان بالی کو کبھی بھی قتل نہ کرتے۔ اگر رامچندر جی نے حیوان سمجھ کر یہ سلوک کیا تھا
تو آج دنیا کے تمام حیوان قتل کے سزاوار ہیں جو ماں بہن یا لڑکی وغیرہ کو گرہن کر لیتے ہیں۔

(۳) جب بالی رامچندر جی کے ہاتھ سے مارا گیا تو انگد نے شاستر مرجادہ سے مرتک
سنسکار کرایا (دیکھو بالمیکی رامائن کسکنڈا کانڈ صفحہ ۳۷) ناظرین کیا آپ اب بھی بالی اور
سگریو کو بندر سمجھتے ہیں؟ اگر یہی خیال ہے تو آجکل کسی بندر یا حیوان کی کریا کرم وغیرہ

५

होते दिखाओ। उसका होना तो नामुमकिन है। किसी हैवान को अपने अवाहक की लाश को दबाते या जलाते भी दिखा देना काफी होगा। मगर नहीं! इन बेचारो को इतनी तमीज कहाँ? जहाँ कोई मरा वहाँ पडा सडता रहा। कहाँ का जलाना और कहाँ का दबाना। और क्रिया कर्म वगैहरा का तो नाम भी न लीजिए।

४ जब रामचन्द्र जी ने लंका पर चढाई की तो अव्वल अंगद को जो बाली का बेटा था इलची के तौर पर रावण के पास रवाना किया ताकि उसको समझा कर सुलह करा दे और जंग तक नौबत न पहुँचे। अब सोचना चाहिये कि कहाँ एक हैवान नतक से मफदूर और कहाँ एक सफीर का नाजुक ओहदा? अक्कल चक्कर खा जाती है कि किस तरह अंगद को हैवान करार दें। मौजूदा जमाने मे जब इस काम के लिए एक लायक से लायक तजुर्बाकार इन्सान की जुस्तजू की जाती है। रामचन्द्र जी ने एक हैवान को रवाना किया हो।

५ जब रामचन्द्र जी लंका को फतह करके अयोध्या मे आए तो दरबार आम किया इस वक्त मुल्क मुल्क के राजे और बडे बडे पण्डित मञ्जला हनुमान विभीषण जामवन्द और अंगद वगैहरा इसमे शामिल थे और धर्म चर्चा होता रहा (देखो वाल्मीकि रामायण उत्तर काण्ड सफा ३९ सुर्ग ४०) नाजरीन इसका फैसला आपके जिम्मे है अगर आपने कभी अपनी मजलिसो और धर्म चर्चा के जलसो मे हैवानो को शामिल किया है तो ये भी हुआ होगा। वरना ये कब मुमकिन हो सकता है कि महाराजा रामचन्द्र जी का दरबार और हैवान मुसाहिब! अक्ल कभी बावर नहीं कर सकती और न ऐसा होगा।

६ जब रामचन्द्र जी को राज तिलक हो गया तो तमाम वानरो को अपने अपने घरो को रवाना किया। और हर एक को दर्जा ब दर्जा हिलक अदा किया। उम्दा उम्दा कपडे जेवर और जेवहरात इनायत किए। सीताजी ने अपने गले की माला उतारकर हनुमान को दी (देखो लंका काण्ड सफा १४६ सुर्ग १३९) माना कि वो बन्दर थे मगर उन्हे जेवर और कपडो से क्या काम? जरो जवहरात की क्या कद्र? अगर है तो आजकल भी लाखो बन्दर है। किसी एक को कपडा या जेवर

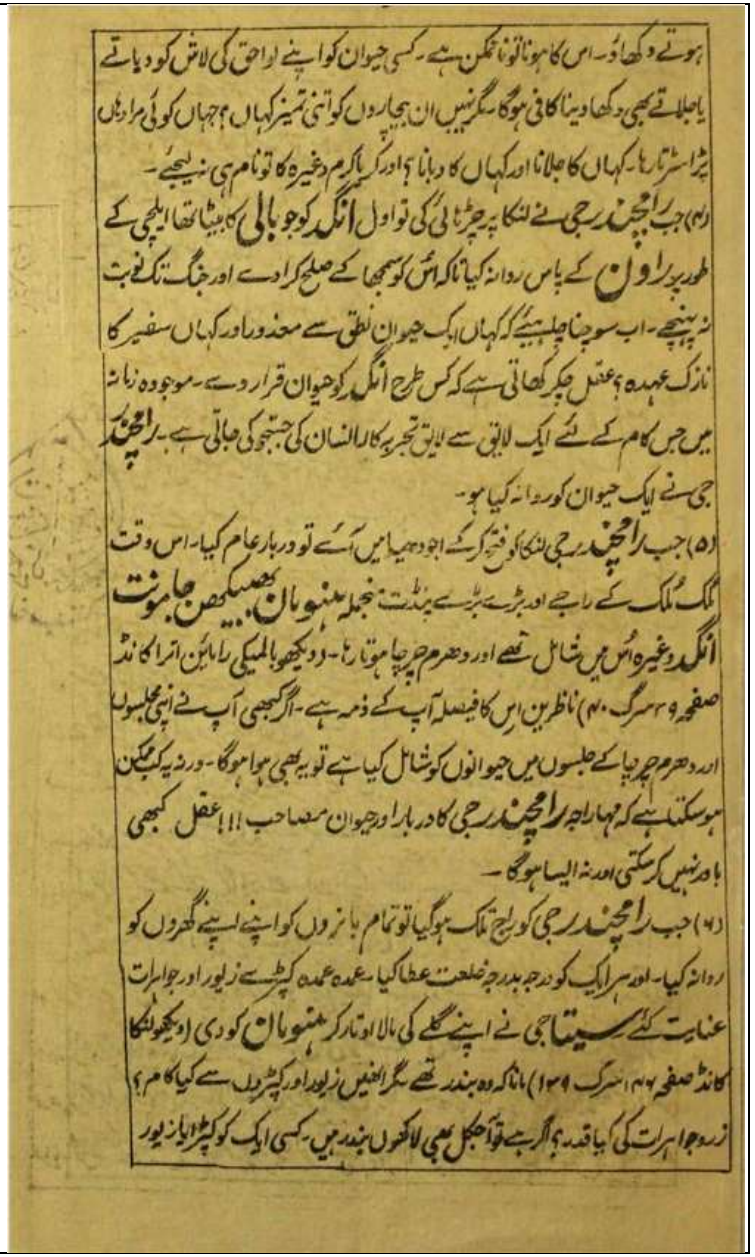
ہوتے دکھاؤ۔ اس کا ہونا تو ناممکن ہے۔ کسی حیوان کو اپنے لواحق کی لاش کو دباتے
یا جلاتے بھی دکھا دینا کافی ہوگا۔ مگر نہیں ان بیچاروں کو اتنی تمیز کہاں؟ جہاں کوئی مردار
پڑا سڑتا رہا۔ کہاں کا جلانا اور کہاں کا دبانا؟ اور کریا کرم وغیرہ کا تو نام ہی نہ لیجئے۔
(۴) جب رامچندر جی نے لنکا پر چڑھائی کی تو اول انگد کو جو بالی کا بیٹا تھا ایلچی کے
طور پر راون کے پاس روانہ کیا تاکہ اس کو سمجھا کے صلح کرا دے اور جنگ تک نوبت
نہ پہنچے۔ اب سوچنا چاہیئے کہ کہاں ایک حیوان نطق سے معذور اور کہاں سفیر کا
نازک عہدہ؟ عقل چکر کھاتی ہے کہ کس طرح انگد کو حیوان قرار دے۔ موجودہ زمانہ
میں جس کام کے لئے ایک لائق سے لائق تجربہ کار انسان کی جستجو کی جاتی ہے۔ رامچندر
جی نے ایک حیوان کو روانہ کیا ہو۔
(۵) جب رامچندر جی لنکا کو فتح کرکے اجودھیا میں آئے تو دربار عام کیا۔ اس وقت
ملک ملک کے راجے اور بڑے بڑے پنڈت منجملہ ہنومان بھیکھن جامونت
انگد وغیرہ اس میں شامل تھے اور دھرم چرچا ہوتا رہا۔ (دیکھو بالمیکی رامائن اترا کانڈ
صفحہ ۹ سرگ ۴۰) ناظرین اس کا فیصلہ آپ کے ذمہ ہے۔ اگر کبھی آپ نے اپنی مجلسوں
اور دھرم چرچا کے جلسوں میں حیوانوں کو شامل کیا ہے تو یہ بھی ہوا ہوگا۔ ورنہ یہ کب ممکن
ہو سکتا ہے کہ مہاراجہ رامچندر جی کا دربار اور حیوان مصاحب!!! عقل کبھی
باور نہیں کر سکتی اور نہ ایسا ہوگا۔
(۶) جب رامچندر جی کو راج تلک ہو گیا تو تمام بانروں کو اپنے اپنے گھروں کو
روانہ کیا۔ اور ہر ایک کو درجہ بدرجہ خلعت عطا کیا۔ عمدہ عمدہ کپڑے زیور اور جواہرات
عنایت کئے سیتا جی نے اپنے گلے کی مالا اتار کر ہنومان کو دی (دیکھو لنکا
کانڈ صفحہ ۱۴۶ سرگ ۱۳۹) مانا کہ وہ بندر تھے مگر انھیں زیور اور کپڑوں سے کیا کام؟
زر و جواہرات کی کیا قدر؟ اگر ہے تو آجکل بھی لاکھوں بندر ہیں۔ کسی ایک کو کپڑا یا زیور

६

पहनते और जरो जवहरात रखते दिखा दिजिए। प्यारे नाजरीन! ये हमारी समझ का कसूर है। हकीकत में वो वानर थे न कि बन्दर जो एक जंगली कौम थी और उन दिनो महाराजा रामचन्द्र जी के साथ जंग में शामिल थे। सिर्फ उनके उलटे माने किए गए हैं। इसलिए आगे चलकर आपकी दिलचस्पी के लिये इसकी तशरीह की जाती है।

खुलासा तमहीद

जब हम रामायण को पढते है तो विचार करते है कि लायक मुसन्निफ वाल्मीकि जी ने हनुमान वगैहरा को वानर क्यों कहा? क्या इनके नजदीक ये सब पशु थे? हर्गिज नहीं! प्यारे सज्जनों रामायण से तो साफ मालूम होता है कि वाल्मीकि जी ने उनको पशु नहीं माना। अगर ऐसा होता तो हमको ये मौका कभी न मिलता कि हम उनकी तसवीर की मुनसिद सदा करते। मालूम होता है कि मामला कुछ और ही है। संस्कृत के कोश मे वानर इसको लिखा है 'जो वन मे रहे और अपनी उम्र का बहुत सा हिस्सा जंगली फलो पर गुजारे'। दर हकीकत वो लोग किसी जमाने मे इसी तरह जिन्दगी गुजारते थे और भील और गुंडों की तरह रहते थे (देखो पिक्चर आफ इंडिया मुसल्फा मिस्टर अरकट सफा २९१) और माबेन दरिया से केवरी और रामनाथ या हिन्दुस्तान के उन पहाडो पर जो नासिक से बम्बई की तरफ होते हुए सितारा के इलाके से गुजर कर निजाम कुन की तरफ चले गए हैं आबाद थे। और वानर के खिताब से मशहूर थे। चूँकि इस जमाने मे ये आम लफ्ज था वाल्मीकि जी ने उसकी तशरीह करनी मुनासिब न समझी। जब जहालत का जमाना शुरु हुआ और बवजह तिजारत या सिरोसयाहत दूसरे मुल्कों का आना जाना बन्द हो गया और न ही कोई त्वारिख हमारे हिस्से में आई, तो हमने असली हालात से नावाकिफ होकर वानर के अर्थो को बन्दर पर घटाया। और उसपर दिल खोलकर हाशिया चढाया, जो मन मे आया वो ही धर दबाया। उनके कामों को प्रचार करना तो दरकिनार, अपनी ही तहरीर की सुध न रही कि पहले क्या लिखा है

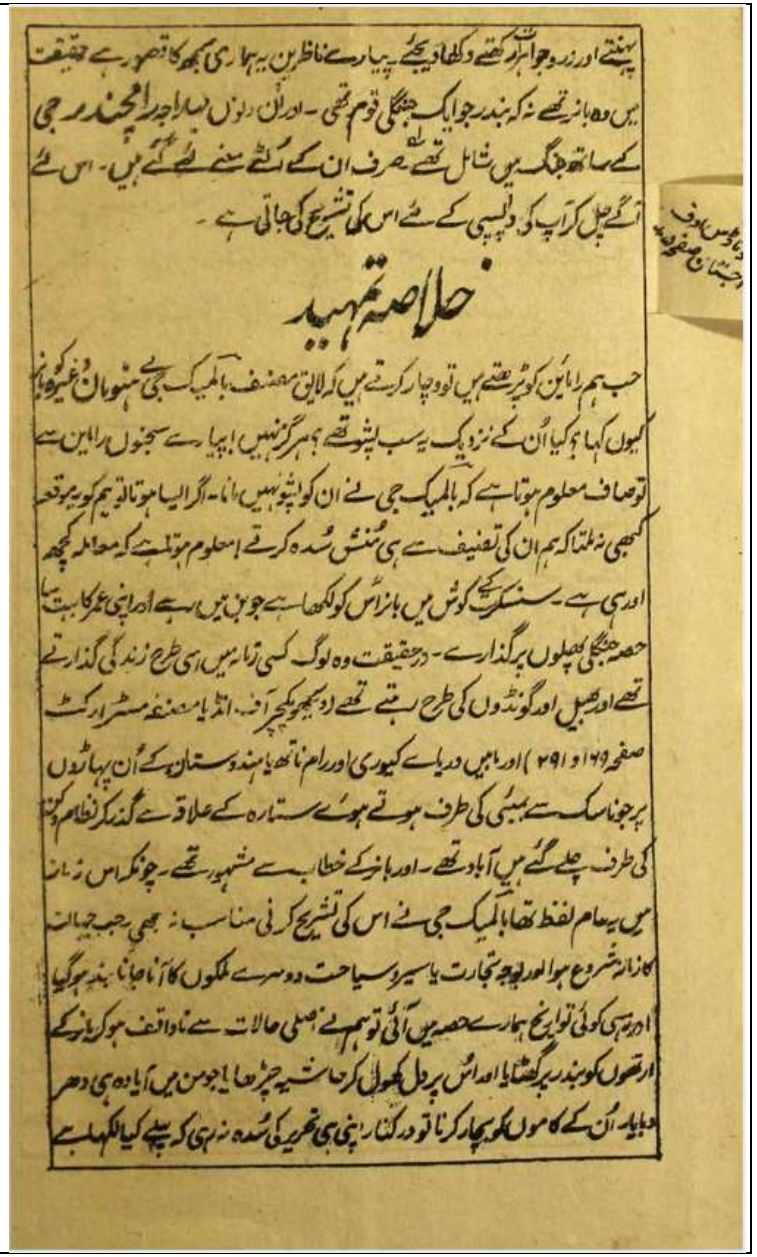

پہنتے اور زر و جواہر رکھتے دکھا دیجئے۔ پیارے ناظرین یہ ہماری سمجھ کا قصور ہے حقیقت
میں وہ بانر تھے نہ کہ بندر جو ایک جنگلی قوم تھی۔ اور ان دنوں مہاراجہ رامچندر جی
کے ساتھ جنگ میں شامل تھے صرف ان کے اُلٹے معنے لئے گئے ہیں۔ اس لئے
آگے چل کر آپ کی دلچسپی کے لئے اس کی تشریح کی جاتی ہے۔

خلاصہ تمہید

جب ہم رامائن کو پڑھتے ہیں تو وچار کرتے ہیں کہ لائق مصنف بالمیک جی نے ہنومان وغیرہ کو بانر
کیوں کہا؟ کیا اُن کے نزدیک یہ سب پشو تھے؟ ہرگز نہیں! پیارے سجنوں رامائن سے
تو صاف معلوم ہوتا ہے کہ بالمیک جی نے ان کو پشو نہیں مانا۔ اگر ایسا ہوتا تو ہم کو یہ موقعہ
کبھی نہ ملتا کہ ہم ان کی تصنیف سے ہی منش سُدھ کرتے! معلوم ہوتا ہے کہ معاملہ کچھ
اور ہی ہے۔ سنسکرت کے کوش میں بانر اُس کو لکھا ہے جو بن میں رہے اور اپنی عمر کا بہت سا
حصہ جنگلی پھلوں پر گذارے۔ درحقیقت وہ لوگ کسی زمانہ میں اسی طرح زندگی گذارتے
تھے اور بھیل اور گونڈوں کی طرح رہتے تھے (دیکھو پکچر آف انڈیا مصنفہ مسٹر ارکٹ
صفحہ ۲۹۱ و ۱۶۹) اور مابین دریائے کیوری اور رام ناتھ یا ہندوستان کے اُن پہاڑوں
پر جو ناسک سے بمبئی کی طرف ہوتے ہوئے ستارہ کے علاقہ سے گذر کر نظام کوٹ
کی طرف چلے گئے ہیں آباد تھے۔ اور بانر کے خطاب سے مشہور تھے۔ چونکہ اس زمانہ
میں یہ عام لفظ تھا بالمیک جی نے اس کی تشریح کرنی مناسب نہ سمجھی۔ جب جہالت
کا زمانہ شروع ہوا اور بوجہ تجارت یا سیر و سیاحت دوسرے ملکوں کا آنا جانا بند ہو گیا
اور جب کوئی تواریخ ہمارے حصہ میں آئی تو ہم نے اصلی حالات سے ناواقف ہو کر بانر کے
ارتھوں کو بندر پر گھٹایا اور اُس پر دل کھول کر حاشیہ چڑھایا جو من میں آیا وہ ہی دھر
دبایا۔ اُن کے کاموں کو پرچار کرنا تو درکنار اپنی ہی تحریر کی سُدھ نہ رہی کہ پہلے کیا لکھا ہے

७

और अब क्या लिख रहे हैं। गर्ज इन बहादुरों के कारनुमाया को नजर अन्दाज करके हैवान का रुतबा इनायत कर दिया। लिहाजा मजकूरा बाला मजमून की इदायत के वास्ते एक मिसाल दर्ज की जाती है जिससे आप जहालत की चालाकी बाखूबी समझ जायेंगे। मसलन आजकल लाला रामदास सूरी एक मशहूर मारूफ वकील उनके असली दर्जे के वकीलों की फेहरिस्त में दर्ज है। और हर कोई जानता है कि वो खत्री हैं सूरी सिर्फ इनकी जात का खिताब है जो इनके नाम के साथ लिखा गया है। अरसा दराज के बाद जब पंजाबी भाषा का रिवाज न हो और न ही कोई त्वारिख हो जिससे मालूम हो सके की सूरी खत्रीयों की एक शाख का खिताब है तो इस फेरिस्त को देख बिना हिल्यात करने उनकी लियाकत वगैहरा के हर कोई ताजुब से कहे कि किसी जमाने मे पंजाब में सूर की किस्म के हैवान भी वकालत करते थे। बाइना यही हालात हमारे वानर लफ्ज की हो गई है। लेकिन ये सब अविद्या की महरबानी है। जहालत तू कब हमारा पीछा छोडेगी? अब तो रहम कर। अफसोस तेरी महरबानी से हम अपने बहादुरों को हैवान बनाकर खुश हो रहे हैं। अगर कोई सच कहे तो उल्टी सलवाते सुनाते हैं। जब हमारी खुद ये हालत है तो गैर कौमे जिस कदर तमसखर में उडाए मुनासिब है।

प्यारे नाजनीन पेश्तर इसके कि हम हनुमानजी की स्वनय उम्री पर कलम उठाए अव्वल मुनासिब मालूम हुआ कि उनके वालदैन के हालात भी मशरूह तौर पर बयान किए जाए क्योंकि जब तक उनके वालदैन का मुफस्सिल हाल मालूम न हो हमारा असली मकसद जाहिर होना निहायत दुश्वार मालूम होता है। गोया इस स्वनय उम्री का ढंग एक निराला ढंग मालूम होता होगा लेकिन बगैर इसके कोई चारा भी नहीं। लिहाजा हम अपने मोइजिद नाजरीन से माफी मांगकर अपने बहादुर जरनैल हनुमान की स्वनय उम्री का सिलसिला इनके वालदैन के हालात से ही शुरु करते हैं जो कुतुबहारे की जबाने गुजराती में से एक

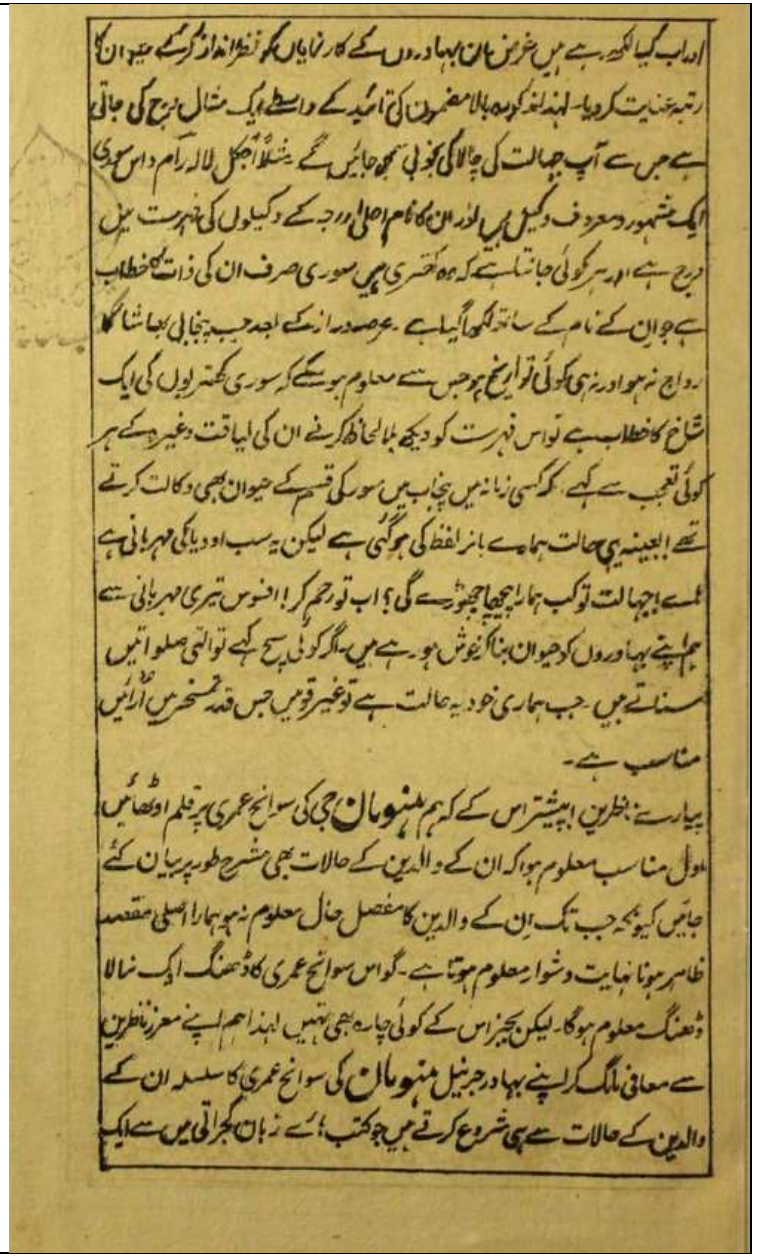

८

अरसा की छानबीन के बाद हासिल हुए हैं।
हमारा इरादा था कि सीधी सादी इबारत में खुदही नाजरीन करे लेकिन रफ्तारे जमाना को कोई देख और एहबात की कसर राते को मद्देनजर रख कर नावल की तर्ज इख्तियार की गई है। अगरचे मजमूम की दिलचस्पी के लिहाज से इबारत आराई की गई है, लेकिन ताहम इस असली वाक्यात को नजर अन्दाज नहीं किया गया है। आखिर में हम ठाकुर बलजीत सिंह साहिब और ठाकुर अक्षरचन्द और लाला जसवंत राय साहीबान के बेहद मशगूर है दास निसान के बाद इस दिबाचा को कलमबंद करते हैं। जिनकी तरगीब बाइस्ता लिफका हुई

ये वो किस्सा नहीं जिसमे बनावट की हो कुछ बाते
बयाँ पुरदर्द है जरनैल बहादुर की कहानी का

ठाकुर सुखराम दास चौहान
लाहोर

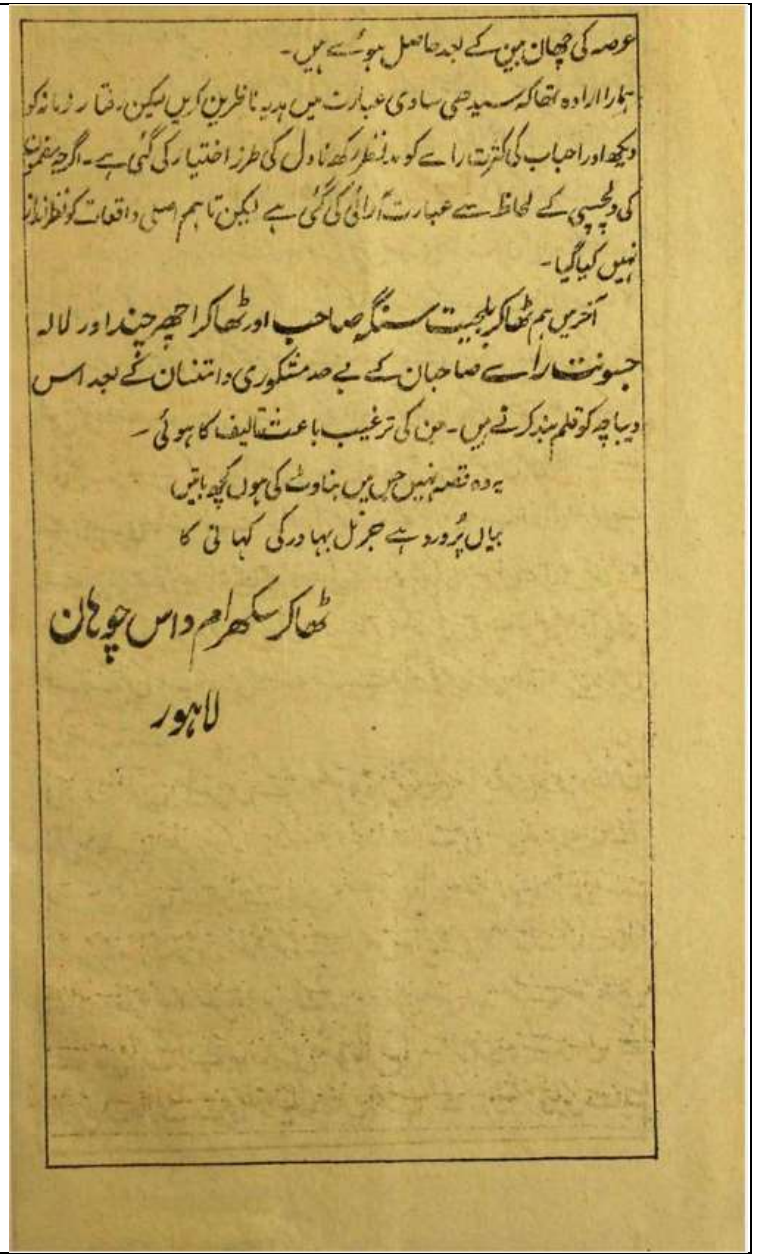
عرصہ کی چھان بین کے بعد حاصل ہوئے ہیں۔
ہمارا ارادہ تھا کہ سیدھی سادی عبارت میں ہدیہ ناظرین کریں لیکن رفتار زمانہ کو
دیکھ اور احباب کی کثرت رائے کو مدنظر رکھ ناول کی طرز اختیار کی گئی ہے۔ اگرچہ مضمون
کی دلچسپی کے لحاظ سے عبارت آرائی کی گئی ہے لیکن تاہم اصلی واقعات کو نظر انداز
نہیں کیا گیا۔
آخر میں ہم ٹھاکر بلجیت سنگھ صاحب اور ٹھاکر اچھر چند اور لالہ
جسونت رائے صاحبان کے بے حد مشکور و ممنون ہیں بعد اس
دیباچہ کو قلم بند کرتے ہیں۔ جن کی ترغیب باعث تالیف کا ہوئی۔
یہ وہ قصہ نہیں جس میں بناوٹ کی ہوں کچھ باتیں
بیاں پُر درد ہے جرنل بہادر کی کہانی کا
ٹھاکر سکھرام داس چوہان
لاہور

९

बाबे अव्वल (पहला अध्याय)

महेन्द्रपुर

हमारे नावल का सिलसिला इस जमाने के वाक्यात से शुरु होता है जिसको आज लगभग आठ लाख[१] बरस गुजर गए है और रामायण का जमाना कहलाता है। इस वक्त राजा महेन्द्र राय[२] एक मुख्तसर (छोटी) सी रियासत जिसका दारुल हुलाफा महेन्द्रपुर[३] है हुकुमरान है।

एक दिन सुबह के वक्त जबकि आफ्ताब तुलु (उदय) हुआ जाता है और ठंडी ठंडी हवा चल रही है राजा महेन्द्रराय की राजदुलारी अञ्जना देवी सखी सहेलियों के हमराह अपने दिल्खुशा वक्त और अफजा बाग के अन्दर गिलगिश्त (ठहल) कर रही है कुदरती दिलचस्पियो को निहायत शौक से देखती हुई जा रही थी कि नागाह (अचानक) उसकी निगाह उस खुशनुमा पौधे पर पडी खुशरंग लहलहाते हुए फूल नजर आ रहे हैं न जाने इसके दिल मे क्या ख्याल गुजरा है देर से टिकटिकी लगाकर इन फूलो की तरफ देख रहीं हैं और अब कुछ सोच कर बसन्तमाला से मुखातिब हुई हैं।

१ देखो तारिखे दुनिया हिस्सा दोयम सफा ७४ मुसनफा पण्डित लेखराम आर्य मुसाफिर

२ देखो अञ्जना सप्तवन रास बजबान गुजराती

३ ये शहर हिन्दुस्तान के इस जुनूबी हिस्से पर जो वानरद्वीप के नाम से मशहूर था (देखो नक्शा मुन्तलिका दिबाचा) माबेन दरियाई तटका मतबर ओकान देरी के आबाद था यहाँ के बाशिन्दे मिसल तहसील गोंट और कोल के थे (देखो पिक्चर्ज आफ इण्डियन लाइफ मुसनफा मिस्टर अरकस्ट साहिब सफा १६९ व १७०)

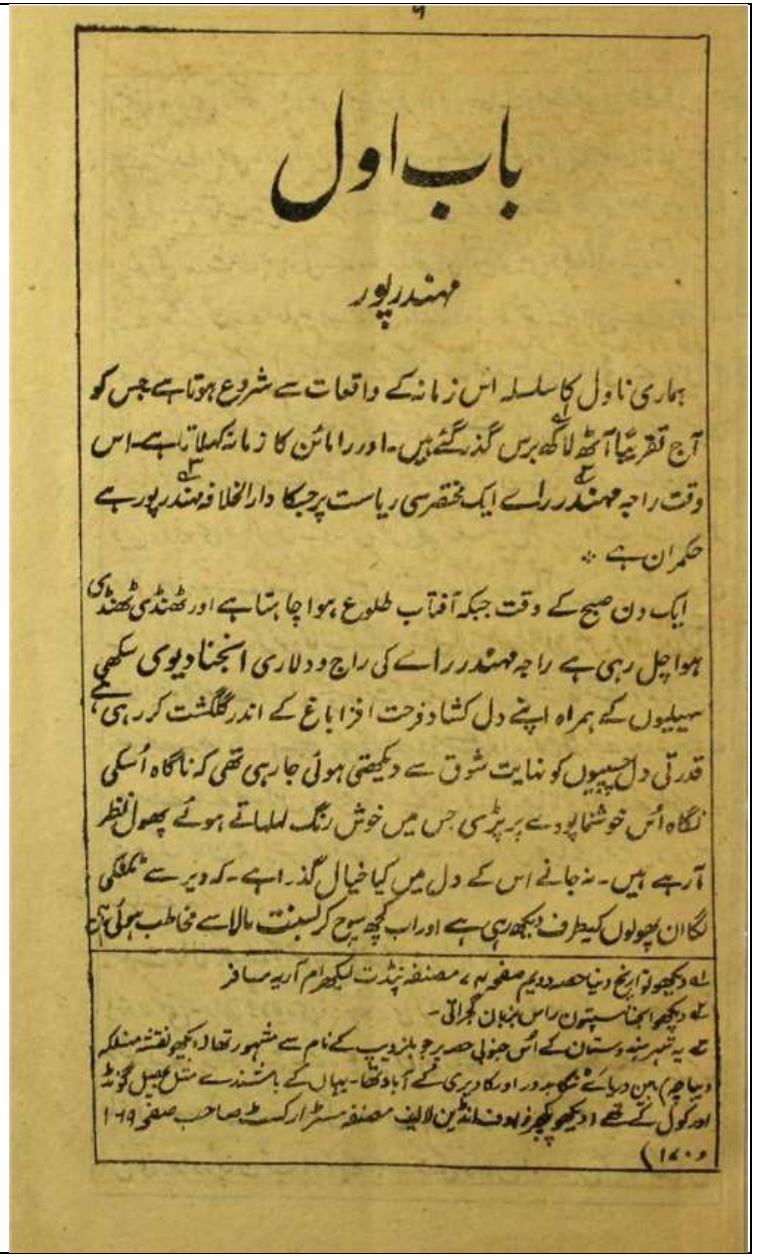

باب اول

مہندرپور

ہماری ناول کا سلسلہ اس زمانہ کے واقعات سے شروع ہوتا ہے جس کو آج تقریباً آٹھ لاکھ برس گذر گئے ہیں۔ اور رامائن کا زمانہ کہلاتا ہے۔ اس وقت راجہ مہندر رائے ایک مختصر سی ریاست پر جسکا دارالخلافہ مہندرپور ہے حکمران ہے۔

ایک دن صبح کے وقت جبکہ آفتاب طلوع ہوا چاہتا ہے اور ٹھنڈی ٹھنڈی ہوا چل رہی ہے راجہ مہندر رائے کی راج دلاری انجنا دیوی سکھی سہیلیوں کے ہمراہ اپنے دل کشا و فرحت افزا باغ کے اندر گلگشت کر رہی ہے قدرتی دلچسپیوں کو نہایت شوق سے دیکھتی ہوئی جا رہی تھی کہ ناگاہ اُسکی نگاہ اُس خوشنما پودے پر پڑی جس میں خوش رنگ لہلہاتے ہوئے پھول نظر آرہے ہیں۔ نہ جانے اس کے دل میں کیا خیال گذرا ہے۔ کہ دیر سے ٹکٹکی لگا ان پھولوں کیطرف دیکھ رہی ہے اور اب کچھ سوچ کر بسنت مالا سے مخاطب ہوئی ہے

۱ دیکھو تاریخ دنیا حصہ دویم صفحہ ۷۴ مصنفہ پنڈت لیکھرام آریہ مسافر
۲ دیکھو انجنا ستون راس بزبان گجراتی۔
۳ یہ شہر ہندوستان کے اُس جنوبی حصہ پر جو بلدویپ کے نام سے مشہور تھا (دیکھو نقشہ منسلکہ دیباچہ) بین دریائے نربدا و اور کاویری کے آباد تھا۔ یہاں کے باشندے مثل بھیل گونڈ اور کول کے تھے (دیکھو پکچرز آف انڈین لائف مصنفہ مسٹر ارکسٹ صاحب صفحہ ۱۶۹ و ۱۷۰)

१०

अञ्जना देवी "सखी देखो ये कैसे पुररजा दिल लुभाने वाले फूल खिले है। और बागे शगूफे अभी मानिन्द इस हसीं महजबीन के जो सुर्खीमय होंठो में मुस्करा रही है सब नकाब मे से नजर आ रहे है जिसके देखने से नजर सैर नहीं होती (मन नहीं भरता) और ईश्वर की कुदरत जाहिर होती है मगर साथ ही इनको भी देखना जो नीचे नाली मे पडे सडे गन्दे मालूम होते है एक वो जमाना था कि ये भी ऐसे ही खुशरंग और दिलपसन्द थे लेकिन अब तो इनके देखने से तबीयत बेजार होती है इस तरह इन्सान की जिन्दगी भी तीन हालतों मे मुन्कसिम है यानि की लडकपन जवानी और बुढापा मगर प्यारी सखी सबसे अफजल और आला हालात जवानी है जिसमे इन्सान सरमाया दीनी और दुनयावी मुहईया कर सकता है इसमे कुछ शक नहीं कि जिस वक्त इन्सान आलमे जवानी मे होता है नफजानी ख्वाहिशे इन्तहा दर्जे की बढ जाती है मगर बहादुर वही है जो इनको मगलूग कर खुद गालिब आए वरना इन्सान और हैवान मे क्या फर्क है इन्सान को लाजिम है कि जवानी की हालत को नगनीमत जान दोशाय अकबद और सरमाया पैरी जमा करे जहाँ तक हो सके नेकी करे दूसरो को एजा (तकलीफ) न पहुँचाए वरना याद रहे इन सडे हुए फूलो की तरह बुढापे मे निकम्मा हो पछताना पडेगा। दुख सुख शरीर का भोग जान जो ईश्वर पर भरोसा रखता है वो ही इस दुनिया मे होशो हुलम रखता है।

बसन्तमाला कुछ कहने को थी कि इन्द्रमणि बोल उठी।

इन्द्रमणि " राजदुलारी तुम तो बडी ज्ञानवान हो। हाँ क्यों न हो माता का घर है पिता का राज है कल का ज्ञान कहाँ जो आज है जब ससुराल मे जाऊँगी तब यहाँ की कदर पाऊँगी वहाँ अपनी खुशी से चलना फिरना मुश्किल होगा बाकी सैर और ज्ञान तब याद आएगा जब ननद की बोलियाँ और सास की धमकियाँ

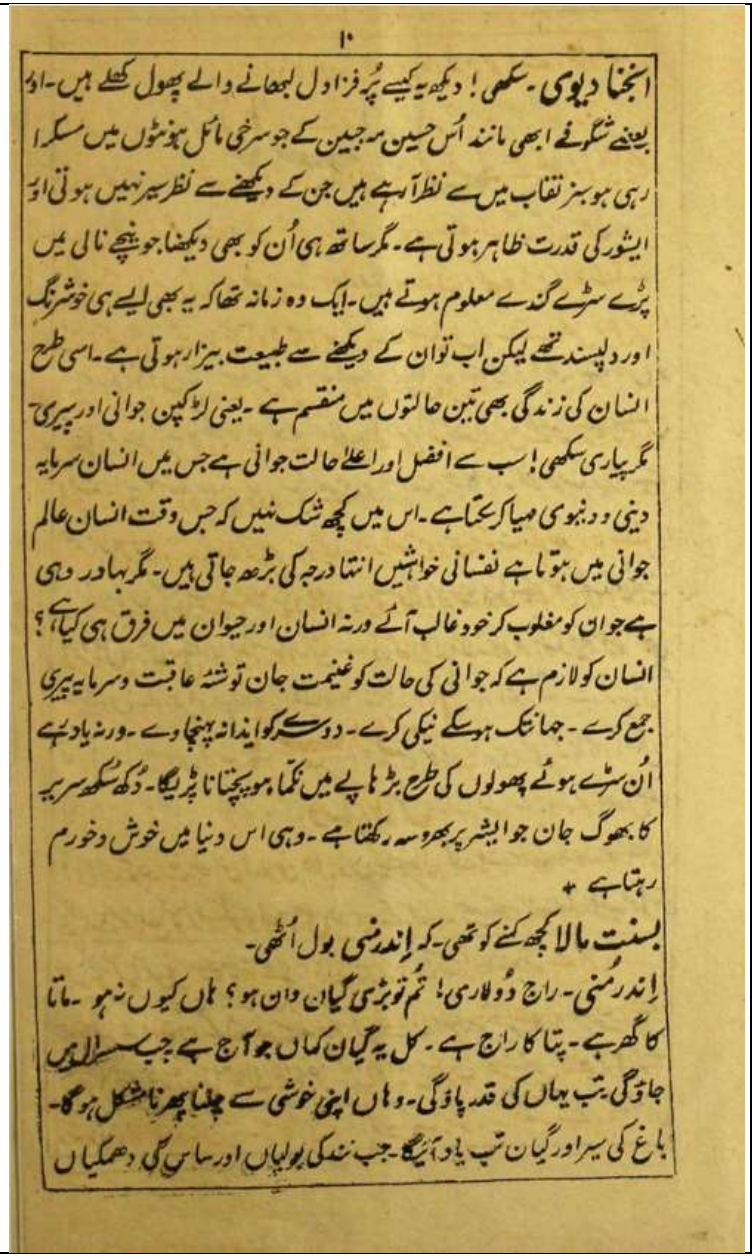

۱۰

انجنا دیوی - سکھی! دیکھ یہ کیسے پُر فزا دل لبھانے والے پھول کھلے ہیں - اور یعنے شگوفے ابھی مانند اُس حسین مہ جبین کے جو سرخی مائل ہونٹوں میں مسکرا رہی ہو سبز نقاب میں سے نظر آ رہے ہیں جن کے دیکھنے سے نظر سیر نہیں ہوتی اور ایشور کی قدرت ظاہر ہوتی ہے - مگر ساتھ ہی اُن کو بھی دیکھنا جو نیچے نالی میں پڑے سڑے گندے معلوم ہوتے ہیں - ایک وہ زمانہ تھا کہ یہ بھی ایسے ہی خوشرنگ اور دلپسند تھے لیکن اب تو ان کے دیکھنے سے طبیعت بیزار ہوتی ہے - اسی طرح انسان کی زندگی بھی تین حالتوں میں منقسم ہے - یعنی لڑکپن جوانی اور پیری مگر پیاری سکھی! سب سے افضل اور اعلےٰ حالت جوانی ہے جس میں انسان سرمایہ دینی و دنیوی مہیا کر سکتا ہے - اس میں کچھ شک نہیں کہ جس وقت انسان عالم جوانی میں ہوتا ہے نفسانی خواہشیں انتہا درجہ کی بڑھ جاتی ہیں - مگر بہادر وہی ہے جو ان کو مغلوب کر خود غالب آئے ورنہ انسان اور حیوان میں فرق ہی کیا ہے؟ انسان کو لازم ہے کہ جوانی کی حالت کو غنیمت جان توشۂ عاقبت و سرمایہ پیری جمع کرے - جہانتک ہو سکے نیکی کرے - دوسرے کو ایذا نہ پہنچاوے - ورنہ یاد رہے اُن سڑے ہوئے پھولوں کی طرح بڑھاپے میں نکما ہو پچھتانا پڑیگا - دُکھ سُکھ سریر کا بھوگ جان جو ایشر پر بھروسہ رکھتا ہے - وہی اس دنیا میں خوش و خرم رہتا ہے +

بسنت مالا کچھ کہنے کو تھی - کہ اِندرمنی بول اُٹھی -

اِندرمنی - راج دُولاری! تم تو بڑی گیان وان ہو؟ ہاں کیوں نہ ہو - ماتا کا گھر ہے - پتا کا راج ہے - کل یہ گیان کہاں جو آج ہے جب سسرال میں جاؤگی تب یہاں کی قدر پاؤگی - وہاں اپنی خوشی سے چلنا پھرنا مشکل ہوگا - باغ کی سیر اور گیان تب یاد آئیگا - جب نند کی بولیاں اور ساس کی دھمکیاں

होश उडाएगी। स्त्री का मान ज्यादातर खाविन्द पर होता है तो देखते है कैसा मिले चैन से रखे या दुख दे

अञ्जना देवी "जब वो दिन आएगा देखा जाएगा किस्मत के लिखे को कौन हटाएगा नसीबो में खुशी है तो गमी नहीं ईश्वर पर यकीन है और की आस नहीं"

इस तरह की बाते कर रही थी कि राजा और प्रधान वगैहरा बाग की तरफ आते हुए दिखाई दिए अञ्जना देवी जल्दी से सहेलियो को साथ लेकर महल को चली गई राजा लडकियों को जाते देखकर "प्रधान ये कौन है?" प्रधान "महाराजा वो आगे आगे राजदुलारी सखी सहेलियो के साथ जा रही है" राजा "ऐं! वो राजदुलारी है?" ये कहा और सर झुका फिक्र मे हो गया। और थोडे से सकूक के बाद बोला

वर प्राप्त हुई अञ्जना सुनो मित्र प्रधान
बैठ पुजारो दर भला जो राखे कुल की आन
धर्म कर्म मे हो जती और बढा दो आन वर घर ऐसा मिले जो कृपा हो भगवान

बाब (अध्याय) दूसरा

वर की तलाश

आफ्ताब तो हसरत भरी आखिरी निगाहों से दुनिया को देखता मगरिब को जा रहा है और हम अपने ख्याल को लिये गोदावरी नदी के जनूब मे जो एक सिलसिला पहाडों का रोकाहोमो के नाम से रामायण मे बयान किया गया है आ रहे है।

अभी हम इन पहाडो की सैर करते और कुदरती नजारें देखते हुए जा रहे थे कि चन्द एक आलीशान बुलन्द इमारते दाए तरफ नजर पडी जिनके देखने के शौक ने हमको वहाँ तक पहुँचा ही दिया। गोया एक छोटा सा कसबा है। मगर आबादी

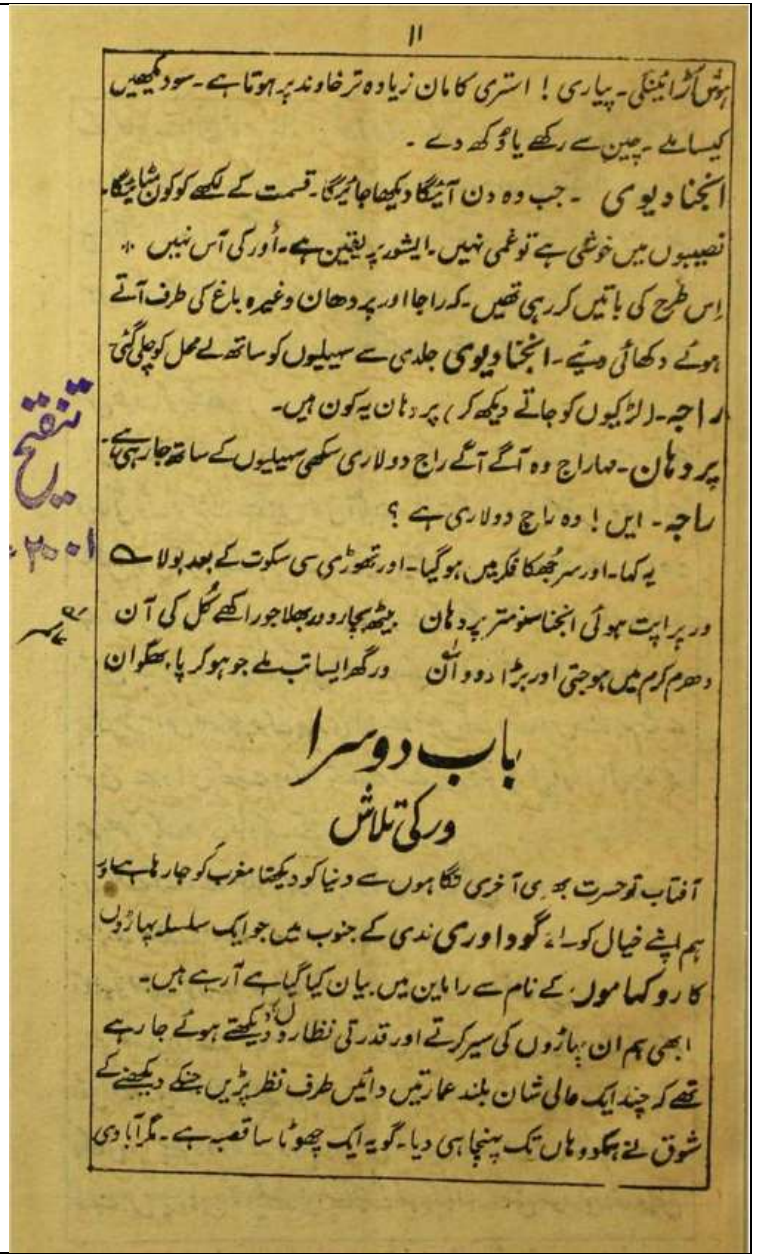

۱۱

ہوش اُڑائینگی۔ پیاری! استری کا مان زیادہ تر خاوند پر ہوتا ہے۔ سو دیکھیں کیسا ملے۔ چین سے رکھے یا دُکھ دے۔

انجنا دیوی۔ جب وہ دن آئیگا دیکھا جائیگا۔ قسمت کے لکھے کو کون مٹائیگا۔ نصیبوں میں خوشی ہے تو غمی نہیں۔ ایشور پر یقین ہے۔ اُور کی آس نہیں۔

اِس طرح کی باتیں کر رہی تھیں۔ کہ راجا اور پردھان وغیرہ باغ کی طرف آتے ہوئے دکھائی دیئے۔ انجنا دیوی جلدی سے سہیلیوں کو ساتھ لے محل کو چلی گئی

راجہ۔ (لڑکیوں کو جاتے دیکھ کر) پردھان یہ کون ہیں۔

پردھان۔ مہاراج وہ آگے آگے راج دولاری سکھی سہیلیوں کے ساتھ جا رہی ہے۔

راجہ۔ ایں! وہ راج دولاری ہے؟

یہ کہا۔ اور سر جھکا فکر میں ہو گیا۔ اور تھوڑی سی سکوت کے بعد بولا ؎

ور پراپت ہوئی انجنا سنو متر پردھان بیٹھ پجارو در بھلا جو راکھے کُل کی آن
دھرم کرم میں ہو جتی اور بڑھا دو آن ور گھر ایسا تب ملے جو ہو کرپا بھگوان

باب دوسرا

ور کی تلاش

آفتاب تو حسرت بھری آخری نگاہوں سے دنیا کو دیکھتا مغرب کو جا رہا ہے اور ہم اپنے خیال کو لئے گوداوری ندی کے جنوب میں جو ایک سلسلہ پہاڑوں کا روکہاموں کے نام سے رامائن میں بیان کیا گیا ہے آ رہے ہیں۔

ابھی ہم ان پہاڑوں کی سیر کرتے اور قدرتی نظاروں کو دیکھتے ہوئے جا رہے تھے کہ چند ایک عالی شان بلند عمارتیں دائیں طرف نظر پڑیں جنکے دیکھنے کے شوق نے ہمکو وہاں تک پہنچا ہی دیا۔ گویہ ایک چھوٹا سا قصبہ ہے۔ مگر آبادی

के लिहाज से इन तमाम पहाडी चीजों से कही ज्यादा अच्छा है। गली कूंचे मसफा और मकानात सिवाए उन चन्द महलो के जो दूर से दिखाई देते हैं यक (एक) मञ्जला हैं अगरचे शाम की तारीकी के बाद वो चन्द आलीशान इमारते अच्छी तरह नजर नहीं आती ता हम मसनोई रोशनी जो सुर्ख और तज शीशों से नमुदार हो रही है बतला रही है कि ये जरूर यहाँ के राजा के महल जिनके देखने से इशलाक में हम इस तरफ को आए बढ रहे है।

इस वक्त रास्ते मे हुजूम (भीड) की यह हालत कि बाजार मे चलना दुशवार हो रहा है। देहाती लोग तो कसब (पाने की होड) से हैं कोई आटा ले रहा है कोई दाल का लख पूछ रहा है। बस ज्यूँ त्यूँ कर के हम एक चौक मे पहुँचे यहाँ जो कैफियत नजर आई वो ये कि इस जगह खडे होने से देखने वाले की निगाह मशरिक (पूर्व) से मगरिब (पश्चिम) और शमाल (उत्तर) से जुनूब (दक्षिण) को बगैर लिहाज किसी रुकावट के साफ निकल जाती है। क्योंकि पेशतर इस किस्म का चौक हमारी नजर से नहीं गुजरा था इसलिए हम बडे शौक से वहाँ खडे होकर देखने लगे। इतने मे हटो हटो की आवाज आई चुनाचा हम भी एक तरफ को दबक गए।

दरयाफ्त करने से मालूम हुआ की प्रधान बुद्ध प्रकाश की सवारी आ रही है जो राजा महेन्द्र राय के महल को जा रहा है।

आहा ये तो महेन्द्रपुर है जिसके नाम से नाजरीन बखूबी वाकिफ है।

राजा महेन्द्र राय का नाम सुनकर हमारा शौक भी जोश जूनून की तरफ बढा और हम उस सवारी के पीछे पीछे हो लिए। थोडी दूर गए होंगे कि एक बडा आहंगी फाटक दिखाई दिया जिसके दोनो तरफ दो सिपाही नंगी तलवारे हाथों मे लिए पहरा दे रहे हैं। प्रधान को देखते ही फाटक खोला गया और उसकी सवारी अन्दर दाखिल

کے لحاظ سے ان تمام پہاڑی شہروں سے کئی درجہ اچھا ہے۔ گلی کوچے مصفا
اور مکانات سوائے اُن چند محلوں کے جو دور سے دکھائی دیتے ہیں یکمنزلہ
ہیں اگرچہ شام کی تاریکی کے باعث وہ چند عالیشان عمارتیں اچھی طرح نظر
نہیں آتیں تاہم مصنوعی روشنی جو سرخ اور سبز شیشوں سے نمودار ہو رہی ہے
بتلا رہی ہے۔ کہ یہ ضرور یہاں کے راجہ کے محل ہیں جنکے دیکھنے کے اشتیاق میں ہم
اُس طرف کو بڑھے۔

اس وقت راستہ میں ہجوم کی یہ حالت ہے کہ بازار میں چلنا دشوار ہو رہا ہے
دیہاتی لوگ تو کثرت سے ہیں کوئی آٹا لے رہا ہے کوئی دال کا نرخ پوچھ رہا ہے
غرض جوں توں کرکے ہم ایک چوک میں پہنچے یہاں جو کیفیت نظر آئی وہ یہ
ہے کہ اس جگہ کھڑے ہونے سے دیکھنے والے کی نگاہ مشرق سے مغرب اور
شمال سے جنوب کو بغیر لحاظ کسی رکاوٹ کے صاف نکل جاتی ہے۔

چونکہ پیشتر اس قسم کا چوک ہماری نظر سے نہیں گذرا تھا اس لئے ہم بڑے
شوق سے وہاں کھڑے ہوکر دیکھنے لگے اتنے میں ہٹو بچو کی آواز آئی چنانچہ
ہم بھی ایک طرف کو دبک گئے +

دریافت کرنے سے معلوم ہوا کہ پردھان بدھ پرکاش کی سواری آرہی ہے
جو راجہ مہندر رائے کے محل کو جا رہا ہے۔

آہا! یہ تو مہندر پور ہے جس کے نام سے ناظرین بخوبی واقف ہیں +

راجہ مہندر رائے کا نام سنکر ہمارا شوق بھی جوش جنون کی طرح بڑھا اور ہم
اُس سواری کے پیچھے پیچھے ہو لئے۔ تھوڑی دور گئے ہونگے کہ ایک بڑا آہنی پھاٹک
دکھائی دیا جسکے دونو طرف دو سپاہی ننگی تلواریں ہاتھوں میں لئے پہرہ دے
رہے ہیں پردھان کو دیکھتے ہی پھاٹک کھولا گیا اور اسکی سواری اندر داخل

हुई हम भी साये की तरह सिपाहियों की नजर से अपने आप को बचाते हुए साथ ही निकल गए।

अन्दर जाने से आला दर्जे की इमारतें दिखाई दी मगर उनके देखने का इतफाक ही कुछ न हुआ और हम प्रधान के साथ दाएं तरफ के दालान मे जिसकी चारदिवारी सङ्गेमरमर की तरह साफ और सुथरी बनी हुई है, और नीचे एक बेशकीमती कालीन बिछा है चले गए। इस दालान मे एक झाड लटक रहा है जिसकी मसनोई रोशनी ने कुदरती उजाले को भी शर्मिन्दा कर दिया है और सुर्ख कालीन पर एक शबर मखमल का गदेला पडा है जिस पर राजा महेन्द्र राय एक तकिये का सहारा लिए बडी आन बान से बैठा मंत्रियो से गुफ्तगू कर रहा है। प्रधान को देखते ही बोला

राजा "आइए प्रधान जी अभी आपको ही याद कर रहे थे"

प्रधान आदाब बजा लाकर "बन्दा भी हाजिर है"

यह कहकर चन्द तस्वीरे निकाल कर आगे रखी और उनमे से दो उठाकर राजा के हाथ मे देकर कहा

प्रधान "महाराज! अगरचे बहुत से राजकुमारों की तस्वीरें मँगाई गई हैं लेकिन उन सब में से मेरी नजर तो इन दो पर ठहरी है आईन्दा हुजूर मालिक है" बाकी तस्वीरों को जरा आगे को कर के "इनका भी मुलाहिजा किजिए"

राजा सरसरी नजर डालकर "इनको रहनो दो"

ये कहा फिर उन दोनों तस्वीरो को उठाकर देखने लगा बाद बहुत सी कीलोकाल और ऊँच नीच की पडताल की सोचता हुआ वहाँ से उठा और रानी बेगमोहिनी के पास ले गया

राजा "प्रियजी! आप इन दोनो मे से किसको अञ्जना देवी के लायक ख्याल

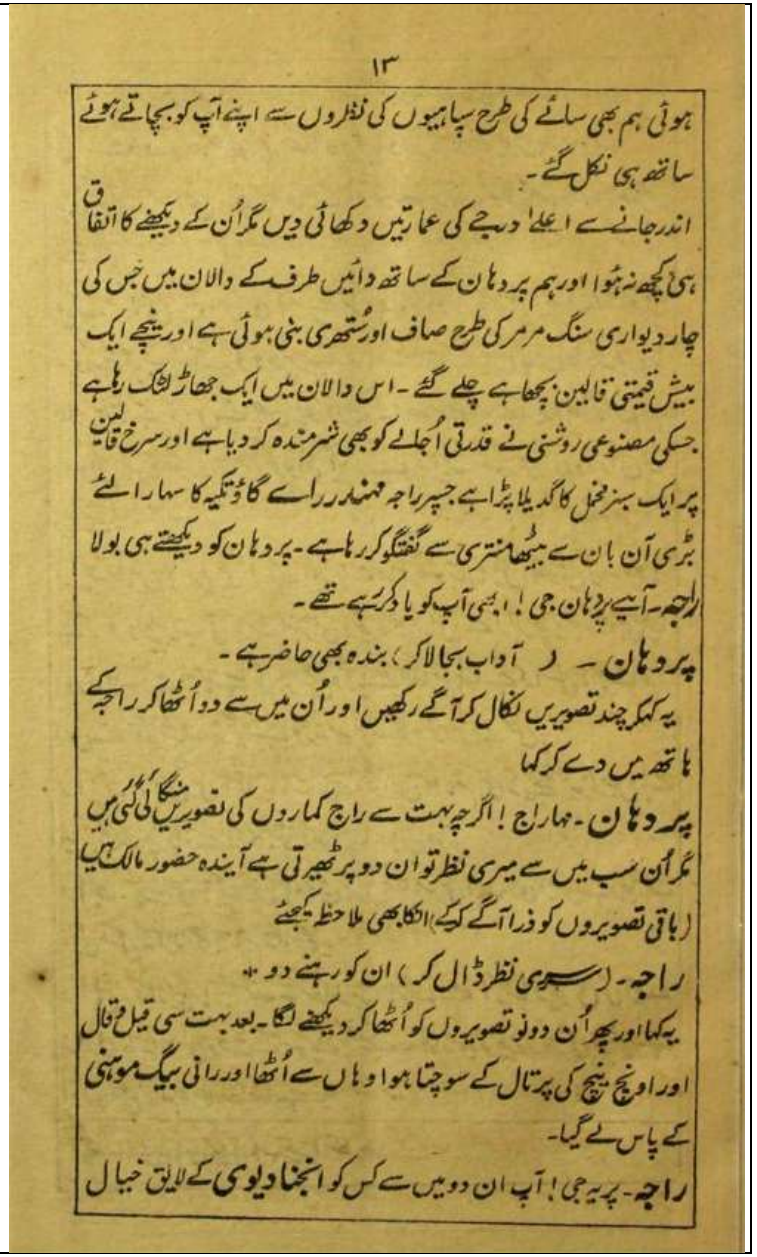

۱۳

ہوئی ہم بھی سائے کی طرح سپاہیوں کی نظروں سے اپنے آپ کو بچاتے ہوئے ساتھ ہی نکل گئے۔

اندر جانے سے اعلےٰ درجے کی عمارتیں دکھائی دیں مگر اُن کے دیکھنے کا اتفاق ہی کچھ نہ ہُوا اور ہم پردھان کے ساتھ دائیں طرف کے دالان میں جس کی چار دیواری سنگ مرمر کی طرح صاف اور سُتھری بنی ہوئی ہے اور نیچے ایک بیش قیمتی قالین بچھا ہے چلے گئے۔ اس دالان میں ایک جھاڑ لٹک رہا ہے جسکی مصنوعی روشنی نے قدرتی اُجالے کو بھی شرمندہ کر دیا ہے اور سرخ قالین پر ایک سبز مخمل کا گدیلا پڑا ہے جسپر راجہ مہندر رائے گاؤ تکیہ کا سہارا لئے بڑی آن بان سے بیٹھا منتری سے گفتگو کر رہا ہے۔ پردھان کو دیکھتے ہی بولا

راجہ۔ آیئے پردھان جی! ابھی آپ کو یاد کر رہے تھے۔

پردھان۔ (آداب بجا لاکر) بندہ بھی حاضر ہے۔

یہ کہکر چند تصویریں نکال کر آگے رکھیں اور اُن میں سے دو اُٹھا کر راجہ کے ہاتھ میں دے کر کہا

پردھان۔ مہاراج! اگرچہ بہت سے راج کماروں کی تصویریں منگائی گئی ہیں مگر اُن سب میں سے میری نظر تو ان دو پر ٹھیرتی ہے آیندہ حضور مالک ہیں (باقی تصویروں کو ذرا آگے کرکے) انکا بھی ملاحظہ کیجئے

راجہ۔ (سرسری نظر ڈال کر) ان کو رہنے دو۔

یہ کہا اور پھر اُن دونو تصویروں کو اُٹھا کر دیکھنے لگا۔ بعد بہت سی قیل وقال اور اونچ نیچ کی پڑتال کے سوچتا ہوا وہاں سے اُٹھا اور رانی بیگم موہنی کے پاس لے گیا۔

راجہ۔ پریہ جی! آپ ان دو میں سے کس کو انجنا دیوی کے لایق خیال

करती है ये जो पीताम्बरी धोती पहने है हरनदयाल विद्याधर के लडके विदुपर्व की है और दूसरी प्रहलाद विद्याधर के लडके पवन की है।

रानी बेगमोहिनी पहले तो देर तक दोनो तस्वीरों को देखती रही बाद मे कहने लगी बेगमोहिनी "स्वामीजी! मेरे नजदीक तो दोनो अच्छे है सिर्फ इतना फर्क जरूर है कि जिसको आप वो विदुपर्व के नाम से बताते हैं बदन का कुछ कमजोर जाहिर होता है मगर इसके जन्म चक्रों से मालूम होता है कि बडा भागवान और और विद्वान होगा और दूसरे जो पवन की है में एक शूरवीर और विद्वान दिखाई देता है

राजा "नहीं! प्रिय जी! एक और बात है जिसको बतलाना मैं भूल गया वो ये है कि विदुपर्व के बावत मन्त्री वगैहरा का ख्याल है कि अगरचे ये बहुत ही अच्छा और खूबसूरत लडका है मगर ज्योतिष विद्या से मालूम हुआ है कि इसकी उम्र बहुत कम है इसलिए मुझको शक पड गया है वर्ना मेरी निगाह तो इसी पर थी"।

रानी "स्वामीजी! अगर ये बात है। तो इसका नाम ही न लिजिए क्योंकि जब बात मे शक पड जावे उसका नतीजा अक्सर अच्छा नहीं होता"

राजा "प्रियजी! क्या मैं नादान हूँ? मेरी एक ही लडकी है जब तक अपनी तसल्ली न कर लूँगा नाम न लूँगा"

रानी "महाराज! बेशक ये मामला बडा नाजुक है अञ्जना देवी की आईन्दा जिन्दगी का मदार इसी वक्त के सोचने पर मुलहजिर है। हमारी तो चन्द रोज की खुशी है और इसकी तमाम उम्र का तकाजा है"

देखो रामायण जबान गुजराती बाब तीसरा सतर १२

کرتی ہیں؟ یہ جو پیتمبری دھوتی پہنے ہے ہرن نیات ودیا دھر کے لڑکے ودوپرب کی ہے اور یہ دوسری پرہلاد ودیا دھر کے لڑکے پون کی ہے۔

رانی بیگ موہنی پہلے تو دیر تک دونو تصویروں کو دیکھتی رہی بعد میں کہنے لگی۔

بیگ موہنی۔ سوامی جی! میرے نزدیک تو دونو اچھے ہیں صرف اتنا فرق ضرور ہے کہ جس کو آپ ودوپرب کے نام سے بتلاتے ہیں بدن کا کچھ کمزور ظاہر ہوتا ہے مگر اس کے چھن چکروں سے معلوم ہوتا ہے کہ بڑا بھاگوان اور ودوان ہوگا اور دوسری جو پون کی ہے یہ ایک شہور بیر اور ودوان دکھائی دیتا ہے۔

راجہ۔ نہیں! پریہ جی! ایک اور بات ہے جسکو بتلانا میں بھول گیا۔ وہ یہ ہے کہ ودوپرب کی بابت منتری وغیرہ کا خیال ہے کہ اگرچہ یہ بہت ہی اچھا اور خوبصورت لڑکا ہے مگر جوتش ودیا سے معلوم ہوا ہے کہ اسکی عمر بہت کم ہے اس لئے مجکو شک پڑ گیا ہے ورنہ میری نگاہ تو اس پر تھی۔

رانی۔ سوامی جی! اگر یہ بات ہے۔ تو اس کا نام ہی نہ لیجئے کیونکہ جس بات میں شک پڑ جاوے اسکا نتیجہ اکثر اچھا نہیں ہوتا

راجہ۔ پریہ جی! کیا میں نادان ہوں؟ میری ایک ہی لڑکی ہے جبتک اپنی تسلی نہ کرلونگا! نام نہ لونگا۔

رانی۔ مہاراج! بیشک یہ معاملہ بڑا نازک ہے انجنا دیوی کی آیندہ زندگی کا مدار اسی وقت کے سوچنے پر منحصر ہے۔ ہماری تو چند روز کی خوشی ہے اور اسکی تمام عمر کا تقاضا ہے۔

دیکھو رامائن زبان گجراتی باب تیسرا سطر ۱۲

राजा "प्रियजी! बेशक! बेशक! आपने दुरुस्त कहा। ये मामला बडा नाजुक है। अच्छा पवन की निसबत आपका क्या ख्याल है? मेरी राय मे उसके साथ अञ्जना देवी का नाता किया जावे तो अच्छा है"

रानी "महाराज! जाहिर तो अच्छा मालूम होता है। अगर आपको इतमिनान है तो शगुन भेज दें। मगर मंत्री को फिर भी ताकीद कर दें कि पहले अन्दरूनी बेहरोनि कुल हालात दरयाफ्त कर लेवे और बाद में शगुन देवे"

राजा "प्रियजी! ऐसा ही होगा। आप तसल्ली रखें"।

यह कहकर प्रधान जी के पास आया और कहने लगा कि सुबह एक लायक मंत्री को अञ्जना देवी की तस्वीर देकर रत्नपुर रवाना कर ताकीद कर दो कि अव्वल (पहले) सब बातों मे तसल्ली कर लेवे बाद से शगुन दे आवे

बाब (अध्याय) तीसरा

पवन भी एक होनहार जवान है

बारिश होकर थमी ही थी कि एक मुसाफिर रत्नपुर के बाजार मे दिखाई दिया। नाजरीन! सफर को जो सफर कहते है दुरुस्त है। देखो! वो घोडे पर वो एक सफेद रेश सफेद पोशा सवार जाडे के मारे कैसे सुकडा बैठा है। मालूम होता है कि दूर दराज के सफर से आया है। अगरचे बहुत से गरम कपडे जेपबतन हैं और दुशाला ओढ रहा है लेकिन ताहम सर्दी महसूस कर रहा है। उफ! सर्दी भी हद दर्जे की है पौष (जनवरी) माघ (फरवरी) के दिन है जिस पर बारिश ने तो और ही गजब कर दिया हुआ है। ठण्डी हवा चलकर उसके जोबन को और भी दोबाला कर रही है। इस बूढे

راجہ - پریہ جی! بیشک! بیشک! آپ نے درست کہا - یہ معاملہ بڑا نازک ہے - اچھا! پون کی نسبت آپ کا کیا خیال ہے؟ میری رائے میں اوس کے ساتھ انجنا دیوی کا ناطہ کیا جاوے تو اچھا ہے -

رانی - مہاراج! ظاہرا تو اچھا معلوم ہوتا ہے - اگر آپ کو اطمینان ہے تو شگن بھیجدو - مگر منتری کو پھر بھی تاکید کر دینا کہ پہلے اندرونی بیرونی کل حالات دریافت کر لیوے اور بعد میں شگن دیوے -

راجہ - پریہ جی! ایسا ہی ہوگا - آپ تسلی رکھیں -

یہ کہکر پردھان جی کے پاس آیا اور کہنے لگا - کہ صبح ایک لایق منتری کو انجنا دیوی کی تصویر دیکر رتن پور روانہ کر تاکید کر دو کہ اول سب باتوں میں تسلی کر لیوے بعد میں شگن دے آوے

باب تیسرا

پون بھی ایک ہونہار جوان ہے

بارش ہو کر تھمی تھی کہ ایک مسافر رتن پور کے بازار میں دکھائی دیا -

ناظرین! سفر کو جو سفر کہتے ہیں درست ہے - دیکھو! وہ گھوڑے پر ایک سفید ریش سفید پوش اسوار جاڑے کے مارے کیسے سکڑا بیٹھا ہے - معلوم ہوتا ہے دور دراز کے سفر سے آیا ہے - اگرچہ بہت سے گرم کپڑے زیب تن ہیں - اور دوشالا بھی اوڑھے ہے لیکن تاہم سردی محسوس کر رہی رہا ہے - اوف! سردی بھی حد درجہ کی ہے؟ پوہ - ماگھ کے دن ہیں جس پر بارش نے تو اور ہی غضب کر دیا ہوا ہے - ٹھنڈی ہوا چل کر اس کے جوبن کو اور بھی دوبالا کر رہی ہے - اس بوڑھے

१६

पर क्या मुनहसिर है जवान भी अभी बिस्तरों में लिहाफ ओढे दुबके पडे हैं।
आहहा! फिर मेघ बरसेगा। मगर बूढे ने भी घोडे को तेज कर दिया है। अभी दो चार कदम ही गया होगा कि एक स्याह कुत्ते ने जो जाडे की शिद्दत से रास्ते में ऐंठा पडा है सितम ही कर दिया ज्यों ही घोडा उसके करीब पहुँचा जान कनदनि की हालात में पाँव फैला सर को हरकत दी बस फिर क्या था घोडा डर कर भागा और बेबस हो गया और बूढा गर्दनी खाता हुआ जमीन पर आ रहा तमाम कपडे मसनूइ मेहंदी कीचड से तर हो गए अगरचे बहतेरे हाथ पाँव मारकर उठने की कोशिश कर रहा है मगर अफसोस वही दुशाला जो उसको सर्दी से बचा रहा था बदन के साथ ऐसा लिपटा है कि उठने की इजाजत नहीं देता। ये हालात देखकर बहुत से लोग जमा हो गए। अमीराना वजा उम्र का तकाजा और सर्दी की शिद्दत पर अफसोस कर रहे थे कि एक शख्स ने जो नामालूम कौन है आगे बढकर सबको पीछे हटा जल्दी से इस बूढे को उठाकर कहा

वोही शख्स "उफ! मंत्रीजी कहीं चोट तो नहीं आई?"

आहा! आहा! ये तो वही मंत्री है जो महेन्द्रपुर से अञ्जना देवी की निसबत को रवाना हुआ था। यूँही उसके कान मे ये आवाज पहुची बोला

मंत्री सर को उठाकर "आह! हरिजी बडी तकलीफ हुई"

हरिजी "महाराज आपकी उम्र अब इस लायक नहीं कि सफर की तकलीफ बरदाश्त कर सको। ये तो एक खास मौका बारिश का है जो जवानों को भी थरथरा रहा है। फिर आपको इसकी बर्दाश्त किस तरह हो?"

नाजरीन हरिजी इस मंत्री को अपने मकान ही लाया और बाद दो तीन पहर के जब वो अमन चैन से बैठा तो हरिजी ने कहा

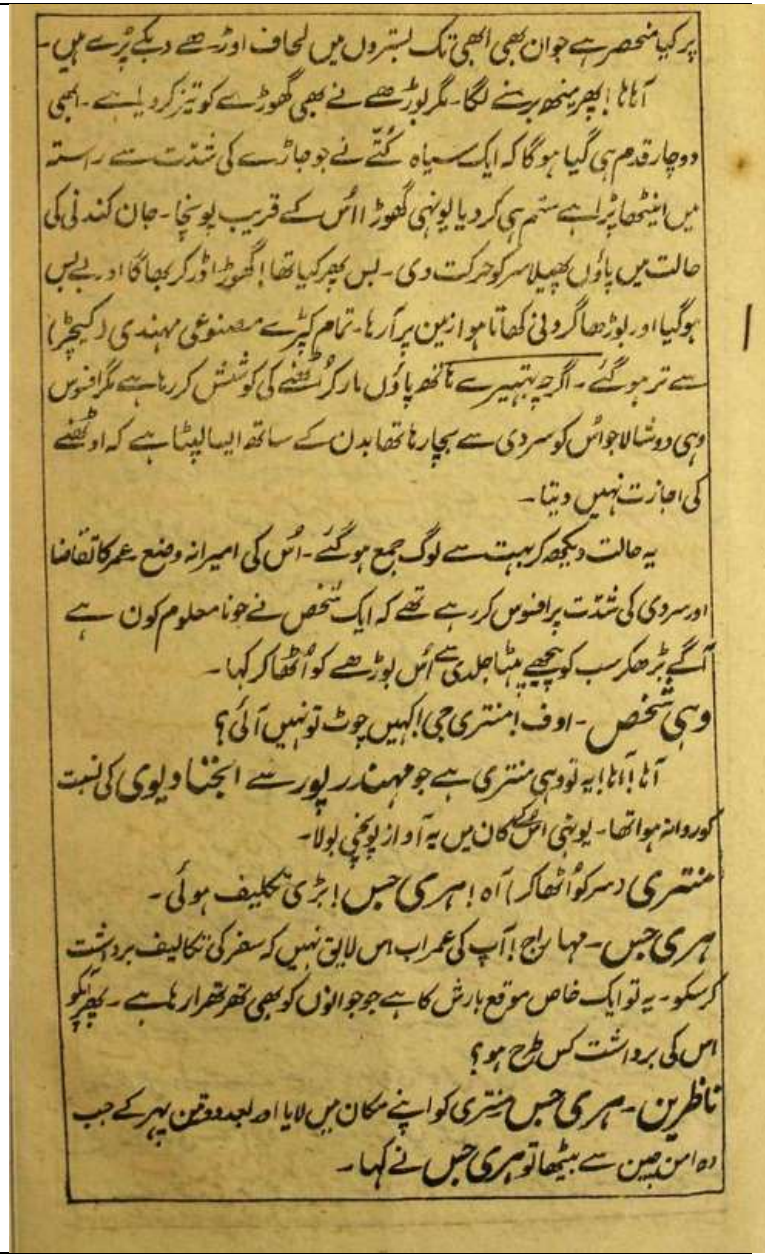

پر کیا منحصر ہے جوان بھی ابھی تک بستروں میں لحاف اوڑھے دبکے پڑے ہیں۔
آہاہا! پھر مینھ برسنے لگا۔ مگر بوڑھے نے بھی گھوڑے کو تیز کر دیا ہے۔ ابھی
دو چار قدم ہی گیا ہوگا کہ ایک سیاہ کُتّے نے جو جاڑے کی شدت سے راستہ
میں اینٹھا پڑا ہے ستم ہی کر دیا یونہی گھوڑا اُس کے قریب پونچا۔ جان کندنی کی
حالت میں پاؤں پھیلا سر کو حرکت دی۔ بس پھر کیا تھا! گھوڑا ڈر کر بھاگا اور بے بس
ہوگیا اور بوڑھا گردنی کھاتا ہوا زمین پر آرہا۔ تمام کپڑے مصنوعی مہندی (کیچڑ)
سے تر ہوگئے۔ اگرچہ بہتیرے ہاتھ پاؤں مار کر اُٹھنے کی کوشش کر رہا ہے مگر افسوس
وہی دوشالا جو اُس کو سردی سے بچا رہا تھا بدن کے ساتھ ایسا لپٹا ہے کہ اوٹھنے
کی اجازت نہیں دیتا۔
یہ حالت دیکھ کر بہت سے لوگ جمع ہوگئے۔ اُس کی امیرانہ وضع عمر کا تقاضا
اور سردی کی شدت پر افسوس کر رہے تھے کہ ایک شخص نے جو نامعلوم کون ہے
آگے بڑھکر سب کو پیچھے ہٹا جلدی سے اُس بوڑھے کو اُٹھا کر کہا۔
وہی شخص۔ اوف! منتری جی! کہیں چوٹ تو نہیں آئی؟
آہا! آہا! یہ تو وہی منتری ہے جو مہندر پور سے انجنا دیوی کی نسبت
کو روانہ ہوا تھا۔ یونہی اُس کے کان میں یہ آواز پونچی بولا۔
منتری (سر کو اُٹھا کر) آہ! ہری جس! بڑی تکلیف ہوئی۔
ہری جس۔ مہاراج! آپ کی عمر اب اس لایق نہیں کہ سفر کی تکالیف برداشت
کر سکو۔ یہ تو ایک خاص موقع بارش کا ہے جو جوانوں کو بھی تھرتھرا رہا ہے۔ پھر آپکو
اس کی برداشت کس طرح ہو؟
ناظرین۔ ہری جس منتری کو اپنے مکان میں لایا اور بعد دو تین پہر کے جب
وہ امن چین سے بیٹھا تو ہری جس نے کہا۔

१७

हरिजी “मंत्री जी वो कौन सा ऐसा जरूरी काम है जिसने आपको आने पर मजबूर किया?”

मंत्री “दोस्त क्या कहुँ! वो काम जल्दी का है”

हरिजी “क्या वो ऐसी कोई बात है जो जाहिर करने के लायक नहीं है?”

मंत्री “नहीं! तुमसे वो पोशिदा क्या है। हमारे राजा की लडकी जवान हो गई है और पवन जी पर सबकी निगाह है तो उनकी बावत मे कुछ दरयाफ्त करने आया हूँ”

हरिजी खुश होकर “आहा! पवन! वो तो एक निहायत होनहार नौजवन है जो हकीकत मे पवन[१] ही के समान है। जैसे हवा मनुष्य के प्राणो[२] का आधार है। इस तरह रआया के वास्ते पवन कुमार है। गरीब लोगो का वहीं दया भन्डार[३] है। परदेसी के लिए भोजन दाता और मददगार है। जो घोडे की सवारी मे देखो तो पूरा शहसवार है। जंग मे दुश्मन का सिर और उसकी तलवार है। जैसे तारामण्डल मे चाँद अपना जलवा दिखा उनको मात कर देता है वैसे ही पवन कुमार सभा मे बैठा सब के दिल को हर[४] लेता है। महाराज मेरी ताकत कहाँ जो उसकी सिफात (अच्छाईयां बखान) करूँ। ईश्वर उसकी उम्र दराज करें।”

हरिजी की बातें सुनकर मंत्री का दिल बाग बाग हो गया और तमाम तकलीफ अपनी कामयाबी को देखकर भूल गया। और सुबह होते ही राजा प्रह्लाद विद्याधर के पास गया। इत्तफाक से उस वक्त राजा अकेला बैठा था ज्यूँ ही उसको देखा बोला राजा “आओ मंत्री! बडी मुद्दत के बाद तुम्हारा आना हुआ। राजा महेन्द्र राय तो अच्छे हैं?”

मंत्री “महाराज सब आपकी इनायत है”

इतने मे पवन कुमार आया और आदाब बजा लाकर बैठ गया

१पवन याने हवा २इन्सान की जिन्दगी की जड है ३याने मेहरबानी का खजाना है ४हर याने जीत लेता है

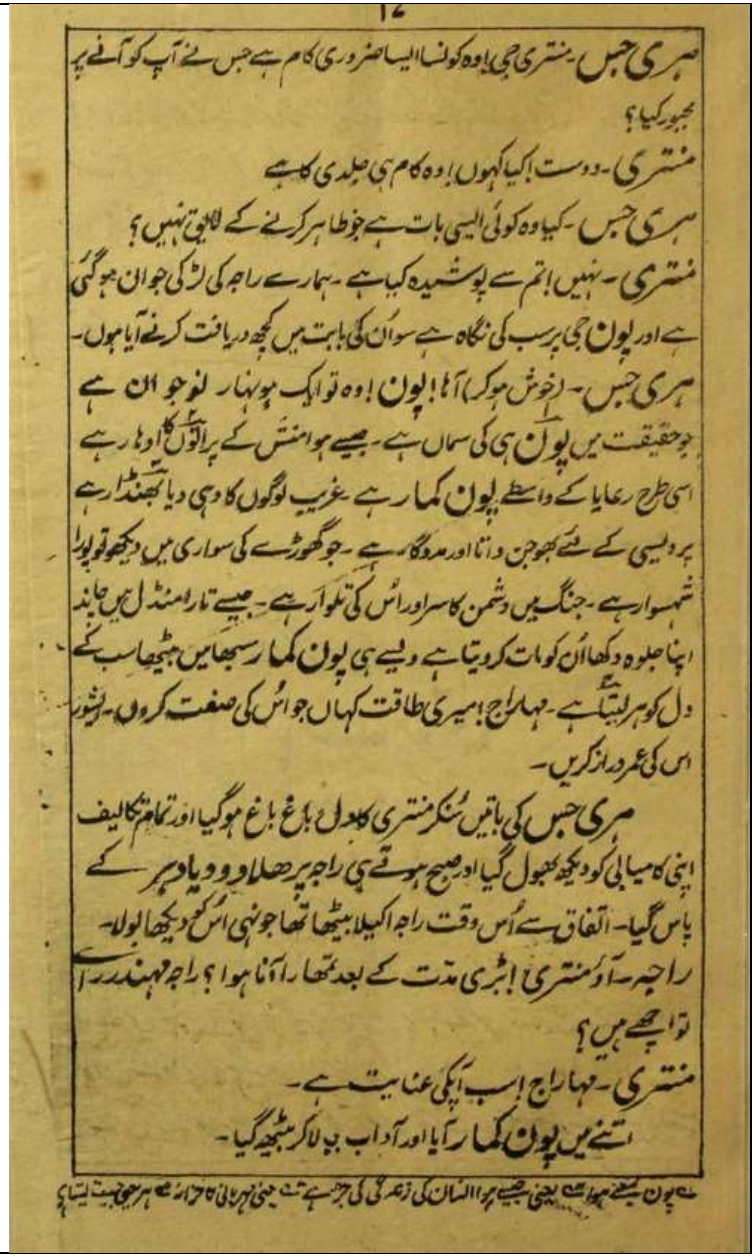

۱۷

ہری جس۔ منتری جی! وہ کونسا ایسا ضروری کام ہے جس نے آپ کو آنے پر مجبور کیا؟

منتری۔ دوست! کیا کہوں! وہ کام ہی جلدی کا ہے

ہری جس۔ کیا وہ کوئی ایسی بات ہے جو ظاہر کرنے کے لائق نہیں؟

منتری۔ نہیں! تم سے پوشیدہ کیا ہے۔ ہمارے راجہ کی لڑکی جوان ہو گئی ہے اور پون جی پر سب کی نگاہ ہے سو اُن کی بابت میں کچھ دریافت کرنے آیا ہوں۔

ہری جس۔ (خوش ہو کر) آہا! پون! وہ تو ایک ہونہار نوجوان ہے جو حقیقت میں پون ہی کی سماں ہے۔ جیسے ہوا منش کے پرانوں کا آدھار ہے اسی طرح رعایا کے واسطے پون کمار ہے۔ غریب لوگوں کا وہی دیا بھنڈار ہے پردیسی کے لئے بھوجن داتا اور مددگار ہے۔ جو گھوڑے کی سواری میں دیکھو تو پورا شہسوار ہے۔ جنگ میں دشمن کا سر اور اُس کی تلوار ہے۔ جیسے تارامنڈل میں چاند اپنا جلوہ دکھا اُن کو مات کر دیتا ہے ویسے ہی پون کمار سبھا میں بیٹھا سب کے دل کو ہر لیتا ہے۔ مہاراج! میری طاقت کہاں جو اُس کی صفت کروں۔ ایشور اس کی عمر دراز کریں۔

ہری جس کی باتیں سُنکر منتری کا دل باغ باغ ہو گیا اور تمام تکالیف اپنی کامیابی کو دیکھ بھول گیا اور صبح ہوتے ہی راجہ پرہلاد ودیادھر کے پاس گیا۔ اتفاق سے اُس وقت راجہ اکیلا بیٹھا تھا جونہی اُس کو دیکھا بولا۔ راجہ۔ آؤ منتری! بڑی مدت کے بعد تمہارا آنا ہوا؟ راجہ مہندر رائے تو اچھے ہیں؟

منتری۔ مہاراج! سب آپکی عنایت ہے۔

اتنے میں پون کمار آیا اور آداب بجا لا کر بیٹھ گیا۔

۱ پون یعنے ہوا ۲ یعنی جیسے ہوا انسان کی زندگی کی جڑ ہے ۳ یعنی مہربانی کا خزانہ ہے ۴ ہر جیت لیتا ہے

१८

राजा “मंत्री जी! चन्द रोज गुजरे है कि तुम्हारे राजा ने इसकी” पवन की तरफ इशारा करके “तस्वीर मंगाई थी। इसका क्या नतीजा निकला?”

मंत्री “महाराज! मुबारिक हो मैं उसी काम के वास्ते आया हूँ” ये कहा और अञ्जना देवी की तस्वीर पवन के हाथ मे दी।

पवन ने तस्वीर को देखते ही हाथ से रख दिया और शरम से मुँह नीचे कर लिया फिर क्या था चारो तरफ से मुबारिकबाद की धूम मच गई। और मंत्री ने एक तलाई थाल में जरो जवहरात केसर वगैहरा हद्दे रिवाज उस वक्त पवन जी की नजर किया जिसको उसने बसरोचशम मंजूर किया

इसी वक्त शादियाने बजने लगे और घर घर मंगलाचार होने लगा। तीन चार रोज तक बडी धूमधाम से खुशी मनाई गई। और बहुत सा दान गरीबो को दिया। और ब्याह का दिन मुकरर कर मंत्री को विदाई किया

बाब (अध्याय) चौथा

क्या ये हकीकत मे वही है

शाम का वक्त है कमरे मे शमादान जल रहा है और उसके नजदीक ही एक जर (सोने) निगार चौकी पर पवन जी एक तस्वीर हाथ मे लिए बडी सोच मे सर झुकाए बैठे हैं और रह रह कर उसको शमादान के नजदीक कर बडे गौर से देखने लग जाते हैं बाद मे नीचे रख मुतहइर हो सोच मे पड जाते हैं और कई तरह के ख्याल पैदा हो उसके दिल मे चुटकियाँ ले हैरान कर रहे हैं और दिल ही दिल मे यों कह रहे है “क्या ये तस्वीर जिसको देख रहा हूँ हकीकत मे उसी की है? ऐसी खूबसूरत

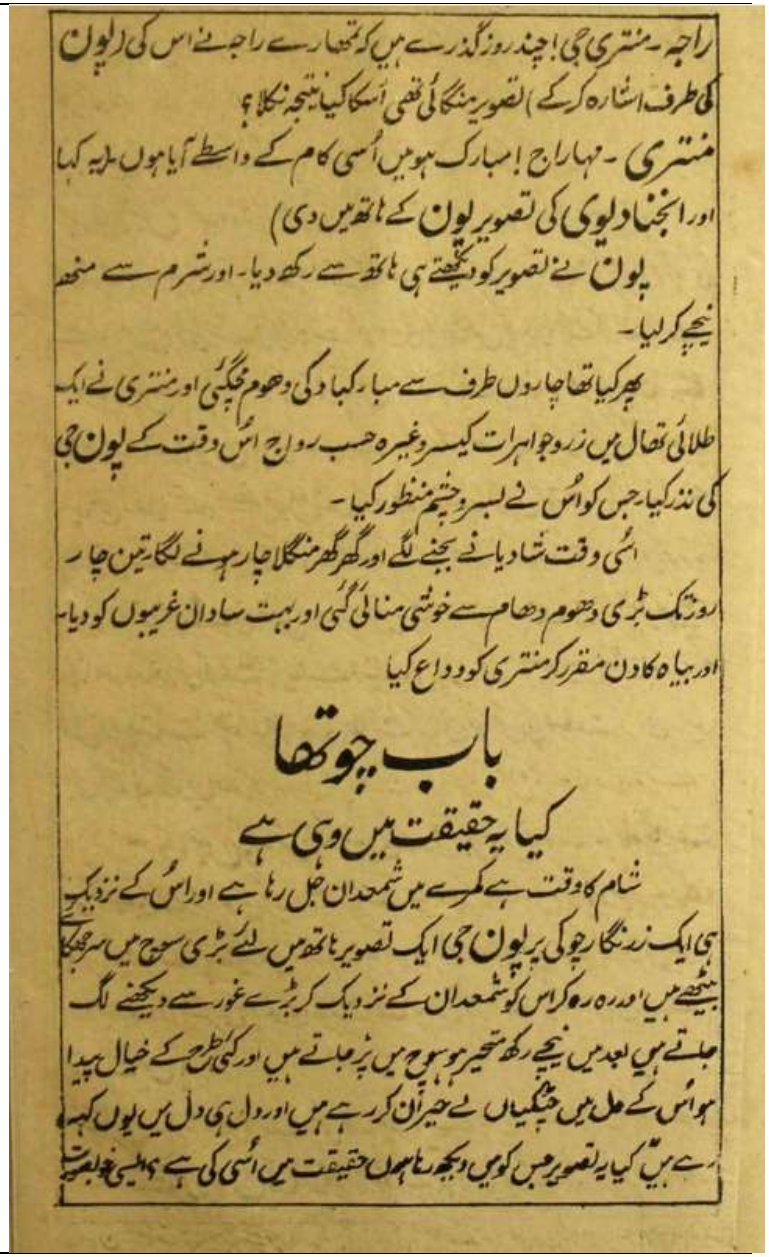

راجہ - منتری جی! چند روز گذرے ہیں کہ تمہارے راجہ نے اس کی (پون
کی طرف اشارہ کرکے) تصویر منگائی تھی اُسکا کیا نتیجہ نکلا؟
منتری - مہاراج! مبارک ہو میں اُسی کام کے واسطے آیا ہوں (یہ کہا
اور انجنا دیوی کی تصویر پون کے ہاتھ میں دی)
پون نے تصویر کو دیکھتے ہی ہاتھ سے رکھ دیا۔ اور شرم سے منھ
نیچے کرلیا۔
پھر کیا تھا چاروں طرف سے مبارکباد کی دھوم مچگئی اور منتری نے ایک
طلائی تھال میں زر و جواہرات کیسر وغیرہ حسب رواج اُس وقت کے پون جی
کی نذر کیا جس کو اُس نے بسر و چشم منظور کیا۔
اُسی وقت شادیانے بجنے لگے اور گھر گھر منگلاچار ہونے لگا۔ تین چار
روز تک بڑی دھوم دھام سے خوشی منائی گئی اور بہت سا دان غریبوں کو دیا
اور بیاہ کا دن مقرر کر منتری کو وداع کیا

باب چوتھا

کیا یہ حقیقت میں وہی ہے

شام کا وقت ہے کمرے میں شمعدان جل رہا ہے اور اُس کے نزدیک
ہی ایک زرنگار چوکی پر پون جی ایک تصویر ہاتھ میں لئے بڑی سوچ میں سر جھکائے
بیٹھے ہیں اور رہ رہ کر اس کو شمعدان کے نزدیک کر بڑے غور سے دیکھنے لگ
جاتے ہیں بعد میں نیچے رکھ متحیر ہو سوچ میں پڑ جاتے ہیں اور کئی طرح کے خیال پیدا
ہو اُس کے دل میں چٹکیاں لے حیران کر رہے ہیں اور دل ہی دل میں یوں کہہ
رہے ہیں "کیا یہ تصویر جس کو میں دیکھ رہا ہوں حقیقت میں اُسی کی ہے؟ ایسی خوبصورت

१९

स्त्री तो पहले इस दीप मे कोई नजर से नहीं गुजरी" कभी सोचता मैं कैसा खुश नसीब हूँ ऐसी हसीन औरत से मेरी शादी होगी

मगर जब तस्वीर की तरफ ध्यान आता तो घण्टो इसी वहम में रहता कि पहले तो कभी इस शक्ल की औरत का जिक्र नहीं सुना और न ही देखने मे आई है जरूर किसी अप्सरा ने जन्म लिया है। या मुसव्विर (कलाकार) का ख्याल तस्वीर खींचते वक्त किसी और तरफ हो गया है। फिर कहता नहीं! नहीं! ऐसा भी होना नानुमकिन है। क्योंकि महेन्द्रपुर का मुसव्विर बडा होशियार है वो हर्गिज ऐसी गलती न करता और अगर करता तो फौरन दुरुस्त कर लेता गर्ज इस तरह के वहमी ख्यालात पैदा हो दिल को बेचैन कर रहे थे। आखिर जिनका नतीजा ये हुआ कि महेन्द्रपुर जाने का मुसम्म इरादा कर पलंग पर लेट गया और निहायत बेचैनी से रात बसर की और सुबह होते ही मंत्री को बुला कर कहने लगा

पवन "मंत्री जी! एक जरूरी अमरदा पेश है इसलिए मैं आज ही महेन्द्रपुर जाना चाहता हूँ। और तुम भी हमारे साथ ही चलो"

मंत्री "बहुत अच्छा आलीजहाँ!"

ये कहा और सफर का सामान दुरुस्त कर दोनो चल पडे। दूसरे रोज शाम होते ही महेन्द्रपुर पहुँच गए। और बडी ऐहतियात कि साथ नगर की सैर करने लगे ताकि कोई पहचान न लेवे। और बहुत कोशिश की गई कि अञ्जना देवी को देख अपने बेकरार दिल को तसल्ली दे। मगर सिवाय मायूसी के कुछ हासिल न हुआ। जब तीन रोज इसी सरगनदाजी और परेशानी मे गुजरे तो मंत्री से कहने लगे

पवन "मंत्री! अफसोस दिल के अरमान दिल मे रहे। जिसकी खातिर इस कदर तकलीफ उठाई और दूर दराज का सफर इख्तियार किया उसके देखने की तो कोई सूरत

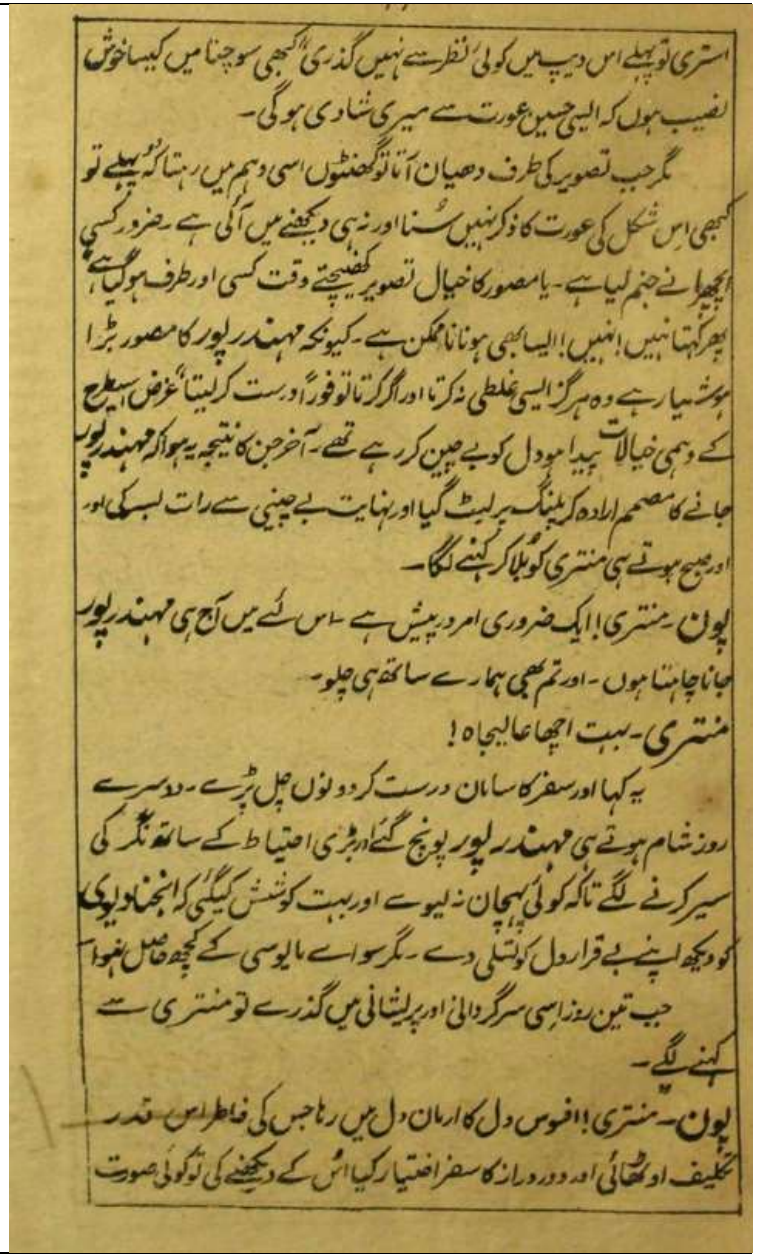
استری تو پہلے اس دیپ میں کوئی نظر سے نہیں گذری" کبھی سوچتا میں کیسا خوش
نصیب ہوں کہ ایسی حسین عورت سے میری شادی ہوگی۔
مگر جب تصویر کی طرف دھیان آتا تو گھنٹوں اسی وہم میں رہتا کہ پہلے تو
کبھی اس شکل کی عورت کا ذکر نہیں سُنا اور نہ ہی دیکھنے میں آئی ہے۔ ضرور کسی
اپچھرا نے جنم لیا ہے۔ یا مصور کا خیال تصویر کھینچتے وقت کسی اور طرف ہو گیا ہے
پھر کہتا نہیں! نہیں! ایسا بھی ہونا ناممکن ہے۔ کیونکہ مہندر پور کا مصور بڑا
ہوشیار ہے وہ ہرگز ایسی غلطی نہ کرتا اور اگر کرتا تو فوراً درست کر لیتا" غرض اسطرح
کے وہمی خیالات پیدا ہو دل کو بے چین کر رہے تھے۔ آخر جن کا نتیجہ یہ ہوا کہ مہندر پور
جانے کا مصمم ارادہ کر پلنگ پر لیٹ گیا اور نہایت بے چینی سے رات بسر کی اور
اور صبح ہوتے ہی منتری کو بلا کر کہنے لگا۔
پون۔ منتری! ایک ضروری امر درپیش ہے۔ اس لئے میں آج ہی مہندر پور
جانا چاہتا ہوں۔ اور تم بھی ہمارے ساتھ ہی چلو۔
منتری۔ بہت اچھا عالیجاہ!
یہ کہا اور سفر کا سامان درست کر دونوں چل پڑے۔ دوسرے
روز شام ہوتے ہی مہندر پور پونچ گئے اور بڑی احتیاط کے ساتھ نگر کی
سیر کرنے لگے تاکہ کوئی پہچان نہ لیوے اور بہت کوشش کیگئی کہ انجنا دیوی
کو دیکھ اپنے بے قرار دل کو تسلی دے۔ مگر سوائے مایوسی کے کچھ حاصل نہوا
جب تین روز اسی سرگردانی اور پریشانی میں گذرے تو منتری سے
کہنے لگے۔
پون۔ منتری! افسوس دل کا ارمان دل میں رہا جس کی خاطر اس قدر
تکلیف اوٹھائی اور دور دراز کا سفر اختیار کیا اُس کے دیکھنے کی تو کوئی صورت

२०

नजर नहीं आती। मैं नहीं जानता मेरे दिल को क्या हो गया सै जो इस तस्वीर को देखकर दीवाना सा बन गया हूँ मुझको तो औरतो से सख्त नफरत थी मगर इस हुस्न की देवी को देखकर मेरे तमामो सफ खाक में मिल गए। जो बा आकबत अन्देशो की तरह दर बदर फिरता हूँ। आह! कोई देख लेगा तो क्या कहेगा। हाय! शर्म हया को भी तो बालाए ताक रख दिया। मंत्री! तुम से तो कोई बात पोशीदा नहीं" तस्वीर दिखा कर "जरा इस को देखकर तुम ही इन्साफ करना कि पहले कभी ऐसी सुन्दरी इस वानर दीप मे देखी है"

ये कहा और उसके मुँह की तरफ देखने लगा। थोडी देर खामोश रहने के बाद खुद ही "मेरी बेचैनी कोई बेवजह नहीं। वो कौन है! जो इसके हुस्न की दाद न देगा? जब तक मैं इसको देख नहीं लेता तसल्ली नहीं होती।"

मंत्री "जो कुछ आपने फरमाया दुरुस्त है। अगर दुनिया मे कोई चीज बेनजीर है तो यही है। वरना हमें सिफत मोसूफ होने में तो कोई शक नहीं। मगर आपका यहा ज्यादा देर ठहरना भी वाजिब नहीं। ऐसा ना हो राज फाश हो जावे। आपकी बेचैनी बर अकस नतीजा पैदा करे और तमाम आरजुएं खाक मे मिल जावे।"

पवन कुछ देर सोचकर "जो कुछ आपने कहा दुरुस्त है" आह सर्द खींचकर "अच्छा महरूम ही जाना पडेगा। कल चल देंगे!"

नजरीन! शाम के वक्त पवन जब मंत्री को साथ लेकर शहर को निकला तो इतफाक से उसका गुजर उस मकान के नीचे से हुआ जो राजा के महल की दिवार बदिवार पर मशरिक की तरफ वाकहा था

इस आलीशान मकान की दिवारों पर कारीगरों ने गजिस्ता बहादुरो की तस्वीरें और बेल बूटे इस खूबी के साथ नक्श किए हुए थे कि देखने

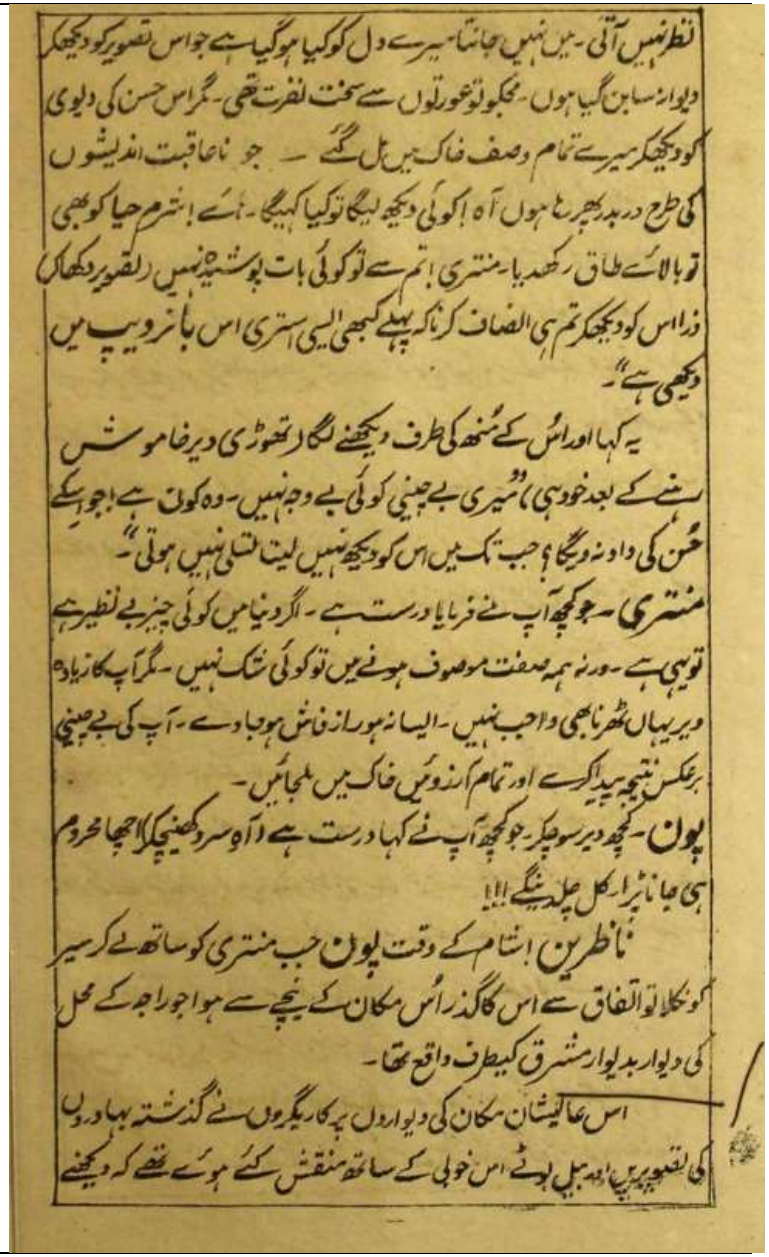
نظر نہیں آتی۔ میں نہیں جانتا میرے دل کو کیا ہوگیا ہے جو اس تصویر کو دیکھکر
دیوانہ سا بن گیا ہوں۔ مجکو تو عورتوں سے سخت نفرت تھی۔ مگر اس حسن کی دیوی
کو دیکھکر میرے تمام وصف خاک میں مل گئے ۔ جو ناعاقبت اندیشوں
کی طرح دربدر پھرتا ہوں آہ! کوئی دیکھ لیگا تو کیا کہیگا۔ ہائے! شرم حیا کو بھی
تو بالائے طاق رکھدیا۔ منتری! تم سے تو کوئی بات پوشیدہ نہیں (تصویر دکھاکر)
ذرا اس کو دیکھکر تم ہی انصاف کرنا کہ پہلے کبھی ایسی استری اس بانر دیپ میں
دیکھی ہے"۔

یہ کہا اور اُس کے مُنھ کی طرف دیکھنے لگا (تھوڑی دیر خاموش
رہنے کے بعد خود ہی) "میری بے چینی کوئی بے وجہ نہیں۔ وہ کون ہے! جو اسکے
حُسن کی داد نہ دیگا؟ جب تک میں اس کو دیکھ نہیں لیتا تسلی نہیں ہوتی"۔

منتری۔ جو کچھ آپ نے فرمایا درست ہے۔ اگر دنیا میں کوئی چیز بے نظیر ہے
تو یہی ہے۔ ورنہ ہمہ صفت موصوف ہونے میں تو کوئی شک نہیں۔ مگر آپ کا زیادہ
دیر یہاں ٹھہرنا بھی واجب نہیں۔ ایسا نہ ہو راز فاش ہوجاوے۔ آپ کی بے چینی
برعکس نتیجہ پیدا کرے اور تمام آرزوئیں خاک میں ملجائیں۔

پون۔ کچھ دیر سوچکر۔ جو کچھ آپ نے کہا درست ہے (آہ سرد کھینچکر) اچھا محروم
ہی جانا پڑا۔ کل چلینگے!!!

ناظرین! شام کے وقت پون جب منتری کو ساتھ لے کر سیر
کو نکلا تو اتفاق سے اس کا گذر اُس مکان کے نیچے سے ہوا جو راجہ کے محل
کی دیوار بدیوار مشرق کیطرف واقع تھا۔

اس عالیشان مکان کی دیواروں پر کاریگروں نے گذشتہ بہادروں
کی تصویریں اور بیل بوٹے اس خوبی کے ساتھ منقش کئے ہوئے تھے کہ دیکھنے

वाला चाहें कितनी देर क्यों न देखे मगर सैर (तृप्त) न होता। आखिर फिर आने की आरजू रख वहाँ से वापस जाता।

जब पवन की नजर इन तस्वीरों पर पडी वहीं खडा हो गया और बहुत देर तक देखता रहा। आखिर दरयाफ्त करने से मालूम हुआ कि ये अञ्जना देवी का महल है।

आहा! इस वक्त जो खुशी पवन को नसीब हुई इस का हाल तहरीर करने से कलम आजिज है। फौरन चेहरे की रंगत बदल गई दिलमें ख्याल पैदा हुआ कि आज किसी न किसी तरह उसको जरूर देखूँगा। और इनही ख्यालों को लिए इस दिवार की तरफ देख रहा था कि चन्द लडकियों की आवाज सुनाई दी। जब गौर से सुना तो मालूम हुआ कि कोई कह रही है कि विदुपर्व बडा आलिम और खूबसूरत जवान है। वो औरत बडी खुशकिस्मत होगी जिसको ऐसा खाविन्द मिलेगा। दूसरी बोली "ऐ सखी! उम्र का भी तो ख्याल है क्या पवन वैसा नहीं?" तीसरी जो खुश तबह थी बडी नजाकत से बोली "अमृत का एक घूंट अच्छा है बनिस्पत जहर के समुन्द्र के"

आह! इस आखिर के फिकरे ने तो गजब ही कर दिया। ज्योंहि पवन के कानों से ये आवाज पहुँची तमाम बदन मे सन्नाटा पड गया। फौरन वो खुशी के ख्यालात गैजो गजब मे तबदील हो गए। उनही आँखो से जो खुशी खुशी किसी की जुस्तजू में इधर उधर फिर रही थी गुस्से के मारे शोले निकलने लगे और बदन थर थर कांपने लगा। तलवार म्यान से निकाल मंत्री से बोला

पवन "मंत्री! कुछ सुना राजदुलारी ने क्या कहा?"

मंत्री "महाराज! हाँ! किसी ने कहा है कि अमृत का एक घूंट ही अच्छा है बनिस्पत जहर के समुन्द्र के मगर मैं नहीं कह सकता कि किसने कहा

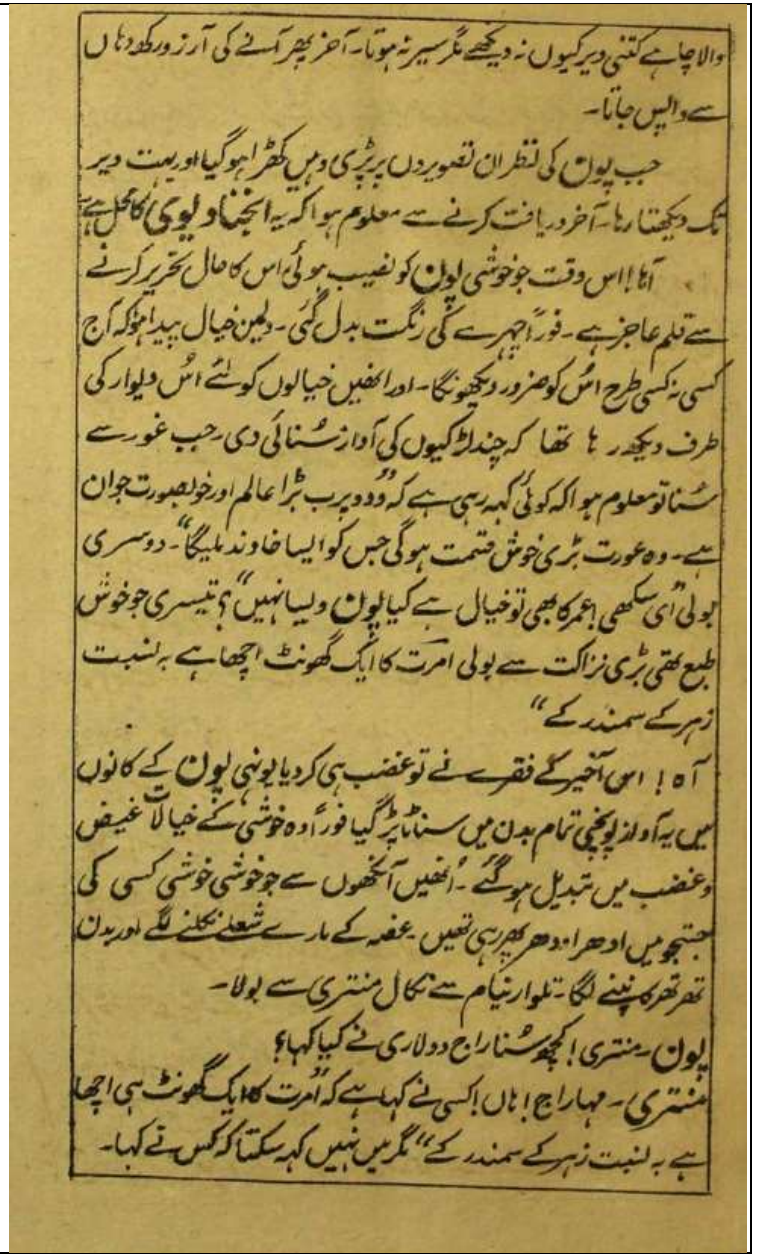

والا چاہے کتنی دیر کیوں نہ دیکھے مگر سیر نہ ہوتا۔ آخر پھر آنے کی آرزو رکھ وہاں سے واپس جاتا۔

جب پون کی نظر ان تصویروں پر پڑی وہیں کھڑا ہو گیا اور بہت دیر تک دیکھتا رہا۔ آخر دریافت کرنے سے معلوم ہوا کہ یہ انجنا دیوی کا محل ہے۔

آہا! اس وقت جو خوشی پون کو نصیب ہوئی اس کا حال تحریر کرنے سے قلم عاجز ہے۔ فوراً چہرے کی رنگت بدل گئی۔ دلمیں خیال پیدا ہوا کہ آج کسی نہ کسی طرح اُس کو ضرور دیکھونگا۔ اور انھیں خیالوں کو لئے اُس دیوار کی طرف دیکھ رہا تھا کہ چند لڑکیوں کی آواز سُنائی دی۔ جب غور سے سُنا تو معلوم ہوا کہ کوئی کہہ رہی ہے کہ "وہ دیوتا بڑا عالم اور خوبصورت جوان ہے۔ وہ عورت بڑی خوش قسمت ہوگی جس کو ایسا خاوند ملیگا"۔ دوسری بولی "ای سکھی! عمر کا بھی تو خیال ہے کیا پون ویسا نہیں"؟ تیسری جو خوش طبع تھی بڑی نزاکت سے بولی "امرت کا ایک گھونٹ اچھا ہے بہ نسبت زہر کے سمندر کے"

آہ! اس آخیر کے فقرے نے تو غضب ہی کر دیا یونہی پون کے کانوں میں یہ آواز پہنچی تمام بدن میں سناٹا پڑ گیا فوراً وہ خوشی کے خیالات غیض و غضب میں تبدیل ہو گئے۔ انھیں آنکھوں سے جو خوشی خوشی کسی کی جستجو میں ادھر ادھر پھر رہی تھیں۔ غصہ کے مارے شعلے نکلنے لگے اور بدن تھر تھر کانپنے لگا۔ تلوار نیام سے نکال منتری سے بولا۔

پون۔ منتری! کچھ سُنا راج دولاری نے کیا کہا؟

منتری۔ مہاراج! ہاں! کسی نے کہا ہے کہ "امرت کا ایک گھونٹ ہی اچھا ہے بہ نسبت زہر کے سمندر کے" مگر میں نہیں کہہ سکتا کہ کس نے کہا۔

और कौन थी? ”

पवन “क्या तुम तमीज नहीं कर सकते कि जो पहले मुख्तलिफ किस्म की आवाजें सुनाई दी हैं वह ऐसी सलिस न थी जैसा कि आखिर मे एक बडी दिलचस्पी और नजाकत के साथ फिकरा कहा गया है। दूसरी को क्या वास्ता जो इस किस्म की गुफतगू करे। इससे तो साफ मालूम होता है कि ये राजदुलारी ही थी जिसने अपने हुस्न कि गरूर मे आकर मुझको जहर के समुन्द्र से मिसाल दी है” तलवार को दिखा कर “इसी से इसका खात्मा किए बगैर कभी नहीं छोडूँगा। वो क्या याद करेगी कि इस तरह मैंने एक बहादुर की पसगीबत की और उसका अजर न मिला!”

मंत्री हाथ पकडकर “आह! ऐसा गजब न करो। शान्ति और धीरज से काम लो। जल्दी का नतिजा खराब होता है मेरी समझ में कुछ नहीं आता कि आपने क्योंकर यकीन कर लिया कि वो अञ्जना देवी ही की आवाज थी या किसी और की। क्योंकि आप उसकी आवाज की शिनाख्त ही नहीं कर सकते नाहक एक बेगुनाह के खून से अपने हाथ न रंगो!”

पवन कांपता हुआ “मंत्री! तुम क्या ख्याल करते हो कि मैं नादान हूँ। नहीं! मैंने अपनी तसल्ली बाखूबी कर ली है कि ये अञ्जना ही थी। भला ख्याल तो करो जब अभी से उसके ये ख्याल हैं तो आइन्दा कब बेहतरी की उम्मीद कर सकते हैं। इसमे कोई शक नहीं कि वो एक आली दरजे की हसीन है लेकिन इतना भी गरूर कया कि दूसरे को हिकारत की नजर से देखे!”

मंत्री कुछ देर सोचकर “अव्वल तो यकीनन कह ही नहीं सकते कि ये किसकी आवाज थी। और अगर बा अजरज ये मान भी लिया जावे जैसा कि आपका ख्याल है तो भी इसकी जिन्दगी का खातमा करना आप जैसे धर्मात्मा को जेबा नहीं और इन्सानियत से भी

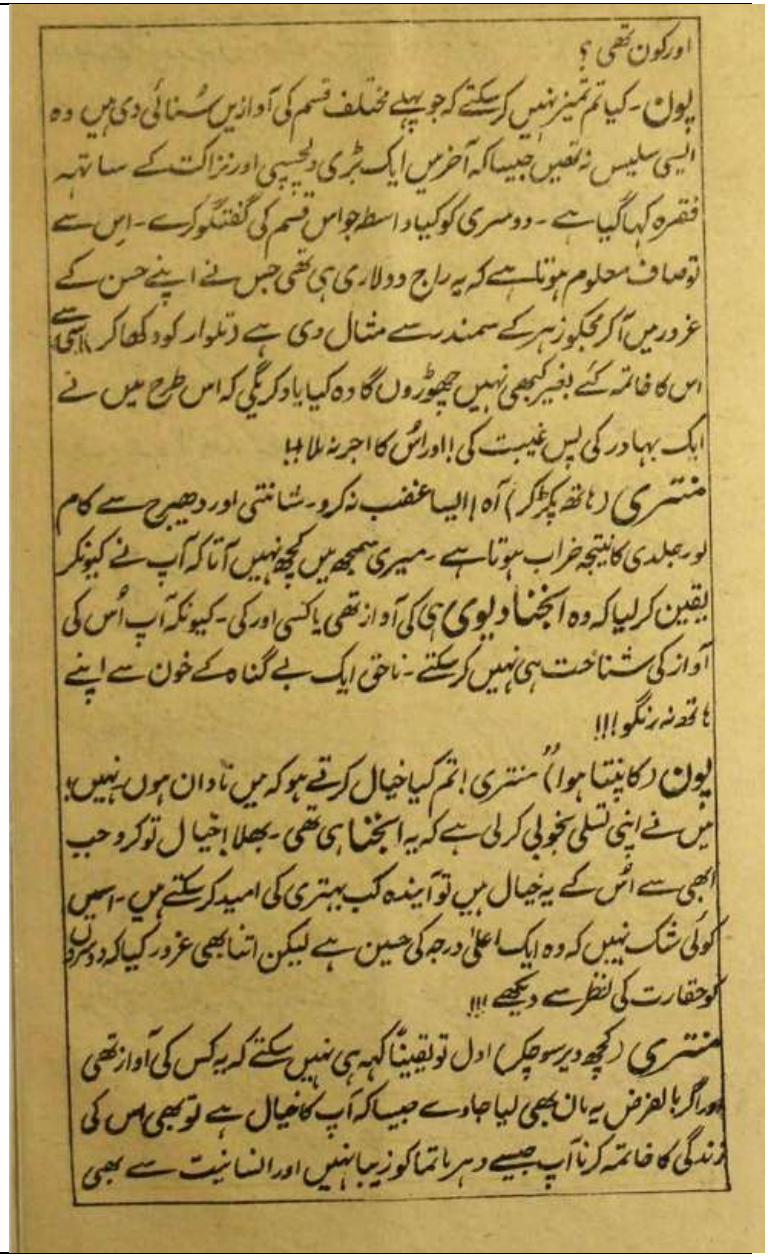

اور کون تھی ؟

پون - کیا تم تمیز نہیں کر سکتے کہ جو پہلے مختلف قسم کی آوازیں سُنائی دی ہیں وہ ایسی سلیس نہ تھیں جیسا کہ آخر میں ایک بڑی دلچسپی اور نزاکت کے ساتھ فقرہ کہا گیا ہے - دوسری کو کیا واسطہ جو اس قسم کی گفتگو کرے - اس سے تو صاف معلوم ہوتا ہے کہ یہ راج دولاری ہی تھی جس نے اپنے حسن کے غرور میں آکر مجکو زہر کے سمندر سے مثال دی ہے (تلوار کو دکھا کر) اسی سے اس کا خاتمہ کئے بغیر کبھی نہیں چھوڑوں گا وہ کیا یاد کریگی کہ اس طرح میں نے ایک بہادر کی پس غیبت کی! اور اُس کا اجر نہ ملا!!

منتری (ہاتھ پکڑکر) آہ! ایسا غضب نہ کرو - شانتی اور دھیرج سے کام لو - جلدی کا نتیجہ خراب ہوتا ہے - میری سمجھ میں کچھ نہیں آتا کہ آپ نے کیونکر یقین کر لیا کہ وہ انجنا دیوی ہی کی آواز تھی یا کسی اور کی - کیونکہ آپ اُس کی آواز کی شناخت ہی نہیں کر سکتے - ناحق ایک بے گناہ کے خون سے اپنے ہاتھ نہ رنگو!!!

پون (کانپتا ہوا) منتری! تم کیا خیال کرتے ہو کہ میں نادان ہوں نہیں! میں نے اپنی تسلی بخوبی کر لی ہے کہ یہ انجنا ہی تھی - بھلا! خیال تو کرو جب ابھی سے اُس کے یہ خیال ہیں تو آیندہ کب بہتری کی امید کر سکتے ہیں - اسمیں کوئی شک نہیں کہ وہ ایک اعلیٰ درجہ کی حسین ہے لیکن اتنا بھی غرور کیا کہ دوسروں کو حقارت کی نظر سے دیکھے!!!

منتری (کچھ دیر سوچکر) اول تو یقیناً کہہ ہی نہیں سکتے کہ یہ کس کی آواز تھی اور اگر بالفرض یہ مان بھی لیا جاوے جیسا کہ آپ کا خیال ہے تو بھی اس کی زندگی کا خاتمہ کرنا آپ جیسے دھرماتما کو زیبا نہیں اور انسانیت سے بھی

२३

बाईद है कि आप इस बात पर गुनाह अजीम के मरतकब हों।”

पवन नीचे सर झुकाकर सोचता रहा और दिल ही दिल मे ये प्रतिज्ञा कर कि ब्याह से बारह बरस तक इससे हमकलाम न होऊँगा। बोला “अच्छा! सर्द सांस ली और रत्नपुर को रवाना हुआ। मुसन्निफ

करम बडे बलवान हैं किए न वृथा जा बोए पेड जो आक के आम कहाँ से खा

बाज नुकताचीन ऐतराज करेंगे कि पवन ने बावजूद इस कदर दाना और आलिम होने और बगैर तहकीकात करने असलियत के क्यों ऐसी सख्त प्रतिज्ञा की?

नाजरीन! ये किसी के इख्तियार की बात नहीं। ये सब अपने अमालों का नतीजा है। जब तकलीफ के दिन आते हैं एक अच्छी बात भी बुरी मालूम होती है। बडे बडे चातुर भी चतुराई भूल जाते हैं। एक क्या हजारों मिसालें मौजूद हैं। थोडी देर गौर करने से आपको मालूम होगा के बडे बडे आलिमों और फाजिलों ने इस तकदीर के आगे सिर झुकाया। बहतेरी कोशिश की मगर आखिर कुछ बन न आया। इस पर एक हिन्दी शायर ने कहा है

समय करे नर क्या करे समय बडा बलवान

भयला डोला लुटयाँ वही अर्जुन वोही बाण

मेरा ख्याल था कि महाभारत के जमाने के एक लायक और आलिम राजा की मिसाल पेश कर नाजरीन की तसल्ली करता। क्योंकि ये कोई नई बात नहीं दिनरात हम लोगो को ऐसे वाक्यात देखने का मौका मिलता रहता है। इस वास्ते मुनासिब ध्यान न किया कि आप लोगों का वक्त जाया हो।

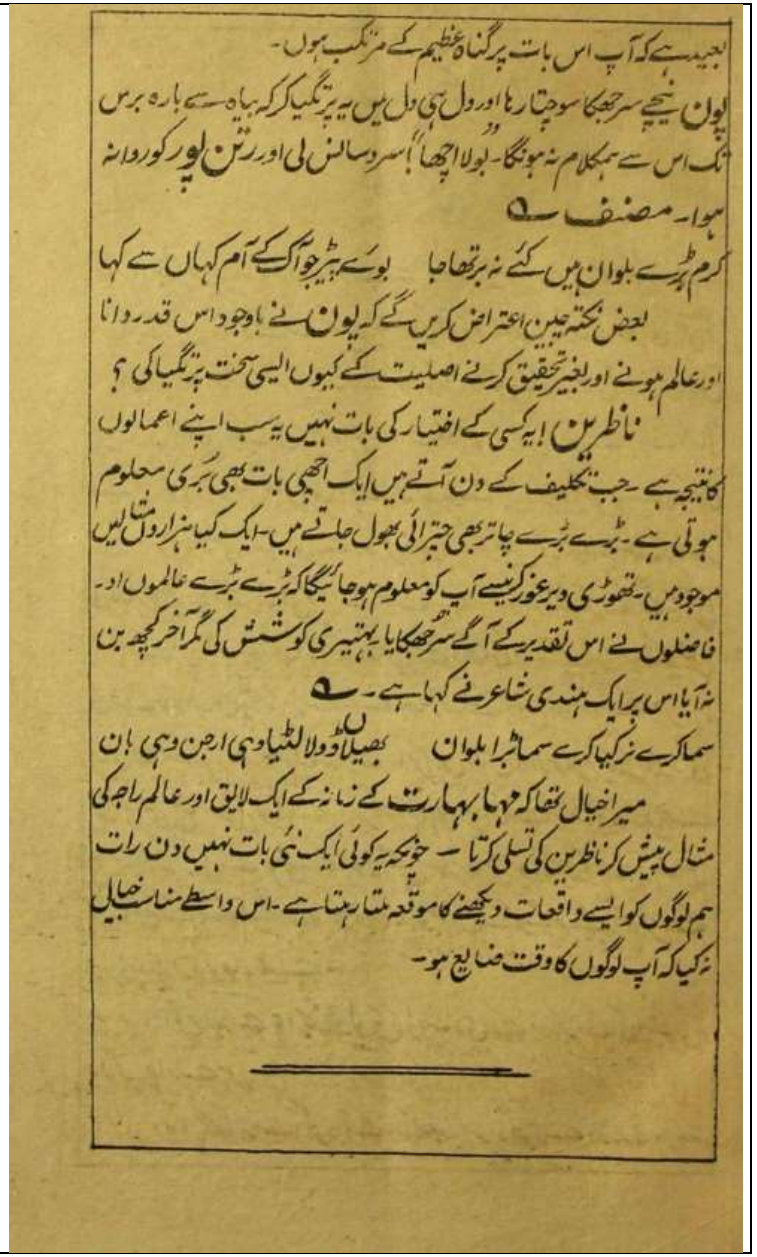

بعید ہے کہ آپ اس بات پر گناہ عظیم کے مرتکب ہوں۔

پون نیچے سر جھکا سوچتا رہا اور دل ہی دل میں یہ پرتگیا کر کہ بیاہ سے بارہ برس تک اس سے ہمکلام نہ ہونگا۔ بولا اچھا! سرد سانس لی اور رتن پور کو روانہ ہوا۔ مصنف ؎

کرم بڑے بلوان ہیں کئے نہ برتھا جا بوئے پیڑ جو آک کے آم کہاں سے کھا

بعض نکتہ چین اعتراض کریں گے کہ پون نے باوجود اس قدر دانا اور عالم ہونے اور بغیر تحقیق کرنے اصلیت کے کیوں ایسی سخت پرتگیا کی؟

ناظرین! یہ کسی کے اختیار کی بات نہیں یہ سب اپنے اعمالوں کا نتیجہ ہے۔ جب تکلیف کے دن آتے ہیں ایک اچھی بات بھی بری معلوم ہوتی ہے۔ بڑے بڑے چاتر بھی چترائی بھول جاتے ہیں۔ ایک کیا ہزاروں مثالیں موجود ہیں۔ تھوڑی دیر غور کرنے سے آپ کو معلوم ہو جائیگا کہ بڑے بڑے عالموں اور فاضلوں نے اس تقدیر کے آگے سر جھکایا بہتیری کوشش کی مگر آخر کچھ بن نہ آیا اس پر ایک ہندی شاعر نے کہا ہے۔ ؎

سماکرے نر کیا کرے سماٹرا بلوان بھیلاں لوٹیا وہی ارجن وہی بان

میرا خیال تھا کہ مہابھارت کے زمانہ کے ایک لایق اور عالم راجہ کی مثال پیش کر ناظرین کی تسلی کرتا — چونکہ یہ کوئی ایک نئی بات نہیں دن رات ہم لوگوں کو ایسے واقعات دیکھنے کا موقعہ ملتا رہتا ہے۔ اس واسطے مناسب خیال نہ کیا کہ آپ لوگوں کا وقت ضایع ہو۔

२४

बाब (अध्याय) पाँचवां

शादी

शाम का वक्त है। आफताब के गरूब (अस्त) होने से तमाम जहान मे तारिकी छा गई है। वही गुलजार जिसके देखने से तखरिह तबह होती थी और ईश्वर की कुदरत नजर आती थी कि किस तरह उसने एक सनबर पौधे से खुशनुमा दिल लुभाने वाले रंग बिरङ्गे फूल पैदा कर अपनी हस्ती साबित की है। इस वक्त वो भी डरावनी शक्ल बने हुए दिखाई देते हैं। कोई जगह ऐसी नहीं जहाँ अंधेरे ने अपना दखल न किया हो। हाँ आबादी में मसनुई रोशनी नजर आ रही है। वो भी कहीं ज्यादा कहीं कम लेकिन महेन्द्रपुर की बहार जो इस वक्त दिखाई देती है अजीब है। जिधर देखे चिरागाँ चिराग नजर आ रहे हैं। जा बजा झाड और फानूस लटके दिखाई देते हैं। राजा के महल की तरफ तो ध्यान किजिए बडे बडे झाड मुख्तलिफ वजह और शक्ल के जिन पर बडी नफासत से काम किया गया है रोशन हैं। इन का उजाला देखकर कुदरती रोशनी भी नीची मालूम होती है। घर घर मंगलाचार हो रहा है। शादियाने बज रहे हैं। छोटा बडा मारे खुशी के फूला नहीं समाता। अमीरो जरा उम्दा उमदा पोशाकें जेब तन के आगे आगे और तमाशाईयों का हुजूम उनके पीछे पीछे शहर के जुनूबी दरवाजे को जा रहा है

अहा! आज क्या है? अञ्जना देवी की शादी है। और बरात की पेशवाई को ये लोग जा रहे हैं।

वो देखिए बरात आ गई! आगे आगे चन्द सवार घोडे दौडाते रास्ता

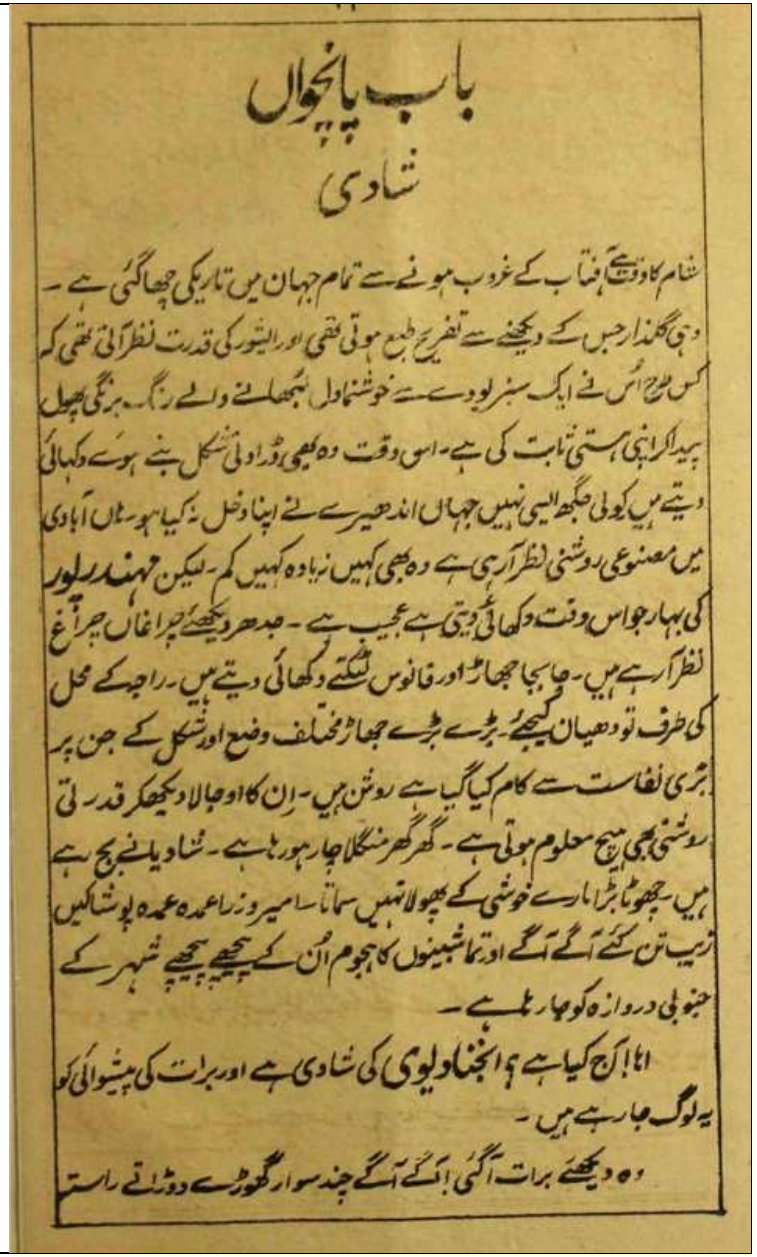

باب پانچواں

شادی

شام کا وقت ہے آفتاب کے غروب ہونے سے تمام جہان میں تاریکی چھا گئی ہے۔ وہی گلزار جس کے دیکھنے سے تفریح طبع ہوتی تھی اور ایشور کی قدرت نظر آتی تھی کہ کس طرح اُس نے ایک سبز پودے سے خوشنما دل لبھانے والے رنگ برنگی پھول پیدا کر اپنی ہستی ثابت کی ہے۔ اس وقت وہ بھی ڈراونی شکل بنے ہوئے دکھائی دیتے ہیں کوئی جگہ ایسی نہیں جہاں اندھیرے نے اپنا دخل نہ کیا ہو۔ ہاں آبادی میں مصنوعی روشنی نظر آرہی ہے وہ بھی کہیں زیادہ کہیں کم۔ لیکن مہندر پور کی بہار جو اس وقت دکھائی دیتی ہے عجیب ہے۔ جدھر دیکھئے چراغاں چراغ نظر آرہے ہیں۔ جا بجا جھاڑ اور فانوس لٹکتے دکھائی دیتے ہیں۔ راجہ کے محل کی طرف تو دھیان کیجئے۔ بڑے بڑے جھاڑ مختلف وضع اور شکل کے جن پر بڑی نفاست سے کام کیا گیا ہے روشن ہیں۔ ان کا اوجالا دیکھکر قدرتی روشنی بھی ہیچ معلوم ہوتی ہے۔ گھر گھر منگلاچار ہو رہا ہے۔ شادیانے بج رہے ہیں۔ چھوٹا بڑا مارے خوشی کے پھولا نہیں سماتا۔ امیر و زر اعمدہ عمدہ پوشاکیں زیب تن کئے آگے آگے اور تماشبینوں کا ہجوم اُن کے پیچھے پیچھے شہر کے جنوبی دروازہ کو جا رہا ہے۔

اہا! آج کیا ہے؟ انجنا دیوی کی شادی ہے اور برات کی پیشوائی کو یہ لوگ جا رہے ہیں۔

وہ دیکھئے برات آگئی! آگے آگے چند سوار گھوڑے دوڑاتے راستہ

साफ करते हुए आ रहे हैं। उनके बाद सुखपाल में पवन जी केसरी कपडे पहने। सरपर जडाऊ मुकुट (ताज) जिस पर बेश कीमती हीरे जडे हुए जगमगा रहे हैं रखा है। प्रह्लाद विद्याधर और उसके अरातकीन दरबारी बडी साजो साज से घोडे और हाथिओं पर सवार हैं। और उनके पीछे बेशुमार पैदल उम्दा उम्दा नफीस पोशाकें पहने बरात की जीनत को बढाते हुए आ रहे हैं। तमाशाईयों का हुजूम हद से ज्यादा है। हर एक इसी कोशिश मे है कि सबसे आगे बढकर दुल्हा को देखे। मगर बहुत से मायूस ही नजर आते हैं। चारो तरफ से मुबारिकबाद और वाह वाह की आवाज आ रही है। शादियानो और झांज वगैहरा नौबत की आवाजों से आसमान गूँज उठा है। कानो की सुनवाई की ताकत जाइल हो गई है। अब देखिए इशारों से काम ले रहे हैं।

जब ये बरात इस शानो शौकत के साथ शहर के चौक में पहुँची तो राजा महेन्द्र राय जो पहले ही से प्रधान वगैहरा को साथ ले इन्तजार कर रहा था रस्म मिलनी को अदा करने के लिए आगे बढा

आहा! ये कैसा उम्दा नजारा है। देखे दोनो राजे किस तपाक से एक दूसरे से खैरो आफियत (हाल चाल) पूछ रहे हैं। जब इस रस्म को अदा कर चुके तो बडी इज्जत के साथ बरात को जनवासे के मकान में उतार और सबके हाथ पांव धुला मिर्चबान[१] पिला रहे हैं। थोडी देर बाद हलवा पूरी कचौरी और लजीज नफीस मिठाइयों के थाल हर एक बराती के आगे रखे गए।

जब सबने सैर (तृप्त) होकर खानों से हाथ खैंचा तो पान इलाइची तकसीम (बांटा) किया गया। और बाद अदा सब अपने अपने बिस्तरों पर जाकर लेट गए।

१ जो पानी या शरबत पिलाया जाता है उसको मिर्चबान कहते हैं

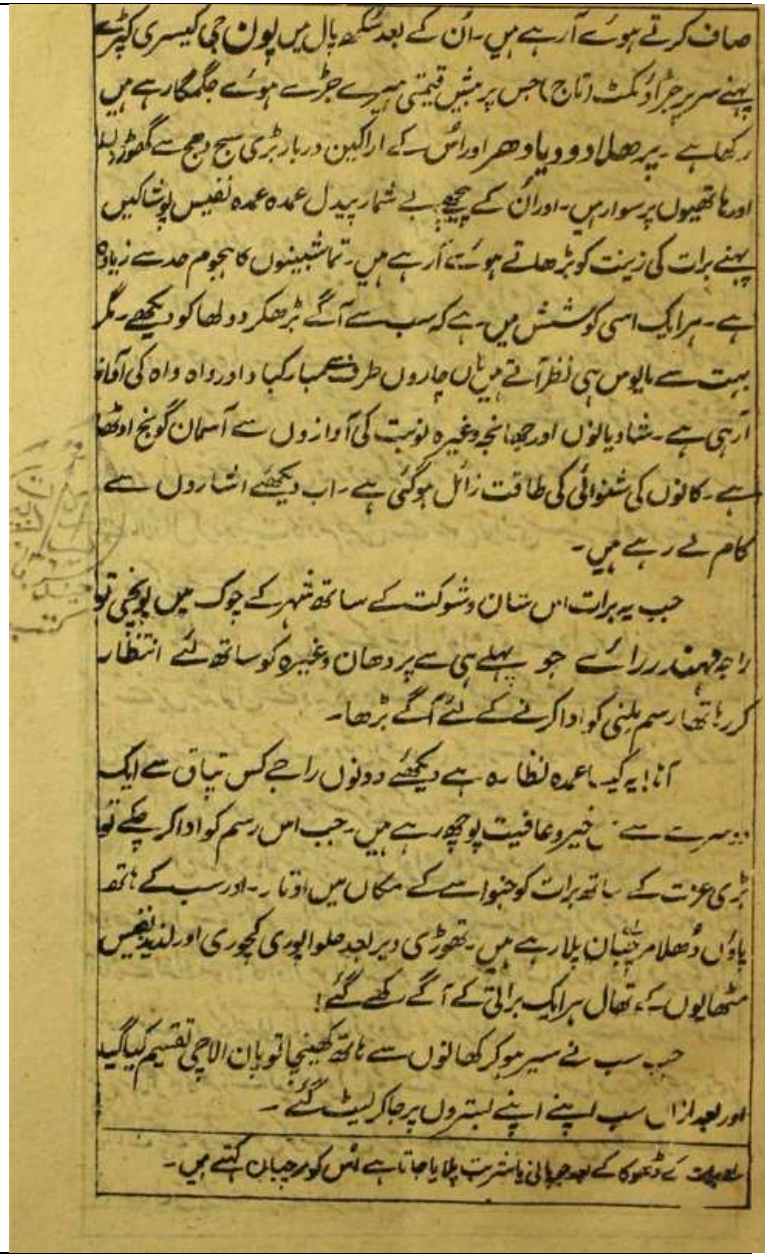
صاف کرتے ہوئے آرہے ہیں۔ اُن کے بعد سکھ پال میں پون جی کیسری کپڑے
پہنے سر پر جڑاؤ مکٹ (تاج) جس پر بیش قیمتی ہیرے جڑے ہوئے جگمگا رہے ہیں
رکھا ہے۔ پرہلاد و ودیادھر اور اُس کے اراکین دربار بڑی سج دھج سے گھوڑوں
اور ہاتھیوں پر سوار ہیں۔ اور اُن کے پیچھے بے شمار پیدل عمدہ عمدہ نفیس پوشاکیں
پہنے برات کی زینت کو بڑھاتے ہوئے آرہے ہیں۔ تماشبینوں کا ہجوم حد سے زیادہ
ہے۔ ہر ایک اسی کوشش میں ہے کہ سب سے آگے بڑھکر دولھا کو دیکھے۔ مگر
بہت سے مایوس ہی نظر آتے ہیں۔ چاروں طرف سے مبارکباد اور واہ واہ کی آواز
آرہی ہے۔ شادیانوں اور جھانجھ وغیرہ نوبت کی آوازوں سے آسمان گونج اوٹھا
ہے۔ کانوں کی شنوائی کی طاقت زائل ہوگئی ہے۔ اب دیکھئے اشاروں سے
کام لے رہے ہیں۔

جب یہ برات اس شان و شوکت کے ساتھ شہر کے چوک میں پہنچی تو
راجہ مہندر رائے جو پہلے ہی سے پردھان وغیرہ کو ساتھ لئے انتظار
کر رہا تھا رسم ملنی کو ادا کرنے کے لئے آگے بڑھا۔

آہا! یہ کیسا عمدہ نظارہ ہے دیکھئے دونوں راجے کس تپاک سے ایک
دوسرے سے خیر و عافیت پوچھ رہے ہیں۔ جب اس رسم کو ادا کر چکے تو
بڑی عزت کے ساتھ برات کو جنواسے کے مکان میں اوتارا۔ اور سب کے ہاتھ
پاؤں دھلا مرچبان پلا رہے ہیں۔ تھوڑی دیر بعد حلوا پوری کچوری اور لذیذ نفیس
مٹھائیوں کے تھال ہر ایک براتی کے آگے رکھے گئے!

جب سب نے سیر ہو کر کھانوں سے ہاتھ کھینچا تو پان الائچی تقسیم کیا گیا
اور بعد ازاں سب اپنے اپنے بستروں پر جا کر لیٹ گئے۔

۱ جو پانی کے ڈھکوسلے کے بعد جو پانی یا شربت پلایا جاتا ہے اُس کو مرچبان کہتے ہیں۔

जब लग्न का वक्त हुआ तो पवन जी को लाकर वेदी के नीचे शाहाना मसनद पर बैठाया ही था कि पण्डितो ने वेद मन्त्र पढ हवन करना शुरु किया। और सखी सहेलियो ने अञ्जना देवी को नहला धुला रुखसाना लिबास पहना जडाऊ जेवरात से आरास्ता (सजा) कर पवन जी के दाए तरफ ला बैठाया और गठ जोड किया।

आह! जिस वक्त अञ्जना देवी ने पवन जी के गले में जयमाला डाली उनका चेहरा मारे गुस्से के सुर्ख हो गया। दिल मे वही ख्याल प्रतिज्ञा का पैदा हुआ और कानों मे वही आवाज भर गई। दिल ही दिल मे कहने लगे औरतों का चरित्र देखिए बातन में तो अपने हुस्न का इस कदर गुरूर कि मुझको जहर का समुन्द्र जानती है और जाहिरा जयमाला डालकर जोजियत ( ) का दम भरती है। मैं तो ऐसी सीना स्याह औरत से शादी करने से बाज आया

नाजरीन! इस तरह के ख्याल पवन जी के दिल में गुजर रहे थे कि इतने मे पण्डितों ने वेद का वो मन्त्र पढा जिस के माने ये थे कि जब तक मैं अपनी औरत के किसी एक दोष (ऐब) का पूरी तौर पर इतमिनान न कर लूँ यकीन न करूँगा। और इस तरह स्त्री के वास्ते भी हिदायत थी।

इस मजकूरा बाला मन्त्र को सुनकर पवन जी के ख्यालों ने पलटा खाया और उधर औरतो के दिलकश राग और पण्डितो का यकजबान होकर आखिर में एक सुहावनी आवाज से लफ्ज स्वाहा का अदा कर हवन कुण्ड मे सामग्री डालना और अञ्जना देवी की सखी सहेलियो का फूलों की बरखा कर दुल्हा को मुस्कराती हुई नजर से घूरना सोने मे सुहागा का काम कर दे गया गो पवन जी के जिस्म के अन्दर इन्तहा दर्जे का रञ्ज और वही ख्यालात छुपे हुए उसको बचैन कर रहे हो लेकिन इस वक्त तो सब बालाए ताक पडे हुए नजर आते हैं

جب لگن کا وقت ہوا تو پون جی کو لاکر بیدی کے نیچے شاہانہ مسند پر بٹھایا ہی تھا کہ پنڈتوں نے وید منتر پڑھ ہون کرنا شروع کیا اور سکھی سہیلیوں نے انجنا دیوی کو نہلا دھلا عروسانہ لباس پہنا جڑاؤ زیورات سے آراستہ کر پون جی کے دائیں طرف لا بٹھایا اور گٹھ جوڑ کیا۔

آہ! جس وقت انجنا دیوی نے پون جی کے گلے میں جے مالا ڈالی اُن کا چہرہ مارے غصہ کے سُرخ ہو گیا۔ دل میں وہی خیال پرتگیا کا پیدا ہوا اور کانوں میں وہی آواز بھر گئی۔ دل ہی دل میں کہنے لگے عورتوں کا چرتر دیکھئے باطن میں تو اپنے حسن کا اس قدر غرور کہ مجکو زہر کا سمندر جانتی ہے اور ظاہرا جے مالا ڈال کر زوجیت کا دم بھرتی ہے۔ میں تو ایسی سینہ سیاہ عورت سے شادی کرنے سے باز آیا۔

ناظرین! اس طرح کے خیال پون جی کے دل میں گذر رہے تھے کہ اتنے میں پنڈتوں نے وید کا وہ منتر پڑھا جس کے معنے یہ تھے کہ "جب تک میں اپنی عورت کے کسی ایک دوشن (عیب) کا پورے طور پر اطمینان نہ کر لوں یقین نہ کروں گا۔ اور اسی طرح استری کے واسطے بھی ہدایت تھی۔

اس مذکورہ بالا منتر کو سُنکر پون جی کے خیالوں نے پلٹا کھایا۔ اور اودھر عورتوں کے دلکش راگ اور پنڈتوں کا یک زبان ہو کر آخر میں ایک سوہانی آواز سے لفظ "سواہا" کا ادا کر ہون کنڈ میں سامگری ڈالنا اور انجنا دیوی کی سکھی سہیلیوں کا پھولوں کی برکھا کر دولھا کو مُسکراتی ہوئی نظر سے گھورنا سونے میں سُہاگہ کا کام دے گیا گو پون جی کے جسم کے اندر انتہا درجہ کا رنج اور وہی خیالات چھپے ہوئے اُس کو بے چین کر رہے ہوں لیکن اس وقت تو سب بالا کے طاق پڑے ہوئے نظر آتے ہیں۔

२७

देखिए! कैसे खुशी खुशी हवन कुण्ड मे सुगन्धित[१] सामग्री डाल रहे हैं। और वेद मन्त्रो को पढ औरत खाविन्द के हकूक को मानकर औहद पैमान कर रहे हैं।

जब पण्डितों ने ब्याह संस्कार को खत्म कर शान्ती पाठ पढा तो चारों तरफ से मुबारिकबाद की आवाज आने लगी।

सखी सहेलियाँ अञ्जना देवी को महल में ले गई और पवनजी अवतारे के मकान में आए।

राजा महेन्द्र राय का इन्तजाम काबिले तारीफ था। किसी को शिकायत करने का मौका न मिला। जिस चीज को तलब किया फौरन मुहइया की गई।

तीन रोज तक बरात वहाँ रही। चौथे रोज बेशुमार दहेज दे विदाई करने लगे तो राजा महेन्द्र राय और रानि बेगमोहिनी के चहरों पर उदासी की घटा छा गई। उधर औरतों के अलविदाई गीतों ने सबके दिल को हिला दिया। राजा महेन्द्र राय आंसू भर हाथ जोड प्रह्लाद विद्याधर से कहने लगे

राजा महेन्द्र राय

धन वयोस[२] गम आज को पूरन भई मुराद
कर[३] जोड करूँ बिनती सुन विद्याधर प्रह्लाद
है अञ्जना देवी बालिका[४] न जाने जग मर्याद
दया दृष्टी राखयो करयो क्षमा अपराध[५]

नाजरीन! जिस वक्त राजा महेन्द्र राय ने भडभडाई हुई आवाज से मजकुरा बाला दोहे को कहा सब हाजरीन के आंसू आँखो मे भर गए और इस की आजजी पर अश अश करने लगे।

१ खुशबूदार चीजे २ वन ३ हाथ ४ नादान ५ उपर मेहरबानी की नजर रखना अगर कोई कसूर हो तो माफ करना

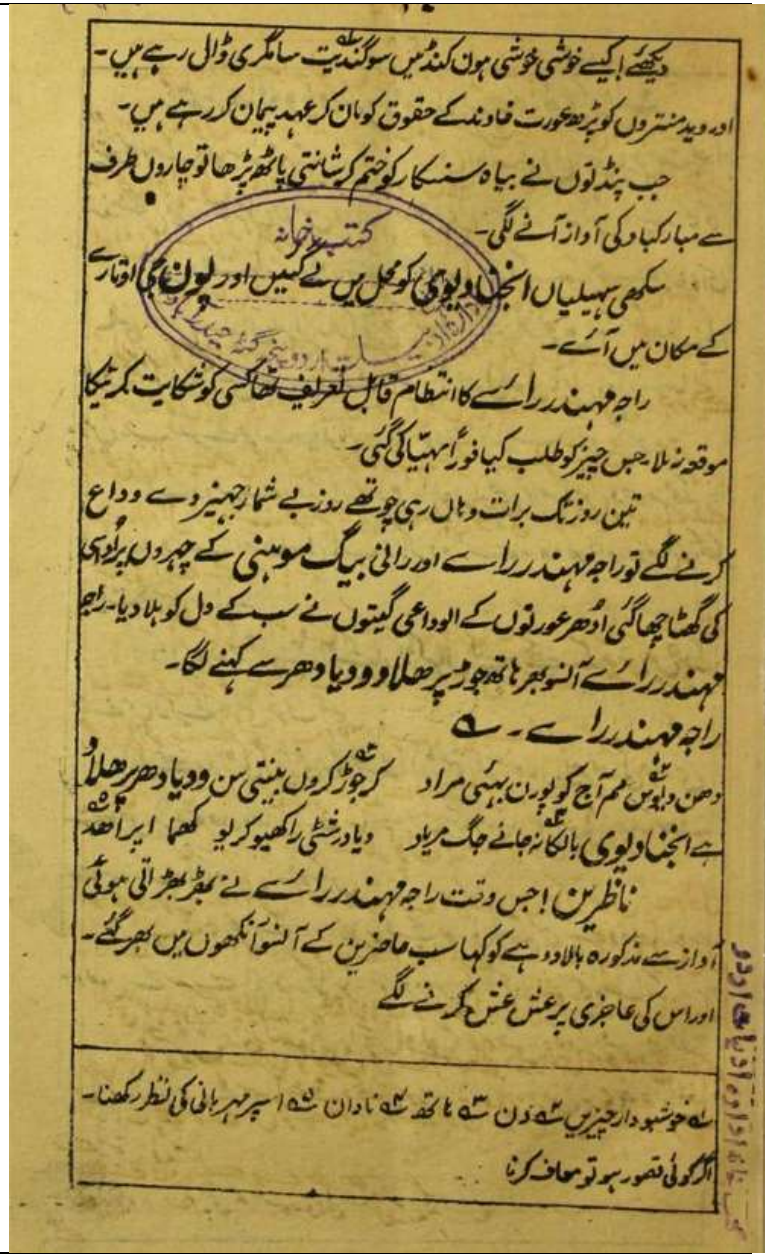
دیکھئے! کیسے خوشی خوشی ہون کنڈ میں سوگندھیت[1] سامگری ڈال رہے ہیں۔
اور وید منتروں کو پڑھ عورت خاوند کے حقوق کو مان کر عہد پیمان کر رہے ہیں۔
جب پنڈتوں نے بیاہ سنسکار کو ختم کر شانتی پاٹھ پڑھا تو چاروں طرف
سے مبارکباد کی آواز آنے لگی۔
سکھی سہیلیاں انجنا دیوی کو محل میں لے گئیں اور پون جی اوتارے
کے مکان میں آئے۔
راجہ مہندر رائے کا انتظام قابل تعریف تھا کسی کو شکایت کرنیکا
موقعہ نہ ملا جس چیز کو طلب کیا فوراً مہیا کی گئی۔
تین روز تک برات وہاں رہی چوتھے روز بے شمار جہیز دے وداع
کرنے لگے تو راجہ مہندر رائے اور رانی بیگم موہنی کے چہروں پر اُداسی
کی گھٹا چھا گئی اُدھر عورتوں کے الوداعی گیتوں نے سب کے دل کو ہلا دیا۔ راجہ
مہندر رائے آنسو بھر ہاتھ جوڑ پرہلاد ودیادھر سے کہنے لگا۔
راجہ مہندر رائے۔ ۵
دھن ویوس[2] مم آج کو پورن بھئی مراد — کر[3] جوڑ کروں بینتی سن ودیادھر پرہلاد
ہے انجنا دیوی بالکا[4] نہ جانے جگ مریاد — دیا درشٹی[5] راکھیو کریو کھما اپرادھ
ناظرین! جس وقت راجہ مہندر رائے نے بھڑ بھڑاتی ہوئی
آواز سے مذکورہ بالا دوہے کو کہا سب حاضرین کے آنسو آنکھوں میں بھر گئے۔
اور اس کی عاجزی پر عش عش کرنے لگے
۱ خوشبودار چیزیں ۲ دن ۳ ہاتھ ۴ نادان ۵ اسپر مہربانی کی نظر رکھنا۔
اگر کوئی قصور ہو تو معاف کرنا

२८

राजा प्रह्लाद विद्याधर महेन्द्र राय का हाथ पकडकर
ईश्वर का धन्यवाद सुनो महेन्द्र रा
करूँ अधिक१ पवन से प्यार मैं मत व्यथा घबरा
आनन्द मंगलाचार से रहें दुल्हन दूल्हा
आयु करे व्यतीत२ यह गुण ईश्वर का गा

जिस वक्त बरात वहाँ से विदाई हुई हर एक के चेहरे पर उदासी छा गई। सखी सहेलियाँ अबर नू बहार की तरह आंसू बहा अञ्जना देवी के सुखपाल की तरफ टिकटिकी लगा देखती रहीं। उस के लडकपन की भोली भोली बातें याद कर आंसू बहाती रहीं। जब नजर ने जवाब दिया तो मायूसाना सूरत बना सब वापस आयी।

जब दूसरे रोज बरात रत्नपुर पहुँची तमाम नगर मे धूम मच गई। औरत मर्द सब इन्तजार की ताब न लाकर दौडे। दुल्हा और दुल्हन को देखकर निहायत खुशी हुई। आहा! छोटे छोटे लडके और लडकियाँ कैसे देखने के जोश मे भागे जाते हैं कि गिरने का भी खौफ नहीं।

देखिए वो लडकी गिर पडी। मगर झट ओढनी को सम्भाल फिर भागी जा रही है।

गरज बडी जहोजलाल के साथ बरात शहर में दाखिल हुई। चारों तरफ से मुबारिबाद की आवाजें आने लगी।

जब शाही महल कि दरवाजे पर पहुँचे तो रानी कितुमती ने दूल्हा और दुल्हन के सर से पानी वार कर पिया और दुल्हन को देखकर ईश्वर का धन्यवाद किया।

नाजरीन रानी कितुमती अञ्जना देवी का हुस्न देखकर ऐसी फरिपफता हुई कि बार बार उसके मुँह की तरफ देखती और सैर न होती। गर बडी खातिर तवज्जो से पेश आई।

१ ज्यादा २ अपनी उम्र ईश्वर ही की भक्ती मे गुजारे

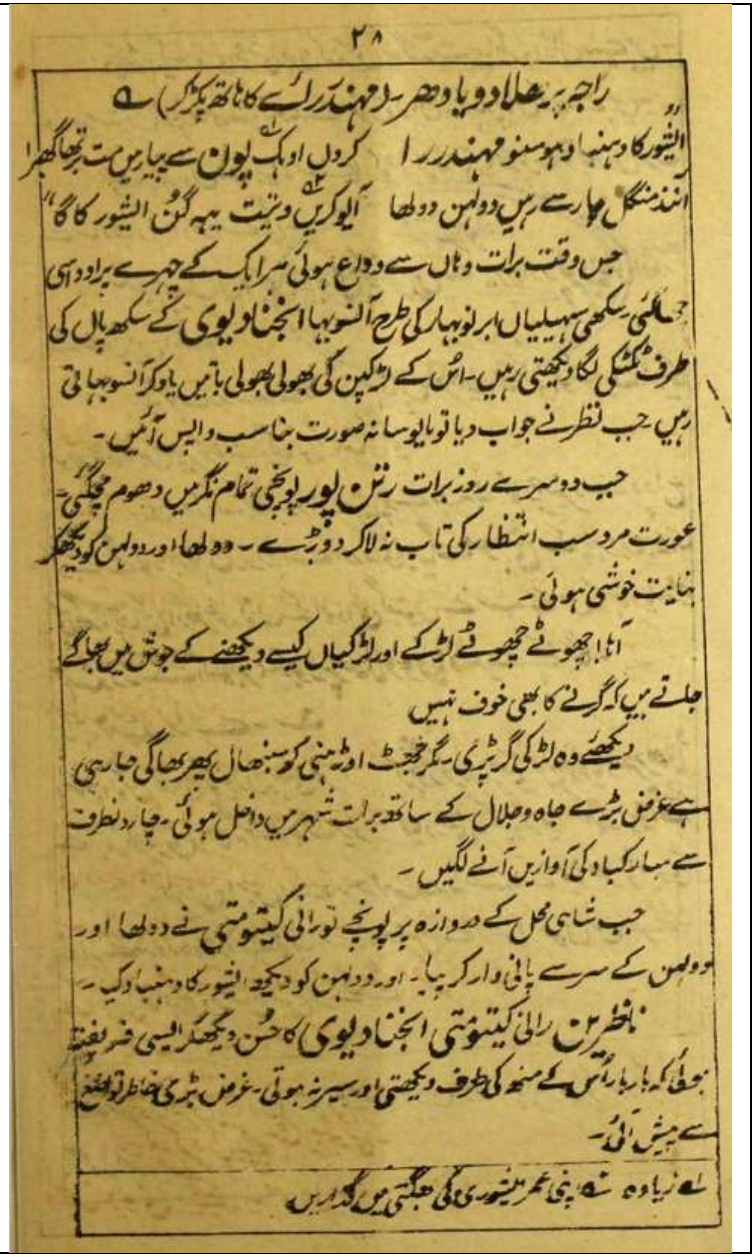

अञ्जना देवी ने इन बातों को गनीमत जान ईश्वर के हुजूर में सर झुका शुक्रिया अदा किया

बाब (अध्याय) छटा

दिल के अरमान दिल में रहे

सुबह का सुहावना वक्त है। आसमान पर तारें अभी झिलमिलाते हुए दिखाई देते हैं कि अञ्जना देवी बिस्तरे ख्वाब से उठी और जरूरयात से फारिग हो स्नान कर नित कर्म करने बैठ गई।

जब संध्या उपासना कर चुकी तो अपने कमरे मे बैठी हुई बसन्तमाला के साथ इधर उधर की बातें कर हंस रही थी कि किसी के आने की आहट मालूम हुई। दिल मे ख्याल गुजरा कि पवन जी आते हैं। ये सोचकर दोनों खामोश हो गई।

इतने मे एक औरत पसरत कद, मोटी गर्दन, गोल चेहरा, साँवला रंग, सिर के बाल बिखरे हुए, बसन्ती दुपट्टा ओढे, साडी पहने आई और प्रणाम करके खडी हो गई।

बसन्तमाला बडी मुलायम आवाज से "बहन बैठ जा"

पसरत कद औरत "मुझको कुछ बहुजी से अर्ज करनी है"

अञ्जना देवी "बहन! बैठो तो सही"

पसरत कद औरत "बहुत अच्छा"

ये कहकर जरा पीछे हटकर बैठ गई

अञ्जना देवی "कहिए! क्या हुकम लाई हो?"

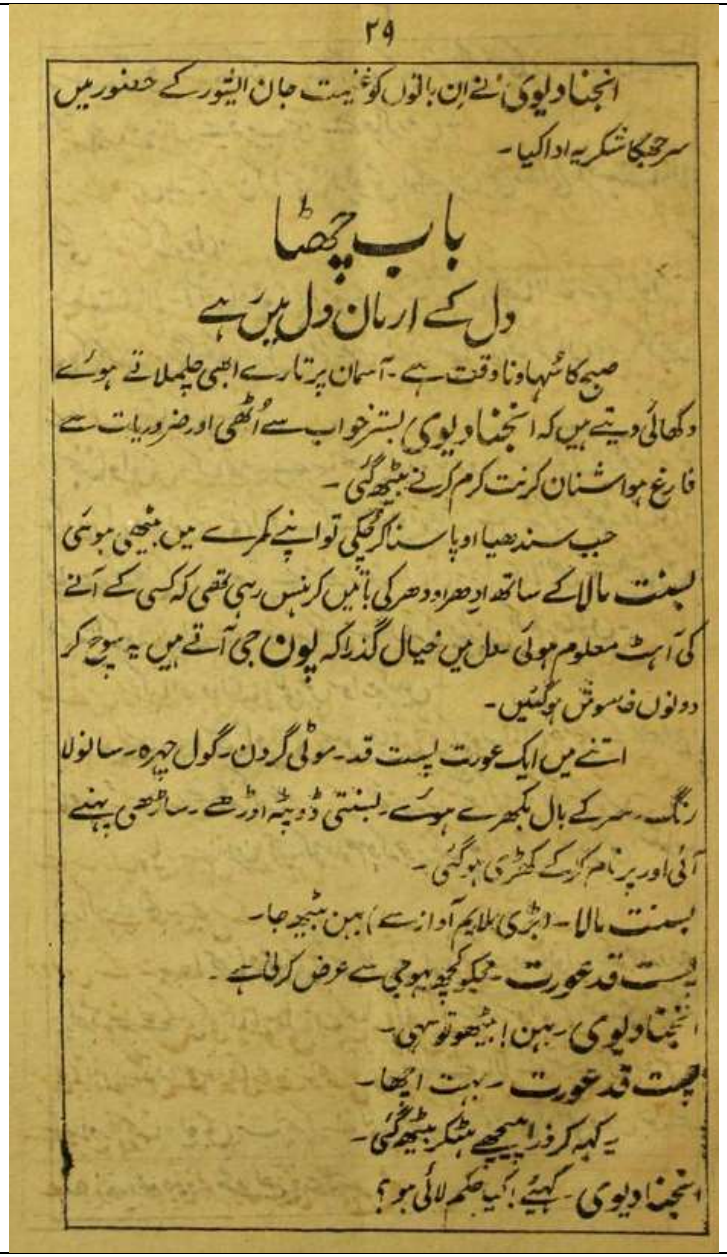

۲۹

انجنا دیوی نے ان باتوں کو غنیمت جان ایشور کے حضور میں سر جھکا شکریہ ادا کیا۔

باب چھٹا

دل کے ارمان دل میں رہے

صبح کا سہاونا وقت ہے۔ آسمان پر تارے ابھی جھلملاتے ہوئے دکھائی دیتے ہیں کہ انجنا دیوی بستر خواب سے اٹھی اور ضروریات سے فارغ ہو اشنان کرنت کرم کرنے بیٹھ گئی۔

جب سندھیا اوپاسنا کر چکی تو اپنے کمرے میں بیٹھی ہوئی بسنت مالا کے ساتھ ادھر اودھر کی باتیں کر ہنس رہی تھی کہ کسی کے آنے کی آہٹ معلوم ہوئی دل میں خیال گذرا کہ پون جی آتے ہیں یہ سوچ کر دونوں خاموش ہو گئیں۔

اتنے میں ایک عورت پست قد۔ موٹی گردن۔ گول چہرہ۔ سانولا رنگ۔ سر کے بال بکھرے ہوئے۔ بسنتی ڈوپٹہ اوڑھے۔ ساڑھی پہنے آئی اور پرنام کر کے کھڑی ہو گئی۔

بسنت مالا۔ (بڑی ملایم آواز سے) بہن بیٹھ جا۔

پست قد عورت۔ مجکو کچھ بہوجی سے عرض کرنی ہے۔

انجنا دیوی۔ بہن! بیٹھو تو سہی۔

پست قد عورت۔ بہت اچھا۔

یہ کہہ کر ذرا پیچھے ہٹ کر بیٹھ گئی۔

انجنا دیوی۔ کہیئے! کیا حکم لائی ہو؟

पसरत कद औरत "कुँवरजी ने आपके लिए पालकी भेजकर फरमाया है कि आप दूसरे महल मे जो यहाँ से करीब ही है जाकर रहें"

इस बात को सुनकर अञ्जना देवी तो हैरान सी हो गई। मगर बसन्तमाला चुटकी ले मुस्करा कर बोली

बसन्तमाला "अञ्जना देवी! मेरी तरफ ख्याल रखना। ऐसा न हो कि पवन जी की मोहबत में आकर मुझको भूल जाओ। मैंने तो तुम्हारी खातिर माँ बाप को छोड परदेस इख्तियार किया है।"

अञ्जना देवी "क्या तुम मेरे साथ वहाँ न जाओगी? आपने कौल[१] को पूरा कर ना दिखलाओगी? तुम तो कहती थी कि जब तक जिस्म मे जान है तुम को ना छोडूँगी। चाहे कुछ भी क्यों न हो तुमसे मुँह न मोडूँगी। प्यारी! अभी से ऐसी बाते सुना कर क्यों डराती है। भला ये मुमकिन है कि तुम को छोड मैं अकेली जाऊँ।"

ये कहा और दोनों पालकी में सवार हो गईं।

रावी बेचारी अञ्जना देवी नहीं जानती थी कि जो सामान खुशी के थे आज तमाम हुए। और रञ्जोगम कुछ अरसा के लिए मेरी सेवा[२] करने को आए हैं।

प्यारे नाजरीन! आपको मालूम हो कि जो प्रतिज्ञा पवन जी ने की थी उसको अब पूरा करने लगा है

जब अञ्जना देवी उस महल मे आई तो सिवाए दरबानों के जो दरवाजे पर खडे थे किसी को न पाया। दिल मे ख्याल गुजरा कि शायद स्वामीजी ठोडी देर के बाद आएँगे।

और इसी इन्तजार मे शाम हो गई। बसन्तमाला मे शमादान रोशन किया और अञ्जना देवी नित नियम करने लगी। जब फारिग हुई तो भी वहाँ सिवाए

१ याने वादा वफा २ यानी खिदमत

پست قد عورت - کنور جی نے آپ کے لئے پالکی بھیجکر فرمایا ہے کہ آپ دوسرے محل میں جو یہاں سے قریب ہی ہے جاکر رہیں -

اس بات کو سن کر انجنا دیوی تو حیران سی رہ گئی مگر بسنت مالا چٹکی لے مسکرا کر بولی -

بسنت مالا - انجنا دیوی! میری طرف خیال رکھنا ایسا نہ ہو کہ پون جی کی محبت میں آکر مجکو بھول جاؤ - میں نے تو تمھاری خاطر ماں باپ کو چھوڑ پردیس اختیار کیا ہے -

انجنا دیوی - کیا تم میرے ساتھ وہاں نہ جاؤ گی؟ اپنے قول[۱] کو پورا کر نہ دکھلاؤ گی؟ تم تو کہتی تھی کہ جب تک جسم میں جان ہے - تم کو نہ چھوڑوں گی - چاہے کچھ بھی کیوں نہ ہو تم سے منھ نہ موڑوں گی - پیاری! ابھی سے ایسی باتیں سنا کر کیوں ڈراتی ہے - بھلا یہ ممکن ہے کہ تم کو چھوڑ میں اکیلی جاؤں -

یہ کہا اور دونوں پالکی میں سوار ہو گئیں -

راوی بچاری انجنا دیوی نہیں جانتی تھی کہ جو سامان خوشی کے تھے آج تمام ہوئے اور رنج و غم کچھ عرصہ کے لئے میری سیوا[۲] کرنے کو آئے ہیں -

پیارے ناظرین! آپ کو معلوم ہو کہ جو پرتگیا پون جی نے کی تھی اسکو اب پورا کرنے لگا ہے -

جب انجنا دیوی اُس محل میں آئی تو سوائے دربانوں کے جو دروازہ پر کھڑے تھے کسی کو نہ پایا - دل میں خیال گذرا کہ شائد سوامی جی تھوڑی دیر کے بعد آئیں گے اور اسی انتظار میں شام ہو گئی - بسنت مالا نے شمعدان روشن کیا اور انجنا دیوی نت نیم کرنے لگی - جب فارغ ہوئی تو بھی وہاں سوائے

۱ یعنے وعدہ وفا ۲ یعنی خدمت

बसन्तमाला के किसी न देखा। मुखतलिफ ख्याल दिल मे पैदा हो घबराहट पैदा करने लगे। कई तरह के फर्जी घोडे इस बात की असलियत मालूम करने को दौडाती मगर कुछ समझ मे न आता। आखिर जब आधी रात गुजर गई तो बसन्तमाला से बोली अञ्जना देवी "सखी! क्या तू बतला सकती है कि स्वामीजी क्यों नहीं आए? और मुझको इस महल मे क्यों रखा गया है?"

बसन्तमाला "अञ्जना देवी! क्यों घबरा रही है। उन को कुछ जरूरी काम हो गया होगा इस लिये वो नहीं आ सके!

और ये अकसर राजकुमारो का दस्तूर है कि शादी करने के बाद माँ बाप से अलहैदा रहना पसन्द करते है। शायद उन्होने भी ये सोचकर तुम्हारे लिए ये महल तजवीज (नामित) किया हो"

अञ्जना देवी "मेरा ख्याल था कि मैं बडी खुशकिस्मत हूँ जो ऐसी सास मिली है जिसके मिलने से एक ही रोज मे वो प्रेम जो मैं अपनी वालदा के साथ बरसों से रखती थी भूल गई। अगर उनके पास रहती तो क्या ही अच्छा होता। प्यारी! इस बात को सोच कर कि जब से मैं आई हूँ स्वामीजी ने तो मेरे साथ बात तक नहीं की और न ही अब तक यहाँ आए हैं मैं तेरे कयामो को क्योंकर दुरुस्त मान सकती हूँ कि उन्होने ये महल अपने रहने के वास्ते पसन्द किया है। सखी! इसमे जरूर कुछ भेद है"

ये कहा और न जाने क्या ख्याल दिल मे गुजरा कि आँखो से आंसू निकल पडे और निहायत बेचैन हो गई।

बसन्तमाला ने बहुत कोशिश की कि किसी तरह ये थोडी देर आराम

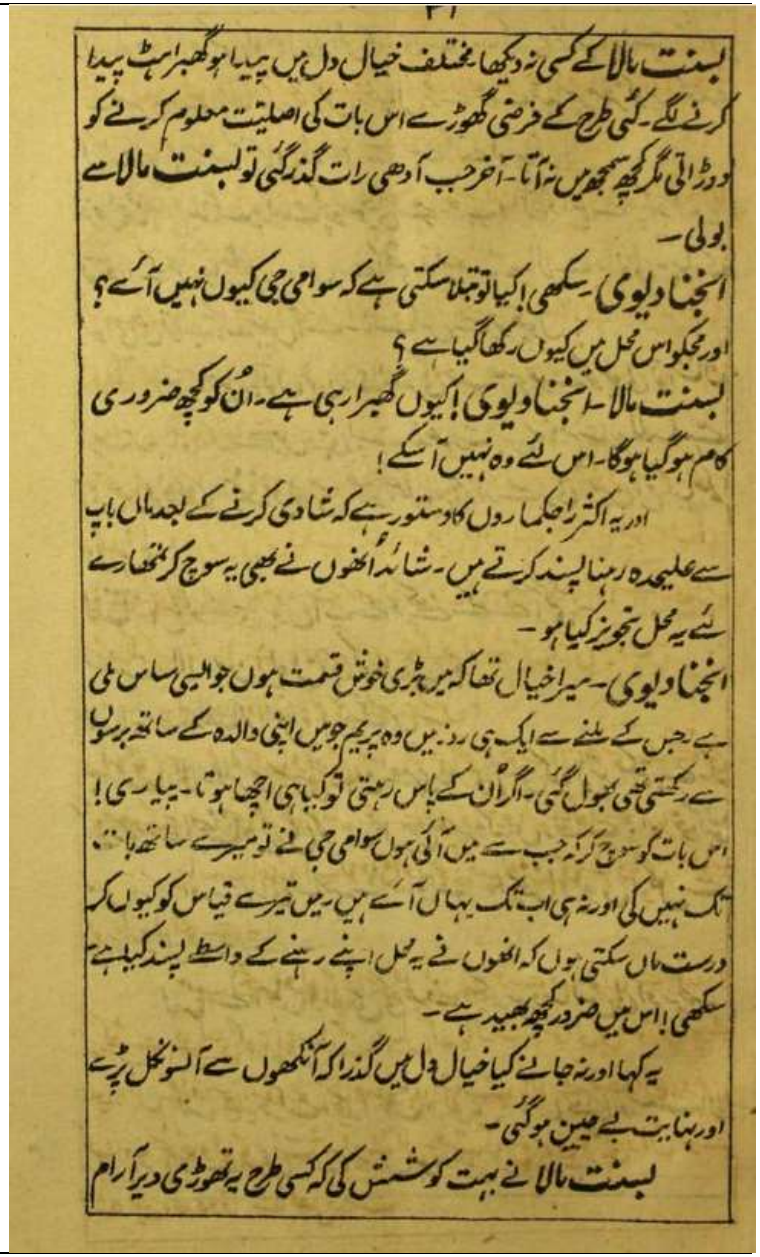

بسنت مالا کے کسی نہ دیکھا مختلف خیال دل میں پیدا ہو گھبراہٹ پیدا
کرنے لگے۔ کئی طرح کے فرضی گھوڑے اس بات کی اصلیت معلوم کرنے کو
دوڑاتی مگر کچھ سمجھ میں نہ آتا۔ آخر جب آدھی رات گذر گئی تو بسنت مالا سے
بولی۔

انجنا دیوی۔ سکھی! کیا تو بتلا سکتی ہے کہ سوامی جی کیوں نہیں آئے؟
اور مجکو اس محل میں کیوں رکھا گیا ہے؟

بسنت مالا۔ انجنا دیوی! کیوں گھبرا رہی ہے۔ اُن کو کچھ ضروری
کام ہو گیا ہوگا۔ اس لئے وہ نہیں آسکے!

اور یہ اکثر راجکماروں کا دستور ہے کہ شادی کرنے کے بعد ماں باپ
سے علیحدہ رہنا پسند کرتے ہیں۔ شائد انھوں نے بھی یہ سوچ کر تمھارے
لئے یہ محل تجویز کیا ہو۔

انجنا دیوی۔ میرا خیال تھا کہ میں بڑی خوش قسمت ہوں جو ایسی ساس ملی
ہے جس کے ملنے سے ایک ہی روز میں وہ پریم جو میں اپنی والدہ کے ساتھ برسوں
سے رکھتی تھی بھول گئی۔ اگر اُن کے پاس رہتی تو کیا ہی اچھا ہوتا۔ پیاری!
اس بات کو سوچ کر کہ جب سے میں آئی ہوں سوامی جی نے تو میرے ساتھ بات
تک نہیں کی اور نہ ہی اب تک یہاں آئے ہیں۔ میں تیرے قیاس کو کیوں کر
درست مان سکتی ہوں کہ انھوں نے یہ محل اپنے رہنے کے واسطے پسند کیا ہے
سکھی! اس میں ضرور کچھ بھید ہے۔

یہ کہا اور نہ جانے کیا خیال دل میں گذرا کہ آنکھوں سے آنسو نکل پڑے
اور نہایت بے چین ہو گئی۔

بسنت مالا نے بہت کوشش کی کہ کسی طرح یہ تھوڑی دیر آرام

करे। मगर आराम किसको! दिल तो उसका माहिबेआब की तरह तडप रहा है। आँखे बेसब्री से इन्तजार कर रही हैं। ख्याल बुरे बुरे पैदा हो मगज को परा गन्दा कर रहे हैं। और सुनसान मकान डरा रहा है। नींद आए तो क्योंकर?

गर्ज अञ्जना कभी तो पलंग पर लेट कुछ सोचती है। जब वहा से दिमाग ने चक्कर खाया तो झरोखे मे जा बैठी। वहाँ से उठी तो बसन्तमाला से जा बोली "प्यारी! स्वामीजी तो अब तक नहीं आए। हाय किससे पूछूँ?"

गर्ज इनही बातो मे रात बसर की। जब सुबह होने को हुई तो स्नान कर संध्या की। कि इतने मे वही पसरत कद औरत जिसका नाम शायद ललिता है आई जिसको देखकर अञ्जना देवी बडी गमगीन आवाज से बोली "बहन आज क्या हुकम लाई हो?"

ललिता "बाग को जा रही हूँ आपको देखने के लिए आ गई"

बसन्तमाला "बहन! पवन जी कहाँ हैं?"

ललिता "संध्या कर अभी बाहर को गए हैं"

बसन्तमाला बडी सीली जबान से "प्यारी बहन! क्या तू बतला सकती है कि कुँवर जी ने अञ्जना देवी को इस महल मे अल्हैदा क्यों रखा है। और खुद क्यों नहीं आए और न ही रानी साहिबा ने खबर ली है। अञ्जना देवी तो कल से रो रो कर हैरान हो रही हैं।"

ललिता ने अञ्जना देवी की तरफ देख सर्द सांस ली और कुछ जवाब न दिया। ललिता की ये हरकत देख अञ्जना देवी का माथा ठनका और बसन्तमाला के होश उडे और कहा "हाय गजब हुआ ऐसी क्या बात है?"

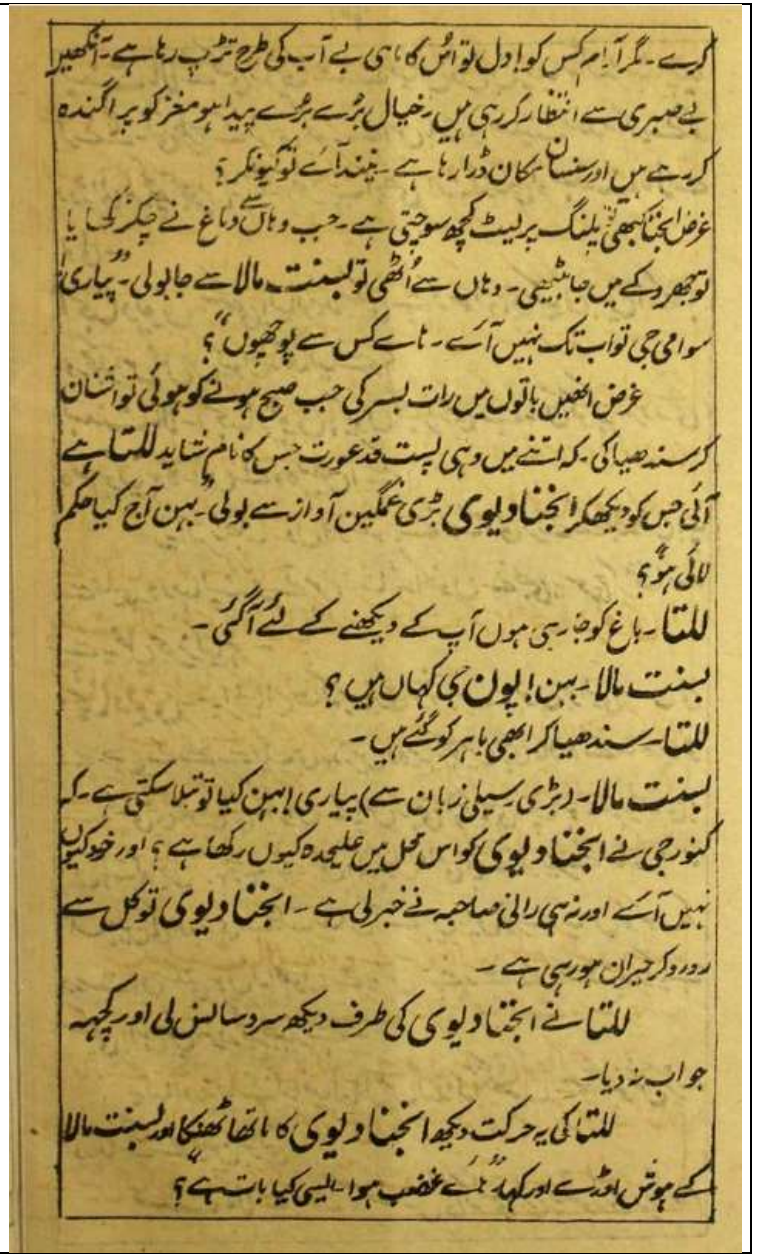

کرے۔ مگر آرام کس کو! دل تو اُس کا ہی بے آب کی طرح تڑپ رہا ہے۔ آنکھیں
بے صبری سے انتظار کر رہی ہیں۔ خیال بُرے بُرے پیدا ہو مغز کو پراگندہ
کر رہے ہیں اور سنسان مکان ڈرا رہا ہے۔ نیند آئے تو کیونکر؟
غرض انجنا کبھی پلنگ پر لیٹ کچھ سوچتی ہے۔ جب وہاں سے دماغ نے چکر کھایا
تو جھروکے میں جا بیٹھی۔ وہاں سے اُٹھی تو بسنت مالا سے جا بولی۔ "پیاری
سوامی جی تو اب تک نہیں آئے۔ ہائے کس سے پوچھوں؟"
غرض انھیں باتوں میں رات بسر کی جب صبح ہونے کو ہوئی تو اشنان
کر سندھیا کی۔ کہ اتنے میں وہی پست قد عورت جس کا نام شاید للتا ہے
آئی جس کو دیکھکر انجنا دیوی بڑی غمگین آواز سے بولی۔ "بہن آج کیا حکم
لائی ہو؟"
للتا۔ باغ کو جا رہی ہوں آپ کے دیکھنے کے لئے آگئی۔
بسنت مالا۔ بہن! پون جی کہاں ہیں؟
للتا۔ سندھیا کر ابھی باہر کو گئے ہیں۔
بسنت مالا۔ (بڑی سیلی زبان سے) پیاری! بہن کیا تو بتلا سکتی ہے۔ کہ
کنور جی نے انجنا دیوی کو اس محل میں علیحدہ کیوں رکھا ہے؟ اور خود کیوں
نہیں آئے اور نہ ہی رانی صاحبہ نے خبر لی ہے۔ انجنا دیوی تو کل سے
رو رو کر حیران ہو رہی ہے۔
للتا نے انجنا دیوی کی طرف دیکھ سرد سانس لی اور کچھ
جواب نہ دیا۔
للتا کی یہ حرکت دیکھ انجنا دیوی کا ماتھا ٹھنکا اور بسنت مالا
کے ہوش اوڑے اور کہا "ہائے غضب ہوا۔ ایسی کیا بات ہے؟"

३३

बसन्तमाला ललिता के गले मे दोनो हाथ दालकर “बहन! सच बतला बात क्या है?”
ललिता “क्या बतलाऊँ?” माथे को हाथ लगाकर “अञ्जना देवी की किस्मत फूट गई! कुँवरजी ने किसी बात पर जिसको बतलाने से गुरेज (बचते) करते है प्रतिज्ञा की हुई है कि ब्याह से बारह बरस तक अञ्जना से बात न करेंगे बल्कि इस की शक्ल देखने के रवादार न होंगे। और अपनी माता को भी बात करने से कतई ममानत कर दी है।”

ये कहकर ललिता तो चलती हो ली और अञ्जना देवी के हाथ पाँव फूल गए। आँखो मे अंधेरा छा गया। बोलने की ताकत जाती रही। और बेहोश होकर जमीन पर गिर पडी। बसन्तमाला ये हाल देख अपने दिल को सख्त कर अञ्जना देवी का सर अपने जानू (जंघा) पर रख बोली

बसन्तमाला अञ्जना देवी के सर को हरकत देकर “अञ्जना देवी! अञ्जना देवी! प्यारी क्यों नहीं बोलती जब कुछ भी जवाब न दिया तो बहुत घबराई और चीख मारकर बोली “हाय! अञ्जना देवी को क्या हो गया? अब मैं क्या करूँ?” और थोडा सा पानी लाकर उसके मुँह पर छीटा दिया। कदरे होश आई तो ये कहा “हाय! दिल के अरमान दिल ही मे रहे” और खामोश हो गई।

तब फिर बसन्तमाला ने उसके सर को हिलाकर कहा “सखी! क्यों इस कदर बेचैन हो रही है? तेरी ये हालत देखकर मेरा जी घबराता है। सीना चाक हुआ जाता है। यहाँ हमारा गमख्वार कौन है जो पवन जी को जाकर समझाएगा? या हमारे ही हाल पर तरस खा हमको तसल्ली देगा मैं जानती हूँ कि तू बेगुनाह है लेकिन क्या करूँ। मेरी कौन सुनता है! अब तो सिवाए ईश्वर

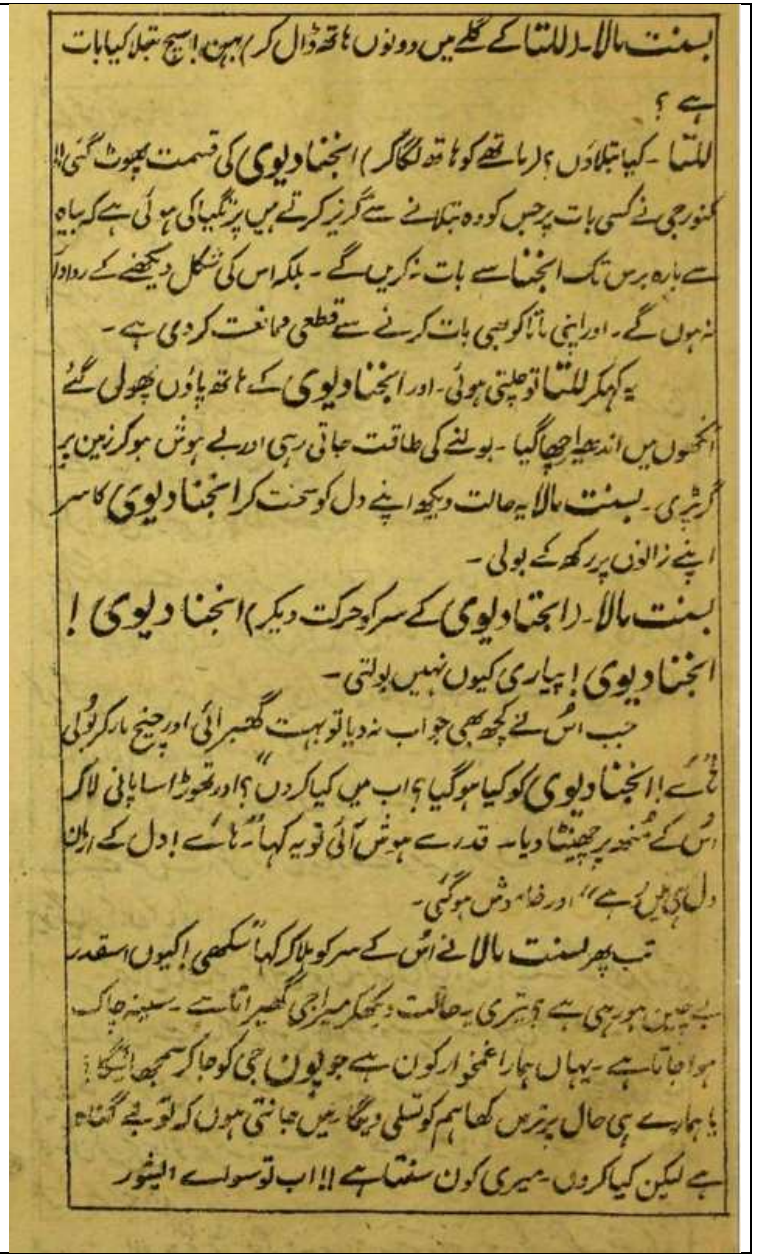
بسنت مالا۔ (للتا کے گلے میں دونوں ہاتھ ڈال کر) بہن! سچ بتلا کیا بات
ہے ؟
للتا۔ کیا بتلاؤں ؟ (ماتھے کو ہاتھ لگا کر) انجنا دیوی کی قسمت پھوٹ گئی!!
کنور جی نے کسی بات پر جس کو وہ بتلانے سے گریز کرتے ہیں پرتگیا کی ہوئی ہے کہ بیاہ
سے بارہ برس تک انجنا سے بات نہ کریں گے۔ بلکہ اس کی شکل دیکھنے کے روادار
نہ ہوں گے۔ اور اپنی ماتا کو بھی بات کرنے سے قطعی ممانعت کر دی ہے۔
یہ کہکر للتا تو چلتی ہوئی۔ اور انجنا دیوی کے ہاتھ پاؤں پھول گئے
آنکھوں میں اندھیرا چھا گیا۔ بولنے کی طاقت جاتی رہی اور بے ہوش ہو کر زمین پر
گر پڑی۔ بسنت مالا یہ حالت دیکھ اپنے دل کو سخت کر انجنا دیوی کا سر
اپنے زانوں پر رکھ کے بولی۔
بسنت مالا۔ (انجنا دیوی کے سر کو حرکت دیکر) انجنا دیوی!
انجنا دیوی! پیاری کیوں نہیں بولتی۔
جب اس نے کچھ بھی جواب نہ دیا تو بہت گھبرائی اور چیخ مار کر بولی
ہائے! انجنا دیوی کو کیا ہو گیا؟ اب میں کیا کروں؟ اور تھوڑا سا پانی لاکر
اس کے منھ پر چھینٹا دیا۔ قدرے ہوش آئی تو یہ کہا "ہائے! دل کے ارمان
دل ہی میں رہے" اور خاموش ہو گئی۔
تب پھر بسنت مالا نے اس کے سر کو ہلا کر کہا "سکھی! کیوں اسقدر
بے چین ہو رہی ہے؟ تیری یہ حالت دیکھکر میرا جی گھبراتا ہے۔ سینہ چاک
ہوا جاتا ہے۔ یہاں ہمارا غمخوار کون ہے جو پون جی کو جا کر سمجھائیگا؟
یا ہمارے ہی حال پر ترس کھا ہم کو تسلی دیگا۔ میں جانتی ہوں کہ تو بے گناہ
ہے لیکن کیا کروں۔ میری کون سنتا ہے!! اب تو سوائے ایشور

के कोई सहारा नहीं। इस कदर गम करने से तो कुछ फायदा नजर नहीं आता।”

“प्यारी! तुम खुद दाना (बुद्धिमान) हो ज्यादा कहने की जरूरत नहीं। जरा विचार तो करो मैं कया कर सकती हूँ? बजज इसके कि तुमको इस हालत मे देख आँखो से आंसू बहाऊँ।” ये कहा और पानी मुँह मे डाला और सर को हाथ से हिलाया। जब अञ्जना देवी ने आँख खोलकर उसकी तरफ देखा तो बसन्तमाला ने कहा “प्यारी! दिल को मजबूत कर ईश्वर पर भरोसा रख। देख ज्ञानी वही है जो मुसीबत मे धीरज रखे। क्या तुझको अपने महेन्द्रपुर के बाग की बो बात, जो सैर करते वक्त अक्सर कहा करती थी, याद नहीं। जो दुःख सुख शरीर का भोग जान ईश्वर पर भरोसा रखता है वही सुख पाता है।” ये सुनकर अञ्जना देवी ने बडी नरम आवाज से कहा “मैं सब कुछ जानती हूँ। लेकिन दिल नहीं मानता सब को बहतेरा हौसला देती हूँ कि ये किसी का दोष नहीं मेरे ही कर्मों का फल है। मगर जब उस दासी की बात याद आती है बेइख्तियार (अनियंत्रित) जी घबराने लग जाता है।”

“और तो कुछ फिक्र नहीं सिर्फ ख्याल है तो इस अमर का कि वो कौनसी ऐसी बात है जिसने उस प्राण प्यारे को मेरी तरफ से बरजन कर ऐसी प्रतिज्ञा करने पर आमादा किया। जहाँ तक सोचती हूँ यहाँ क्या माँ बाप के घर भी तो कभी मैंने जबान से ऐसा कलमा नहीं निकाला जो दूसरे के मलाल का बाइस हुआ हो। और खास कर स्वामीजी के साथ या उन की बाबत गुफ्तगू करने का तो मौका भी नहीं मिला। उनको रंज हुआ तो क्योंकर अरे कुछ समझ में नहीं आता। असलियत इसकी क्या है?”

बसन्तमाला “जो कुछ तुमने कहा दुरुस्त है इसमे कुछ शक नहीं कि तुम

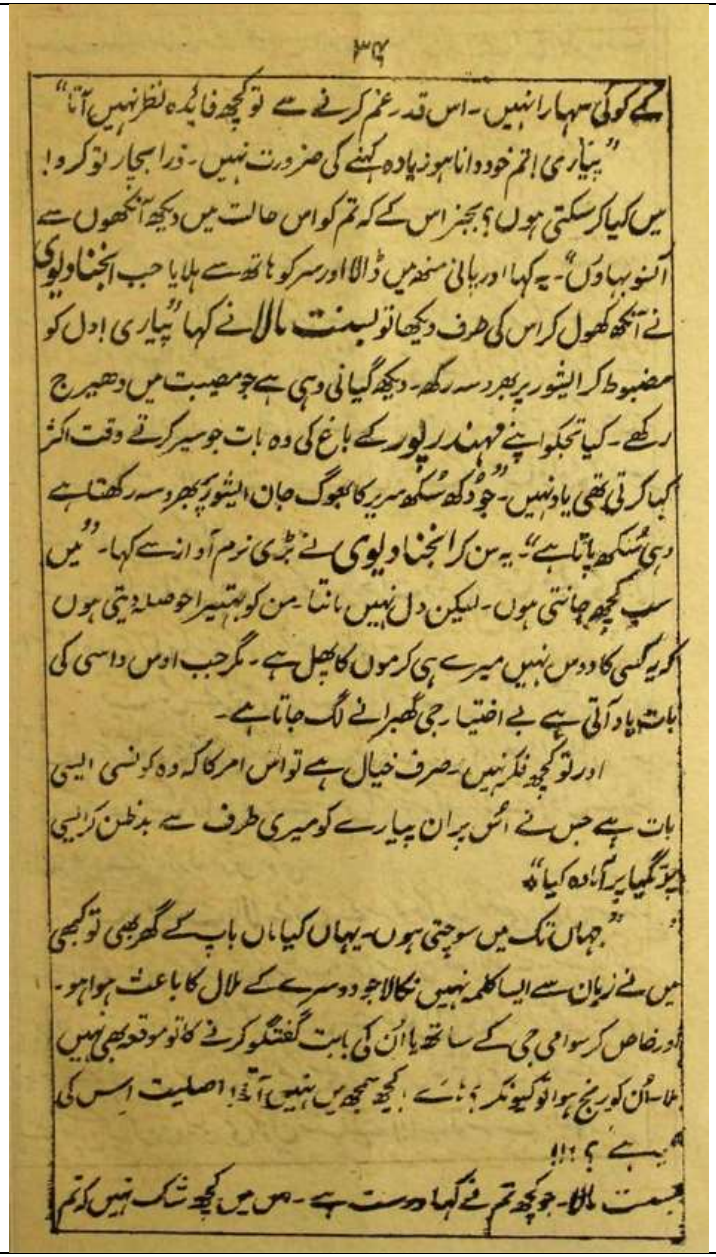

बेगुनाह हो लेकिन घबराने से कुछ हासिल नहीं होता।" अञ्जना देवी सर्द सांस लेकर "क्या घबराना है ये पिछले जन्म के कर्मो का फल है किसी का दोष नहीं।" ये कहा और टप टप आंसू आँखो से गिरने लगे।

जब इस तरह दिन रात की आहोजारी और बेकरारी मे कुछ अरसा गुजरा तो एक रोज संध्या कर ईश्वर से प्रार्थना कर रही थी कि रोकर इस तरह कहने लगी

दोहा

कौन अवज्ञा बैन कवि दीन बन्धु भगवान न मेरी ओर को निहारते मेरे प्रियतम प्राण
विधना क्या तोए बैर था जो लिखा मुसोर भाग
ऐसे प्रियतम चित्र दिया सो है बैराग
प्रियतम मेरे प्यारे कहाँ करूँ अपराध तेरे दरस को तरसते मेरे नयन असाध
बसन्तमाला मेरी प्यारी तुम कुछ करो उपाए
जाहिद वचन पवन जी कर लो बदी बना
कहे दास मसन अञ्जना मत ब्यर्थ घबरा नयन दोष किसको प्यारी कर्म तकिया

ये कहा और परेशानी की हालत में फिर कुछ सोचने लग पडी। बहुत देर तक आलमी सकूत (शान्ति) मे पडी रही। लेकिन जब ये ख्याल दिमाग से चक्कर खाता हुआ जुबान पर आया "ऐ! बारह साल की प्रतिज्ञा" तो सीना गम से थरथरा दिया। आँखो मे आंसू भर आए और पवन जी को मुखातिब कर यूँ कहने लगी "ऐ प्राण प्यारे! मेरे हाल पर रहम करो बगैर आपके यहाँ मेरा कौन है? महाराज आप इस दासी से क्यों ऐसे बदगुमान (सदिग्धचित्त) हो गए जो ऐसी सख्त प्रतिज्ञा की? मैंने तो अभी तक आपके दर्शन भी अच्छी तरह नहीं किए। मेरे नयन तो चकोर की तरह आप का चाँद सा मुखडा देखने को तरसते हैं। और न ही अब तक आप की खिदमत करने पाई हूँ कि इसमे कुछ पसोपेश (उल्टा पुल्टा) हुआ हो। हाय! समझ मे नहीं आता की आप मेरी तरफ से बरजन क्यों

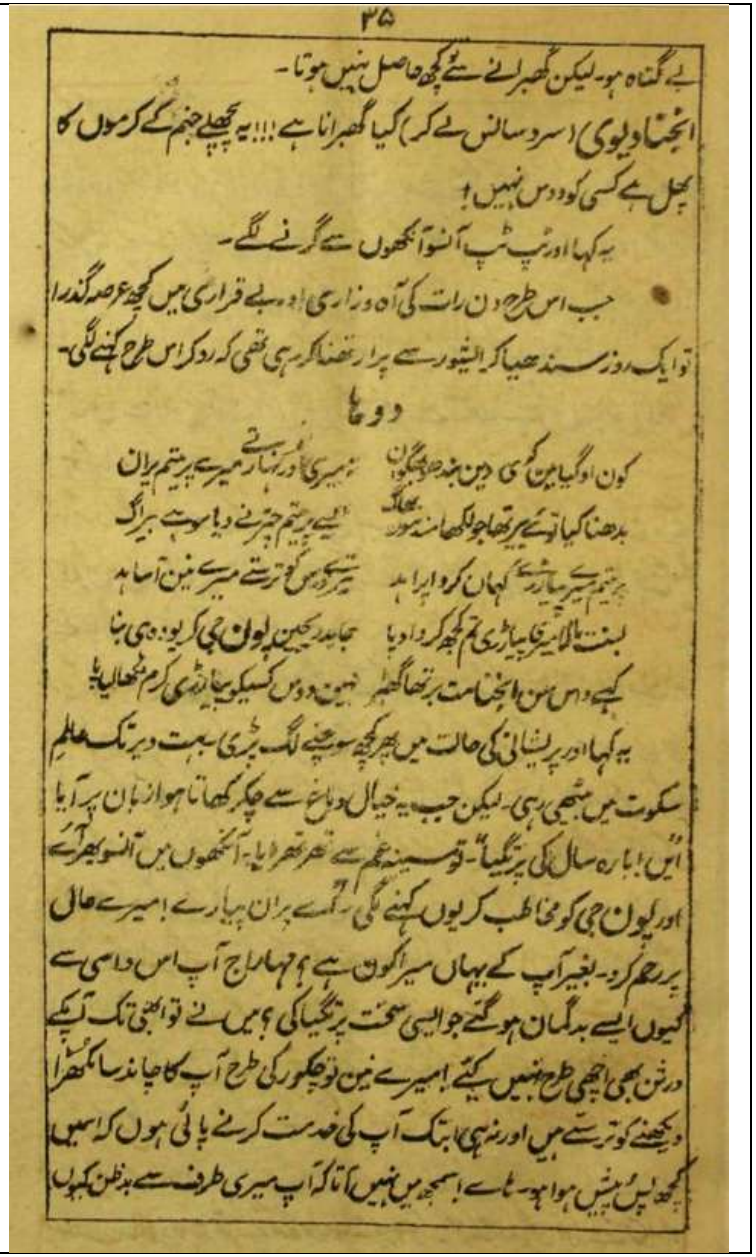

بے گناہ ہو۔ لیکن گھبرانے سے کچھ حاصل نہیں ہوتا۔
انجنا دیوی (سرد سانس لے کر) کیا گھبرانا ہے!!! یہ پچھلے جنم کے کرموں کا پھل ہے کسی کو دوس نہیں!
یہ کہا اور ٹپ ٹپ آنسو آنکھوں سے گرنے لگے۔
جب اس طرح دن رات کی آہ وزاری اور بے قراری میں کچھ عرصہ گذرا تو ایک روز سندھیا کر ایشور سے پرارتھنا کر رہی تھی کہ رو کر اس طرح کہنے لگی۔

دوہا

کون اوگیا مین کری دین بندھو بھگوان نہ میری اور نہارتے میرے پریتم پران
بدھنا کیا تو ئے بیر تھا جو لکھا منہ سوبھاگ ایسے پریتم چتر نے دیا سوہے بیراگ
پریتم میرے پیارے کہاں کروا پراہد تیرے درس کو ترستے میرے نین آساہد
بسنت مالا میری پیاری تم کچھ کر دو اپا جاہد رچین پون جی کریو دی بنا
کہے داس مسن انجنا مت بر تھا گھبر نہین دوس کسیکو پیاری کرم ٹھالیا

یہ کہا اور پریشانی کی حالت میں پھر کچھ سوچنے لگ پڑی۔ بہت دیر تک عالم سکوت میں بیٹھی رہی۔ لیکن جب یہ خیال دماغ سے چکر کھاتا ہوا زبان پر آیا "ایں! بارہ سال کی پرتگیا"۔ تو سینہ غم سے تھرتھرا دیا۔ آنکھوں میں آنسو بھر آئے اور پون جی کو مخاطب کر یوں کہنے لگی۔ "اے پران پیارے! میرے حال پر رحم کرو۔ بغیر آپ کے یہاں میرا کون ہے؟ مہاراج آپ اس داسی سے کیوں ایسے بدگمان ہو گئے جو ایسی سخت پرتگیا کی؟ میں نے تو ابھی تک آپکے درشن بھی اچھی طرح نہیں کیئے! میرے نین تو چکور کی طرح آپ کا چاند سا مکھڑا دیکھنے کو ترستے ہیں اور نہ ہی ابتک آپ کی خدمت کرنے پائی ہوں کہ اسمیں کچھ پس و پیش ہوا ہو۔ ہائے! سمجھ میں نہیں آتا کہ آپ میری طرف سے بدظن کیوں

हो गए? ”

कस्मा करदा परादना तहा से दुखिया भारी

मात पिता को छोड आई मैं शरण तुम्हारी

बिना आप महाराज कौन मेरा हितकारी दया का ही बैराग पति मैं दासी तुम्हारी

नाजरीन! अञ्जना देवी ने इन मजकूरा बाला फिकरों को ऐसी दर्दनाक आवाज से रोते हुए जबान से निकाला कि जिन को सुनकर पवन जी का दिल भी, जो हुस्ने इत्तफाक से उसी वक्त इसी महल के नीचे से गुजर रहे हैं, पाश पाश (टूट) हो गया है।

अगर इन फिकरों को सहदसामरी (जादू) कहे तो बजा है जिन्होने इन के कानों मे पहुँचते ही आगे बढाते हुए कदम को वही रोक दिया और अञ्जना देवी के पास जाने पर आमादा कर दिया है।

आहा! जिस वक्त पवन जी ने आखिर का दोहा सुना तब तो बेइख्तियार ही लौट ही पडे। मगर एक दो कदम जाने के बाद ठिठक कर वही खडे हो दिल ही दिल मे कहने लगे “उफ! मैंने तो बारह साल की प्रतिज्ञा की हुई है। अभी तो ग्यारहवाँ बरस गुजर रहा है। फिर खुद ही अगर मेरी प्रतिज्ञा रासती पर न हुई तो मुझसे बढ कर बेरहम और कमअक्ल कौन होगा? जिसने एक आवाज को सुन बगैर तहकीक और तसल्ली करने के ऐसी सख्त प्रतिज्ञा की। अफसोस! मुझसे बडी नदानी हुई! बेशक नादानी हुई! कोई भी अक्लमन्द ऐसा नहीं करता जैसा कि मैंने किया है!”

“आह! अगर इस तरह गर ये जारी करते करते मर गई तो बस क्यामत ही है। मैं तो दीन का रहा न दुनिया का” कुछ सोचकर “कुछ ही क्यों न हो अब तो जरूर प्राण प्यारी से मिल उसका हाल दरयाफ्त करूँगा। वरना नाहक उसका खून मेरी गर्दन पर होगा।” ये सोचकर कदम उठा कर आगे बढा मगर फिर झिझक कर खडा हो गया और कहने लगा

ہو گئے ؟ ؎

کہا کر دایرا دنا تہہ میں دو دکھیا بھاری ماتا پتا کو چھوڑ آئی میں شرن تمھاری

بناں آپ مہاراج کون میرا اتہکاری دیا کا ہی بیراگ پتی میں داس تمھاری

ناظرین! انجنا دیوی نے ان مذکورہ بالا فقروں کو ایسی دردناک آواز سے روتے ہوئے زبان سے نکالا کہ جن کو سُنکر پون جی کا دل بھی جو حسن اتفاق سے اُس وقت اُسی محل کے نیچے سے گذر رہے ہیں۔ پاش پاش ہو گیا ہے۔

اگر ان فقروں کو سحر سامری کہیں تو بجا ہے۔ جنھوں نے ان کے کانوں میں پہنچتے ہی۔ آگے بڑھتے ہوئے قدم کو وہیں روک لیا اور انجنا دیوی کے پاس جانے پر آمادہ کر دیا ہے۔

آہا! جس وقت پون جی نے آخر کا دوہا سُنا تب تو بے اختیار ہو لوٹ ہی پڑے مگر ایک دو قدم چلنے کے بعد ٹھٹک کر وہیں کھڑے ہو دل ہی دل میں کہنے لگے۔ "اُف میں نے تو بارہ سال کی پرتگیا کی ہوئی ہے۔ ابھی تو گیارہواں برس گذر رہا ہے" (پھر خود ہی) اگر میری پرتگیا راستی پر نہ ہوئی تو مجھ سے بڑھ کر بے رحم اور کم عقل کون ہوگا؟ جس نے ایک آواز کو سُن بغیر تحقیق اور تسلی کرنے کے ایسی سخت پرتگیا کی۔ افسوس! مجھ سے بڑی نادانی ہوئی!! بے شک نادانی ہوئی!!! کوئی بھی عقلمند ایسا نہیں کرتا۔ جیسا کہ میں نے کیا ہے"!!!

آہ! اگر اسی طرح گریہ زاری کرتے کرتے مر گئی تو بس قیامت ہی ہے۔ میں تو دین کا رہا نہ دنیا کا! (کچھ سوچکر) "کچھ ہی کیوں نہ ہو اب تو ضرور پران پیاری سے مل اُس کا حال دریافت کروں گا۔ ورنہ ناحق اُس کا خون میری گردن پر ہوگا"۔ یہ سوچکر قدم اُٹھا کر آگے بڑھا مگر پھر جھجک کر کھڑا ہو گیا اور کہنے لگا۔

"अफसोस मैं क्या बेवकूफ हूँ कि एक दफा की ना आक्बियत अंदेशी से तो अब तक पशेमान हो रहा हूँ। दूसरा एक और धब्बा अपनी जिन्दगी पर लगाने को तैयार हुआ हूँ। इससे तो क्यामत तक रिहाई मुश्किल है। क्योंकि जब ये बात आम मशहूर हो जावेगी कि पवन ने प्रतिज्ञा कर उसका पालन नहीं किया तो तमाम जहान मे मेरी रुसवाई होगी। हर एक से मुँह छुपाना पडेगा। और जो प्रतिज्ञा कर उसका पालन न करेगा वो ही मुझको बतौर मिसाल के पेश करेगा। आह! ऐसा काम तो मैं कभी नहीं करूँगा।" ये कहकर नीचे नजर किए सोचता हुआ वहा से चला गया।

बाब (अध्याय) सातवाँ

कशिशे दिल

दिन के तीसरे पहर का वक्त है। जब कि राजा प्रह्लाद विद्याधर के दरबार मे एक सन्नाटा सा छा रहा है कि किसी की आवाज सुनाई नहीं देती। क्या यहाँ राजा साहब तशरीफ नहीं रखते और अहलकार (कर्मचारी) चले गये है जो ये आलिम सकूत (शान्ति) है? नहीं! वो देखो राजा प्रह्लाद विद्याधर और पवन जी दोनो चलने को तैयार खडे हैं और दरबारी अहलकार अपने अपने कागजात संभाल मुंतजिर इस बात के दिखाई देते हैं कि ये कब दरवाजे से बाहर कदम रखें और हम चलते चलते नजर आए। ज्यों ही राजा वहाँ से चलने लगा एक सिपाही फौजी वर्दी पहने दरवाजे से दाखिल हुआ और झुककर आदाब करते ही एक खत जेब से निकाल राजा को दिया और आप अलग खडा हो गया।

राजा खत को हाथ मे लेकर पहले तो खडा ही पढता रहा मगर बाद में बैठ गया। कभी खत को रख देता और सर झुका सोचने लग जाता और कभी फिर हाथ मे ले उसको देखता।

افسوس میں کیسا بے وقوف ہوں کہ ایک دفعہ کی ناعاقبت اندیشی سے تو اب تک پشیمان ہو رہا ہوں۔ دوسرا ایک اور دھبہ اپنی زندگی پر لگانے کو تیار ہوا ہوں اس سے تو قیامت تک رہائی مشکل ہے۔ کیونکہ جب یہ بات عام مشہور ہو جائیگی کہ پون نے پرتگیا کر اس کا پالن نہیں کیا تو تمام جہان میں میری رسوائی ہوگی ہر ایک سے منہ چھپانا پڑیگا اور جو پرتگیا کر اُس کا پالن نہ کریگا وہی مجکو بطور مثال کے پیش کریگا۔ آہ! ایسا کام تو میں کبھی نہیں کرونگا" یہ کہہ کر نیچے نظر کئے سوچتا ہوا وہاں سے چلا گیا

باب ساتواں

کشش دل

دن کے تیسرے پہر کا وقت ہے جبکہ راجہ پرھلاد ودیادھر کے دربار میں ایک سناٹا سا چھا رہا ہے کہ کسی کی آواز سنائی نہیں دیتی۔ کیا یہاں راجہ صاحب تشریف نہیں رکھتے اور اہلکار چلے گئے ہیں جو یہ عالم سکوت ہے؟ نہیں! وہ دیکھو راجہ پرھلاد ودیادھر اور پون جی دونوں چلنے کو تیار کھڑے ہیں اور درباری اہلکار اپنے اپنے کاغذات سنبھال منتظر اس بات کے دکھائی دیتے ہیں کہ یہ کب دروازہ سے باہر قدم رکھیں اور ہم چلتے پھرتے نظر آئیں۔ جونہی راجہ وہاں سے چلنے لگا ایک سپاہی فوجی وردی پہنے دروازہ سے داخل ہوا اور جھک کر آداب کرتے ہی ایک خط جیب سے نکال راجہ کو دیا اور آپ الگ کھڑا ہو گیا۔

راجہ خط کو ہاتھ میں لے کر پہلے تو کھڑا ہی پڑھتا رہا۔ مگر بعد میں بیٹھ گیا کبھی خط کو رکھ دیتا اور سر جھکا سوچنے لگ جاتا۔ اور کبھی پھر ہاتھ میں لے اسکو دیکھتا

ईश्वर जाने! इस खत का मजमून क्या है जिसको पढकर राजा देर से सर झुका सोच रहा है। हाँ! कभी कभी पवन की तरफ भी देख लेता है। राजा की ये हालत देखकर हाजरीन दरबार बडी हैरत मे हो राजा के मुँह की तरफ देखने लगे मगर किसी की जुर्रत न पडी कि जबान से कुछ कहे।

बालाहद थोडी देर के बाद राजा मे खुद प्रधान से मुखातिब होकर कहा

राजा "महाराजा रावण लिखते हैं की दुरमती नगर के राजा वरुण से कुछ अरसा हुआ है जंग हुआ था। जिसमें वो गालिब (विजयी) आकर खर और दूषण कि कैद करके ले गया है। अब इनके रिहा कराने की गर्ज से जंग का इरादा है। इसलिए तमाम राजाओं को जो मातहत लंका के हैं तलब किया है। चुनाचा हमको भी लिखा है।"

"अब मैं ये सोचता हूँ कि वहाँ खुद जाऊँ या पवन को भेजूँ।" प्रधान कुछ जवाब देने को था कि पवन जी ने आगे बढकर यूँ कहा

पवनजी "महाराज अगरचे आपके नजदीज ये कुछ अहम मामला नहीं लेकिन मेरी मौजूदगी में आपका जाना गोया मेरी खिदमत का जाना है। इसलिए दस्त बस्ता इतमास है कि मुझको जाने की इजाजत दी जावे।"

जब पवन जी ने इस तरह कहा तो प्रधान ने इस बात की तायर की। मंत्री वगैहरा मे जोर दिया। इनकी बाते सुनकर पहले तो राजा कुछ देर तक नीचे नजर किए सोचता रहा। बाद मे प्रधान से बोला

राजा "अच्छा! कूच की तैयारी का हुकम दे दो ताकि पवन कल सुबह ही यहाँ से रवाना हो जाए।"

प्रधान ने ये सुनते ही फौरन फौजी अफ्सरों को बुला कर सब सामान दुरुस्त करने के वास्ते ताकीद की।

सुबह होते ही पाँच सौ जंगी जवान नंगी तलवारे कांधो पर रखे तरकशों

ایشور جلنے! اس خط کا مضمون کیا ہے جس کو پڑھ کر راجہ دیر سے سر جھکائے
سوچ رہا ہے۔ ہاں! کبھی کبھی پون کی طرف بھی دیکھ لیتا ہے۔ راجہ کی یہ حالت
دیکھکر حاضرین دربار بڑی حیرت میں راجہ کے منھ کی طرف دیکھنے لگے۔ مگر کسیکو
جرات نہ پڑی کہ زبان سے کچھ کہے۔

بالآخر تھوڑی دیر کے بعد راجہ نے خود پردھان سے مخاطب ہو کر کہا۔

راجہ مہاراجہ راون لکھتا ہے کہ دورمتی نگر کے راجہ ورن سے کچھ عرصہ
ہوا ہے کہ جنگ ہوا تھا۔ جس میں وہ غالب آکر کھر اور دوشن کو قید کر کے
لے گیا ہے۔ اب ان کے رہا کرانے کی غرض سے جنگ کا ارادہ ہے۔ اسلئے
تمام راجوں کو جو ماتحت لنکا کے ہیں طلب کیا ہے"۔ چنانچہ ہم کو بھی لکھا ہے۔

اب میں یہ سوچتا ہوں کہ وہاں خود جاؤں یا پون کو بھیجوں۔ پردھان کچھ
جواب دینے کو تھا کہ پون جی نے آگے بڑھکر یوں کہا

پون جی۔ مہاراج! اگرچہ آپ کے نزدیک یہ کچھ اہم معاملہ نہیں۔ لیکن میری موجودگی
میں آپ کا جانا گویا میری حرمت کا جانا ہے!! اسلئے دست بستہ التماس ہے کہ
مجکو جانے کی اجازت دی جاوے۔

جب پون جی نے اس طرح کہا تو پردھان نے اس بات کی تائید کی۔ منتری
وغیرہ نے زور دیا انکی باتیں سنکر پہلے تو راجہ کچھ دیر تک نیچے نظر کئے سوچتا رہا۔ بعد میں پردھان
سے بولا۔

راجہ۔ اچھا! فوج کی تیاری کا حکم دیدو تاکہ پون کل صبح ہی یہاں سے روانہ ہو جائے
پردھان نے یہ سنتے ہی فوراً فوجی افسروں کو بلا کر سب سامان درست کرنے کے
واسطے تاکید کی۔

صبح ہوتے ہی پانچ سو جنگی جوان ننگی تلواریں کاندھوں پر رکھے ترکشوں

को तीरों से पूरा करके रत्नपुर के जुनूबी दरवाजे से बाहर किसी के इन्तजार मे दिखाई दिए।

आहा! जिस वक्त पवनजी सर पर मुकुट[१] रखे जरा बकतर पहने घोडे को दौडाते वहाँ आए तो सबने जंगी कायदो के मुताबिक सलामी दी।

थोदी देर के बाद नाकूस बजा जिसकी आवाज सुनते ही वो सिपाही जो आगे पीछे होकर साफे बांधे कदम मिलाए मुन्तजिर (प्रतिक्षा) हुकुम खडे थे बडी तेजी के साथ चलते हुए नजर आए। जिनके कदमो की थपा थप की आवाज कानों में पहुँच क्या सुहावनी मालूम होती है।

सबसे आगे आगे पवन जी मंत्री के साथ बातें करते हुए जा रहे हैं। और इन सबके पीछे सेनापती दोहनरबेर बडे आन बान से घोडे को ऐडी देता हुआ कभी दाएँ तरफ निकल जाता है कभी बाएँ तरफ। जरा किसी का कदम इधर उधर हुआ कि दोहनरबेर ने वही डाँटा।

इस तरह बडी शानोशौकत के साथ जा रहे थे कि आफ्ताब ने अपनी शोख किरणो को सुर्ख नकाब मे छुपा महताब (चाँद) के खौफ से मगरिब मे पनाह ली। और इन दिलवरों ने उम्दा जगह देख एक नदी के करीब डेरा जमाया।

आहा! सब लोग तो सिवाए उन सिपाहियों के जो रात की हिफजत के वास्ते मामूर (नियुक्त) किए गए हैं सो गए हैं। मगर पवन जी और उनका मंत्री अबतक बातें करते सुनाई देते हैं।

कुछ जिकर कर रहे थे की एक जानवर की दर्दनाक आवाज सुनाई दी। पवन जी ने हैरान होकर मंत्री से पूछा "ये कौन जानवर है जो इस वक्त बोल रहा है?"

१ जो एक ताज की किस्म का होता है

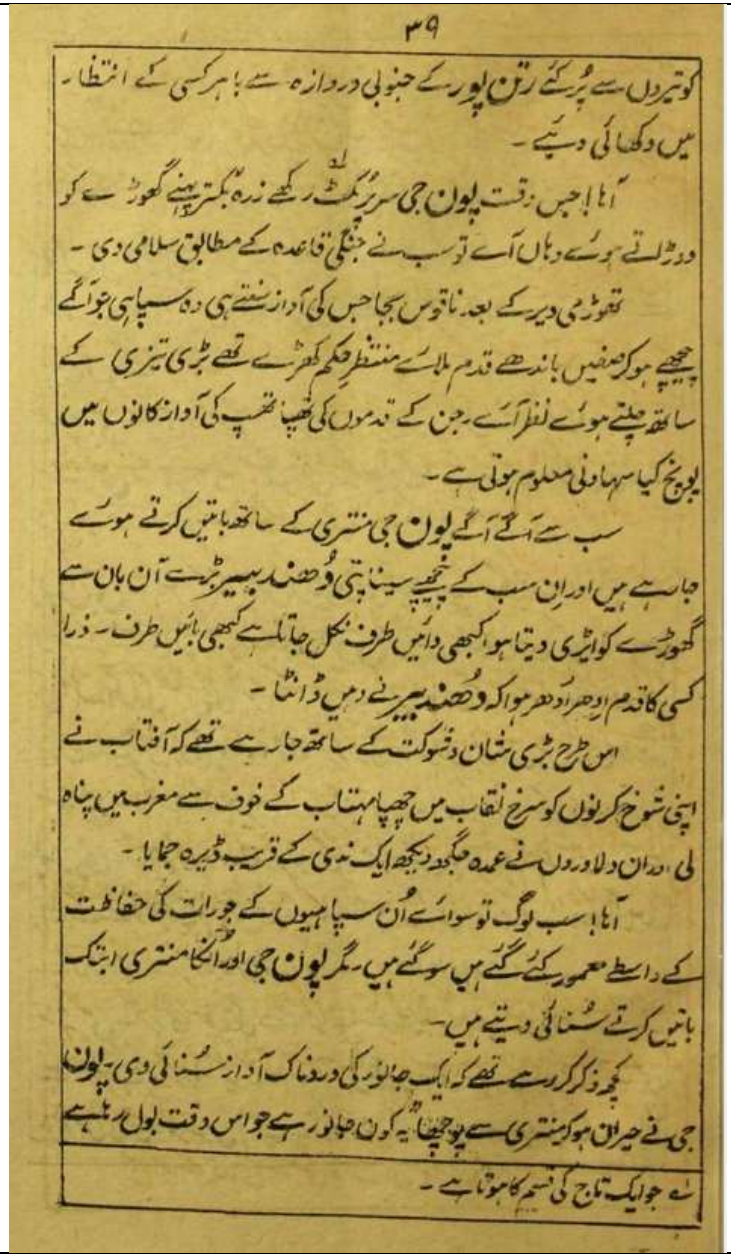

کو تیروں سے پُر کئے رتن پور کے جنوبی دروازہ سے باہر کسی کے انتظار
میں دکھائی دیئے۔

آہا! جس وقت پون جی سر پر مُکٹ[۱] رکھے زرہ بکتر پہنے گھوڑے کو
دوڑاتے ہوئے وہاں آئے تو سب نے جنگی قاعدہ کے مطابق سلامی دی۔

تھوڑی دیر کے بعد ناقوس بجا جس کی آواز سنتے ہی وہ سپاہی جو آگے
پیچھے ہو کر صفیں باندھے قدم ملائے منتظر حکم کھڑے تھے بڑی تیزی کے
ساتھ چلتے ہوئے نظر آئے۔ جن کے قدموں کی تھپا تھپ کی آواز کانوں میں
پہونچ کیا سہاونی معلوم ہوتی ہے۔

سب سے آگے آگے پون جی منتری کے ساتھ باتیں کرتے ہوئے
جا رہے ہیں اور ان سب کے پیچھے سیناپتی دُھند بیر بڑے آن بان سے
گھوڑے کو ایڑی دیتا ہوا کبھی دائیں طرف نکل جاتا ہے کبھی بائیں طرف۔ ذرا
کسی کا قدم ادھر اُدھر ہوا کہ دُھند بیر نے وہیں ڈانٹا۔

اس طرح بڑی شان و شوکت کے ساتھ جا رہے تھے کہ آفتاب نے
اپنی شوخ کرنوں کو سرخ نقاب میں چھپا مہتاب کے خوف سے مغرب میں پناہ
لی۔ اور ان دلاوروں نے عمدہ جگہ دیکھ ایک ندی کے قریب ڈیرہ جمایا۔

آہا! سب لوگ تو سوائے اُن سپاہیوں کے جو رات کی حفاظت
کے واسطے معمور کئے گئے ہیں سو گئے ہیں۔ مگر پون جی اور اُنکا منتری ابتک
باتیں کرتے سُنائی دیتے ہیں۔

کچھ ذکر کر رہے تھے کہ ایک جانور کی دردناک آواز سُنائی دی۔ پون
جی نے حیران ہو کر منتری سے پوچھا "یہ کون جانور ہے جو اس وقت بول رہا ہے"

۱ جو ایک تاج کی قسم کا ہوتا ہے۔

४०

"पहले तो कभी ऐसी आवाज सुनने का इत्तफाक नहीं हुआ"

मंत्री "महाराज! इसको चकोरी कहते हैं। ये अक्सर पानी मे रहती है। दिन भर नर और मादा इकट्ठे रहते हैं। मगर रात को अलग अलाग हो जाते हैं। ये मादा है जो नर के विराग में बोल रही है। गोया उसको बुला रही है।"

पवनजी हैरान होकर "क्या ये रात को दोनों एक जगह नहीं रह सकते?"

मंत्री "नहीं! कुदरतन ही ऐसा है कि ये रात को एक दूसरे से नहीं मिल सकते।"

पवनजी "ऐं! सिर्फ रात की जुदाई में ऐसी बोल रही रही है।"

मंत्री "जी हाँ! आप इस कदर हैरान क्यों हुए? ये कोई नई बात नहीं।"

पवनजी "इसकी आवाज सुनकर मुझको और ही ख्याल पैदा हो गया है। और वो ये है कि हमने शादी करते ही अञ्जना देवी को अल्हैदा मकान मे रखा हुआ है और आज तक उसकी शक्ल भी नहीं देखी। जब इस हैवान का ये हाल है तो वो बेचारी क्यों न बेचैन होती होगी? गो जाहिर न करती हो मगर दिल ही दिल मे कुढती जरूर होगी।"

मंत्री ताज्जुब के लहजे में "क्यों? आपने ऐसा क्यो किया?"

पवनजी "क्या तुमको वो महेन्द्रपुर की बात याद नहीं? जब हम तुम शादी करने से पहले गए थे तो अञ्जना देवी ने क्या कहा था? बस उसी बात पर हमने प्रतिज्ञा की हुई है कि शादी से बारह बरस तक उसके साथ हमकलाम न होंगे।"

मंत्री बडी संजीदगी से "अगर आपने उस बात पर अमल कर ऐसी सख्त प्रतिज्ञा की है तो गजब ही कर दिया। क्योंकि वो बात तो काबिले यकीन न थी। और मैंने उस वक्त भी यही अर्ज की थी। मगर अफसोस! आप ने कुछ तव्वजा न की और नाहक उस देवी को अबतक परेशान

پہلے تو کبھی ایسی آواز سننے کا اتفاق نہیں ہوا"

منتری - مہاراج! اس کو چکوی کہتے ہیں یہ اکثر پانی میں رہتی ہے - دن بھر نر اور مادہ اکٹھے رہتے ہیں مگر رات کو الگ الگ ہو جاتے ہیں - یہ مادہ ہے جو نر کے وراگ میں بول رہی ہے - گویا اُس کو بولا رہی ہے -

پون جی (حیران ہو کر) کیا! یہ رات کو دونوں ایک جگہ نہیں رہ سکتے ؟

منتری - جی! نہیں! قدرتاً ہی ایسا ہے کہ یہ رات کو ایک دوسرے سے نہیں مل سکتے -

پون جی - ایں! صرف رات کی جدائی میں ایسی بول رہی ہے !!

منتری - جی! ہاں! آپ اس قدر حیران کیوں ہوئے - یہ کوئی نئی بات نہیں -

پون جی - اس کی آواز سن کر مجکو اور ہی خیال پیدا ہو گیا ہے اور وہ یہ ہے کہ ہم نے شادی کرتے ہی **انجنا دیوی** کو علیحدہ مکان میں رکھا ہوا ہے اور آج تک اس کی شکل بھی نہیں دیکھی - جب اس حیوان کا یہ حال ہے تو وہ بیچاری کیوں نہ بے چین ہوتی ہوگی ؟ گو ظاہر نہ کرتی ہو مگر دل ہی دل میں کڑھتی ضرور ہوگی !!

منتری - (تعجب کے لہجہ میں) کیوں ؟ آپ نے ایسا کیوں ! کیا ؟

پون جی - کیا! تم کو وہ مہندر پور کی بات یاد نہیں ؟ جب ہم تم شادی کرنے سے پہلے گئے تھے تو **انجنا دیوی** نے کیا کہا تھا ؟ بس اُسی بات پر ہم نے پرتگیا کی ہوئی ہے کہ شادی سے بارہ برس تک اس کے ساتھ ہمکلام نہ ہونگے -

منتری - (بڑی سنجیدگی سے) اگر آپ نے اُسی بات پر عمل کر ایسی سخت پرتگیا کی ہے تو غضب ہی کر دیا - کیونکہ وہ بات تو قابل یقین نہ تھی - اور میں نے اُس وقت بھی یہی عرض کی تھی - مگر افسوس ! آپ نے کچھ توجہ نہ کی اور ناحق اوس دیوی کو ابتک پریشان

रखा! आञ्जना देवी ने मेरी स्त्री से जो अक्सर उसके पास जाया करती है कभी इस बात क जिक्र भी नहीं किया और न ही किस्म की शिकायत जबान पर लाई है। उसके विद्वान होने पर तो तमाम औरते अश अश कर रही हैं। उफ! बारह साल हो गए मगर आपने पहले कभी जिक्र नहीं किया। वरना कब मुमकिन था कि मैं इस गुनाहे अजीम का आपको मुर्तकिब (अपराधी) होने देता। आह! ये बात सुन कर मेरे तो रोगटें खडे हो गए हैं। आपने बडा जुल्म किया! हकीकत मे जुल्म किया! ऐसे पाक ख्यालों के रखने वाली वो देवी और उसपर ये जोरो जफा (क्रूर) सितम! सितम! आप बडे बेरहम हैं।"

नाजरीन! मंत्री की बाते पवनजी के बदन मे बिजली की तरह उतर कर गई। उस पर ये खूब सोजोन है कि जादू वो जो सर चढ कर बोले। पवनजी ने बगैर किसी बात का जवाब देने के यूँ कहा

दुख का कारण मैं भेद बता पाई न जना
शीलवती प्यारी अञ्जना कुछ न किया बचा

जब पवन जी ने इस तरह कहा तो मंत्री बोला

मंत्री "महाराज! जो वक्त गुजर गया वो हाथ नहीं आता। लेकिन अब भी रत्नपुर नजदीक है। आप जाकर उसकी तशफि (तसल्ली) कर आवें और मैं सेना को लेकर रामनाथ पर आपका इन्तजार करूँगा।"

पवनजी कुछ देर सोचने के बाद "आहा! मंत्री बडी खुशी की बात ये हुई कि आज बारह साल प्रतिज्ञा को भी पूरे हो गए।"

मंत्री "तो अब आप देर न करे क्योंकि रात पहले ही बहुत गुजर चुकी है।"

पवनजी "खैर इस बात का तो कुछ फिक्र नहीं लेकिन अगर मैं इस वक्त वापिस गया तो पिताजी ख्याल करेंगे कि मैं लडाई से डरकर वापिस आ गया हूँ और बाद सब हंसेगे"

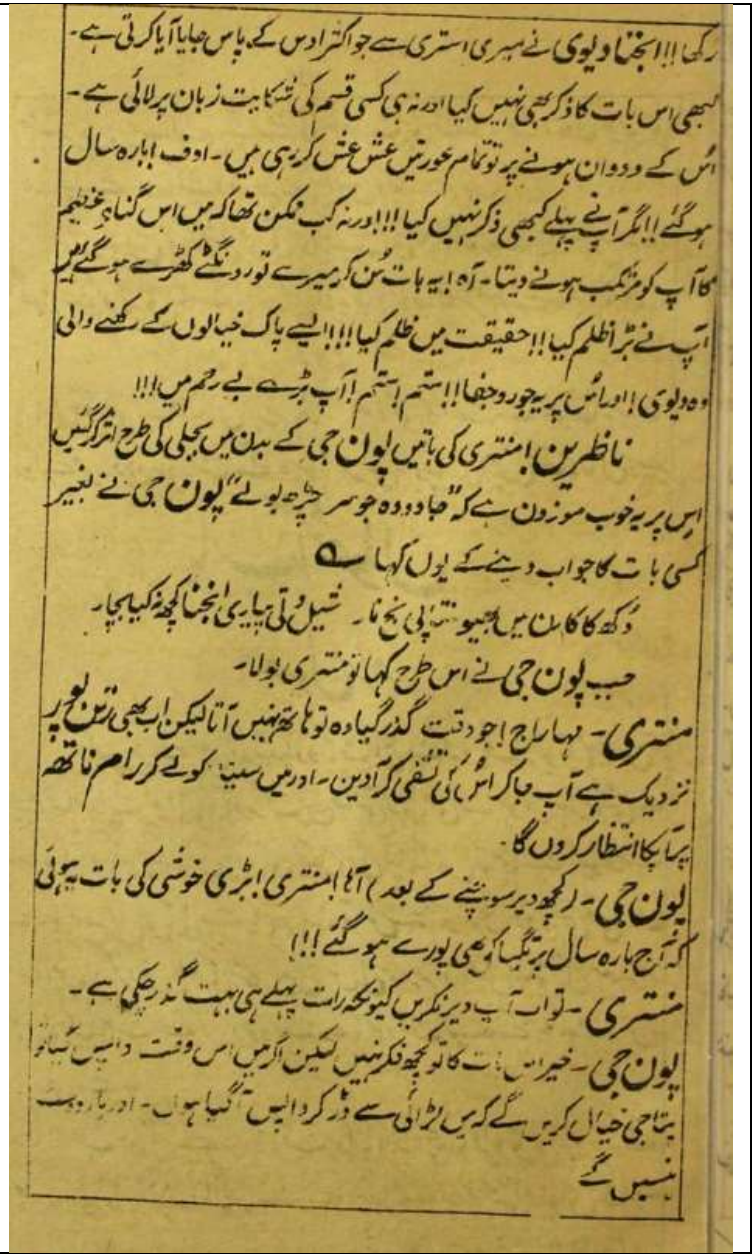
رکھا!!! انجنا دیوی نے میری استری سے جو اکثر اوس کے پاس جایا آیا کرتی ہے۔
کبھی اس بات کا ذکر بھی نہیں کیا اور نہ ہی کسی قسم کی شکایت زبان پر لائی ہے۔
اُس کے ودوان ہونے پر تو تمام عورتیں عش عش کر رہی ہیں۔ اوف! بارہ سال
ہو گئے!! اگر آپنے پہلے کبھی ذکر نہیں کیا!!! ورنہ کب ممکن تھا کہ میں اس گناہِ عظیم
کا آپ کو مرتکب ہونے دیتا۔ آہ! یہ بات سُن کر میرے تو رونگٹے کھڑے ہو گئے ہیں
آپ نے بڑا ظلم کیا!! حقیقت میں ظلم کیا!!! ایسے پاک خیالوں کے رکھنے والی
وہ دیوی! اور اُس پر یہ جور و جفا!! ستم! ستم! آپ بڑے بے رحم ہیں!!!
ناظرین! منتری کی باتیں پون جی کے بدن میں بجلی کی طرح اتر گئیں
اس پر یہ خوب موزون ہے کہ "جادو وہ جو سر چڑھ بولے" پون جی نے بغیر
کسی بات کا جواب دینے کے یوں کہا ؎
دُکھ کا کارن میں بھید بتا پائی نہ جنا۔ شیل وتی پیاری انجنا کچھ نہ کیا بچار۔
جب پون جی نے اس طرح کہا تو منتری بولا۔
منتری۔ مہاراج! جو وقت گذر گیا وہ تو ہاتھ نہیں آتا لیکن اب بھی رتن پور
نزدیک ہے آپ جا کر اُس کی تشفی کر آویں۔ اور میں سینا کو لے کر رام ناتھ
پر آپکا انتظار کروں گا۔
پون جی۔ (کچھ دیر سوچنے کے بعد) آہا! منتری! بڑی خوشی کی بات یہ ہوئی
کہ آج بارہ سال پرتگیا کو بھی پورے ہو گئے!!!
منتری۔ تو اب آپ دیر نہ کریں کیونکہ رات پہلے ہی بہت گذر چکی ہے۔
پون جی۔ خیر اس بات کا تو کچھ فکر نہیں لیکن اگر میں اس وقت واپس آ جاؤں
پتا جی خیال کریں گے کہ میں لڑائی سے ڈر کر واپس آ گیا ہوں۔ اور یار ہنسیں
ہنسیں گے

मंत्री "आपको किसी के मिलने की जरूरत ही क्या? सिर्फ अञ्जना देवी तक जाइए और एक दो रोज रहकर वापिस आ जाइए।"

पवनजी को मंत्री की तजवीज (सलाह) पसन्द आई। फौरन घोडे पर सवार हुआ और घोडे तो ऐडी लगाने की देर थी कि ये जा वो जा। आखिर नजर से गायब हो गया।

दोहा

बलहारी जगदीश के जा महिमा अपरमपार
नाम उसी का सत है झूठा ये संसार
दया करे जब दीन पर जरा ना लागे देर
निरास न हो प्यारी अञ्जना था दिनो का फेर

बाब (अध्याय) आठवाँ

हसूले मुराद

एक पहर से किसी कदर ज्यादा रात बाकी है कि अञ्जना देवी जो इस से पहले तमाम रात पवन जी के वैराग में जागती रही थी बेहोश होकर सो गई हैं। और सोई भी उस नींद में जिसको बेफिक्री की नींद कहे तो बजा है। क्योंकि जब से ये ससुराल मे आई हैं ये नींद तो इससे कोसों दूर रहती थी। हाँ! सर्द आहें और गर्दिश अयाम की शिकायतें इसकी हमदम और रफीक थी। आज मालूम नहीं क्या बाइस है कि बावजूद संध्या का वक्त होने के ये बेहोश सो रही हैं।

जब मामूल से ज्यादा वक्त हो गया और अञ्जना देवी ने करवट भी न ली तो बसन्तमाला बहुत इन्तजार के बाद अञ्जना देवी के कमरे मे दबे पाँव आई तो मालूम हुआ कि वो बेहोश सो रहे और शमादान जल रहा है।

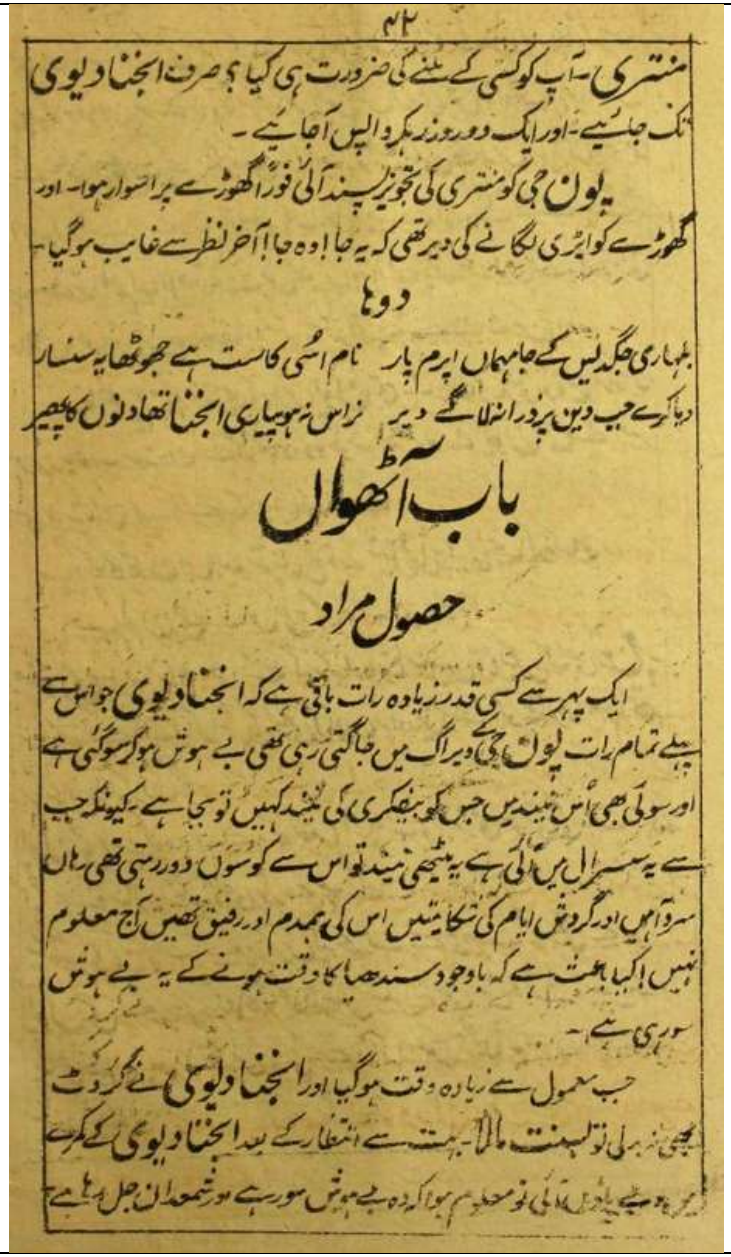

منتری - آپ کو کسی کے ملنے کی ضرورت ہی کیا؟ صرف انجنا دیوی تک جائیے - اور ایک دو روز رہکر واپس آجائیے -

پون جی کو منتری کی تجویز پسند آئی فوراً گھوڑے پر اسوار ہوا - اور گھوڑے کو ایڑی لگانے کی دیر تھی کہ یہ جا! وہ جا! آخر نظر سے غایب ہوگیا -

دوہا

بلہاری جگدیس کے جا مہماں اپرم پار نام اُسی کا ست ہے جھوٹھا یہ سنسار
دیا کرے جب دین پر ذرا نہ لاگے دیر نراس نہ ہو پیاری انجنا تھا دنوں کا پھیر

باب آٹھواں

حصول مراد

ایک پہر سے کسی قدر زیادہ رات باقی ہے کہ انجنا دیوی جو اس سے پہلے تمام رات پون جی کے ویراگ میں جاگتی رہی تھی بے ہوش ہوکر سوگئی ہے اور سوئی بھی اس نیند میں جس کو بیفکری کی نیند کہیں تو بجا ہے - کیونکہ جب سے یہ سسرال میں آئی ہے یہ میٹھی نیند تو اس سے کوسوں دور رہتی تھی ہاں سرد آہیں اور گردش ایام کی شکایتیں اس کی ہمدم اور رفیق تھیں آج معلوم نہیں کیا باعث ہے کہ باوجود سندھیا کا وقت ہونے کے یہ بے ہوش سو رہی ہے -

جب معمول سے زیادہ وقت ہوگیا اور انجنا دیوی نے کروٹ بھی نہ بدلی تو بسنت مالا بہت سے انتظار کے بعد انجنا دیوی کے کمرے میں دبے پاؤں آئی تو معلوم ہوا کہ وہ بے ہوش سو رہے ہے شمعدان جل رہا ہے

४३

चूँकि पहले बसन्तमाला ने मुद्दत से इसको इस हालत में कभी न देखा था इसलिए घबरा गई और हाथ बढा कर बेदार (जगाने) करने का इरादा किया। मगर झिझक कर इस ख्याल से रह गई कि बडी मुद्दत के बाद उसको ये नींद नसीब हुई है।

आहा! अगरचे अञ्जना देवी ख्वाबे गफलत (लापरवाही) मे बेहोश सो रही हैं लेकिन उसके लबों से कुछ तबसुम के आसार पाए जाते है। न सिर्फ ये ही बल्कि आहिस्ता आहिस्ता हरकत भी कर रहे हैं। गोया ये ख्वाब में किसी से बाते कर रही हैं।

बसन्तमाला बडी हैरानगी से बहुत देर तक इस प्यारी सूरत को देखती रही और कई तरह के ख्यालात पैदा कर हैरान होती रही।

जब संध्या का वक्त गुजरने लगा तो बसन्तमाला की बेचैनी हद से बढी। ज्यादा सब्र की ताब न लाकर बोली

बसन्तमाला "प्यारी सखी! संध्या का वक्त हो गया है और तुम अब तक सोती हो! क्या आज उठने को दिल नहीं चाहता?" ये कहा और हाथ से हरकत दी। अञ्जना देवी ने आँखे खोलकर एक दफा देखा और फिर बन्द कर ली।

बसन्तमाला अञ्जना देवी की ये हरकत देख ताजुब में हुई और बोली

बसन्तमाला "सखी! आज ये क्यों! क्या मेरी शक्ल तुम देखना नहीं चाहती कमरे से बाहर निकल जाऊ?"

अञ्जना देवी मुस्कराती हुई उठी और बोली

बसन्तमाला मैं स्वपन में देखे हैं भरतार
अती आनन्द मे मन देखे रही घडी दो चार
धन दिन प्यारी आज का जो देखा स्वपन अपार
तब से मग्न है मन मेरा जो राखे करतार

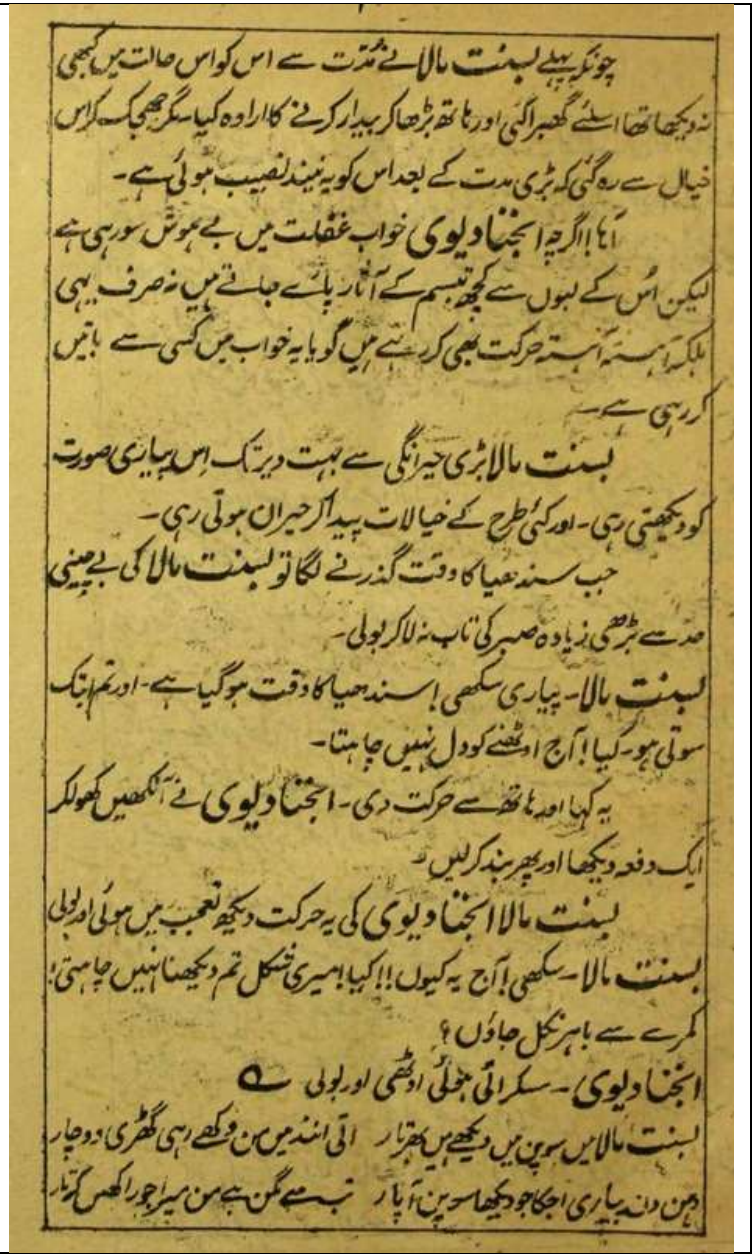
چونکہ پہلے بسنت مالا نے مدت سے اس کو اس حالت میں کبھی
نہ دیکھا تھا اسلئے گھبرا گئی اور ہاتھ بڑھا کر بیدار کرنے کا ارادہ کیا مگر جھجک کر اس
خیال سے رہ گئی کہ بڑی مدت کے بعد اس کو یہ نیند نصیب ہوئی ہے۔
آہا! اگرچہ انجنا دیوی خواب غفلت میں بے ہوش سو رہی ہے
لیکن اُس کے لبوں سے کچھ تبسم کے آثار پائے جاتے ہیں نہ صرف یہی
بلکہ آہستہ آہستہ حرکت بھی کر رہے ہیں گویا یہ خواب میں کسی سے باتیں
کر رہی ہے۔
بسنت مالا بڑی حیرانگی سے بہت دیر تک اس پیاری صورت
کو دیکھتی رہی۔ اور کئی طرح کے خیالات پیدا کر حیران ہوتی رہی۔
جب سندھیا کا وقت گذرنے لگا تو بسنت مالا کی بے چینی
حد سے بڑھی زیادہ صبر کی تاب نہ لاکر بولی۔
بسنت مالا۔ پیاری سکھی! سندھیا کا وقت ہو گیا ہے۔ اور تم ابتک
سوتی ہو۔ کیا! آج اوٹھنے کو دل نہیں چاہتا۔
یہ کہا اور ہاتھ سے حرکت دی۔ انجنا دیوی نے آنکھیں کھولکر
ایک دفعہ دیکھا اور پھر بند کر لیں۔
بسنت مالا انجنا دیوی کی یہ حرکت دیکھ تعجب میں ہوئی اور بولی
بسنت مالا۔ سکھی! آج یہ کیوں!! کیا! میری شکل تم دیکھنا نہیں چاہتی!
کمرے سے باہر نکل جاؤں؟
انجنا دیوی۔ مسکراتی ہنستی اوٹھی اور بولی ؎
بسنت مالا میں سوپن میں دیکھے ہیں بھرتار اتی انند میں من دکھے رہی گھڑی دو چار
دھن دن پیاری اجکا جو دیکھا سوپن آپار تب سے مگن ہے من میرا جو راکھے کرتار

बसन्तमाला कुछ कहने को थी कि दरवाजे खडखडाने की आवाज आई। डरकर झरोखे से जाकर देखा तो पवन जी को पाया। हंसती हुई आई और यूँ कहा

उठ देख प्यारी अञ्जना क्यों होवे बेचैन
स्वामी खडे द्वार पर सीतल कर उठ नैन

अञ्जना देवी "सखी! क्यों दिल लगी करती है। कभी तो ईश्वर कृपा करेंगे।"

अञ्जना देवी ये कहती रही कि बसन्तमाला ने जाकर दरवाजा खोला और पवनजी को साथ लाई।

ज्यों ही उन्होने कदम दालान मे रखा कि अञ्जना देवी को अपने पाँव पर पाया और ये कहते सुना "धन है आज का दिन जो आप के दर्शन हुए महाराज! मेरे नयन तो चकोर की तरह आपके दर्शन को तरस रहे थे। मालूम नहीं आप मेरी तरफ से क्यों ऐसे बदगुमान हो गए जो आज तक खबर ही न ली। स्वामीजी! बिना आप के और कोई सहारा नहीं। मेरे हाल पर रहम करो। मैं बेगुनाह हूँ। माँ बाप को छोड आपके शरण मे आई थी सो आपने मन से ऐसे त्याग दिया जैसे सरहदहन दहाम को और मनुष्य मल[१] को।"

ये कहा और जारजार रोने लग पडी।

पवनजी "प्रिया जी! मेरा कसूर नहीं। ये तुम्हारे ही अपमान[२] का फल है। क्या तुमको याद नहीं शादी से कुछ रोज पहले शाम के वक्त सखी सहेलियों के साथ आपने महल मे बैठे हुए अपनी खूबसूरती के अभिमान में आ हम को जहर के समुन्द्र से मिसाल दे दोपर्व की तारीफ कर रही थी।"

इस बात को सुनकर अञ्जना देवी तो हैरान हो पवन जी के मुँह की तरफ देखने लगी। बसन्तमाला ने जवाब दिया।

१ मल याने गन्दी चीज को २ याने गरूर का नतीजा

بسنت مالا کچھ کہنے کو تھی کہ دروازہ کھٹ کھٹانے کی آواز آئی دوڑ کر
جھروکے سے جاکر دیکھا تو پون جی کو پایا ہنستی ہوئی آئی اور یوں کہا ؎
اوٹھ دیکھ پیاری انجنا کیوں ہووے بیچین سوامی کھڑے دوار پر ستیل کر اُٹھ نین
انجنا دیوی۔ سکھی! کیوں دل لگی کرتی ہے۔ کبھی تو التیور کر پاکر ینگے۔
انجنا دیوی یہ کہتی رہی کہ بسنت مالا نے جاکر دروازہ کھولا اور
پون جی کو ساتھ لائی۔
جونہی اُنھوں نے قدم دالان میں رکھا کہ انجنا دیوی کو اپنے پاؤں
پر پایا اور یہ کہتے سُنا "دھن ہے آجکا دن جو آپ کے درشن ہوئے مہاراج! میرے
نین تو چکور کی طرح آپ کے درشن کو ترس رہے تھے۔ معلوم نہیں آپ میری
طرف سے کیوں ایسے بدگمان ہوگئے جو آج تک خبر ہی نہ لی۔ سوامی جی!
بنا آپ کے اور کوئی سہارا نہیں۔ میرے حال پر رحم کرو۔ میں بے گناہ ہوں۔
ماں باپ کو چھوڑ آپ کے شرن میں آئی تھی سو آپ نے من سے ایسے تیاگ
دیا جیسے سدھ دہن دہام کو اور منش مل[1] کو۔
یہ کہا اور زار زار رونے لگ پڑی۔
پون جی۔ پریہ جی! میرا قصور نہیں یہ تمھارے ہی ابھمان[2] کا پھل ہے کیا تمکو
یاد نہیں۔ شادی سے کچھ روز پہلے شام کے وقت سکھی سہیلیوں کے ساتھ
اپنے محل میں بیٹھے ہوئے اپنی خوبصورتی کے ابھمان میں آہم کو زہر کے سمندر
سے مثال دے دوپرب کی تعریف کر رہی تھیں۔
اس بات کو سنکر انجنا دیوی تو حیران ہو پون جی کے منھ کیطرف
دیکھنے لگی۔ مگر بسنت مالا نے جواب دیا۔

[1] مل یعنے گندی چیز کو [2] یعنے غرور کا نتیجہ۔

हुए। “बसन्तमाला ने नादानी से दो तीन बातें बेअदबी की कही हैं सो उनके वास्ते मैं आपसे माफी माँगती हूँ।”

इतने मे बसन्तमाला ने मुस्कराते हुए कहा

बसन्तमाला “सखी! क्या आज संध्या नहीं करोगी?”

ये सुनते ही पवन जी और अञ्जना देवी ने स्नान कर संध्या की और बाद मे इधर उधर की बातें कर दिल के अरमान निकालने लगे।

आहा! इस वक्त अञ्जना देवी का वही चेहरा जो जमाने की गर्दिश से रंजोगम मे मुबतला (ग्रस्त) रहकर जर्द (पीला) और डरावना मालूम होता था सुर्ख और दिल लुभाना दिखाई दे रहा है। पवनजी के न देखने से वो खून जो रग रग मे जम गया था जोशेजन है। बात बात पर तबसुम आ रहा है। और खुशी से चेहरा दमक रहा है। आज वही महल जो एक अरसे से दिन रात की सर्द आहों को सुनता हुआ तहमसरा बन रहा था खुशी के कहकहों से गूज रहा है। देखो वही परिन्दे जो मौसमी के दरख्त पर अक्सर बैठकर अञ्जना देवी की गमजदा हालत पर रोया करते थे खुशी से चहचहाते हुए सुनाई देते हैं। उसी फुलवारी से जिसको देखने से कलेजा मुँह को आता था आज बसन्तमाला फूलों के हार पिरो कर अञ्जना देवी और पवनजी के गले पहना रही है। और एक गुलदस्ता भी आगे रखा है। सच है जी से जहान है। अगर दिल खुश हुआ तो सब चीजे भाये वरना सब बबाले जान है।

जब तीन रोज गुजर गए तो पवनजी चलने को तैयार हुए तब अञ्जना देवी ने हाथ जोडकर कहा

अञ्जना देवी स्वामीजी! क्या आप अपने वालदैन की तरफ न जायेंगे?

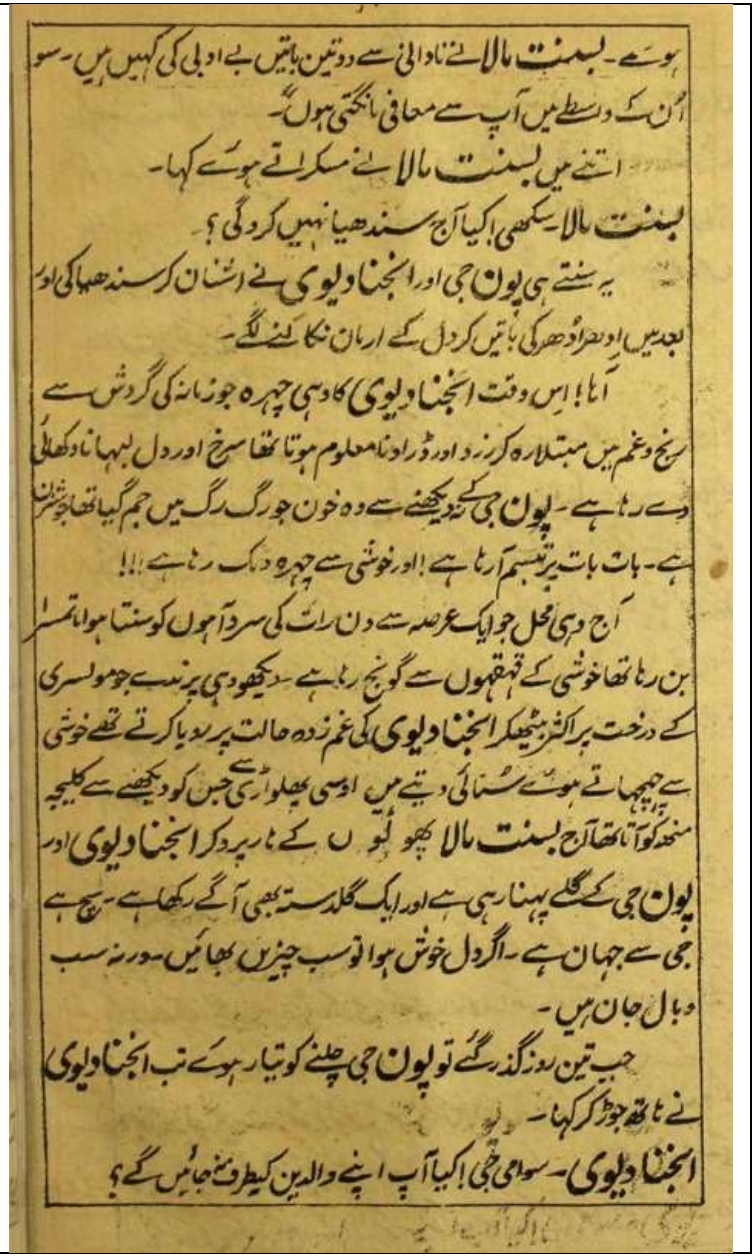

ہوئے۔ بسنت مالا نے نادانی سے دو تین باتیں بے ادبی کی کہیں ہیں۔ سو
اُن کے واسطے میں آپ سے معافی مانگتی ہوں۔
اتنے میں بسنت مالا نے مسکراتے ہوئے کہا۔
بسنت مالا۔ سکھی! کیا آج سندھیا نہیں کروگی؟
یہ سنتے ہی پون جی اور انجنا دیوی نے اشنان کر سندھیا کی اور
بعد میں اِدھر اُدھر کی باتیں کر دل کے ارمان نکالنے لگے۔
آہا! اِس وقت انجنا دیوی کا وہی چہرہ جو زمانہ کی گردش سے
رنج و غم میں مبتلا رہ کر زرد اور ڈراونا معلوم ہوتا تھا سرخ اور دل لبھانا دکھائی
دے رہا ہے۔ پون جی کے نہ دیکھنے سے وہ خون جو رگ رگ میں جم گیا تھا جوشاں
ہے۔ بات بات پر تبسم آرہا ہے! اور خوشی سے چہرہ دمک رہا ہے!!!
آج وہی محل جو ایک عرصہ سے دن رات کی سرد آہوں کو سنتا ہوا تہسرا
بن رہا تھا خوشی کے قہقہوں سے گونج رہا ہے۔ دیکھو وہی پرندے جو مولسری
کے درخت پر اکثر بیٹھکر انجنا دیوی کی غم زدہ حالت پر رویا کرتے تھے خوشی
سے چہچہاتے ہوئے سُنائی دیتے ہیں اوسی پھلواڑی سے جس کو دیکھنے سے کلیجہ
منھ کو آتا تھا آج بسنت مالا پھولوں کے ہار پرو کر انجنا دیوی اور
پون جی کے گلے پہنا رہی ہے اور ایک گلدستہ بھی آگے رکھا ہے۔ سچ ہے
جی سے جہان ہے۔ اگر دل خوش ہوا تو سب چیزیں بھائیں۔ ورنہ سب
وبال جان ہیں۔
جب تین روز گذر گئے تو پون جی چلنے کو تیار ہوئے تب انجنا دیوی
نے ہاتھ جوڑ کر کہا۔
انجنا دیوی۔ سوامی جی! کیا آپ اپنے والدین کیطرف نہ جائیں گے؟

पवन जी "प्रियजी! इस वकत तो मैं नहीं जा सकता। सीधा रामनाथ को जाऊँगा।"
अञ्जना देवी "महाराज! जिस वक्त ये खबर उनको हुई तो वो दिल मे ख्याल करेंगे कि मैंने आपको उनके मिलने से बाज रखा है। इसलिए अब जरूर उनके पास जाए।"
पवनजी "प्रियजी! इस वक्त उनके पास जाने से मेरी हँसी होगी। वो यही ख्याल करेंगे की लडाई से डरकर मैं वापिस आ गया हूँ। वरना जाने मे मुझे कोई अजर नहीं।"
अञ्जना देवी "अगर आप खुद नहीं जा सकते तो किसी को भेज कर ही उनको इत्तला दे दें। नहीं तो मेरे लिए ये बेहतर न होगा क्योंकि ये तो काल, आपसे मिलने का इत्तफाक हुआ है और मैं उम्मीद रखती हूँ की ईश्वर जरूर उस आरजू को जो खास मुद्दा शादी का है और जिस का अयले से अवने ख्वासतगार है पूरी कर देंगे।"
पवनजी हाथ से अंगूठी उतारकर "प्रियजी ये अंगूठी पास रखो। उनको दिखला देना। वो तुम्हारी बात पर कभी शक न करेंगे और मेरे आने पर यकीन लायेंगे।"
ये कहकर वहाँ से रवाना हुए।
अगरचे इस वक्त पवनजी का दिल अञ्जना देवी की बातें सुनकर हर्गिज नहीं चाहता था कि एक मिनट के लिए भी उससे जुदा हो। लेकिन ये मौका नाजुक जान कर घोडे को सरपट दौडाए जा ही रहा है।
रामनाथ से अपने सिपाह को साथ ले लंका मे पहुँचा। और जब सब राजा जिन को तलब किया गया था आ गए तो वरुण पर फौज कशी गई। उधर से वरुण भी मुकाबले में निकला।

پون جی - پریہ جی! اس وقت تو میں نہیں جا سکتا سیدھا رام ناتھ کو جاؤں گا۔

انجنا دیوی - مہاراج! جس وقت یہ خبر اُن کو ہوئی تو وہ دل میں خیال کریں گے کہ میں نے آپ کو اُن کے ملنے سے باز رکھا ہے۔ اس لئے اب ضرور اُن کے پاس جائیں۔

پون جی - پریہ جی! اس وقت اُن کے پاس جانے سے میری ہنسی ہوگی۔ وہ یہی خیال کریں گے کہ لڑائی سے ڈر کر میں واپس آگیا ہوں۔ ورنہ جانے میں مجکو کوئی عذر نہیں۔

انجنا دیوی - اگر آپ خود نہیں جا سکتے تو کسی کو بھیجکر ہی اُن کو اطلاع دیں نہیں تو میرے لئے یہ بہتر نہ ہوگا۔ کیونکہ یہ تو کال میں آپ سے ملنے کا اتفاق ہوا ہے۔ اور میں امید رکھتی ہوں کہ ایشور ضرور اُس آرزو کو جو خاص مدعا شادی کا ہے اور جس کا اعلےٰ سے ادنے خواستگار ہے پوری کریں گے۔

پون جی - ہاتھ سے انگوٹھی اوتار کر۔ پریہ جی! یہ انگوٹھی پاس رکھو۔ اُن کو دکھلا دینا وہ تمہاری بات پر کبھی شک نہ کریں گے۔ اور میرے آنے پر یقین لائیں گے۔

یہ کہہ کر وہاں سے روانہ ہوئے۔

اگرچہ اس وقت پون جی کا دل انجنا دیوی کی باتیں سنکر ہرگز نہیں چاہتا تھا کہ ایک منٹ کے لئے بھی اُس سے جدا ہو لیکن یہ موقعہ نازک جان کر گھوڑے کو سرپٹ ڈالے جا ہی رہا ہے۔

رام ناتھ سے اپنی سپاہ کو ساتھ لے لنکا میں پونچا۔ اور جب سب راجہ جن کو طلب کیا گیا تھا آگئے تو ورن پر فوج کشی کی گئی۔ ادھر سے ورن بھی مقابلہ میں نکلا۔

४९

हर वक्त आँखे दर्शन की ख्वाहिश में रहती हैं।

ये कहा और सरो सांस लेकर दिल मे कहने लगी "मालूम नहीं स्वामी जी की मोहब्बत भरी आँखो ने खुद रफतगी का मुझपर क्या जादू कर दिया कि जरा चैन नहीं आता। तबीयत को बेहतर संभालती हूँ लेकिन किसी तरह नहीं संभलती। हाय! मुझको क्या हो गया? ये कहा और पलंग पर जाकर लेट गई।"

जब इस तरह पवनजी की याद में अञ्जना देवी को पाँच महिने गुजर गए तो एक रोज बातें करते बसन्तमाला ने कहा

बसन्तमाला "सखी! गो अब तो जाहिर नहीं करती मगर ये बात छुपाने से भी नहीं छुपती। मैं तभी हमल (गर्भ) के आशार पाती हूँ। क्या अब ये मेरा ख्याल दुरुस्त है?"

अञ्जना देवी नीचे नजर झुका कर "आज क्या दिल्लगी सूझी है जो इस तरह की बाते करती हो।"

बसन्तमाला "नहीं नहीं! मैं दिल्लगी नहीं करती। मेरा असल दरया पूछने का सिर्फ ये है कि अगर वाकई मेरा कहा सही रास्ते पर है और ईश्वर करें कि ऐसा ही हो तो इस हालत में तुमको किसी किस्म का रंज या फिक्र करना वाजिब नहीं क्योंकि इसका असर सन्तान पर खराब पडेगा।"

अञ्जना देवी "नहीं नहीं। मुझको तो कोई रंज नहीं। लेकिन ऐसा ख्याल जरूर रहता है कि अगर रानी (सास) ने स्वामीजी की अंगूठी देखकर यहाँ आने का यकीन कर लिया तो बेहतर वरना फिर बडी भारी मुसीबत का सहना नजर आता है।"

बसन्तमाला "इस बात का नाहक फिक्र करती हो अंगूठी से बढकर उनके आने का हम और क्या सबूत पेश कर सकती हैं। अगर न ऐतबार करें तो उन से पूछ मंगा मैं तुम क्यो डरती हो?"

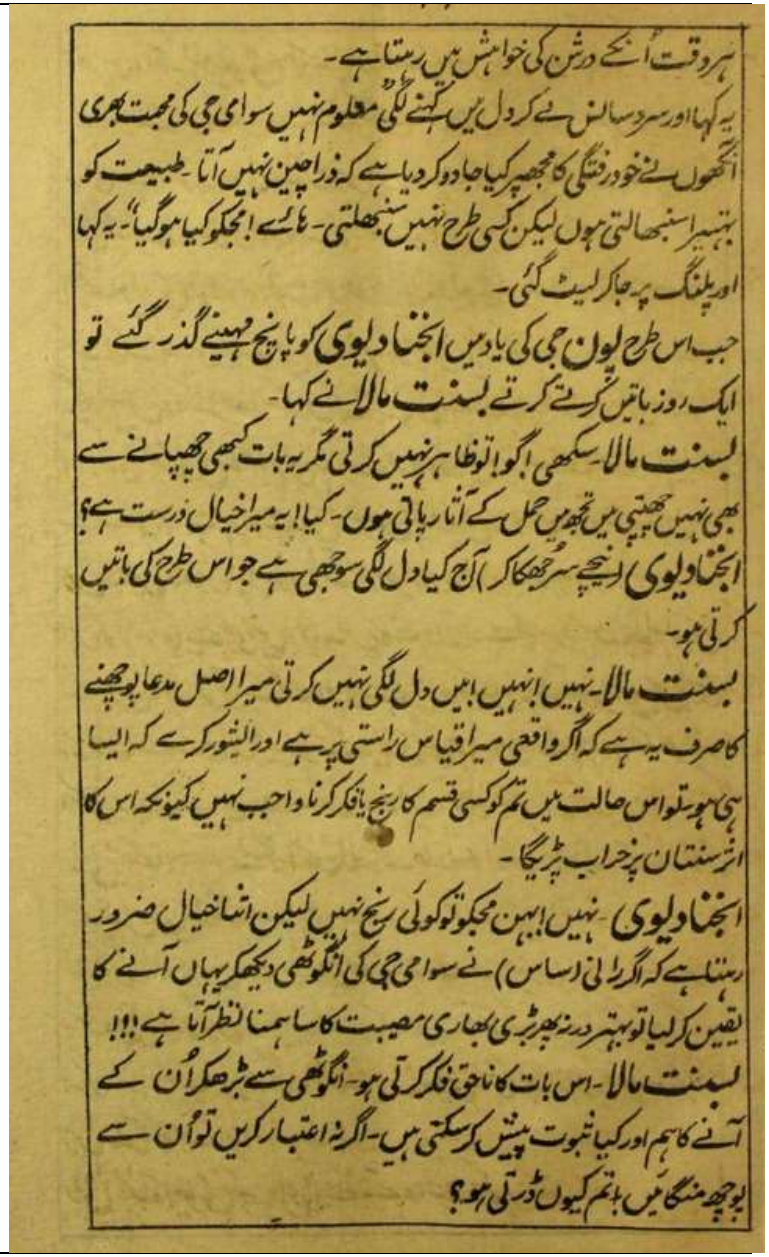
ہر وقت اُنکے درشن کی خواہش میں رہتا ہے۔
یہ کہا اور سرد سانس لے کر دل میں کہنے لگی "معلوم نہیں سوامی جی کی محبت بھری
آنکھوں نے خود رفتگی کا مجھ پر کیا جادو کر دیا ہے کہ ذرا چین نہیں آتا۔ طبیعت کو
بہتیرا سنبھالتی ہوں لیکن کسی طرح نہیں سنبھلتی۔ ہائے! مجھکو کیا ہو گیا"۔ یہ کہا
اور پلنگ پر جاکر لیٹ گئی۔
جب اس طرح پون جی کی یاد میں انجنا دیوی کو پانچ مہینے گذر گئے تو
ایک روز باتیں کرتے کرتے بسنت مالا نے کہا۔
بسنت مالا۔ سکھی! گو! تو ظاہر نہیں کرتی مگر یہ بات کبھی چھپانے سے
بھی نہیں چھپتی میں تجھ میں حمل کے آثار پاتی ہوں۔ کیا! یہ میرا خیال درست ہے؟
انجنا دیوی (نیچے سر جھکا کر) آج کیا دل لگی سوجھی ہے جو اس طرح کی باتیں
کرتی ہو۔
بسنت مالا۔ نہیں! نہیں! میں دل لگی نہیں کرتی میرا اصل مدعا پوچھنے
کا صرف یہ ہے کہ اگر واقعی میرا قیاس راستی پر ہے اور الیشور کرے کہ ایسا
ہی ہو تو اس حالت میں تم کو کسی قسم کا رنج یا فکر کرنا واجب نہیں کیونکہ اس کا
اثر سنتان پر خراب پڑیگا۔
انجنا دیوی۔ نہیں! بہن مجکو تو کوئی رنج نہیں لیکن اتنا خیال ضرور
رہتا ہے کہ اگر رانی (ساس) نے سوامی جی کی انگوٹھی دیکھکر یہاں آنے کا
یقین کر لیا تو بہتر ورنہ پھر بڑی بھاری مصیبت کا سامنا نظر آتا ہے!!!
بسنت مالا۔ اس بات کا ناحق فکر کرتی ہو۔ انگوٹھی سے بڑھکر اُن کے
آنے کا ہم اور کیا ثبوت پیش کر سکتی ہیں۔ اگر نہ اعتبار کریں تو اُن سے
پوچھ منگائیں! تم کیوں ڈرتی ہو؟

नाजरीन! अञ्जना देवी फयाज (उदार) और रहम दिल अव्वल दर्जे की हैं। देखिये बहुत से हाजिरमन्द इसके दरवाजे पर खडे हैं और ये मुख्तलिफ (अद्वितीय) किस्म की खैरात कर रही हैं। कोई रोटी लेकर खुश हो रहा है कोई रुपये माग रहा है और कोई कपडे का सवाल कर रहा है।

अञ्जना देवी तो इस वक्त गरीबों की हमदर्दी में मसरूफ (व्यस्त) हैं।

जब तक हम रानी कितुमती के महल को चलें। एक तो मुद्दत से उसे देखा नहीं दूसरा मालूम करे कि अञ्जना की निसबत इसका क्या ख्याल है।

आहा! रानी कितुमती का महल भी निहायत उम्दा दिखाई देता है। जेबोजीनत के सामान जा बजा हो रहे हैं। नफिस चिलमते दरवाजों पर पडी हैं और सुर्ख कालीन का फर्श किया हुआ। और एक ख्वास दस्तबस्ता बा अदब खडी है। इसको तो हम पहचानते भी हैं। शायद इसका नाम ललिता है जिसको पहले अञ्जना देवी के पास देखा था। बेशक! वही है। वो देखो! रानी कितुमती भी बडी आन बान से जरक बरक की पोशाक पहने बैठी हुई इसके चेहरे की तरफ देख तेवर बदल कह रही हैं।

रानी "क्या ये सच है अञ्जना भाग जाने का इरादा रखती है और तमाम सीमोजर बैदर लुटा रही है।"

ललिता "जी हाँ! मैंने ऐसा ही सुना है।"

ये सुनते ही रानी का गोरा गोरा चेहरा गुस्से के मारे तमतमा गया और दिमाग चक्कर में आया तो सर को हाथ से थाम नीचे झुका थोडी देर सोचती रही। बाद अजाँ गुस्से के लहजे में ललिता की तरफ इशारा करके बोली।

रानी "जाओ हमारा सुखपाल लाने ले वास्ते हुक्म दो।"

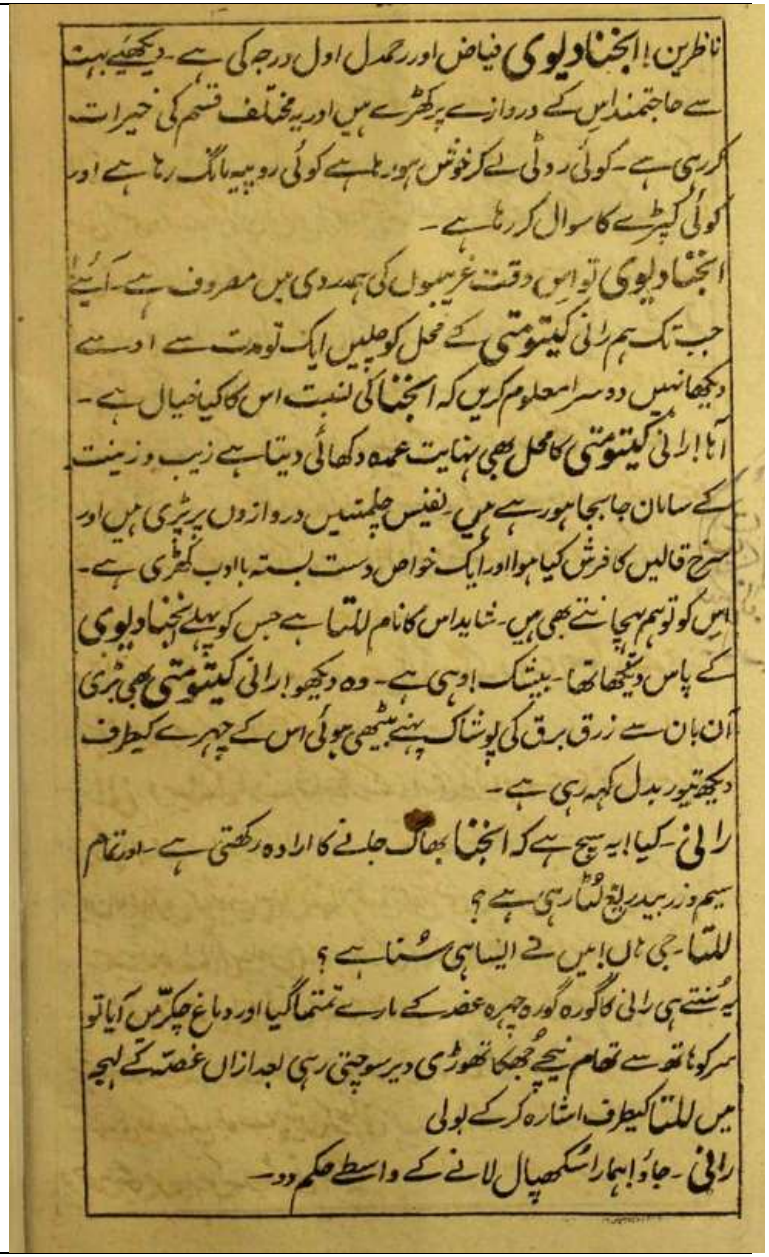

ناظرین! انجنا دیوی فیاض اور رحمدل اول درجہ کی ہے۔ دیکھیے بہت سے حاجتمند اس کے دروازے پر کھڑے ہیں اور یہ مختلف قسم کی خیرات کر رہی ہے۔ کوئی روٹی لے کر خوش ہو رہا ہے کوئی روپیہ مانگ رہا ہے اور کوئی کپڑے کا سوال کر رہا ہے۔

انجنا دیوی تو اس وقت غریبوں کی ہمدردی میں مصروف ہے۔ آئیے جب تک ہم رانی کیتومتی کے محل کو چلیں ایک تو مدت سے اوسے دیکھا نہیں دوسرا معلوم کریں کہ انجنا کی نسبت اس کا کیا خیال ہے۔

آہا! رانی کیتومتی کا محل بھی نہایت عمدہ دکھائی دیتا ہے زیب و زینت کے سامان جا بجا ہو رہے ہیں۔ نفیس چلمنیں دروازوں پر پڑی ہیں اور سرخ قالین کا فرش کیا ہوا اور ایک خواص دست بستہ باادب کھڑی ہے۔ اس کو تو ہم پہچانتے بھی ہیں۔ شاید اس کا نام للتا ہے جس کو پہلے انجنا دیوی کے پاس دیکھا تھا۔ بیشک! وہی ہے۔ وہ دیکھو! رانی کیتومتی بھی بڑی آن بان سے زرق برق کی پوشاک پہنے بیٹھی ہوئی اس کے چہرے کیطرف دیکھ تیور بدل کہہ رہی ہے۔

رانی۔ کیا! یہ سچ ہے کہ انجنا بھاگ جانے کا ارادہ رکھتی ہے۔ اور تمام سیم و زر بیدریغ لٹا رہی ہے؟

للتا۔ جی ہاں! میں نے ایسا ہی سنا ہے؟

یہ سنتے ہی رانی کا گورہ گورہ چہرہ غصہ کے مارے تمتما گیا اور دماغ چکر میں آیا تو سر کو ہاتھ سے تھام نیچے جھکا تھوڑی دیر سوچتی رہی بعد ازاں غصہ کے لہجہ میں للتا کیطرف اشارہ کر کے بولی

رانی۔ جاؤ! ہمارا سکھپال لانے کے واسطے حکم دو۔

५१

ललिता "जी अच्छा"

ये कहा और भाग गई। और थोदी देर के बाद आकर कहने लगी।

ललिता "माताजी! सुखपाल आ गया है।"

रानी उसी वक्त सुखपाल में बैठ अञ्जना के महल को गई। ज्यूँ ही इसने दालान में कदम रखा और अञ्जना की निगाह उस पर पडी भाग कर रानी के कदमों में जा गिरी और बोली।

अञ्जना "शुक्र है कि इतनी मुद्दत के बाद आप ने दर्शन दिए। आज का दिन मेरे लिए निहायत मुबारिक है जो आपने भी इस तरफ का रुख किया।"

रानी बजाए इसके कि उसकी हाजिजाना गूफ्तगू का कुछ जवाब दे नाक मुँह चढा तेवर बदल गजबनाक हो उसकी तरफ देखने लगी। ज्यूँ ही हमल (गर्भ) के आशार पाए आगबबूला हो गई और बडे गुस्से से बोली।

रानी "क्या तू गर्भवती (हामला) है या कोई रोग (बिमारी) हो गया है?"

अञ्जना - शरम से मुँह नीचे कर लिया

रानी पेट की तरफ इशारा करके "अरी ये क्या हुआ है? तेरा खाविन्द तो लडाई पर गया हुआ है और तूने .... तू बडी बेहया निकली।"

इन अल्फाजों को सुनते ही अञ्जना अचम्भा सी रह गई। चेहरा सफेद पड गया। नाजुक दिल पर सख्त चोट लगी। सर पर गम का पहाड गिरा। आँखो मे आंसू भर आए धडकते हुए दिल और सनसनाती हुई तबीयत को सम्भाल हाथ जोडकर बोली

माता सुनो मेरी विनती मैं निर्दोष नार
नहीं और किसी को जानती बिना एक भरतार
कर पाई जगदीश ने जा महीमा अपरमपार
स्वामी आए गरो मेरे कर कुछ सोच विचार
दिन तीन वो यहाँ रहे करते बहुत से प्यार
गए ऋतुदान दे युद्ध देखे प्रियतम प्राण आधार

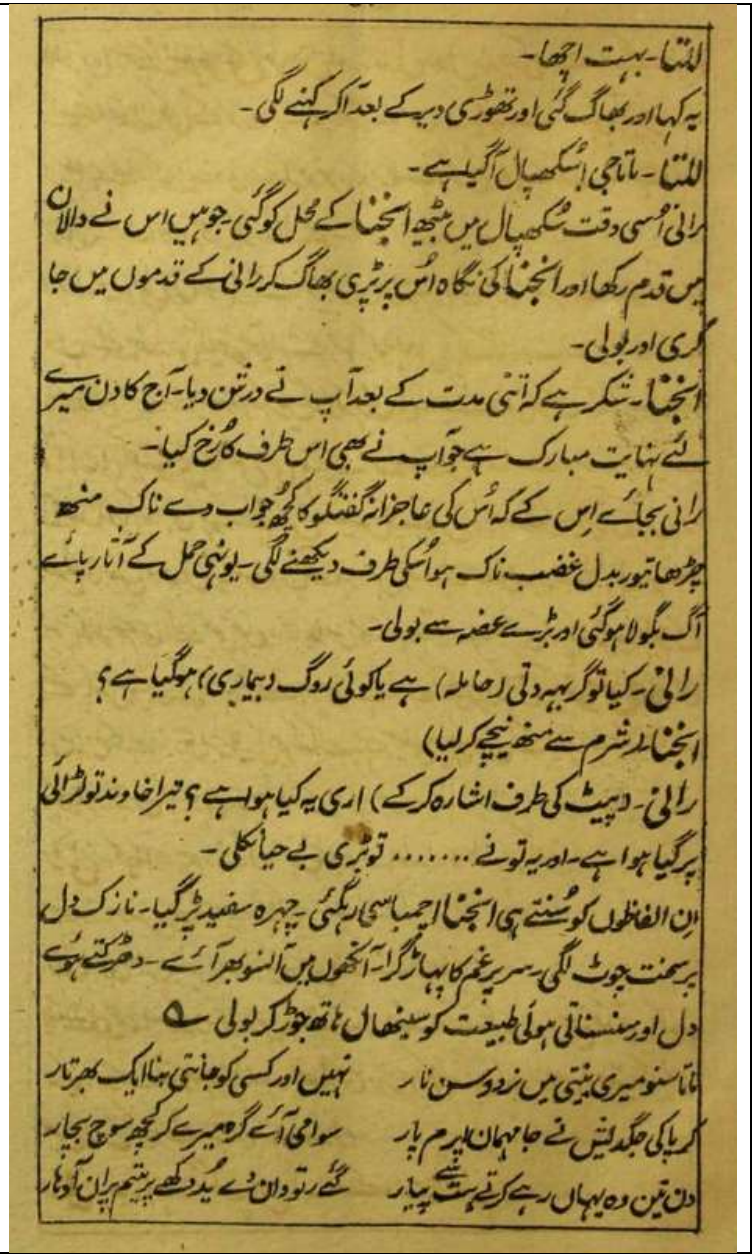
للتا۔ بہت اچھا۔
یہ کہا اور بھاگ گئی اور تھوڑی دیر کے بعد آکر کہنے لگی۔
للتا۔ ماتاجی! سکھپال آگیا ہے۔
رانی اُسی وقت سکھپال میں بیٹھ انجنا کے محل کو گئی۔ جونہیں اس نے دالان میں قدم رکھا اور انجنا کی نگاہ اُس پر پڑی بھاگ کر رانی کے قدموں میں جا گری اور بولی۔
انجنا۔ شکر ہے کہ اتنی مدت کے بعد آپ نے درشن دیا۔ آج کا دن میرے لئے نہایت مبارک ہے جو آپ نے بھی اس طرف کا رُخ کیا۔
رانی بجائے اس کے کہ اُس کی عاجزانہ گفتگو کا کچھ جواب دے ناک منھ چڑھا تیور بدل غضب ناک ہو اُسکی طرف دیکھنے لگی۔ یونہی حمل کے آثار پائے آگ بگولا ہوگئی اور بڑے غصہ سے بولی۔
رانی۔ کیا تو گربھ وتی (حاملہ) ہے یا کوئی روگ (بیماری) ہوگیا ہے؟
انجنا (شرم سے منھ نیچے کرلیا)
رانی۔ (پیٹ کی طرف اشارہ کرکے) اری یہ کیا ہوا ہے؟ تیرا خاوند تو لڑائی پر گیا ہوا ہے۔ اور یہ تو نے ..... تو بڑی بے حیا نکلی۔
ان الفاظوں کو سُنتے ہی انجنا اچمبا سی رہگئی۔ چہرہ سفید پڑ گیا۔ نازک دل پر سخت چوٹ لگی۔ سر پر غم کا پہاڑ گرا۔ آنکھوں میں آنسو بھر آئے۔ دھڑکتے ہوئے دل اور سنسناتی ہوئی طبیعت کو سنبھال ہاتھ جوڑ کر بولی ؎
ماتا سنو میری بنتی میں نردوسن نار — نہیں اور کسی کو جانتی بنا ایک بھرتار
کرپا کی جگدیش نے جا مہیما اپرم پار — سوامی آئے گرو میرے کر کچھ سوچ بچار
دن تین وہ یہاں رہے کرتے بہت پیار — گئے رتو دان دے یدھ دیکھے پریتم پران آدھار

५२

“माताजी! जिस वक्त वो वापिस जाने लगे मैंने बहुत मिन्नत खुशामद की कि आप अपने वलदैन की कदमबोसी हासिल करें। ताकि वो आप के आने के हाल से आगाह हो जावें। वरना दूसरी सूरत में वो मेरी तरफ से बदगुमान हो जावेंगे। लेकिन उन्होने यही कहकर टाल दिया कि इस वक्त हमारे जाने से उनके (वालद्ऐन) दिल मे ख्याल गुजरेगा कि हम लडाई से डरकर वापिस आ गए हैं। इसलिए हमारा जाना इस हालत मे अच्छा नहीं। ये कहा और” अंगूठी दिखाकर “ये अंगूठी अपने हाथ से उतारकर मुझको दी ताकी आपको दिखा कर उनके आने का यकीन दिलाऊँ।”

अञ्जना अभी कह रही थी कि रानी फिर गजबनाक होकर बोली

झूठ न बोल री पापनी ऐसा नहीं कुमार
युद्ध देखे मेरा सूरमा है जिसकी तू नार
ये अनर्थ है तै किया हो तुझको धिक्कार
काहे मेरी न नीचनीद हरक जीवन संसार
खोटा करम है तै किया कुछ न करे विचार
है किसकी मैं पुत्री किस स्वामी की नार
गर बह बहिया का हो और से धरयो नाम कुम्मर
जा दूर हो मेरी नजर से चंचल चतुर तू नार

“कमबख्त! जब से तेरी शादी हुई उसने (पवन) तेरी शक्ल तक न देखी हमकलाम होना तो दरकिनार है। अब रास्ते मे से लौट कर तेरे मिलने को आना! घडी नहीं! दो घडी नहीं! तीन रोज यहाँ रहा! और बगैर मिले हमारे चला गया! भला कोई भी अकलमंद तेरी इस बात को मान सकता है कि पवन ने ऐसा किया हो रहा है! तू बडी चालाक है! इस तरह कहते हुए शरम तो नहीं आती। अंगूठी दिखा कर पाक दामन बनती है नेकबख्त और पारसा होने का दम भरती है। तेरी सारी पारसाई जाहिर हो गई। जा! मेरी आखो से दूर हो बेहया।

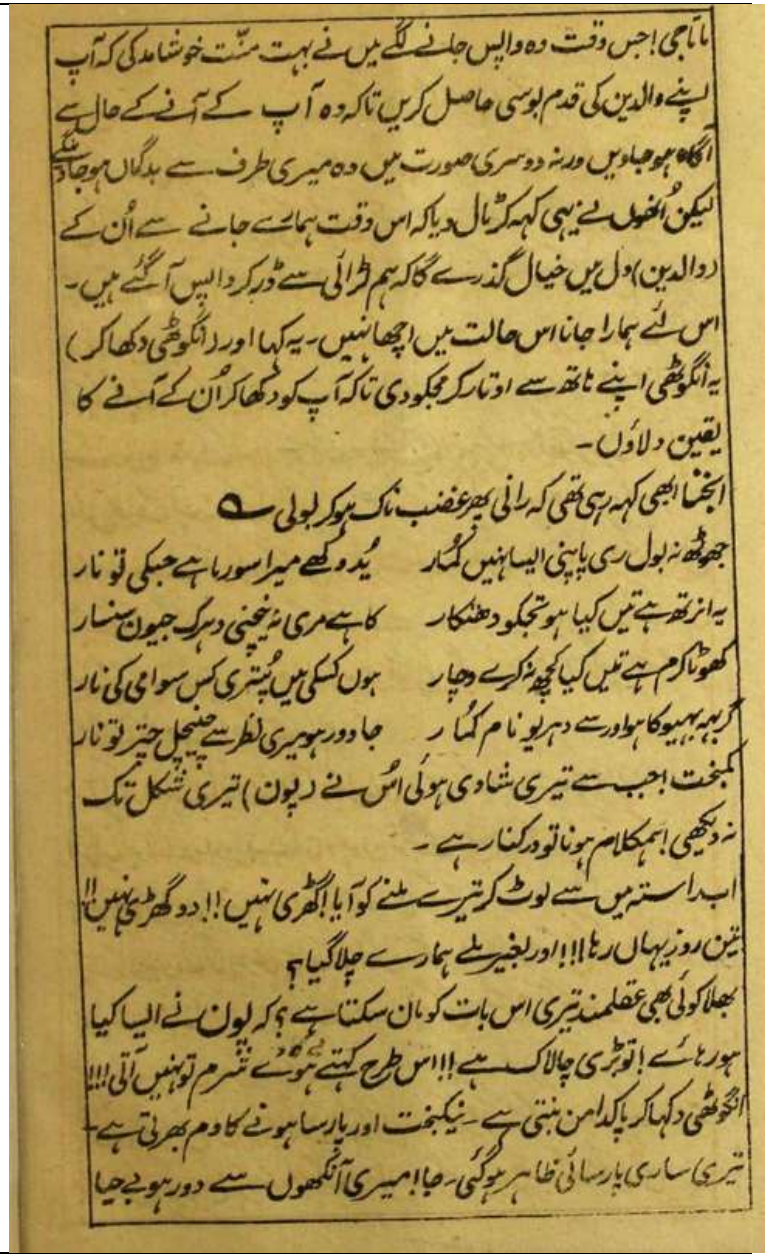
ماتاجی! جس وقت وہ واپس جانے لگے میں نے بہت منّت خوشامد کی کہ آپ
اپنے والدین کی قدم بوسی حاصل کریں تاکہ وہ آپ کے آنے کے حال سے
آگاہ ہو جاویں ورنہ دوسری صورت میں وہ میری طرف سے بدگماں ہو جاویں گے
لیکن انھوں نے یہی کہہ کر ٹال دیا کہ اس وقت ہمارے جانے سے اُن کے
(والدین) دل میں خیال گذرے گا کہ ہم لڑائی سے ڈر کر واپس آ گئے ہیں۔
اس لئے ہمارا جانا اس حالت میں اچھا نہیں۔ یہ کہا اور (انگوٹھی دکھا کر)
یہ انگوٹھی اپنے ہاتھ سے اوتار کر مجکو دی تاکہ آپ کو دکھا کر اُن کے آنے کا
یقین دلاؤں۔
انجنا ابھی کہہ رہی تھی کہ رانی پھر غضب ناک ہو کر بولی ؎
جھوٹھ نہ بول ری پاپنی ایسا نہیں کُمار — یُدھ دیکھے میرا سورما ہے جسکی تو نار
یہ انرتھ ہے تیں کیا ہو تجکو دھنکار — کاہے مری نہ نیند ہرک جیون سنسار
کھوٹا کرم ہے تیں کیا کچھ نہ کرے وچار — ہوں کسکی میں پُتری کس سوامی کی نار
گر بہہ بہیو کا ہو اور سے دھریو نام کُمار — جا دور ہو میری نظر سے چنچل چتر تو نار
کمبخت! جب سے تیری شادی ہوئی اُس نے (پون) تیری شکل تک
نہ دیکھی! ہمکلام ہونا تو درکنار ہے۔
اب راستہ میں سے لوٹ کر تیرے ملنے کو آیا! گھڑی نہیں!! دو گھڑی نہیں!!
تین روز یہاں رہا!!! اور بغیر ملے ہمارے چلا گیا؟
بھلا کوئی بھی عقلمند تیری اس بات کو مان سکتا ہے؟ کہ پون نے ایسا کیا
ہو رہا ہے! تو بڑی چالاک ہے!!! اس طرح کہتے ہوئے شرم تو نہیں آتی!!!
انگوٹھی دکھا کر پاکدامن بنتی ہے۔ نیکبخت اور پارسا ہونے کا دم بھرتی ہے
تیری ساری پارسائی ظاہر ہو گئی۔ جا! میری آنکھوں سے دور ہو بے حیا

तुमको मौत भी नहीं आती।"

नाजरीन! रानी के मुँह से ये सख्त अलफाज तीर की तरह निकल कर अञ्जना देवी के पाक दिल को जो सामने उसके सर झुकाए एक गुनाहगार की तरह बैठी है जख्मी कर रहे हैं। और उसकी आँखो के नीचे अंधेरा फैलता जाता है। कान जिन्होने कभी ऐसे तुर्श (कडवे) सख्त न सुने थे अपनी ताकत को जायल कर रहे हैं। दिल मे कातबे तकदीर की रो रो कर शिकायत कर कह रही है। हाय! अब क्या होगा? क्या करूँ किधर जाऊँ?

जब रानी का गजब कम हुआ तो एक मरतबा कुछ यूँही सी उपर नजर कर देखा। और अपनी दाएं तरफ बसन्तमाला को पाया।

आह! इस वक्त उसकी पाकदामनी और गैरत कह रही थी के बस अब तेरा दुनिया में रहकर मुँह दिखाना अच्छा नहीं। लोग क्या कहेगे! उफ! इस ख्याल के आते ही जिस्म की तमाम कुवतों ने अज खुदरकल होकर थोडी देर के लिए अपना अपना काम छोड दिया और सकते के आलम में हो गई। जब कुछ अफाका हुआ तो हाथ जोडकर बोली।

अञ्जना "माताजी! मैं बेगुनाह हूँ। स्वामीजी के आने पर आपको सब रोशन हो जाएगा। इस वक्त माफ करो।"

अञ्जना देवी की आजरी बजाए इसके कि रानी के दिल को नरम करती उसके गुस्से की आग पर तेल का काम दे गई। सुर्ख आँखे निकाल पुर गजब हो बोली।

रानी "तेरे दिल मे ख्याल होगा कि यहाँ रहकर इनके खानदान को धब्बा लगा पवन के नाम को बदनाम करूँ। भला मैं ऐसा कब कर ने दूंगी।"

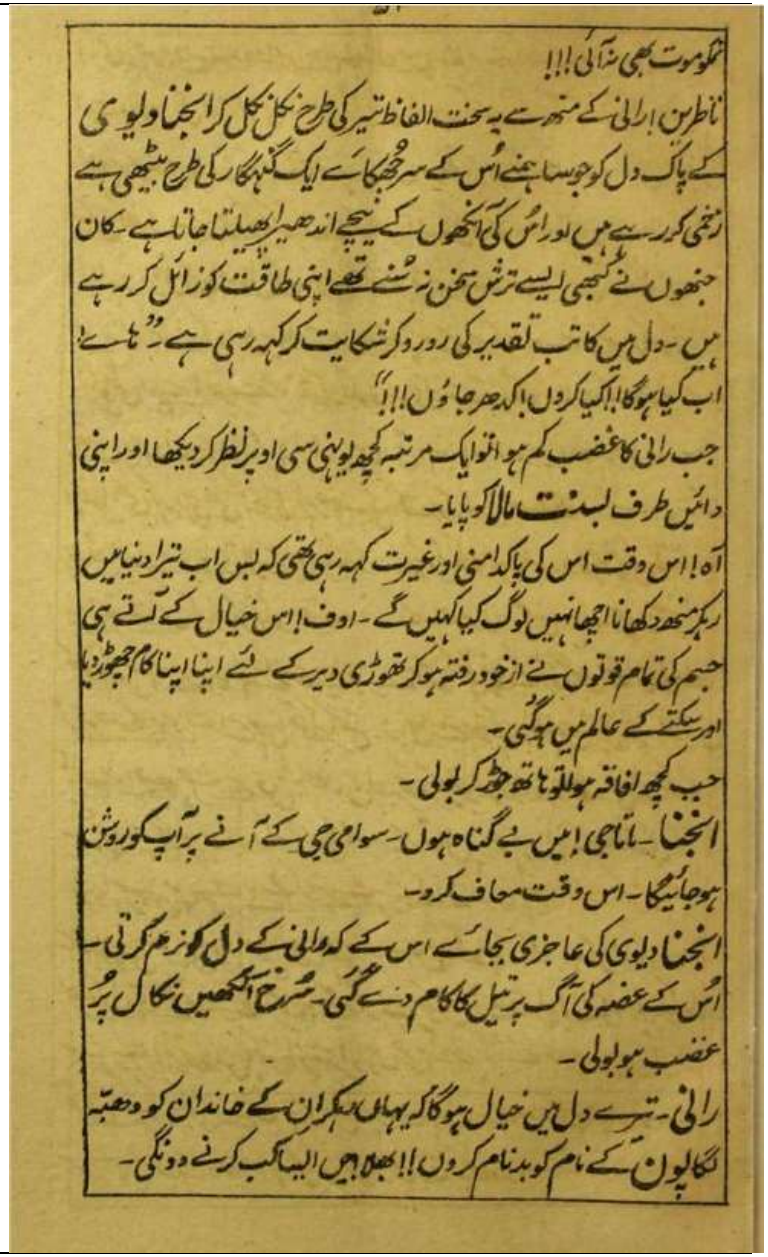

تمکو موت بھی نہ آئی!!!

ناظرین! رانی کے منہ سے یہ سخت الفاظ تیر کی طرح نکل نکل کر انجنا دیوی کے پاک دل کو جو سامنے اُس کے سر جھکائے ایک گنہگار کی طرح بیٹھی ہے زخمی کر رہے ہیں اور اُس کی آنکھوں کے نیچے اندھیرا پھیلتا جاتا ہے۔ کان جنھوں نے کبھی ایسے ترش سخن نہ سُنے تھے اپنی طاقت کو زائل کر رہے ہیں۔ دل میں کاتب تقدیر کی رو رو کر شکایت کر کہہ رہی ہے "ہائے! اب کیا ہوگا! کیا کروں! کدھر جاؤں!!!"

جب رانی کا غضب کم ہوا تو ایک مرتبہ کچھ یونہی سی اوپر نظر کر دیکھا اور اپنی دائیں طرف بسنت مالا کو پایا۔

آہ! اس وقت اس کی پاکدامنی اور غیرت کہہ رہی تھی کہ بس اب تیرا دنیا میں رہکر منھ دکھانا اچھا نہیں لوگ کیا کہیں گے۔ اوف! اس خیال کے آتے ہی جسم کی تمام قوتوں نے از خود رفتہ ہو کر تھوڑی دیر کے لئے اپنا اپنا کام چھوڑ دیا اور سکتے کے عالم میں ہو گئی۔

جب کچھ افاقہ ہوا تو ہاتھ جوڑ کر بولی۔

انجنا۔ ماتاجی! میں بے گناہ ہوں۔ سوامی جی کے آنے پر آپ کو روشن ہو جائیگا۔ اس وقت معاف کرو۔

انجنا دیوی کی عاجزی بجائے اس کے کہ رانی کے دل کو نرم کرتی اُس کے غصہ کی آگ پر تیل کا کام دے گئی۔ سُرخ آنکھیں نکال پر غضب ہو بولی۔

رانی۔ تیرے دل میں خیال ہوگا کہ یہاں رہکر ان کے خاندان کو دھبہ لگا پون کے نام کو بدنام کروں!! بھلا میں ایسا کب کرنے دونگی۔

दासी की तरफ इशारा करके "जाओ जल्दी पातकी रथ[१] लाओ। मैं इसका अभी फैसला कर दूँ।"

अञ्जना कांपते हुई "माताजी! जब तक स्वामीजी जंग से वापिस नहीं आते मुझको यहीं रहने की इजाजत दो। मैं आपकी लौंडियों (दासी) की तरह खिदमत करूँगी। माँ बाप से घर जाने से मेरी बेज्जती होगी।"

रानी "खूब कही! बडी चतुर है। माँ बाप के घर जाने से तो तेरी बेज्जती होगी। अरी बेहया ये उस वक्त सोचा होता। तेरे यहाँ रहने से जो हमारे खानदान को धब्बा लगेगा उसको तो नहीं विचारती। जा दूर हो ज्यादा बकवास न कर।" इतने मे लौंडी ने आनकर कहा "माताजी! पातकी रथ दरवाजे पर मौजूद है। और ये स्याह (काली) पोशाक" अञ्जना की तरफ इशारा करके "इसके लिए लाई हूँ।" ये कहा और अञ्जना के आगे रखकर पहनने का इशारा किया।

आह! जिस वक्त लौंडी ने स्याह कपडे लाके अञ्जना के आगे रखे और पहनने के वास्ते कहा बहुत ही घबरा गई। जबान से तो कुछ बोला नहीं जाता मगर आँखो से आंसू छम छम गिर रहे हैं। या गर्दन फेर फेर कर इधर उधर देख रही है। गोया इस बात की ख्वासतगार ै कि कोई उसके हाल पर रहम कर रानी के गुस्से की आग को फरद करा उसको समझा दे कि ये बेकसूर है।

मगर अफसोस! यहाँ कोई भी ऐसा नहीं जो इस वक्त आगे बढकर रानी को उसके इरादे से बाज रखे या यही कहे कि पहले पवन से उस बात की असलियत मालूम करो और बाद अञ्जना को सजा दो।

१ एक किस्म का रथ होता है जिसके बेल परदे वगैहरा सामान सब स्याह होता है। जब कोई ऐसा गुनाह अजीम हो तो उसमें सवार किया जाता है।

(داسی کی طرف اشارہ کرکے) جاؤ جلدی پاتکی رتھ[1] لاؤ۔ میں اس کا ابھی فیصلہ کردوں

انجنا۔ (کانپتی ہوئی) ماتاجی! جب تک سوامی جی جنگ سے واپس نہیں آتے مجھکو یہاں رہنے کی اجازت دو۔ میں آپ کی لونڈیوں کی طرح خدمت کرونگی۔ ماں باپ کے گھر جانے سے میری بے عزتی ہوگی۔

رانی۔ خوب کہی! بڑی چتر ہے۔ ماں باپ کے گھر جانے سے تو تیری بے عزتی ہوگی۔ اری! بے حیا یہ اُس وقت سوچا ہوتا!! تیرے یہاں رہنے سے جو ہمارے خاندان کو دھبہ لگیگا! اُس کو تو نہیں بچارتی!! جا! دور ہو! زیادہ بکواس نہ کر۔

اتنے میں لونڈی نے آنکر کہا "ماتاجی پاتکی رتھ دروازہ پر موجود ہے اور یہ سیاہ پوشاک (انجنا کی طرف اشارہ کرکے) اس کے لئے لائی ہوں"۔ یہ کہا اور انجنا کے آگے رکھکر پہننے کا اشارہ کیا۔

آہ! جس وقت لونڈی نے سیاہ کپڑے لاکر انجنا کے آگے رکھے اور پہننے کے واسطے کہا! بہت ہی! گھبرا گئی۔ زبان سے تو کچھ بولا نہیں جاتا مگر آنکھوں سے آنسو چھم چھم گر رہے ہیں۔ یا گردن پھیر پھیر کر اِدھر اُدھر دیکھ رہی ہے۔ گویا اس بات کی خواستگار ہے کہ کوئی اُس کے حال پر رحم کر رانی کے غصہ کی آگ کو فرو کر اور اس کو سمجھا دے کہ یہ بے قصور ہے۔

مگر افسوس! یہاں کوئی بھی ایسا نہیں! جو اس وقت آگے بڑھکر رانی کو اس کے ارادے سے باز رکھے۔ یا یہی کہے کہ پہلے پون سے اس بات کی اصلیت معلوم کرو اور بعد میں انجنا کو سزا دو۔

[1] ایک قسم کا رتھ ہوتا ہے جس کے بیل۔ پردے وغیرہ سامان سب سیاہ ہوتا ہے۔ جب کوئی ایسا گناہ عظیم ہو تو اُس میں سوار کیا جاتا ہے۔

नाजरीन! यहाँ इस वक्त सिवाए इस बदजात लौंडी या बेचारी बसन्तमाला के और कोई नहीं।

आह! स्याह कपडे देखकर बसन्तमाला निहायत बेचैन हो गई और सब्र की ताब ना ला दौडकर रानी के पाँव पर जा गिरी। और बोली

बसन्तमाला "माताजी! ऐसा जुल्म न करो। अञ्जना बेकसूर है। जब तक पवनजी नहीं आते सच और झूठ का फैसला नहीं हो जाता इसको यहाँ रहने दो। बाहर जाने से न सिर्फ इसकी आबरू जावेगी बल्कि आप का नाम भी ज्यादा बदनाम होगा। और पवनजी सुनकर बहुत कलक करेंगे। उस वक्त सिवाए पछताने के और कुछ न बन पडेगा।" बसन्तमाला की बातें सुनकर रानी का गुस्सा और भी बढा। झुझला कर बोली।

रानी "चल दूर हो हरामजादी दलाला।"

ये कहा और पाँव से झटक कर पीछे फेंक दिया और सुखपाल मे बैठ अपने महल को आई। और राजा से एक खत महेन्द्र राय को इस मजमून का लिखवा कर उसी वक्त रवाना किया कि जिसको देखकर बजाए इसके कि वह अपनी जुल्म रसिदा लडकी के हाल पर रहम की नजर से देखे उसके खून का प्यासा हो जाए।

बाब (अध्याय) दसवाँ

जलादतनी

सिंदूर चा ख्याले मद फलक दरचा ख्याल

मौसम गरमा है और दिन के पहले पहर का वक्त है। जबकि अञ्जना देवी रोती और बिलबलाती हुई पातकी रथ मे बैठ बसन्तमाला को साथ ले रत्नपुर से

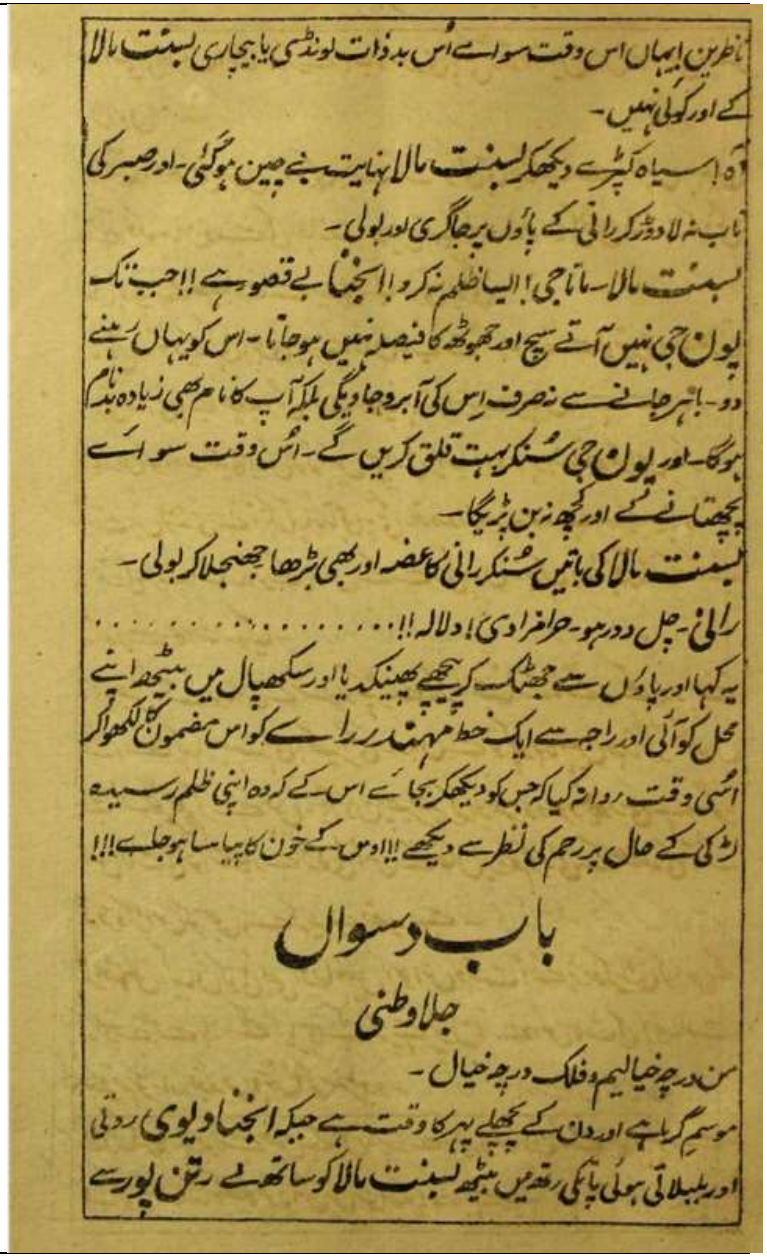
ناظرین! یہاں اس وقت سوائے اُس بدذات لونڈی یا بیچاری بسنت مالا
کے اور کوئی نہیں۔
آہ! سیاہ کپڑے دیکھکر بسنت مالا نہایت بے چین ہوگئی۔ اور صبر کی
تاب نہ لا دوڑکر رانی کے پاؤں پر جا گری اور بولی۔
بسنت مالا۔ ماتاجی! ایسا ظلم نہ کرو! انجنا بے قصور ہے!! جب تک
پون جی نہیں آتے سچ اور جھوٹھ کا فیصلہ نہیں ہوجاتا۔ اس کو یہاں رہنے
دو۔ باہر جانے سے نہ صرف اس کی آبرو جاویگی بلکہ آپ کا نام بھی زیادہ بدنام
ہوگا۔ اور پون جی سُنکر بہت قلق کریں گے۔ اُس وقت سوائے
پچھتانے کے اور کچھ نہ بن پڑیگا۔
بسنت مالا کی باتیں سُنکر رانی کا غصہ اور بھی بڑھا جھنجلا کر بولی۔
رانی۔ چل دور ہو۔ حرامزادی! دلالہ!!.....
یہ کہا اور پاؤں سے جھٹک کر پیچھے پھینکدیا اور سکھپال میں بیٹھ اپنے
محل کو آئی اور راجہ سے ایک خط مہندر رائے کو اس مضمون کا لکھوا کر
اُسی وقت روانہ کیا کہ جس کو دیکھکر بجائے اس کے کہ وہ اپنی ظلم رسیدہ
لڑکی کے حال پر رحم کی نظر سے دیکھے!! اوس کے خون کا پیاسا ہوجائے!!!

باب دسواں

جلاوطنی

سن درچہ خیالیم و فلک درچہ خیال۔
موسم گرما ہے اور دن کے پچھلے پہر کا وقت ہے جبکہ انجنا دیوی روتی
اور بلبلاتی ہوئی پاتکی رتھ میں بیٹھ بسنت مالا کو ساتھ لے رتن پور سے

रवाना हुई।

आह! इस वक्त के दर्दनाक सीन को देखकर बहुत से मर्द औरत जमा हो गए। मगर उनमे से ऐसा कोई भी नहीं जिसने आँखो से आंसू बहा इस पर जुल्म होने की शहादत न दी हो। अगरचे जाहिरन हर एक का मुँह रानी के खौफ से मुकफिल है। मगर बातन मे सब रानी के जोरोजफा की शिकायत परमेश्वर से कर रहे है।

इन लोगो को अञ्जना देवी नीचे सर झुका हसरत भरी निगाहों से देखती हुई जा रही हैं। और कई तरह के ख्याल दिमाग से दिल और दिल से दिमाग मे आ रहे हैं। खुद ही उनकी तायद करती है। और फिर थोडी देर के बाद तरद्दुत करने लगा जाती है। कभी सोचती है कि और जगह जाने से माँ बाप के घर जाना अच्छा है क्योंकि वो मेरे हाल पर जरूर रहम कर दर्द शरीक होंगे। मगर जब वो मुझसे इस स्याह लिबास का सबब दरयाफ्त करेंगे तो क्या बताऊँगी।

जिस्म पर नजर दालकर आह! मैं तो उनके रूबरू जाने कि लायक ही नहीं। हाय! इल्जाम भी तो मुझपर वो लगाया गया है जिसके बयान करने से शरम आती है। ऐसी जिन्दगी से मौत अच्छी है क्योंकि दुनिया मे वही औरत मुबारक है जिसकी जिन्दगी हुरमत और आबरू से गुजरे। वरना ऐसी बेहुरमती का जीना न जीना बराबर है। बस अब मेरा मरना ही वाजिब है। अंगूठी की तरफ देखकर यही हीरा मेरा काम तमाम करने के लिए काफी है। खुदही नहीं नहीं! मेरा ये भी ख्याल दुरुस्त नहीं। ऐसा करने से ज्यादा बदनाम हूँगी। गो स्वामीजी अपनी वालदा की बात पर यकीन न करेंगे लेकिन दुनिया को कौन समझाएगा। और ये दाग जो मेरी अजमत पर लगाया गया है हमेशा के लिए रह जाएगा। उफ! मैंने पिछले जन्म में कैसे बुरे कर्म किए थे जिनके एवज मुझको आज ये दिन देखना नसीब हुआ। अच्छा माँ बाप

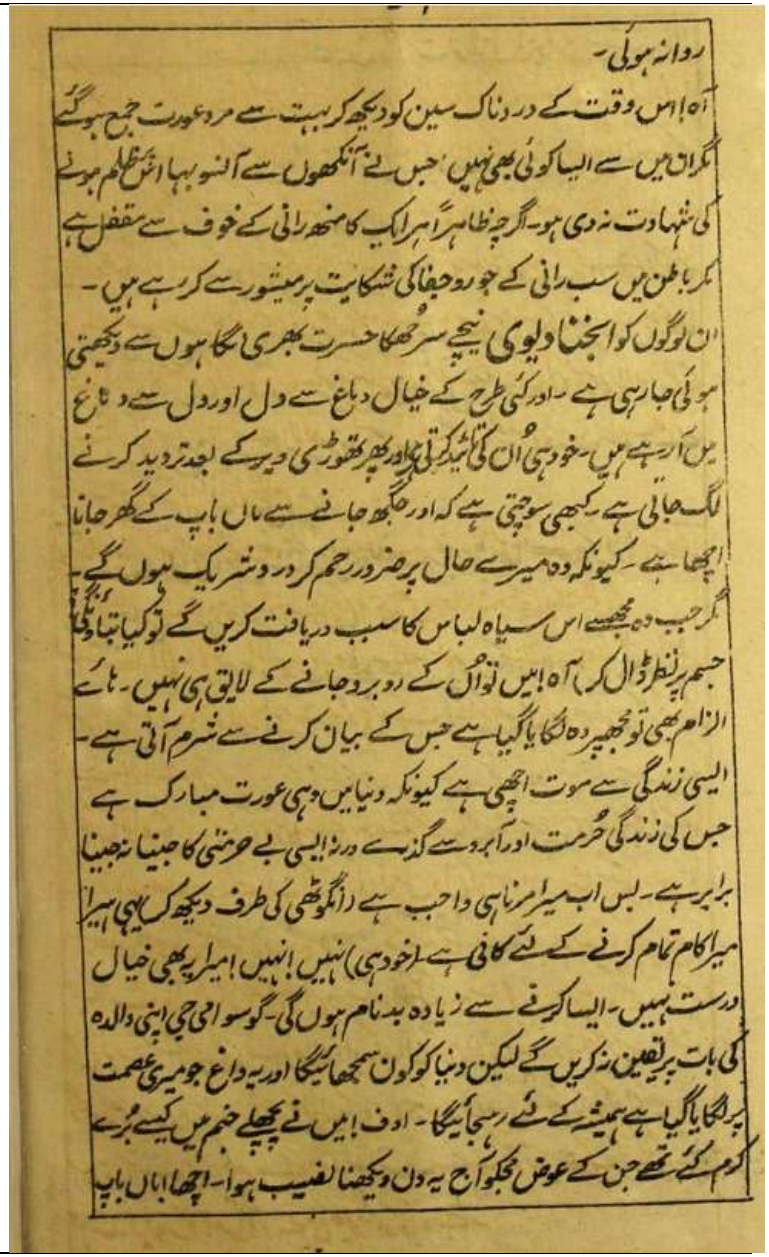

روانہ ہوئی۔
آہ! اس وقت کے دردناک سین کو دیکھ کر بہت سے مرد عورت جمع ہو گئے
مگر ان میں سے ایسا کوئی بھی نہیں جس نے آنکھوں سے آنسو بہا اس ظلم ہونے
کی شہادت نہ دی ہو۔ اگرچہ ظاہراً ہر ایک کا منھ رانی کے خوف سے مقفل ہے
مگر باطن میں سب رانی کے جور و جفا کی شکایت پرمیشور سے کر رہے ہیں۔
ان لوگوں کو انجنا دیوی نیچے سر جھکا حسرت بھری نگاہوں سے دیکھتی
ہوئی جا رہی ہے۔ اور کئی طرح کے خیال دماغ سے دل اور دل سے دماغ
میں آ رہے ہیں۔ خود ہی ان کی تائید کرتی ہے اور پھر تھوڑی دیر کے بعد تردید کرنے
لگ جاتی ہے۔ کبھی سوچتی ہے کہ اور جگہ جانے سے ماں باپ کے گھر جانا
اچھا ہے۔ کیونکہ وہ میرے حال پر ضرور رحم کر دردشریک ہوں گے۔
مگر جب وہ مجھ سے اس سیاہ لباس کا سبب دریافت کریں گے تو کیا بتاؤں گی
(جسم پر نظر ڈال کر) آہ! میں تو ان کے روبرو جانے کے لایق ہی نہیں۔ ہائے
الزام بھی تو مجھ پر وہ لگایا گیا ہے جس کے بیان کرنے سے شرم آتی ہے۔
ایسی زندگی سے موت اچھی ہے کیونکہ دنیا میں وہی عورت مبارک ہے
جس کی زندگی حرمت اور آبرو سے گزرے ورنہ ایسی بے حرمتی کا جینا نہ جینا
برابر ہے۔ بس اب میرا مرنا ہی واجب ہے (انگوٹھی کی طرف دیکھ کر) یہی ہیرا
میرا کام تمام کرنے کے لئے کافی ہے (خود ہی) نہیں! نہیں! میرا یہ بھی خیال
درست نہیں۔ ایسا کرنے سے زیادہ بدنام ہوں گی۔ گو سوامی جی اپنی والدہ
کی بات پر یقین نہ کریں گے لیکن دنیا کو کون سمجھائیگا اور یہ داغ جو میری عصمت
پر لگایا گیا ہے ہمیشہ کے لئے رہ جائیگا۔ اوف! میں نے پچھلے جنم میں کیسے برے
کرم کئے تھے جن کے عوض مجھکو آج یہ دن دیکھنا نصیب ہوا۔ اچھا اماں باپ

के घर जाकर क्या करूँगी। कहीं और ही जगह जाकर अपनी जिन्दगी के दिन बसर कर दूँ। कि थोडी देर सोचने के बाद हाँ बेशक ये ही दुरुस्त है। अब उनके पास न जाऊँगी। फिर खुदही नहीं नहीं! ये भी ठीक नहीं। ऐसा करने से सच और झूठ का फैसला क्योंकर होगा। माँ बाप के जेर साया ही रहना अच्छा है क्योंकी मैं बेकसूर हूँ। खुद ही मगर इसका मेरे पास सबूत ही क्या है। वही एक अंगूठी का जिसको रानी जी ने यह कहकर रद कर दिया है कि उनकी नहीं और मैं फरेब करती हूँ। हाय! लाखों कसमें खाऊँ लेकिन मेरी बात का इस हालत मे कौन यकीन करेगा।

ये कहा और छम छम आंसू आँखो से गिरने लग पडे। बसन्तमाला जो सर झुकाए उसकी मुसीबत जदा हालत पर कुछ सोच रही थी। ये हालत देखकर कहने लगी बसन्तमाला "अञ्जना! क्यों रोती है। सखी! रोने से तो कुछ हासिल नहीं। सब्र कर ईश्वर पर भरोसा रख। वही सबके दुखों को दूर कर सुख के देने वाला है।"

अञ्जना देवी "बहन! तुम मेरे रोने का ख्याल न करो। अभी गम का पहाड गिरा है। ताजा सदमा है। अब एक बारगी तो मैं दिल को पत्थर नहीं बना सकती। खुद ही संभलते संभलते संभल जाएगा। जो मकसूम का लिखा है कहरन और जबरन मानना पडेगा। बसन्तमाला! कहाँ ऐसे ख्याल दामनगीर था कि कब स्वामीजी वापिस आये और मैं उनको ये खुशखबरी सुनाऊँ, और कहाँ आज अपनी ये दुर्दशा (खराब हालत) देख रही हूँ। बतला अब रोऊँ न तो क्या करूँ। मालूम नहीं अभी क्या क्या मुसीबत मेरी किस्मत मे लिखी है? माता पिता मेरे साथ क्या सलूक करेगे? आब महेन्द्रपुर का नाम याद आते ही कलेजा मुँह को आता है।"

کے گھر جاکر کیا کروں گی کہیں اور ہی جگہ جاکر اپنی زندگی کے دن بسر کروں۔
(تھوڑی دیر سوچنے کے بعد) "ہاں" بیشک یہ ہی درست ہے اب اُن کے
پاس نہ جاؤں گی (پھر خود ہی) نہیں! نہیں! یہ بھی ٹھیک نہیں ایسا کرنے سے
سچ اور جھوٹھ کا فیصلہ کیونکر ہوگا۔ ماں باپ کے زیر سایہ ہی رہنا اچھا ہے۔ کیونکہ
میں بے قصور ہوں (خود ہی) مگر اس کا میرے پاس ثبوت ہی کیا ہے۔ وہی!
ایک انگوٹھی کا! جس کو رانی جی نے یہ کہکر رد کر دیا ہے کہ اُن کی نہیں! اور میں
فریب کرتی ہوں!! ہائے! لاکھوں قسمیں کھاؤں لیکن میری بات کا اس
حالت میں کون یقین کریگا۔

یہ کہا اور چھم چھم آنسو آنکھوں سے گرنے لگ پڑے۔ بسنت مالا (جو سر جھکائے
اس کی مصیبت زدہ حالت پر کچھ سوچ رہی تھی یہ حالت دیکھکر کہنے لگی)
بسنت مالا۔ انجنا! کیوں روتی ہے۔ سکھی! رونے سے تو کچھ حاصل
نہیں۔ صبر کر! ایشور پر بھروسہ رکھ وہی سب کے دُکھوں کو دور کرنیوالے
دینے والا ہے۔

انجنا دیوی۔ بہن! تم میرے رونے کا خیال نہ کرو۔ ابھی غم کا پہاڑ گرا
ہے۔ تازہ صدمہ ہے اب ایکبارگی تو میں دل کو پتھر نہیں بنا سکتی۔ خود ہی
سنبھلتے سنبھلتے سنبھل جائیگا جو مقسوم کا لکھا ہے۔ قہراً و جبراً ماننا پڑیگا۔

بسنت مالا! کہاں دل میں خیال دامنگیر تھا کہ کب سوامی جی واپس آئیں اور میں
اُن کو یہ خوشخبری سناؤں۔ اور کہاں آج! اپنی یہ درد ناک (خراب حالت)
دیکھ رہی ہوں۔ بتلاؤں نہ تو کیا کروں؟ معلوم نہیں! ابھی کیا کیا مصیبت
میری قسمت میں لکھی ہے۔ ماتا پتا میرے ساتھ کیا سلوک کرینگے؟ آہ!
مہندر پور کا نام یاد آتے ہی کلیجہ منھ کو آتا ہے۔

बसन्तमाला "हौसला रख। अब घबराना अच्छा नहीं। तू तो खुद दाना है। माँ बाप के घर जाने से कोई ऐब नहीं। वो तेरे हाल पर जरूर रहम करेंगे और कोई ऐसी वैसी बात कहने नहीं पावेगा।"

नाजरीन! अञ्जना तो अपनी मुसीबत के दुखडे रोती हुई महेन्द्रपुर के नजदीक मंजिले तय करती हुई आ गई है जिसको सुनकर हमारी तबीयत भी बेचैन होती जाती है। इसलिए इनको यहीं छोड कर हम आगे बढकर देखे कि आया राजा प्रह्लाद विद्याधर का खत यहाँ पहुँच गया है या नहीं? और इसकी वालदा उस पर क्या सोचती है। आहा! रानी बेगमोहिनी तो अञ्जना देवी से भी बढकर बेचैन हो रही है। वो देखो महेन्द्र राय चौकी पर गमगीन सूरत बनाए हाथ मे एक कागज लिए (शायद ये वही खत प्रह्लाद विद्याधर का है) पढ रहा है और रानी पलंग पर बैठी कैसे ख्वास बाख्ता हो राजा के मुँह की तरफ देख रही है। और तरह तरह के ख्यालात उसके दिल से दिमाग तक चक्कर खा उसको परेशान कर रहे है। ख्वासो में अख्तलाल होता जाता है और खुफकान होने का अंदेशा है।

रानी घबराहट के लहजे में "महाराज! हाय! अञ्जना को क्या हुआ? वो तो बडी अकलमन्द थी।"

राजा "प्रियजी मेरी समझ में तो कुछ नहीं आता। ईश्वर जाने क्या मामला हुआ है जो राजा प्रह्लाद विद्याधर अञ्जना के बरखिलाफ इस कदर सख्त लिखता है।"

रानी "जरा फिर इस खत को तो देखो और राजा के दस्तखत पहचानो। किसी दुश्मन का लिखा तो नहीं। अञ्जना तो इस इल्जाम के लायक न थी।"

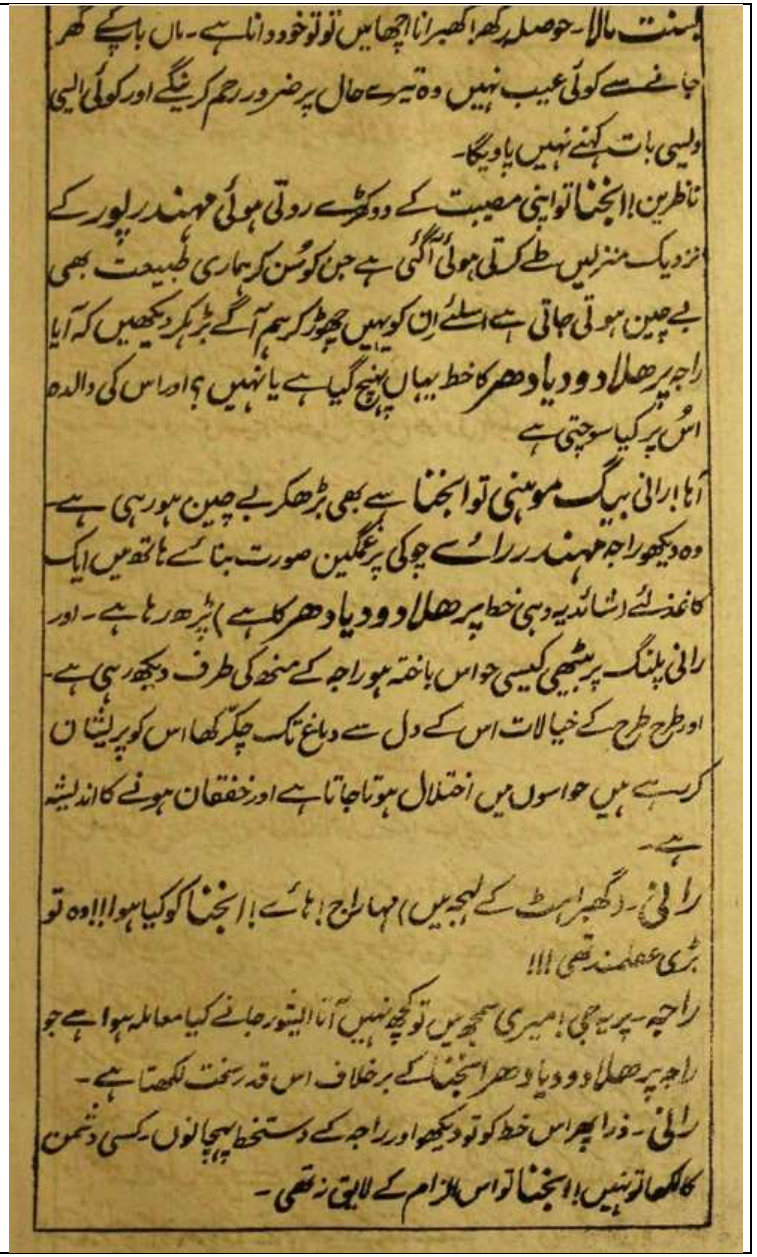

بسنت مالا۔ حوصلہ رکھ! گھبرانا اچھا نہیں تو تو خود دانا ہے۔ ماں باپ کے گھر
جانے سے کوئی عیب نہیں وہ تیرے حال پر ضرور رحم کرینگے اور کوئی ایسی
ویسی بات کہنے نہیں پاویگا۔

ناظرین! انجنا تو اپنی مصیبت کے دو کڑے روتی ہوئی مہندرپور کے
نزدیک منزلیں طے کرتی ہوئی آگئی ہے جن کو سن کر ہماری طبیعت بھی
بے چین ہوتی جاتی ہے اسلئے ان کو یہیں چھوڑ کر ہم آگے بڑھکر دیکھیں کہ آیا
راجہ پرھلاد و دیادھر کا خط یہاں پہنچ گیا ہے یا نہیں؟ اور اس کی والدہ
اس پر کیا سوچتی ہے

آہا! رانی بیگم موہنی تو انجنا سے بھی بڑھکر بے چین ہو رہی ہے۔
وہ دیکھو راجہ مہندر رائے چوکی پر غمگین صورت بنائے ہاتھ میں ایک
کاغذ لئے (شائد یہ وہی خط پرھلاد و دیادھر کا ہے) پڑھ رہا ہے۔ اور
رانی پلنگ پر بیٹھی کیسی حواس باختہ ہو راجہ کے منھ کی طرف دیکھ رہی ہے۔
اور طرح طرح کے خیالات اس کے دل سے دماغ تک چکر کھا اس کو پریشان
کر رہے ہیں حواسوں میں اختلال ہوتا جاتا ہے اور خفقان ہونے کا اندیشہ
ہے۔

رانی۔ (گھبراہٹ کے لہجہ میں) مہاراج! ہائے! انجنا کو کیا ہوا!! وہ تو
بڑی عقلمند تھی!!!

راجہ۔ پریہ جی! میری سمجھ میں تو کچھ نہیں آتا ایشور جانے کیا معاملہ ہوا ہے جو
راجہ پرھلاد و دیادھر انجنا کے برخلاف اس قدر سخت لکھتا ہے۔

رانی۔ ذرا پھر اس خط کو تو دیکھو اور راجہ کے دستخط پہچانو۔ کسی دشمن
کا لکھا تو نہیں! انجنا تو اس الزام کے لایق نہ تھی۔

राजा खत को दोबारा देखकर "प्रियजी ये देखो" खत को आगे कर के "उसीके हाथ का तो लिखा हुआ है। राजा प्रह्लाद विद्याधर कोई मामूली समझ का आदमी नहीं। उसने भी तो खूब छानबीन करके ऐसी तहरीर का हौसला किया होगा वरना वो हर्गिज ऐसी जुर्रत न करता। क्या उसको अपनी आबरू का ख्याल नहीं है? आह! अब तो मैं किसी सूरत से अञ्जना का देखना गवारा नहीं कर सकता। और न ही उसको पनाह देने के लिए तैयार हूँ।" आंसू बहाकर "और तुमको भी ताकीद करता हूँ कि उसको यहाँ हर्गिज न आने देना। और न ही कोई बात करना। उसने हमारी इज्जत खाक मे मिला दी!" ये कहा और रुमाल से आंसू पोछता और सर्द आहें भरता हुआ बाहर चला गया। और इन फिक्रों को राजा के मुँह से सुन रानी का रंग फक हो गया। दिल बैठ गया सर झुक गया और सर्द आहें निकालने लगी। रंजोगम का अबर (बादल) दिल पर छा गया और आँखो से आंसू अबर नो बहार की तरह बरसने लगे। और अञ्जना के लडकपन की बातें याद आ उसके दिल को बेचैन करने लगी।

आह! अञ्जना की भोली भोली बातें सखी सहेलियो के साथ हँस हँस कर खेलना। ये सब लडकपन का सीन रानी की आँखो के आगे फिर रहा था कि यक लफत ये ख्याल दिमाग से उतर सीने में आ जबान से निकला "आह! आज उसी प्यारी अञ्जना को जिसको एक पल भर ना देखने से राजा बेचैन होता था आज देखना नहीं चहता।" ये कहा तो सर चक्कर खा गया और आँखो के आगे सरसों फूल गई। बेहोश होकर गिर पडी।

लौंडी ने भागकर दुपट्टे के आँचल से हवा की और गुलाब और केवडा छिडका तो आँखे खोल लेटे लेटे दिल ही दिल मे कहने लगी "ऐं! क्या ये सच है कि अञ्जना बदचलन हो गई है? हाय! मैं उस प्यारी बेटी के हक में कैसा

راجہ - (خط کو دوبارہ دیکھ کر) پریہ جی! یہ دیکھو (خط کو آگے کر کے) اُسی کے
ہاتھ کا تو لکھا ہوا ہے - راجہ پرھلاد و ودیادھر کوئی معمولی سمجھ کا آدمی نہیں
اُس نے بھی تو خوب چھان بین کر کے ایسی تحریر کا حوصلہ کیا ہوگا ورنہ وہ ہرگز
ایسی جرات نہ کرتا - کیا! اُس کو اپنی آبرو کا خیال نہیں ہے؟ آہ! اب تو میں کسی
صورت سے انجنا کا دیکھنا گوارا نہیں کر سکتا اور نہ ہی اُس کو پناہ دینے کے
لئے تیار ہوں (آنسو بہا کر) اور تم کو بھی تاکید کرتا ہوں کہ اُس کو یہاں ہرگز
نہ آنے دینا اور نہ ہی کوئی بات کرنا اُس نے ہماری عزت خاک میں ملا دی -!
یہ کہا اور رومال سے آنسو پونچھا اور سرد آہ بھرتا ہوا باہر چلا گیا اور ان فقروں کو
راجہ کے منھ سے سُن رانی کا رنگ فق ہو گیا دل بیٹھ گیا - سر جھک گیا - اور
سینکڑوں سرد آہیں نکلنے لگیں - رنج و غم کا ابر دل پر چھا گیا اور آنکھوں سے
آنسو ابر نوبہار کی طرح برسنے لگے اور انجنا کے لڑکپن کی باتیں یاد آ اوس کے
دل کو بے چین کرنے لگیں -
آہ! انجنا کی بھولی بھولی باتیں سکھی سہیلیوں کے ساتھ ہنس ہنس کر کھیلنا
یہ سب لڑکپن کا سین رانی کی آنکھوں کے آگے پھر رہا تھا کہ یک لخت یہ
خیال دماغ سے اوتر سینہ میں آ زبان سے نکلا - آہ! آج اُسی پیاری انجنا
کو جس کو ایک پل بھر نہ دیکھنے سے راجہ بے چین ہوتا تھا آج دیکھنا نہیں چاہتا
یہ کہا تو سر چکر کھا گیا اور آنکھوں کے آگے سرسوں پھول گئی - بیہوش
ہو کر گر پڑی -
لونڈی نے بھاگ کر دوپٹے کے انچل سے ہوا کی اور گلاب اور کیوڑا چھڑکا
تو آنکھیں کھول لیٹے لیٹے دل ہی دل میں کہنے لگی - "ایں! کیا یہ سچ ہے کہ
انجنا بدچلن ہو گئی ہے" - ہائے! میں اُس پیاری بیٹی کے حق میں کیسا

खराब लफ्ज जबान पर लाई हूँ जिसको अपनी जान से अजीज जानती थी। आह! ये जबान जम जाए जिससे ये कलमा निकला। वो तो इस लायक नहीं है। वो तो एक साहिबे असमन और पारसा लडकी है जो लडकपन के जमाने में भी ईश्वर की भक्ति से गाफिल न थी। लोग उसको हया और शरम की देवी कहते थे। उफ! अब उसको क्या हो गया? ”

इतने मे एक लौंडी ने दबी हुई जबान से आकर कहा अञ्जना देवी आई है।

रानी ताज्जुब के लहजे में ऐं! क्या कहा? अञ्जना आई! कहाँ?

ये कहा और उठकर बैठ गई और लौंडी से कुछ पूछना चाहती थी कि अञ्जना दौड कर रानी के गले से जा चिमटी और जारोजार रोने लग पडी। पहले तो रानी ने भी रोकर उसकी मुसीबत की दाद दी। मगर बाद मे जो कुछ ख्याल आ गया तो बोली रानी “अञ्जना! उसके लिबास की तरफ इशारा करके ये क्यों? तुझसे तो ऐसी उम्मीद न थी। तू क्यों ऐसी बेशरम हो गई। धिक्कार है तेरी इस जिन्दगी पर तुझको मौत भी न आई। यहाँ आने से जहर खाकर मर जाती तो क्या ही अच्छा होता। आह! मैं ऐसी औलाद होने से बांझ क्यों न हुई ताकि आज का दिन तो देखना न पडता। कमबख्त! तूने कुछ भी ख्याल न किया। बाप और भाई की इज्जत को खाक मे मिला दिया। जा जहाँ तेरा दिल चाहे चली जा लेकिन हमारे देस मे न रहना।”

इन बातों को सुनकर अञ्जना के बदन मे सन्नाटा सा छा गया। खून जहाँ हरकत कर रहा था वही जम गया। आँखे पथरा गई। चेहरा गो पहले ही से जर्द हो रहा था। मगर सिर्फ एक यहाँ की उम्मीद बाकी थी जिसने अभी तक उसको डरावना नहीं बनाया था जैसा कि अब दिखाई देता है। वही मोटी मोटी आँखो से जिन को देख कर हिरन भी

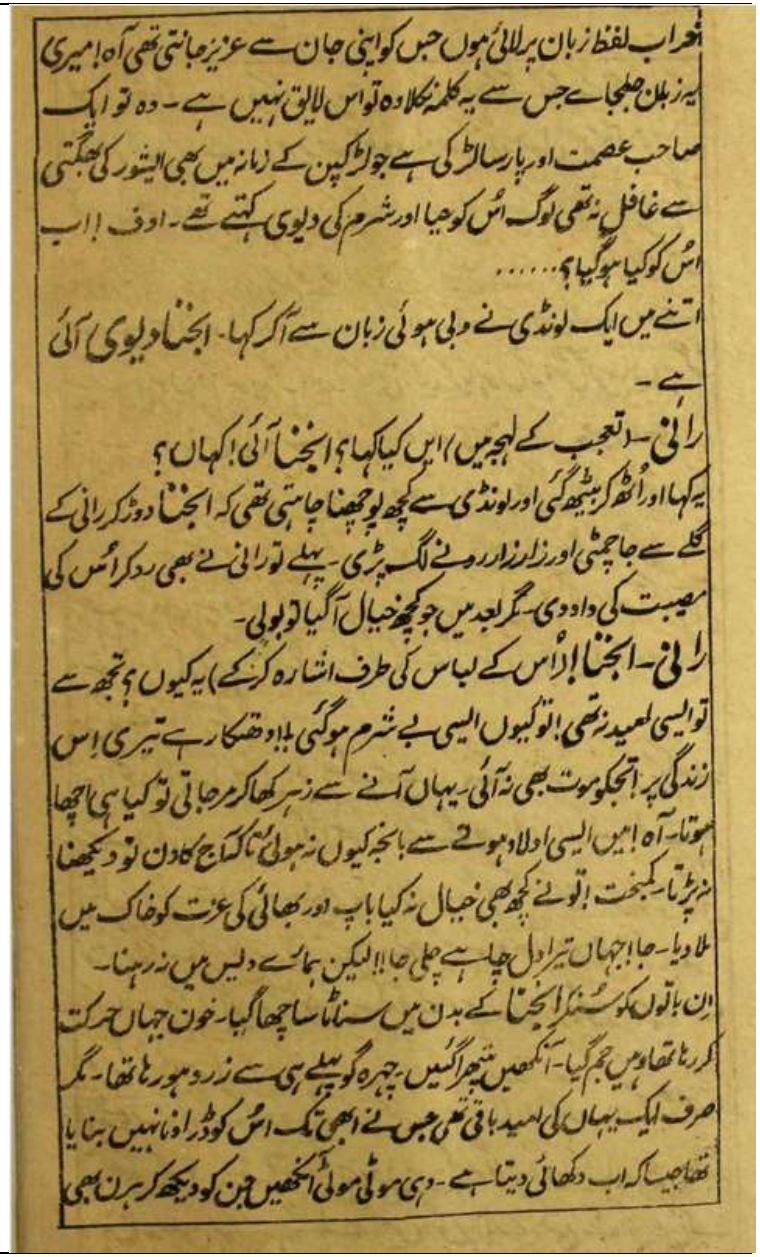
خراب لفظ زبان پر لائی ہوں جس کو اپنی جان سے عزیز جانتی تھی آہ! میری
یہ زبان جلجائے جس سے یہ کلمہ نکلا وہ تو اس لائق نہیں ہے۔ وہ تو ایک
صاحب عصمت اور پارسا لڑکی ہے جو لڑکپن کے زمانہ میں بھی ایشور کی بھگتی
سے غافل نہ تھی لوگ اُس کو حیا اور شرم کی دیوی کہتے تھے۔ اوف! اب
اُس کو کیا ہو گیا؟.....
اتنے میں ایک لونڈی نے دبی ہوئی زبان سے آکر کہا۔ انجنا دیوی آئی
ہے۔
رانی۔ (تعجب کے لہجہ میں) ایں کیا کہا؟ انجنا آئی! کہاں؟
یہ کہا اور اُٹھ کر بیٹھ گئی اور لونڈی سے کچھ پوچھنا چاہتی تھی کہ انجنا دوڑ کر رانی کے
گلے سے جا چمٹی اور زار زار رونے لگ پڑی۔ پہلے تو رانی نے بھی رو کر اُس کی
مصیبت کی داد دی۔ مگر بعد میں جو کچھ خیال آگیا تو بولی۔
رانی۔ انجنا! (اُس کے لباس کی طرف اشارہ کر کے) یہ کیوں؟ تجھ سے
تو ایسی امید نہ تھی! تو کیوں ایسی بے شرم ہو گئی!! دھکار ہے تیری اس
زندگی پر! تجھکو موت بھی نہ آئی۔ یہاں آنے سے زہر کھا کر مر جاتی تو کیا ہی اچھا
ہوتا۔ آہ! میں ایسی اولاد ہونے سے بانجھ کیوں نہ ہوئی تاکہ آج کا دن تو دیکھنا
نہ پڑتا۔ کمبخت! تو نے کچھ بھی خیال نہ کیا باپ اور بھائی کی عزت کو خاک میں
ملا دیا۔ جا! جہاں تیرا دل چاہے چلی جا!! لیکن ہمارے دیس میں نہ رہنا۔
ان باتوں کو سُن کر انجنا کے بدن میں سناٹا سا چھا گیا۔ خون جہاں حرکت
کر رہا تھا وہیں جم گیا۔ آنکھیں پتھرا گئیں۔ چہرہ گو پہلے ہی سے زرد ہو رہا تھا۔ مگر
صرف ایک یہاں کی امید باقی تھی جس نے ابھی تک اُس کو ڈراونا نہیں بنایا
تھا جیسا کہ اب دکھائی دیتا ہے۔ وہی موٹی موٹی آنکھیں جن کو دیکھ کر ہرن بھی

६१

शरम से मुँह छुपाते थे अंदर को घुस गई हैं। वही चेहरा जो किसी वक्त दमकते हुए कुन्दन से तशवीद दिया जाता था इस वक्त गोश्त तो नाम को नहीं लगता।

हाँ! इसतखवान और पोस्त जरूर है। इसका चिल्ला चिल्ला कर जोर से रोना भी बंद हो गया। ख्वाह इसकी वजह ये हो कि अब दुनिया में उसको अपना कोई गमख्वार नजर नहीं आता जो उसकी गिरयावजारी को सुनकर रहम करे। इसलिए उनही आँखो ने अन्दर को रज कर परमेश्वरके हजूर में, जो बमोजब ख्याल अहले हनूद के सबके अन्दर मौजूद है, अञ्जना की दाद की फरयाद करनी शुरु करदी है। या ये कहो कि इन हैरत अंगेज बातों को, जिनका उसको ख्वाबो ख्याल न था सुनकर, उसके दिल को सख्त सदमा पहुचा है। और इस हैरानगी की वजह से सीने ही में जज्ब हो गई है खैर कुछ ही क्यों न हो। देर तक अञ्जना खडी हो माता की तरफ देखती रही और आँखो से गरम गरम आंसू गिरकर उसके सकूत को दूर करने मे कोशान रहे। आखिर ज्यूँ त्यूँ कर बडी आजजी से बोली

अञ्जना "माताजी! मैं बेकसूर हूँ। भला मैं आपको छोड कर कहा जा सकती हूँ। मेरा और गमख्वार कौन है जहाँ मुसीबत के दिन बसर करूँ। औरत का ज्यादातर जोर खाविन्द पर दूसरा वालदैन और तीसरा सास ससुर पर होता है। एक मैं ऐसी बदनसीब हूँ कि खाविन्द के परदेस जाने से सब कोई दुश्मन हो गया। माता मैं सच कहती हूँ कि सास की बाते सुनकर मैं इस कदर न घबराई थी जैसे कि अब! मुझे यकीन था कि आप जरूर सच और झूठ का फैसला कर मेरी दाद देंगी। मगर हाय! शोबदा बाज फलक ने आप के कोमल दिल को भी पत्थर बना दिया।" ये कहा और जमीन पर बेहोश हो गिर पडी। रानी ने जल्दी होश में लाने की

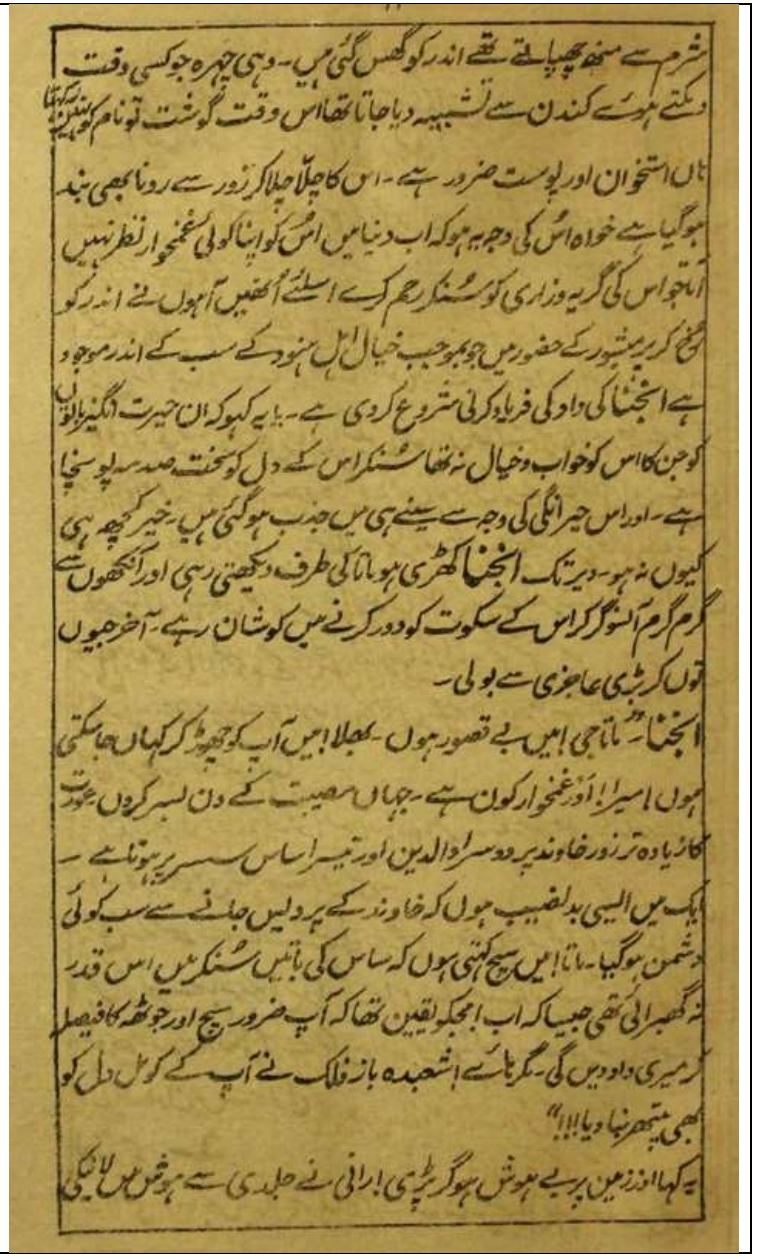
شرم سے منھ چھپاتے تھے اندر کو گھس گئی ہیں۔ وہی چہرہ جو کسی وقت
دمکتے ہوئے کندن سے تشبیہ دیا جاتا تھا اس وقت گوشت تو نام کو نہیں کہتا
ہاں استخوان اور پوست ضرور ہے۔ اس کا چلّا چلّا کر زور سے رونا بھی بند
ہو گیا ہے خواہ اُس کی وجہ یہ ہو کہ اب دنیا میں اُس کو اپنا کوئی غمخوار نظر نہیں
آتا جو اس کی گریہ وزاری کو سُنکر رحم کرے اسلئے اُنھیں آہوں نے اندر کو
کھینچ کر پرمیشور کے حضور میں جو بموجب خیال اہل ہنود کے سب کے اندر موجود
ہے انجنا کی داد کی فریاد کرنی شروع کر دی ہے۔ یا یہ کہو کہ ان حیرت انگیز باتوں
کو جن کا اس کو خواب وخیال نہ تھا سُنکر اس کے دل کو سخت صدمہ پہونچا
ہے۔ اور اس حیرانگی کی وجہ سے سینے ہی میں جذب ہو گئی ہیں۔ خیر کچھ ہی
کیوں نہ ہو۔ دیر تک انجنا کھڑی ہو ماتا کی طرف دیکھتی رہی اور آنکھوں سے
گرم گرم آنسو گر کر اس کے سکوت کو دور کرنے میں کوشاں رہے۔ آخر جیوں
توں کر بڑی عاجزی سے بولی۔
انجنا۔ "ماتاجی! میں بے قصور ہوں۔ بھلا! میں آپ کو چھوڑ کر کہاں جا سکتی
ہوں! میرا! اور غمخوار کون ہے۔ جہاں مصیبت کے دن بسر کروں۔ عورت
کا زیادہ تر زور خاوند پر دوسرا والدین اور تیسرا ساس سسر پر ہوتا ہے۔
ایک میں ایسی بدنصیب ہوں کہ خاوند کے پردیس جانے سے سب کوئی
دشمن ہو گیا۔ ماتا! میں سچ کہتی ہوں کہ ساس کی باتیں سُنکر میں اس قدر
نہ گھبرائی تھی جیسا کہ اب! مجھکو یقین تھا کہ آپ ضرور سچ اور جھوٹھ کا فیصلہ
کر میری داد دیں گی۔ مگر ہائے! شعبدہ باز فلک نے آپ کے کومل دل کو
بھی پتھر بنا دیا!!!"
یہ کہا اور زمین پر بے ہوش ہو گر پڑی۔ رانی نے جلدی سے ہوش میں لانیکی

तदबीरें की और रो रो कर खुद बेहाल हो गई।
जब अञ्जना को कदरे होश आई तो बोली
अञ्जना "माताजी! जब तक स्वामिजी वापिस नहीं आते मुझको यहाँ रहने की इजाजत दिजिए। उनके आने पर आपको सब हाल रोशन हो जाएगा। उस वक्त जो दिल मे आए तो सो किजिए।"
रानी "अञ्जना! मेरे कुछ इख्तियार नहीं बेबस हूँ। अगर कोई और बात होती तो अपनी जान पर खेल जाती लेकिन तुझको इस हालत मे बाहर जाने हर्गिज न देती। मगर हाय! तुमने वो काम किया जिसको बयान करने से शरम आती है। वही तेरा बाप जो तुझपर जान निसार करता था आज तेरा नाम सुनने से बेजार हो जाता है। अगर तुझको यहाँ रहने की ख्वाहिश होती तो इन बातों से नफरत करती। जा यहाँ से! जल्दी चली जा! अगर स्वामीजी आ गए तो मेरी भी शामत आ जाएगी।"
रानी के मुँह से ये बात निकलने की देर थी कि दो तीन लौंडियों ने रोती हुई अञ्जना को घर से बाहर निकाल दिया। अगरचे उसने बहुत कोशिश की कि एक दफा फिर किस्मत आजमाई करे लेकिन अफसोस! लौंडियों ने कुछ भी न सुना और एक उनमे से बोली
लौंडी
कहे दासी सुन अञ्जना यहाँ तेरा क्या काम
किया सास ससुर माँ बाप को जग में ते बदनाम

تدبیریں کیں اور رو رو کر خود بے حال ہوگئی!۔
جب انجنا کو قدرے ہوش آئی تو بولی!
انجنا۔ ماتاجی! جب تک سوامی جی واپس نہیں آتے مجکو یہاں رہنے کی اجازت دیجئے اُن کے آنے پر آپ کو سب حال روشن ہو جائیگا۔ اُس وقت جو دل میں آئے سو کیجئے۔
رانی۔ انجنا! میرے کچھ اختیار نہیں! بے بس ہوں!! اگر کوئی اور بات ہوتی تو اپنی جان پر کھیل جاتی! لیکن تجکو! اس حالت میں باہر جانے ہرگز نہ دیتی!! اگر ہائے تم نے وہ کام کیا جس کو بیان کرنے سے شرم آتی ہے۔ وہی تیرا باپ جو تجھپر جان نثار کرتا تھا آج تیرا نام سننے سے بیزار ہو جاتا ہے۔ اگر تجکو یہاں رہنے کی خواہش ہوتی تو ان باتوں سے نفرت کرتی۔ جا! یہاں سے جلد چلی جا۔ کہیں میری بھی دُردشا نہ کرانا۔
انجنا۔ آہ! یہ میرے ہی کرموں کا پھل ہے جو آپ جیسی شیل وتی کا دل بھی پتھر ہوگیا اور کا کیا کہنا
رانی (باہر کی طرف دیکھ کر) بس زیادہ باتیں نہ بنا۔ جلد چلی جا۔ اگر سوامی جی آگئے تو میری بھی شامت آجائیگی۔
رانی کے منھ سے یہ بات نکلنے کی دیر تھی کہ دو تین لونڈیوں نے روتی ہوئی انجنا کو گھر سے باہر نکال دیا۔ اگرچہ اس نے بہت کوشش کی کہ ایک دفعہ پھر قسمت آزمائی کرے لیکن افسوس لونڈیوں نے کچھ بھی نہ سنا۔ اور ایک اون میں سے بولی۔
لونڈی ؎
کہے داسی سُن انجنا یہاں تیرا کیا کام کیا ساس سسر ماں باپ کو جگ میں تیں بدنام

अद तुम कल महाराज की धूल मिलाया नाम
दूर होजा दुराचारनी और न कर बदनाम
लौंडी की ये बाते सुनकर अञ्जना देवी के दिल को सख्त सदमा पहुँचा। और तो कुछ पेश न गई। रोकर इतना कहा
बोल कबूल न बोल री पतिव्रता मैं नार
कठोर वचन क्यों बोलती दासी जीभ संभार
बपत धुनी मैं फिरूँ निर्दोष मैं नार करम देख प्यारी न डरे जो लिखया करतार
वाल्दा का आखिरी हुक्म सुनकर अञ्जना रोती हुई दरवाजे से निकलकर थोडी दूर पर गई होगी कि एक शख्स, जिसकी उम्र चालिस से पचास साल से कम नहीं और उम्दा लिबास ही जेबतन से मिला, जिसको देखते ही अञ्जना की चीख निकल गई और बेइख्तियार होकर उसके गले लिपट रोना शुरु कर दिया। जिसकी आहोजारी को सुनकर वो शख्स भी अजखुदरफता सा हो गया है और आँखो से आंसू जारी हो रहे हैं। एक हाथ तो उसके सरपर रखा है दूसरा कमर पर है और जबान से कह रहा है "क्यो रो रो परेशान होती है? अब रोने से तो कुछ हासिल नहीं होता।" और साथ ही इधर उधर भी देख लेता है जिससे पाया जाता है कि किसी का खौफ भी इसको जरूर है।
नाजरीन! आप हैरान होंगे कि ये शख्स कौन है जो अञ्जना देवी की मुसीबत जदा हालत पर आंसू बहा रहा है? आईए हम आपको बतलाते हैं। ये अञ्जना का भाई है जो इत्तफाक से उसको इस जगह मिल गया है। सुनिए क्या कह रहा है
प्रसन्न कीर्ति "अञ्जना! तेरी मुसीबत को देख मेरे दिल को सख्त सदमा पहुचा है और जिगर पाश पाश (टुकडे टुकडे) हो गया है। मगर इस हालत मे तेरी किसी तरह दस्तगीरी नहीं कर सकता क्योंकी तुझसे निहायत … कसूर हुआ है जिसके बावत तुमसे बात करने मे आर (कठिनाई) मालूम होती है।" दिल मे "उफ! पिताजी देख लेंगे तो क्या कहेंगे।"

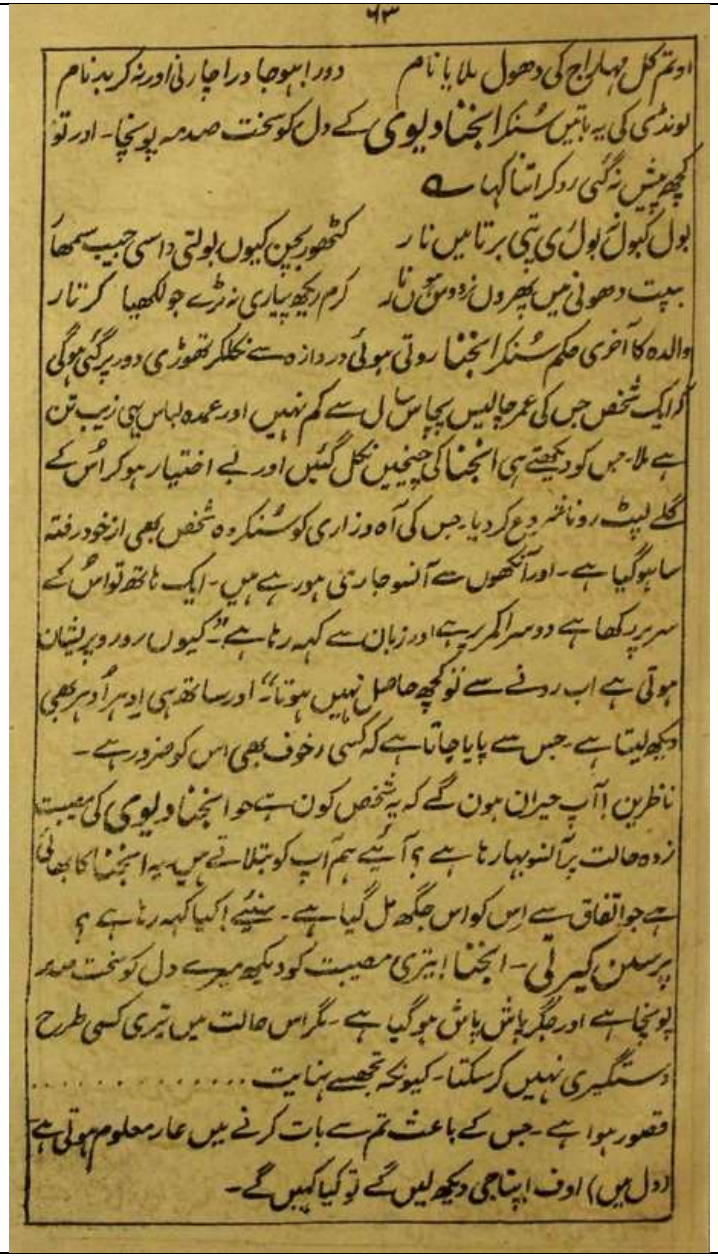

او تم کل مہاراج کی دھول ملایا نام دور ابھوجا دراچارنی اور نہ کر بدنام
لونڈی کی یہ باتیں سُنکر انجنا دیوی کے دل کو سخت صدمہ پونچا۔ اور تو
کچھ پیش نہ گئی رو کر اتنا کہا ؎
بول کبول نہ بول ری پتی برتا میں نار کٹھور بچن کیوں بولتی داسی جیب سمھار
بپت دھونی میں پھروں نردوس ہوں نار کرم ریکھ پیاری نہ ٹرے جو لکھیا کرتار
والدہ کا آخری حکم سُنکر انجنا روتی ہوئی دروازہ سے نکلکر تھوڑی دور پر گئی ہوگی
کہ ایک شخص جس کی عمر چالیس پچاس سال سے کم نہیں اور عمدہ لباس ہی زیب تن
ہے ملا۔ جس کو دیکھتے ہی انجنا کی چیخیں نکل گئیں اور بے اختیار ہو کر اُس کے
گلے لپٹ رونا شروع کر دیا۔ جس کی آہ و زاری کو سُنکر وہ شخص بھی از خود رفتہ
سا ہو گیا ہے۔ اور آنکھوں سے آنسو جاری ہو رہے ہیں۔ ایک ہاتھ تو اُس کے
سر پر رکھا ہے دوسرا کمر پر ہے اور زبان سے کہہ رہا ہے "کیوں رو رو پریشان
ہوتی ہے اب رونے سے تو کچھ حاصل نہیں ہوتا" اور ساتھ ہی اِدھر اُدھر بھی
دیکھ لیتا ہے۔ جس سے پایا جاتا ہے کہ کسی کا خوف بھی اس کو ضرور ہے۔
ناظرین! آپ حیران ہوں گے کہ یہ شخص کون ہے جو انجنا دیوی کی مصیبت
زدہ حالت پر آنسو بہا رہا ہے؟ آئیے ہم آپ کو بتلاتے ہیں۔ یہ انجنا کا بھائی
ہے جو اتفاق سے اس کو اس جگہ مل گیا ہے۔ سنیئے! کیا کہہ رہا ہے؟
پرسن کیرتی۔ انجنا! تیری مصیبت کو دیکھ میرے دل کو سخت صدمہ
پونچا ہے اور جگر پاش پاش ہو گیا ہے۔ مگر اس حالت میں تیری کسی طرح
دستگیری نہیں کر سکتا۔ کیونکہ تجھسے نہایت .....
قصور ہوا ہے۔ جس کے باعث تم سے بات کرنے میں عار معلوم ہوتی ہے
(دل میں) اوف اپنا جی دیکھ لیں گے تو کیا کہیں گے۔

आञ्जना कुछ कहने को थी कि प्रसन्न कीर्ति जल्द जल्द कदम उठा अपने महल की तरफ चला गया और अञ्जना देवी अचम्भा सा रह गई। दफातन (अचानक) ख्याल जो दिल मे पैदा हो कुछ कुछ तसकीन (आराम) देने लगे थे ना उम्मीदी में बदल गए। तबीयत यकबारगी तकदीर की तरह बिगड गई। दुनिया नजरों मे तेरावतार हो गई। होशोहवास उड गए और बेखुदी के आलम में हो सर चक्कर खा गया तो सर को हाथ से पकड एक दिवार के सहारे खडी हो गई है। थोडी देर के सकूत के बाद पहले जो इसके मुँह से बात निकली वो ये है "ऐ ईश्वर! मैंने ऐसा क्या गुनाह किया है कि जिसके गोज अपने बेगाने होते जाते हैं। हाय! इस दुनिया मे कोई हमदर्द नजर नहीं आता। ईश्वर! ये क्या माजरा है समझ में नहीं आता। आप पर भी इल्जाम नहीं दे सकती इंसाफ खास आपका ही वस्फ (गुण) है। तो फिर ये क्योंकर" ... थोडी देर सोचने के बाद "उफ! ये मेरे ही पूर्वेले[१] कर्मों के फल हैं और किसी को क्या दोष[२] दूँ।" नाजरीन! इस वक्त बहुत सी औरतें और नवउम्र लडकियाँ अञ्जना देवी के इर्द गिर्द खडी हैं मगर सबकी सब आंसू बहा अफसोस कर रही हैं। जिन्होने उसके लडकपन क जमाना देखा हुआ है वो तो मुतखइयर हो अंगश्त बदनदान अयाम गर्दिश की शिकायत कर लडकपन की तारीफ कर रही हैं। मगर जिन को अभी तक इसके देखने का मौका ही नहीं मिला अञ्जना के मुँह पर से आँचल उठा सूरत को देख हाथ मल मल कर हमदर्दी जाहिर करती हैं। आह! इस वक्त अञ्जना देवी के दिल में हजारों ख्याल सरासमगी के पैदा हो तबीयत को उलझाकर दिल को बिगाडकर रह जाते हैं। और बेचारी किस्मत की मारी ज्यादा सुनने की ताब न लाकर आहिस्ता आहिस्ता कदम रखती हुई आगे को बढी चली जाती है।

१ पिछले जन्म के आमाल २ इल्जाम

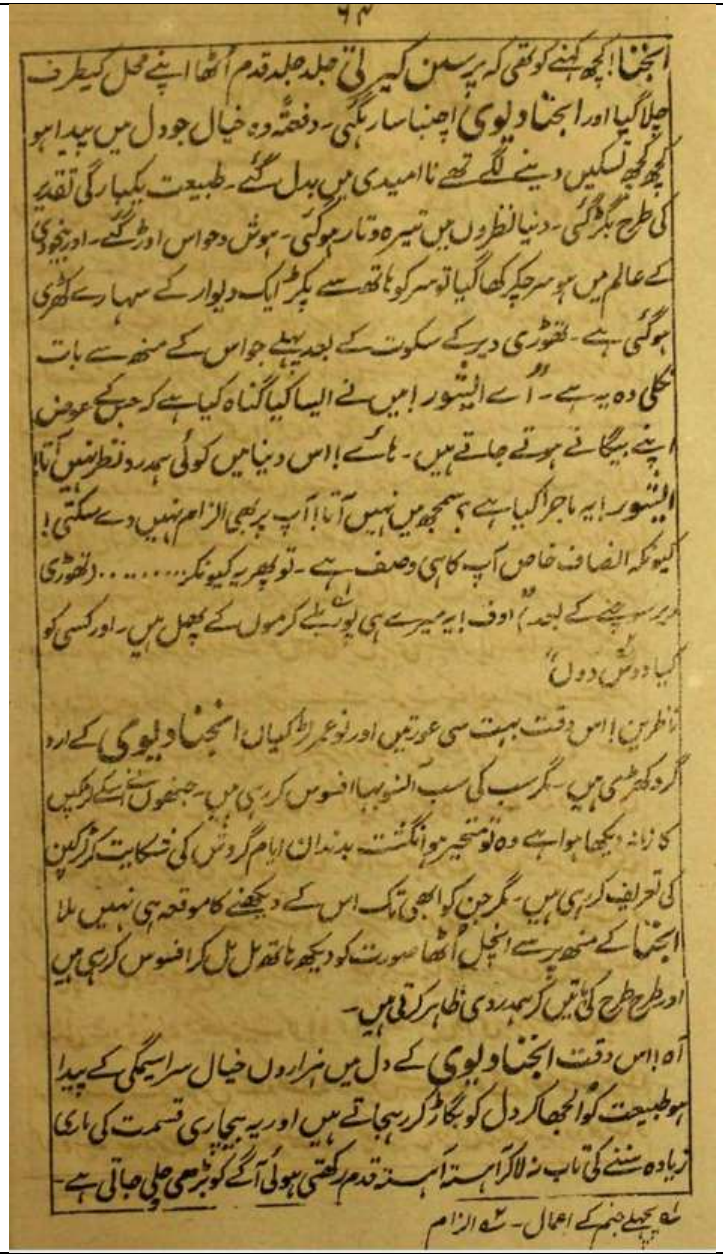

६४

انجنا! کچھ کہنے کو تھی کہ پرسن کیرتی جلد جلد قدم اٹھا اپنے محل کیطرف
چلا گیا اور انجنا دیوی اچنبا سا رہگئی۔ دفعتہً وہ خیال جو دل میں پیدا ہو
کچھ کچھ تسکین دینے لگے تھے ناامیدی میں بدل گئے۔ طبیعت یکبارگی تقدیر
کی طرح بگڑ گئی۔ دنیا نظروں میں تیرہ و تار ہوگئی۔ ہوش و حواس اوڑ گئے۔ اور بیخودی
کے عالم میں ہو سر چکر کھا گیا تو سر کو ہاتھ سے پکڑ ایک دیوار کے سہارے کھڑی
ہوگئی ہے۔ تھوڑی دیر کے سکوت کے بعد پہلے جو اس کے منھ سے بات
نکلی وہ یہ ہے۔ "اے ایشور! میں نے ایسا کیا گناہ کیا ہے کہ جس کے عوض
اپنے بیگانے ہوتے جاتے ہیں۔ ہائے! اس دنیا میں کوئی ہمدرد نظر نہیں آتا!
ایشور! یہ ماجرا کیا ہے؟ سمجھ میں نہیں آتا! آپ پر بھی الزام نہیں دے سکتی!
کیونکہ انصاف خاص آپ کا ہی وصف ہے۔ تو پھر یہ کیونکر..... (تھوڑی
دیر سوچنے کے بعد) اوف! یہ میرے ہی پورب[1] کرموں کے پھل ہیں۔ اور کسی کو
کیا دوش[2] دوں"

ناظرین! اس وقت بہت سی عورتیں اور نوعمر لڑکیاں انجنا دیوی کے ارد
گرد کھڑی ہیں۔ مگر سب کی سب آنسو بہا افسوس کر رہی ہیں۔ جنھوں نے اسکے لڑکپن
کا زمانہ دیکھا ہوا ہے وہ تو متحیر ہو انگشت بدندان ایام گردش کی شکایت کر لڑکپن
کی تعریف کر رہی ہیں۔ مگر جن کو ابھی تک اس کے دیکھنے کا موقعہ ہی نہیں ملا
انجنا کے منھ پر سے انچل اٹھا صورت کو دیکھ ہاتھ مل مل کر افسوس کر رہی ہیں
اور طرح طرح کی باتیں کر ہمدردی ظاہر کرتی ہیں۔

آہ! اس وقت انجنا دیوی کے دل میں ہزاروں خیال سراسیمگی کے پیدا
ہو طبیعت کو الجھا کر دل کو بگاڑ کر رہجاتے ہیں اور یہ بیچاری قسمت کی ماری
زیادہ سننے کی تاب نہ لا کر آہستہ آہستہ قدم رکھتی ہوئی آگے کو بڑھی چلی جاتی ہے۔

[1] پچھلے جنم کے اعمال۔ [2] الزام

बाब (अध्याय) ग्यारहवाँ

हाय अब किधर जाऊँ

वही दिन है और उसी दिन का पहला पहर गुजर चुका है। जबकि अञ्जना देवी दिलकी अफसुरदगी से गर्दन झुका और फिर खुद ही सर उठा हसरत भरी निगाहें महेन्द्रपुर के मर्दो जनोरो दीवार पर डालती और रोती हुई बसन्तमाला को साथ लिए शहर से बाहर निकल उस पगडंडी से, जो खेतों में से होकर शमाल (उत्तर) को जाती है, जा रही है। अभी दो तीन कोस ही गई होगी कि तीन रास्ते मुख्तलिफ सीमतों तो जाते हुए दिखाई दिए। इन को देखकर अञ्जना बहुत घबराई और दिल में कहा कि अब कौन सा रास्ता इख्तियार करूँ। पहले दाए तरफ को देखती रही और फिर बाए को मगर उन दोनो मे मुसाफिरों कशरत से आदरोरफत देख और अपने लिबास पर नजर कर न जाने किस सोच मे पड गई की पलक तक नहीं झपकती और परेशान होकर खडी है। थोडे से सकूत के बाद आसमान से नजर मिला ये कहा "हाय! अब किधर जाऊँ" फिर सर्द सांस ले यूँ कहने लगी

दिया सास ससुर ने त्याग पति ने सुध बिसारी करें सभी दुत्कार नगर के नर और नारी
हुए निरास उदास आई मैं शरण तुम्हारी बिना आप भगवान कौन मेरा हितकारी
कौन करे हितकार प्रभु जब तुम रसयाओ[१] मेरे अवगुण बेशुमार प्रभुजी न चित लाओ
किस पर करूँ पुकार नहीं कोई और ठिकाना था मात पिता पर जोर सोई मैं झूठा जाना
भाई ने देनी तराह देखकर हित का बाना हाय करे दासी बरयार सुनले अपने काना
और न दो सन्ताप प्रभु मैं अति दुखियारी नहीं जीने की चाह मुझे अब मौत प्यारी
करो का है अब देर जल्द यमदूत पठाओ होकर पाल दयाल प्रभु मेरा दुख मिटाओ

१ रसियाओ खफा होना

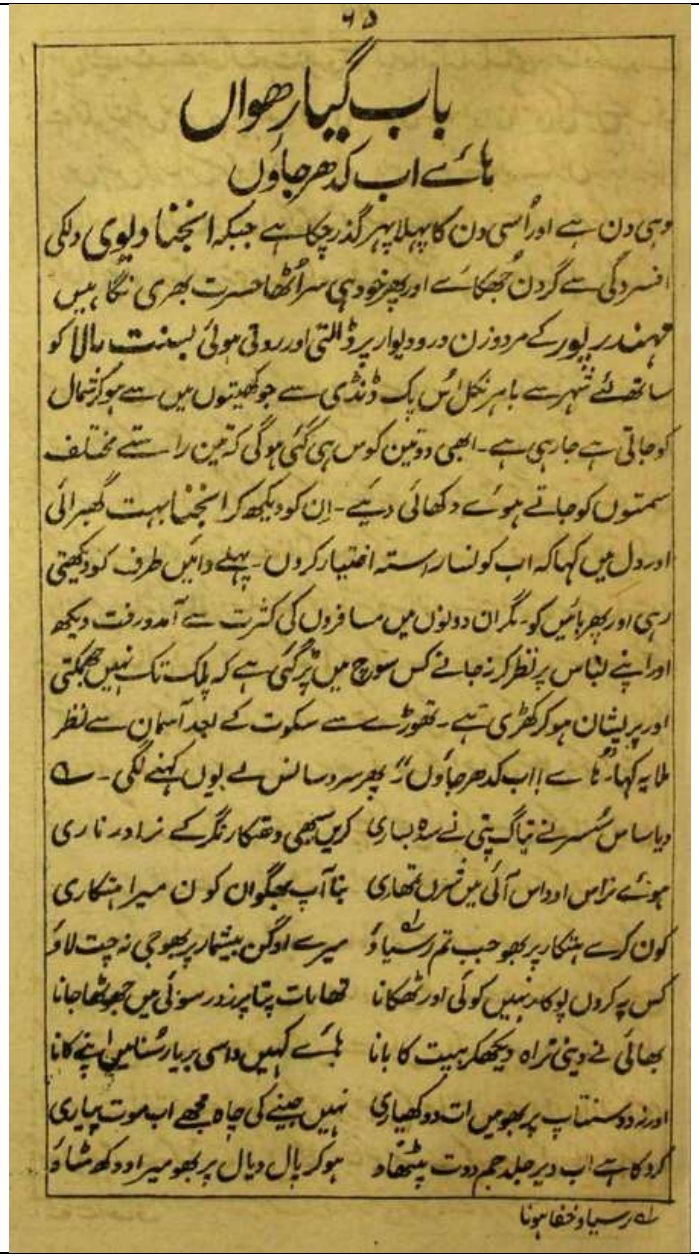

٦٥

باب گیارھواں

ہائے اب کدھر جاؤں

وہی دن ہے اور اُسی دن کا پہلا پہر گذر چکا ہے جبکہ انجنا دیوی دلکی
افسردگی سے گردن جھکائے اور پھر خود ہی سر اُٹھا حسرت بھری نگاہیں
مہندر پور کے مردوزن در و دیوار پر ڈالتی اور روتی ہوئی بسنت مالا کو
ساتھ لئے شہر سے باہر نکل اُس پگ ڈنڈی سے جو کھیتوں میں سے ہو کر شمال
کو جاتی ہے جا رہی ہے۔ ابھی دو تین کوس ہی گئی ہوگی کہ تین راستے مختلف
سمتوں کو جاتے ہوئے دکھائی دیئے۔ اِن کو دیکھ کر انجنا بہت گھبرائی
اور دل میں کہا کہ اب کونسا راستہ اختیار کروں۔ پہلے دائیں طرف کو دیکھتی
رہی اور پھر بائیں کو۔ مگر ان دونوں میں مسافروں کی کثرت سے آمد و رفت دیکھ
اور اپنے لباس پر نظر کر نہ جانے کس سوچ میں پڑ گئی ہے کہ پلک تک نہیں جھپکتی
اور پریشان ہو کر کھڑی ہے۔ تھوڑے سے سکوت کے بعد آسمان سے نظر
ملا یہ کہا "ہائے! اب کدھر جاؤں" پھر سرد سانس لے یوں کہنے لگی۔ ؎

دیا ساس سُسر نے تیاگ پتی نے سدھ بساری کریں سبھی دھتکار نگر کے نر اور ناری
ہوئے نراس اداس آئی میں شرن تمھاری بنا آپ بھگوان کون میرا ہتکاری
کون کرے ہتکار پربھو جب تم رسیاؤ[۱] میرے اوگن بیشمار پربھو جی نہ چت لاؤ
کس پہ کروں پکار نہیں کوئی اور ٹھکانا تھا مات پتا پر زور سوئی میں جھوٹھا جانا
بھائی نے دینی تراہ دیکھکر ہیت کا بانا ہائے کہیں داسی بریار سُنا لیں اپنے کانا
اور نہ دو سنتاپ پربھو میں ات دوکھیاری نہیں جینے کی چاہ مجھے اب موت پیاری
کرو کا ہے اب دیر جلد جم دوت پٹھاؤ ہو کر پال دیال پربھو میرا دوکھ مٹاؤ

۱ رسیاؤ خفا ہونا

६६

हैं ऐसे मंदे भाग मौत न मेरी आवे क्या जान क्या रंग विधना दिखलावे
है मुझको विश्वास नहीं पर याब ऐ नाकारी, होती है बलवान उसकी खेल है सारी
दोष नहीं कुछ सास ससुर को न पिता और भाई
दास दोष है पूर्व कर्मां विधना बर बनाई

ये कहा और इन दोनो रास्तो को छोडा और सामने का, जहाँ से कोई भी गुजरता हुआ दिखाई नहीं देता और ना ही ज्यादा आदतोरफत के आशार पाए जाते हैं, इख्तियार किया है।

आह! प्यारी अञ्जना! तू कहाँ को जा रही है? इस तरफ तो कोई ठिकाना नहीं जहाँ बैठकर अपना गम गलत करेगी या किसी को अपना दर्द शरीक बनाएगी। तेरी शादी क्या हुई बबाले जान हो गई कि दुनिया की तमाम तकलीफों ने तुझको आ घेरा। आए दिन की नई मुसीबत का बोझ तेरे नाजुक दिल को आ दबाता है। उफ! दुख का तो एक दिन भी पहाड दिखाई देता है, तुझको तो तेरह सालों से इसका सामना है! पहले बारह साल तो स्वामीजी की जुदाई में गुजरे और तेरहवाँ सब से बढकर मनहूस निकला। अञ्जना! बतला तो सही अब किधर को जाएगी? जंगल कि तरफ क्यों जा रही है? इस तरफ तो खुंखार दरिंदे फिरते होंगे जिनकी शक्ल देखकर तेरा नन्हा सा दिल घबरा जाएगा। क्योंकि तूने पहले कभी उनको नहीं देखा। देवी! ये रास्ता छोड दे और दाए हाथ का रास्ता इख्तियार कर जो आबादी को जा रहा है। अफसोस वो कुछ नहीं सुनती। बसन्तमाला को उस तरफ जाने के लिए मजबूर कर रही है। अगरचा वो बहुत समझाती है और इस तरफ जाने मे कई तरह की मुसीबतें बतला जान का खौफ जतलाती है। लेकिन ये एक नहीं मानती। क्या इसको आबादी से नफरत है? जो इस को छोड जंगल को जा रही है! हाँ! ऐसा ही मालूम होता है। क्या आप भूल गए? सास ससुर की बदसलूकी माँ बाप

१ बेइंसाफ

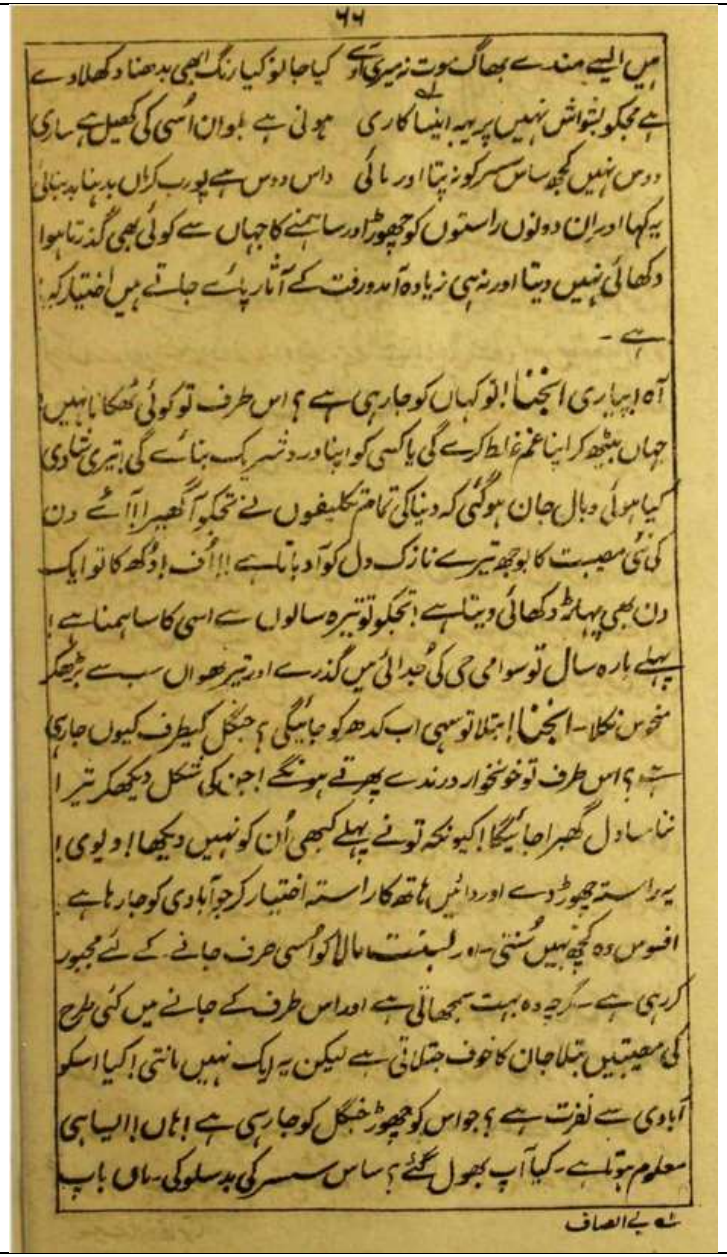

की बेपरवाही लौंडियों के ताने और शहर की औरतों की बातों को सुनकर उसके दिलने आबादी से जंगल को तरजीह (वरीयता) दी है। और ये सच भी है जहाँ कोई अपना गमख्वार और पुरसान हाल न हो वहाँ जाने से सिवाए रंज के और कुछ हासिल नहीं होता। इस वक्त इसका कोई भी दर्दी नहीं जो इसकी मुसीबत जदा हालत को देख आंसू बहा इसके पुसरमर्दा दिल को तसल्ली देवे या यहीं कहे कि प्यास ने तुझको व्याकुल[१] कर रखा है इस चश्मे से जो नजदीक ही है पानी पी ले। नहीं नहीं! वो देखिए इसकी पुरानी गमख्वार, जिसने दुनिया की तमाम नैमतों को छोड लज्जतों से मुँह मोड लडकपन ही से इसका साथ दे रखा है, बराबर कह रही है मगर अञ्जना यही जवाब देती है कि दिल नहीं चाहता।

नाजरीन! अञ्जना अभी चंद ही कोस गई होगी कि पहाडों की बुलन्द चोटियाँ दरख्तों में से दिखाई देने लगी और आफताब का रंग भी तबदील हो गया है। उसकी शोख किरणे अब मध्यम पड गई हैं और बजाए उनके कुछ जर्दी सी छाई हुई मालूम होती है जिसको देखते ही घबरा कर बसन्तमाला ने अञ्जना देवी से कहा

बसन्तमाला सखी! आफ्ताब गरूब (अस्त) हुआ चहता है और सुनसान वीरान जंगल ही चारो तरफ दिखाई देता है। जरा कदम को तेज करो ताकि पनाह की जगह देख रात गुजारने की तजवीज करें।

अञ्जना "प्यारी! इस आफताब के गरूब होने से तो कुछ फर्क नहीं। मैं तो अपने मुकद्दर के मेहताब को रो रही हूँ जो आज के दिन गरूब हो चुका है। जिसके मादूम होने से हर एक के दिल पर मेरी तरफ से तारिकि छा गई है। इस जंगल को देख क्यों घबराती है। मैं तो इसको आबादी से तरजीह देती हूँ।

१ बेचैन

کی بے پرواہی - لونڈیوں کے طعنے اور شہر کی عورتوں کی باتوں کو سنکر اس کے
دل نے آبادی سے جنگل کو ترجیح دی ہے - اور یہ سچ بھی ہے جہاں کوئی اپنا
غمخوار اور پرسان حال نہ ہو وہاں جانے سے سوائے رنج کے اور کچھ حاصل نہیں
ہوتا - اس وقت اس کا کوئی بھی دردی نہیں جو اس کی مصیبت زدہ حالت کو
دیکھ آنسو بہا اس کے پژمردہ دل کو تسلی دیوے - یا یہی کہے کہ پیاس نے تجکو بیکل[1]
کر رکھا ہے اس چشمہ سے جو نزدیک ہی ہے پانی پی لے - نہیں! نہیں! وہ
دیکھئے اس کی پرانی غمخوار جس نے دنیا کی تمام نعمتوں کو چھوڑ لذتوں سے منھ موڑ
لڑکپن ہی سے اس کا ساتھ دے رکھا ہے برابر کہہ رہی ہے مگر انجنا یہی
جواب دیتی ہے کہ دل نہیں چاہتا!!

ناظرین! انجنا ابھی چند ہی کوس گئی ہوگی کہ پہاڑوں کی بلند چوٹیاں درختوں
میں سے دیکھائی دینے لگیں اور آفتاب کا رنگ بھی تبدیل ہوگیا ہے اسکی
شوخ کرنیں اب مدھم پڑ گئیں ہیں - اور بجائے اُن کے کچھ زردی سی چھائی ہوئی
معلوم ہوتی ہے - جس کو دیکھتے ہی گھبرا کر بسنت مالا نے انجنا دیوی
سے کہا -

بسنت مالا - سکھی! آفتاب غروب ہوا چاہتا ہے اور سنسان ویران
جنگل ہی چاروں طرف دیکھائی دیتا ہے ذرا قدم کو تیز کرو تاکہ پناہ کی جگہ
دیکھ رات گذارنے کی تجویز کریں -

انجنا - پیاری اس آفتاب کے غروب ہونے سے تو کچھ فکر نہیں میں تو اپنے
مقدر کے مہتاب کو رو رہی ہوں جو آج کئی دن سے غروب ہو چکا ہے جس کے
معدوم ہونے سے ہر ایک کے دل پر میری طرف سے تاریکی چھا گئی ہے -
اس جنگل کو دیکھ کیوں گھبراتی ہے میں تو اس کو آبادی سے ترجیح دیتی ہوں

[1] بے چین

क्योंकि मेरे दिल को दुखाने वाला तो यहाँ कोई नहीं।" रोकर "आह! जल्द चल कर किसकी पनाह में जाना है। जहाँ रात पड गई वहीं हमारा ठिकाना है।"

बसन्तमाला "सखी! जो कुछ तुमने किया दुरुस्त है। जमाने की जिस कदर शिकायत करे बजा है। मगर गिरगिट की तरह जमाने के बदलते रंग इसके तफिरात को साबित कर रहे हैं और मुसीबत जदों को अच्छी तरह यकीन दिला रहे हैं कि अगर कल का दिन आज नहीं तो इसमे कोई शक नहीं कि आज की हालत भी कल तक न रहेगी। कभी तो मुकद्दर सीधा होगा कभी तो अच्छे दिन फिरेंगे।"

अञ्जना मगमूम आवाज "बसन्त क्या कहती हो? ये वो तकदीर नहीं जो कभी पलटे। जमाने के इंकलाब की मैं खुद कायल थी और जानती थी कि दुख सुख चद रोजा होता है। मगर अब यकीन हो गया कि ये सब मन के ढकोसले हैं। सरासर गलत और झूठ हैं। जरा ख्याल तो कर जबसे शादी हुई क्या सुख नसीब हुआ? आज तेरह साल से बराबर यही हाल हो रहा है। इंकलाब की उम्मीद कहाँ है।"

बसन्तमाला बात काटकर "अब तो आफताब कहीं नजर नहीं आता। हाँ! रात की तारिकि अपने चारो दामन फैला डरावनी शक्ल बना तमाम जंगल को अपने आगोश मे छिपाए चली जाती है।"

अञ्जना आसमान की तरफ नजर करके "उफ! मैंने तो अभी संध्या करनी है।" ये कहा और एक बड के दरख्त के नीचे संध्या करने बैठ गई और बसन्तमाला ने घास पात बिछा कर बिस्तर जमाया और कुछ जंगली फल जो उस वक्त मयस्सर हो सके लाकर रखे।

आह! बसन्तमाला तो अञ्जना को इन फलों के खाने के वास्ते मजबूर कर कस्में दे रही है और ये बेचारी जार जार रो रही है!

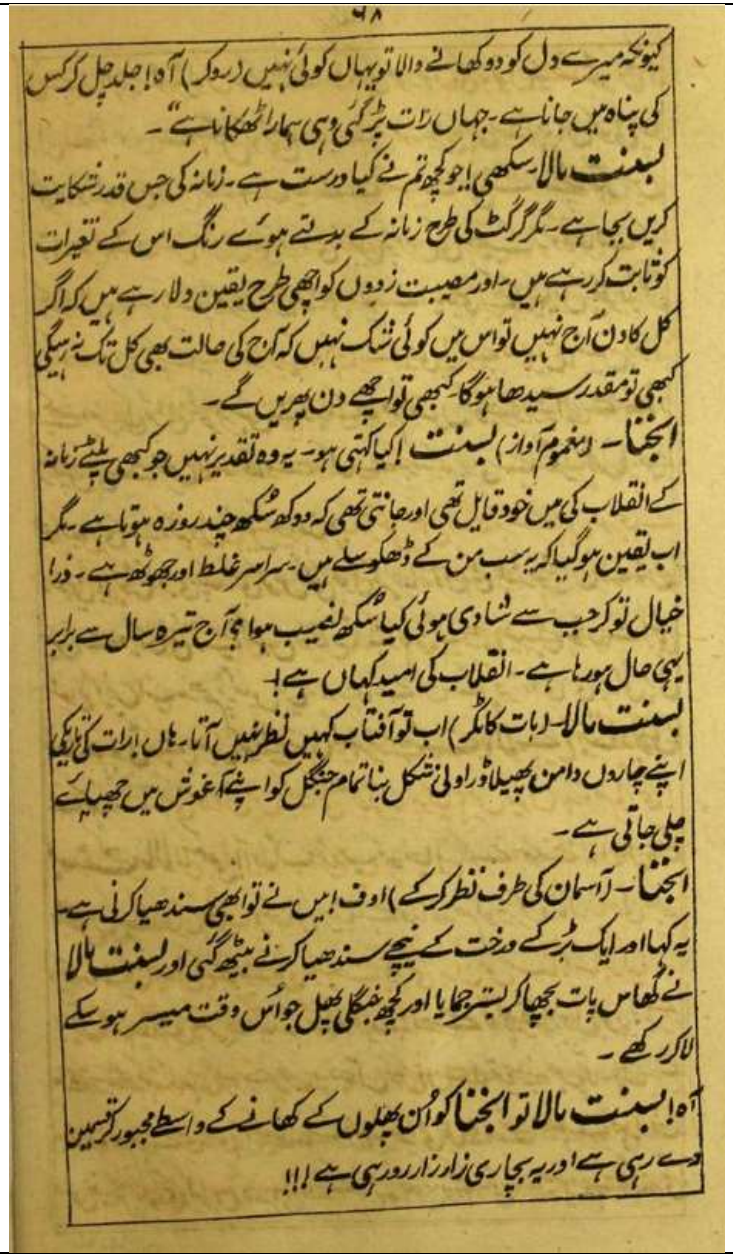

नाजरीन! परमेश्वर करे की मुसीबत का दिन किसी को नसीब न हो। देखिए वही राजा की लडकी है जिसने अपना लडकपन का जमाना ऐशो इशरत मे बसर किया था। हजारों लौंडिया हर वक्त दस्तबस्ता हाजिर रहती थी। खाने के वास्ते तरह तरह के खाने दस्तरखान पर चुने जाते थे। नीमख्वाब और मखमल की तोशकें बिछा सलवट का ख्याल किया जाता था। जरासी तकलीफ होने से तमाम महल मे कोहराम मच जाता था और हजारों बल्कि लाखों रुपयो की खैरात की जाती थी। आज वही बेसरोसामान सुनसान वीरान जंगल में इस हालत में, जबकी पाच छः माह के हमल से है और ये वो वक्त है जिसको हुकमाने औरतों के लिए निहायत नाजुक करार दिया है, बैठी है। और तीन दिन के बाद ये चंद जंगली फल आगे पडे हैं। और बजाए उन मखमली तोशकों के घास पात का बिस्तरा हो रहा है। बेचारी! रोए न तो क्या करे? बसिद मुश्किल से एक दो फल खाकर पानी पिया। दिन भर की थकान ने मजबूर किया तो लेट गई।

आह! लेटते ही कई तरह के ख्याल पैदा हुए तबीयत को और भी बेचैन करने लगे तो घबरा कर उठ बैठी। और दिल में कहने लगी मुझको क्या हो गया? मैं क्यो बदनाम की गई? मेरी कैसी रुसवाई हुई। लोग दिल मे क्या ख्याल करते होंगे। वालदा के दिल में क्या गुजरती होगी?

उफ! इस ख्याल के आते ही तबीयत बिगड गई। बदन मे सन्नाटा सा पड गया। सर आसमान की तरह चक्कर खा गया तो उसको एक हाथ से और बेकरार दिल को दूसरे हाथ से पकडकर रह गई। इतने मे ये ख्याल दिमाग से उतर सीने मे आ जबान से निकला हाय! कैसी कैसी मुसीबतो के बाद स्वामीजी का दर्शन नसीब हुआ था। दिल में कहती थी कि अब मुसीबत के दिन गुजर गए आइन्दा चैन से गुजरेगी।

ناظرین! پرمیسر کرے کہ مصیبت کا دن کسی کو نصیب نہ ہو۔ دیکھئے وہی راجہ کی
لڑکی ہے جس نے اپنا لڑکپن کا زمانہ عیش و عشرت میں بسر کیا تھا ہزاروں
لونڈیاں ہر وقت دست بستہ حاضر رہتی تھیں کھانے کے واسطے طرح طرح
کے کھانے دسترخوان پر چنے جاتے تھے۔ کمخواب اور مخمل کی توشکیں بچھا سلوٹ
کا خیال کیا جاتا تھا۔ ذراسی تکلیف ہونے سے تمام محل میں کہرام مچ جاتا تھا
اور ہزاروں بلکہ لاکھوں روپیوں کی خیرات کی جاتی تھی۔ آج وہی بے سروسامان
سنسان ویران جنگل میں اس حالت میں جبکہ پانچ چھ ماہ کے حمل سے ہے اور
یہ وہ وقت ہے جس کو حکما نے عورتوں کے لئے نہایت نازک قرار دیا ہے
بیٹھی ہے۔ اور تین دن کے بعد یہ چند جنگلی پھل آگے پڑے ہیں اور بجائے
ان مخملی توشکوں کے گھاس پات کا بستر ہو رہا ہے بیچاری! روئے نہ تو
کیا کرے؟ بصد مشکل ایک دو پھل کھا کر پانی پیا دن بھر کے تکان نے مجبور
کیا تو لیٹ گئی۔

آہ! لیٹتے ہی کئی طرح کے خیال پیدا ہو طبیعت کو اور بھی بے چین کرنے لگے۔
تو گھبرا کر اٹھ بیٹھی اور دل میں کہنے لگی "مجھکو کیا ہو گیا؟ میں کیوں بدنام کی گئی!
میری کیسی رسوائی ہوئی!! لوگ دل میں کیا خیال کرتے ہونگے!!! والدہ کے
دل میں کیا گذرتی ہوگی"؟

اوف! اس خیال کے آتے ہی طبیعت بگڑ گئی بدن میں سناٹا سا پڑ گیا۔
سر آسمان کی طرح چکر کھا گیا تو اس کو ایک ہاتھ سے اور بیقرار دل کو دوسرے
ہاتھ سے پکڑ کر رہ گئی۔ اتنے میں یہ خیال دماغ سے اوتر سینہ میں آ زبان سے
نکلا۔ ہائے! کیسی کیسی مصیبتوں کے بعد سوامی جی کا درشن نصیب ہوا تھا
دل میں کہتی تھی کہ اب مصیبت کے دن گذر گئے۔ آیندہ چین سے گذریگی

मगर वाह री किस्मत! खूब ही रंग दिखाया!

गर्ज इसी तरह कभी तो घबराकर लेट जाती और कभी दिवानों की तरह उठ बैठती। और इसी आहोजारी मे सुबह हो गई तो स्नान कर नित्य कर्म से फरागत पा आगे को चल पडी। आह! ये तो उन गुनजान (सघन) को दरख्तों को जा रही है जिनके बीच में से एक पगडंडी पशुमखा वन में से गुजर कर उन ऊँचे ऊँचे पहाडों को जाती है जो दूर से दिखाई दे रहे हैं। अभी चार पाँच कोस ही गई होगी कि दरख्तों और जंगली झाडियों की गुनजानी के बाइस एक तंग तारिक रास्ते से गुजरना पडा। गो बसन्तमाला ने हर चंद कोशिश की और अक्ल के घोडे दौडाए मगर सिवाए इस रास्ते के और कोई भी नजर न आया। तब घबराकर बोली

बसन्तमाला "बहन! यहाँ से वापिस होकर किसी और तरफ को जाना अच्छा है क्योंकि ऐसे खौफनाक रास्ते से गुजरना अच्छा नहीं! अव्वल तो हमको मालूम नहीं कि कहाँ को जाता है। दूसरा उजाला भी बहुत कम है। तीसरे अगर इसको तय करने से पहले रात पड गई तो इस हालत मे जैसे कि अब देख रही हूँ शब बाश कहाँ होगी?"

अञ्जना "सखी! हमारा तो कोई ठिकाना नहीं! जहाँ किस्मत ले जावेगी वहाँ चली जायेंगी। रात की फिक्र न कर। जहाँ देखेंगी वहाँ ही पड रहेंगी!" जरा उपर नजर करके "अभी दिन बहुत बाकी है। शाम तक आठ दस कोस बखूबी चली जावेंगी रास्ते की तरफ देखकर ऐसा बिखरा रास्ता तो थोडी दूर तक मालूम होता है।" फिर गौर से देखकर "अंदाजन दो तीन कोस से ज्यादा न होगा। अब पीछे लौटना वाजिब नहीं।" नाजरीन! बावजूद इस कदर तंगोतारिक बीहड और खौफनाक रास्ता होने के

१ संध्या उपासना

مگر واہ ری قسمت! خوب ہی رنگ دکھایا!!

غرض اسی طرح کبھی تو گھبرا کر لیٹ جاتی اور کبھی دیوانوں کی طرح اُٹھ بیٹھتی اور اسی آہ زاری میں صبح ہوگئی تو اشنان کرنت کرم سے فراغت پا آگے کو چل پڑی۔ آہ! یہ تو اُن گنجان کو درختوں کو جا رہی ہے جن کے بیچ میں سے ایک پگڈنڈی پشومکھا بن میں سے گذر کر اُن اونچے اونچے پہاڑوں کو جاتی ہے جو دور سے دکھائی دے رہے ہیں۔ ابھی چار پانچ ہی کوس گئی ہوگی کہ درختوں اور جنگلی جھاڑیوں کی گنجانی کے باعث ایک تنگ تاریک راستے سے گذرنا پڑا۔ گو بسنت مالا نے ہر چند کوشش کی اور عقل کے گھوڑے دوڑائے مگر سوائے اس راستہ کے اور کوئی بھی نظر نہ آیا۔ تب گھبرا کر بولی۔

بسنت مالا۔ بہن! یہاں سے واپس ہو کر کسی اور طرف کو جانا اچھا ہے۔ کیونکہ! ایسے خوفناک راستہ سے گذرنا اچھا نہیں! اول تو ہم کو معلوم نہیں کہ کہاں کو جاتا ہے۔ دوسرا اُجالا بھی بہت کم ہے۔ تیسرے اگر اس کو طے کرنے سے پہلے رات پڑ گئی تو اس حالت میں جیسے کہ اب دیکھ رہی ہو شب باش کہاں ہوگی؟

انجنا۔ سکھی! ہمارا تو کوئی ٹھکانا نہیں۔ جہاں قسمت لیجاوے گی وہیں چلی جائیں گی! رات کی فکر نہ کر جہاں دیکھیں گی۔ وہاں ہی پڑ رہیں گی!! (ذرا اوپر نظر کر کے) ابھی دن بہت باقی ہے۔ شام تک آٹھ دس کوس بخوبی چلی جائیں گی (راستہ کی طرف دیکھ کر) ایسا بکھڑا راستہ تو تھوڑی دور تک معلوم ہوتا ہے (پھر غور سے دیکھ کر) اندازاً دو تین کوس سے زیادہ نہ ہوگا۔ اب پیچھے لوٹنا واجب نہیں۔

ناظرین! باوجود اس قدر تنگ و تاریک بکھڑا اور خوفناک راستہ ہونے کے

سلہ سندھیا اوپاسنا

अञ्जना देवी जरा भी नहीं घबराई। और ईश्वर पर भरोसा रखती हुई ऐसी जा रही है जैसे बहादुर सिपाही दुश्मन के ताकन में। अगरचे कई किस्म के जंगली जानवर खौफनाक बोलियाँ बोल रहे हैं जिनकी आवाज सुनकर एक नौजवान बहादुर भी हौसला छोड जाए। लेकिन ये (अञ्जना) बडे इश्तकलाल के साथ आगे को पाँव रखती हुई जा रही है।

आह! झाडियों के तेज कांटे चुभकर खून पाँव से बह रहा है और दर्द हैरान कर रहा है। मगर ये इन बातों की कुछ भी परवाह न करती हुई यही कहती जा रही है कि "ईश्वर तेरी मगल इच्छा पूर्ण हो"

ऐसे खौफनाक और तंग तरिक रास्ते को खत्म कर अब एक ऐसी जगह आ गई हैं जो बनिसबत पहले के तो बहुत फराख है मगर दाए बाए दूर तक जंगल ही जंगल दिखाई देता है। और सामने दो चार कोस के फासले पर एक झोंपडी भी नजर आई है जो गालिबन जमीन की सतह से बुलन्द जगह पर वाकिह है। जिसको देखकर अञ्जना देवी को कदर से तसकीन हुई कि यहाँ कोई न कोई रहता होगा। आज रात हम यहाँ ही बसर करेंगी।

आह! फलक कजर कनार को इसकी इतनी तसल्ली भी न गवारा गुजरी। और यकायक स्याह बादल उठे और घटाटोप अंधेरा छा गया। उफ! अंधेरा भी कैसा है हाथ पसारा नजर नहीं आता। हू! क्या आलम है! तमाम जंगल मे दहशत सी बरस रही है। जंगली जानवर मुख्तलिफ खौफनाक बोलियाँ बोल शोर मचा रहे हैं। मगर अञ्जना देवी बसन्तमाला के हौसले को बढाती हुई बडे अस्तकलाल के साथ जा रही है। हालाँकि तारिकि इन्तहा दर्जे की बढ गई है कि एक दूसरी आपस में नजर नहीं आती। आह! यक नशुद दो शेर भी कहीं नजदीक ही डकारता हुआ सुनाई देता है! बादल गरज

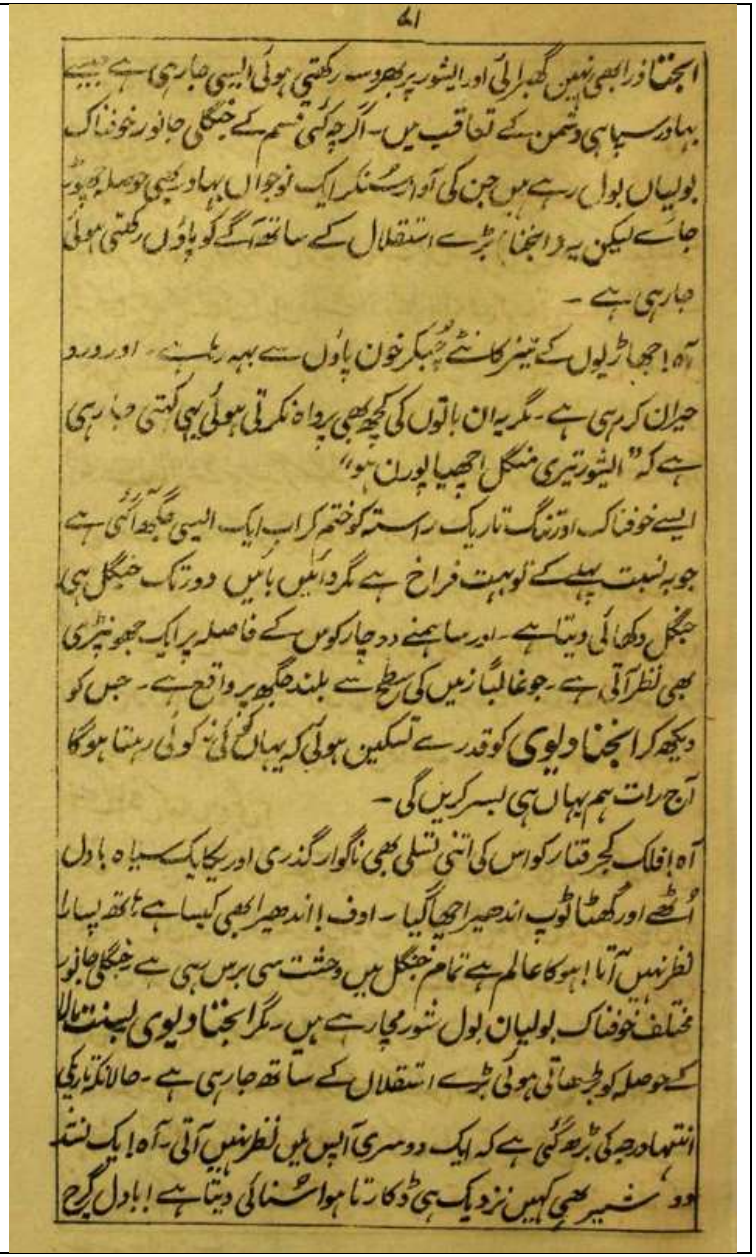

और बिजली कडकडा कर दम खुश्क कर रही है। उस वक्त बसन्तमाला घबरा गई और बोली

बसन्तमाला "बहन! कहाँ हो? मुझको तो कुछ नहीं सूझता।"

अञ्जना देवी उसकी आवाज को सुनकर समझ गई की अंधेरे को देखकर घबरा गई है। झट उसका हाथ पकडकर अपनी बगल में दबा लिया और बोली

अञ्जना "बसन्त! घबराओ मत हौसला रखो।" आसमान की तरफ देख कर "बादल फटने की देर है अभी थोडी देर मे उजाला हो जाएगा।" दिल में "आह! वाह री किस्मत पहले तो सिर्फ अंधेरा ही सता रहा था या दरिंदो की खौफनाक आवाजें दिल को हिला रही थी। अब जमीन भी नाहमवार (असमतल) आ गई है।"

अगर एक पाँव हमवार जमीन पर पडता है तो दूसरा गड्ढे मे पड सर को झुका कमर को लचकाता है। अगर टटोलते टटालते वहाँ से बचा ही लिया तो जंगली झाडियों ने अपना ही शिकार बना लिया। ये हालत देख कर अञ्जना के आंसू निकल पडे और न जाने क्या दिल मे ख्याल गुजरा है कि सर्द सांस ली और बोली "अच्छा! जो ईश्वर तेरी मर्जी" तब बसन्तमाला ने कहा

बसन्तमाला "अञ्जना! मैं सुनती थी। नहीं नहीं! यकीनन जानती थी कि तेरा वालिद बडा दाना और नेक सीरत राजा है। और इसी तरह आली हजालकिया तेरी वालदा को। लेकिन इस वक्त तो मैंने उन से बढकर कोई भी बेरहम और नहीं देखा। हाय! उन्होने जब अपने लख्ते जिगर की मुसीबत का कुछ भी ख्याल नहीं किया तो दूसरो का क्या खाक इंसाफ करेंगे।"

बसन्तमाला की बाते अञ्जना के नाजुक दिल पर तीर की तरह लगी और बडे गुस्से में होकर कहा

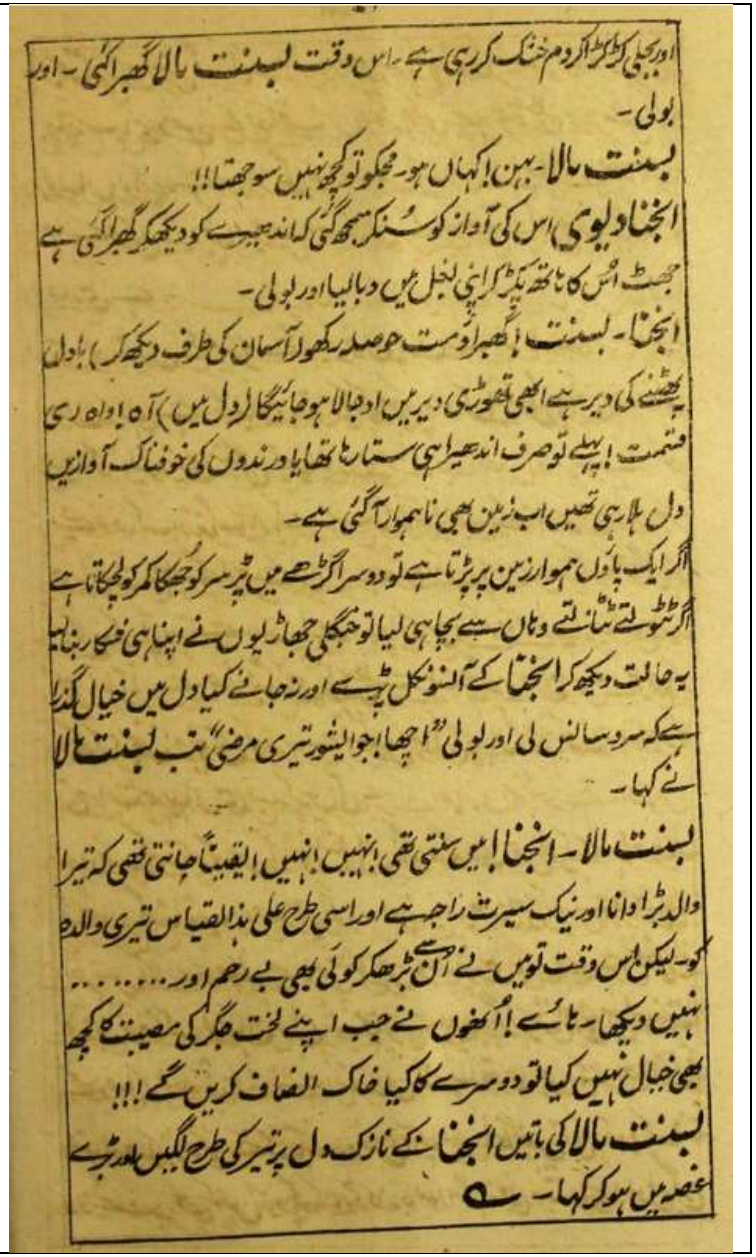

اور بجلی کڑکڑا کر دم خشک کر رہی ہے۔ اس وقت بسنت مالا گھبرا گئی۔ اور بولی۔

بسنت مالا۔ بہن! کہاں ہو۔ مجکو تو کچھ نہیں سوجھتا!!

انجنا دیوی (اس کی آواز کو سُنکر سمجھ گئی کہ اندھیرے کو دیکھکر گھبرا گئی ہے جھٹ اُس کا ہاتھ پکڑ کر اپنی بغل میں دبا لیا اور بولی۔

انجنا۔ بسنت! گھبراؤ مت حوصلہ رکھو (آسمان کی طرف دیکھ کر) بادل پھٹنے کی دیر ہے ابھی تھوڑی دیر میں اجالا ہو جائیگا (دل میں) آہ! واہ ری قسمت! پہلے تو صرف اندھیرا ہی ستا رہا تھا یا درندوں کی خوفناک آوازیں دل ہلا رہی تھیں اب زمین بھی ناہموار آگئی ہے۔

اگر ایک پاؤں ہموار زمین پر پڑتا ہے تو دوسرا گڑھے میں پڑ سر کو جھکا کمر کو لچکاتا ہے اگر ٹٹولتے ٹٹولتے وہاں سے بچا ہی لیا تو جنگلی جھاڑیوں نے اپنا ہی شکار بنا لیا یہ حالت دیکھ کر انجنا کے آنسو نکل پڑے اور نہ جانے کیا دل میں خیال گذرا ہے کہ سرد سانس لی اور بولی "اچھا! جو ایشور تیری مرضی" تب بسنت مالا نے کہا۔

بسنت مالا۔ انجنا! میں سنتی تھی! نہیں! نہیں! یقیناً جانتی تھی کہ تیرا والد بڑا دانا اور نیک سیرت راجہ ہے اور اسی طرح علی ہذا القیاس تیری والدہ کو۔ لیکن اس وقت تو میں نے ان سے بڑھکر کوئی بھی بے رحم اور ..... نہیں دیکھا۔ ہائے! انھوں نے جب اپنے لخت جگر کی مصیبت کا کچھ بھی خیال نہیں کیا تو دوسرے کا کیا خاک انصاف کریں گے!!!

بسنت مالا کی باتیں انجنا کے نازک دل پر تیر کی طرح لگیں اور بڑے غصہ میں ہو کر کہا۔

पिता मेरा सखी अती गुणी और बडा बुद्धिमान दया धर्म को पालता करता हर का ध्यान
राज काज मे चतुर मस्तक देखे जो गुण अवगुण पहचान कर दण्ड दे जपकसी हो
जो मम हाल न परखया तिसका और है बयद पूर्व कर्म मेरे अती बुरे जिन दिखलाया कहयद
माता शील स्वभाव है पतिव्रता तस नाम कण्ठ मे जिसके बस रहा प्यारी एक ईश्वर का नाम
कठोर वचन नहीं जानती सबसे करे प्यार नगर निवासी हित करे क्या पुरुष क्या नार
बसन्तमाल मत बोल री मुख से बात अयोग मात पिता के बस नहीं विधना लिखया संजोग

"बसन्त! क्या कहा? जरा सोच कर बात किया कर। सखी! वालदैन कभी नहीं चाहते कि अपनी औलाद को रंज मे देखें। दुनिया मे ईश्वर के बाद उन्ही का मरतबा है। उनका हक तो कभी अदा नहीं हो सकता। भला सोच वो वालदा जिसने बरसों खूने जिगर पिलाया। रात दिन गोदियों मे खिलाया। नाजोनैमत से परवरिश किया। लिखाया पढाया। हमारी खुशी मे अपनी खुशी समझी। जरा सा रंज होने से खुद रंज मे मुबतला (शामिल) हो गई। हमारे लिये अपने कुल आराम छोड दिए। निहायत अफसोस है कि ऐसी मादरे मेहरबान के बेशुमार अहसानो को भूल कर उसको बेरहम या जालिम करार दे! बसन्त! उनका कसूर नहीं। ये मेरे बुरे आमालो का नतीजा है।" अफसोस! अभी ये कह ही रही थी की धम से एक गड्ढे मे जो करीब तीन गज के गहरा और चार पाँच गज तोल मे है (जहाँ किसी जमाने मे कुँआ होता था) गिर पडी। और बसन्तमाला के उपर गिरने से और भी सदमा पहुँचा। सर को सख्त चोट लगी। हाथ पाँव कांटो से जख्मी हो गए। बेहोश हो कुछ देर तो पडी रही। जब होश आई तो सांप और बिच्छुओं को रेंगते हुए सुनाई देना और खुंखार दरिन्दो की खौफनाक आवाजों का कानों मे आना जलती आग पर तेल का काम दे गया। आह! ऐसे दर्दनाक सीन को देखकर वो कौन सा जवान मर्द है जो इस्तकलाल (धैर्य) से काम

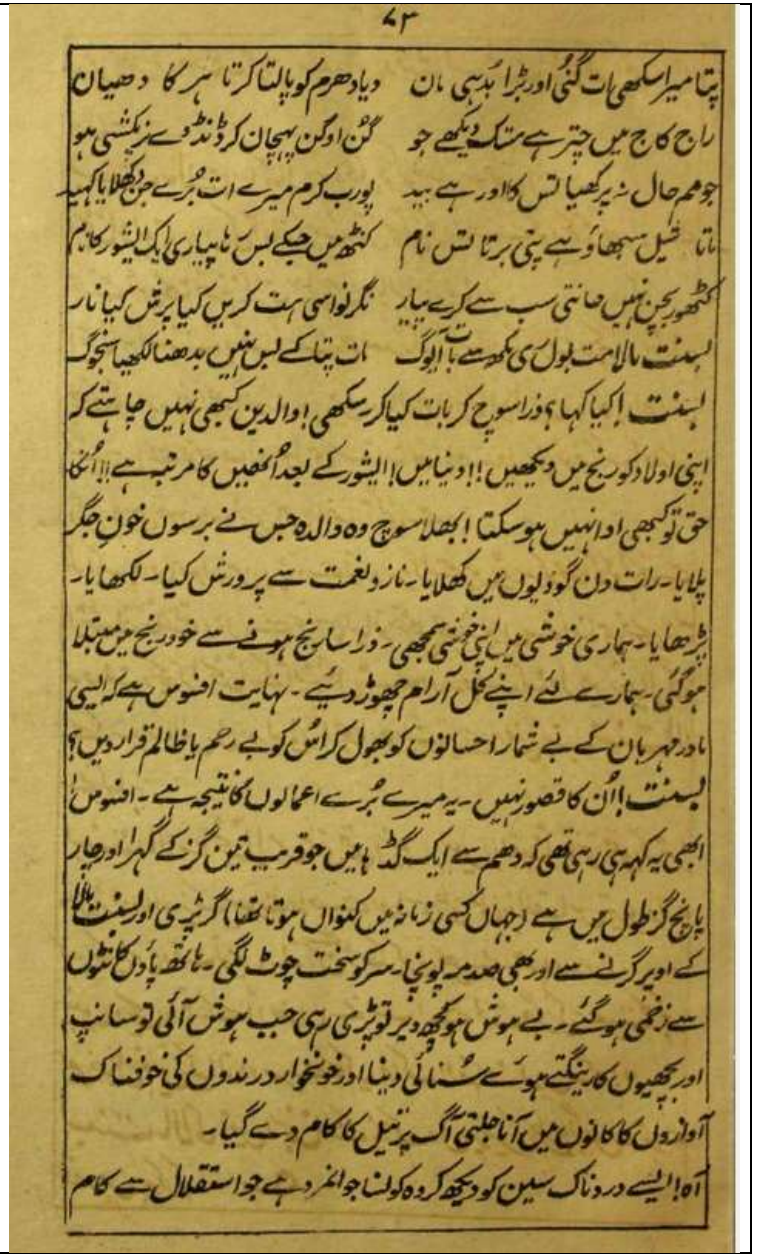

پتا میرا سکھی ات گنی اور بڑا بدھی مان دیا دھرم کو پالتا کرتا ہر کا دھیان
راج کاج میں چتر ہے مستک دیکھے جو گن اوگن پہچان کر ڈنڈ دے نرکشی ہو
جو مم حال نہ پرکھیا تس کا اور ہے بید پورب کرم میرے ات برے جن دکھلایا کھید
ماتا شیل سبھاؤ ہے پتی برتا تس نام کنٹھ میں جسکے بس رہا پیاری ایک ایشور کا نام
کٹھور بچن نہیں جانتی سب سے کرے پیار نگر نواسی ہت کریں کیا پرش کیا نار
بسنت مالا مت بول ری مکھ سے بات اجوگ مات پتا کے بس نہیں بدھنا لکھیا سنجوگ

بسنت! کیا کہا؟ ذرا سوچ کر بات کیا کر سکھی! والدین کبھی نہیں چاہتے کہ اپنی اولاد کو رنج میں دیکھیں!! دنیا میں! ایشور کے بعد انھیں کا مرتبہ ہے!! انکا حق تو کبھی ادا نہیں ہو سکتا! بھلا سوچ وہ والدہ جس نے برسوں خونِ جگر پلایا۔ رات دن گودیوں میں کھلایا۔ ناز و نعمت سے پرورش کیا۔ لکھایا۔ پڑھایا۔ ہماری خوشی میں اپنی خوشی سمجھی۔ ذرا سا رنج ہونے سے خود رنج میں مبتلا ہو گئی۔ ہمارے لئے اپنے کل آرام چھوڑ دیئے۔ نہایت افسوس ہے کہ ایسی مادر مہربان کے بے شمار احسانوں کو بھول کر اس کو بے رحم یا ظالم قرار دیں؟ بسنت! ان کا قصور نہیں۔ یہ میرے برے اعمالوں کا نتیجہ ہے۔ افسوس! ابھی یہ کہہ ہی رہی تھی کہ دھم سے ایک گڈھا میں جو قریب تین گز کے گہرا اور چار پانچ گز طول میں ہے (جہاں کسی زمانہ میں کنواں ہوتا تھا) گر پڑی اور بسنت مالا کے اوپر گرنے سے اور بھی صدمہ پہنچا۔ سر کو سخت چوٹ لگی۔ ہاتھ پاؤں کانٹوں سے زخمی ہو گئے۔ بے ہوش ہو کچھ دیر تو پڑی رہی جب ہوش آئی تو سانپ اور بچھوؤں کا رینگتے ہوئے سنائی دینا اور خونخوار درندوں کی خوفناک آوازوں کا کانوں میں آنا جلتی آگ پر تیل کا کام دے گیا۔
آہ! ایسے دردناک سین کو دیکھ کر وہ کونسا جوانمرد ہے جو استقلال سے کام

ले। मगर नहीं! धर्म के पालने वाली सुशीला अञ्जना बिल्कुल नहीं घबराई और बडे हौसले से बसन्तमाला को कहने लगी

अञ्जना "बसन्त! गर्दीश अयाम उसीको कहते है जब तकलीफ दर तकलीफ और रंज पर रंज हो। मगर इस हालत मे घबराना इंसान का काम नहीं। हाँ! इन बातों को देख गुनाहो से इबरत (चेतावनी) पकडनी फर्ज है। ये दुनिया नापायदार (नष्ट होनेवाला) है किसी को कयाम नहीं, कोई दस रोज आगे और कोई पीछे। मरना बर हक है। बस जब एक दिन इस जहान फानी को छोडना जरूर ही तो हम को इन दरिंदों से क्या डर! मौत का क्या फिक्र! अगर हमारी हयात (जीवन) का खातमा इनही के जरिए लिखा है तो बचाने वाला भी कोई नहीं। प्यारी! घबराओ नहीं उठ कर हिम्मत बांधो और यहाँ से निकलने की कोशिश करो।"

दोनों ने हर चंद तदबीरे की और अक्ल के घोडे दौडाए, मगर अफसोस कामयाब न हुई और हारकर बैठ गई। आह! इस वक्त अञ्जना के दिल मे हजारों ख्याल सरासिमगी के पैदा हो उसके मायूस दिल की चुटकियाँ लेने लगे। कभी तो सखी सहेलियो से खेलना, बाग की सैर करना, माता का उसको जरा सी तकलीफ मे देख अपने आराम को कुर्बान करना, और स्वामीजी का एक बेबुनियाद बात पर यकीन कर प्रतिज्ञा कर पछताना। ये सब बाते आ लातबरकी तरह दिमाग से दिल और दिल से दिमाग में दौरा करने लगे। बहुतेरा दिल को सम्भाला, कई तरह के ख्यालो से टाला। मगर अब वो ताकत नहीं रही जो इन बातो को अंदर ही अंदर जज्ब कर सके। बेइख्तियार जबान से निकल ही गया।

"माता! देख वही तेरी अञ्जना जिसके पाँव मे जरा सा कंकर चुभने से तू लौंडियों को मार मार कर हलाक कर देती थी कि अच्छी तरह झाडू न देने के बाइस इसको तकलीफ

نے! مگر نہیں! دھرم کے پالنے والی سوشیلا انجنا بالکل نہیں گھبرائی اور بڑے حوصلے سے بسنت مالا کو کہنے لگی۔

انجنا۔ بسنت! گردش ایام اسی کو کہتے ہیں جب تکلیف پر تکلیف اور رنج پر رنج ہو۔ مگر اس حالت میں گھبرانا انسان کا کام نہیں! ہاں ان باتوں کو دیکھ گناہوں سے عبرت پکڑنی فرض ہے! یہ دنیا ناپایدار ہے کسی کو قیام نہیں۔ کوئی دس روز آگے اور کوئی پیچھے۔ مرنا برحق ہے۔ پس جب ایک دن اس جہان فانی کو چھوڑنا ضرور ہے تو ہم کو ان درندوں سے کیا ڈر۔ موت کا کیا فکر! اگر ہماری حیات کا خاتمہ انھیں کے ذریعہ لکھا ہے تو بچانے والا بھی کوئی نہیں!! پیاری! گھبراؤ نہیں! اٹھو کمر ہمت باندھو اور یہاں سے نکلنے کی کوشش کرو۔

دونوں نے ہر چند تدبیریں کیں اور عقل کے گھوڑے دوڑائے مگر افسوس کامیاب نہ ہوئیں۔ اور ہار کر بیٹھ گئیں۔ آہ! اس وقت انجنا کے دل میں ہزاروں خیال سراسیمگی کے پیدا ہوئے اس کے مایوس دل کی چٹکیاں لینے لگے کبھی تو سکھی سہیلیوں سے کھیلنا۔ باغ کی سیر کرنا۔ ماتا کا اس کو ذراسی تکلیف میں دیکھ اپنے آرام کو قربان کرنا اور کبھی سوامی جی کا ایک بے بنیاد بات پر یقین کر پرتگیا کر پچھتانا۔ یہ سب باتیں آلات برقی کی طرح دماغ سے دل اور دل سے دماغ میں دورہ کرنے لگیں۔ بتیہیرا دل کو سنبھالا کئی طرح کے خیالوں سے ٹالا۔ مگر اب وہ طاقت نہیں رہی جو ان باتوں کو اندر ہی اندر جذب کر سکے بے اختیار زبان سے نکل ہی گیا۔

ماتا دیکھ وہی تیری انجنا! جس کے پاؤں میں ذراسا کنکر چبھنے سے تو لونڈیوں کو مار مار کر ہلاک کر دیتی تھی کہ اچھی طرح جھاڑو نہ دینے کے باعث اس کو تکلیف

हुई है जान से बेजार हो रही है। हाथ पाँव जख्मी हो खुंखार दरिंदे डरा रहे हैं। भूख प्यास सता रही है। अब कोई दम की मेहमान है। इसी गड्ढे मे तडपती तडपती मर जाएगी और लाश भी जंगली जानवर और परिंदे नोच खायेंगे।"

आह! इस फिक्र के जबान से निकलते ही अञ्जना बेहोश को बेइख्तियार जमीन पर गिर पडी। वो देखिए! कैसे हाथ पाँव फैलाए बेहिसोहरकत पडी है और बाली पर बसन्तमाला बैठी रो रही है।

आह! बसन्तमाला क्या हुआ? क्यों कुछ उम्मीद है कि बस खातमा हो गया! आह! एक हाथ से तो नब्ज की हरकत देख रही है दूसरा मुँह के करीब रख सर्द गर्म सांस की तमीज कर रही है। कुछ दिल को तसल्ली हुई तो बुलन्द आवाज से बोली "अञ्जना! क्यों घबरा गई?" सर हिलाकर "सखी! जबान से तो बोल।" "आह!" इस वक्त एक सर्द आह उस करीब लाजतताम जिस्म से निकली और सातहरी ये कहती सुनाई दी "स्वामीजी! अगर आप अपने वालदैन को मिलकर जाते तो आजका दिन मुझको देखना नसीब न होता। आह! मैं कैसी बदकिस्मत हूँ कि अच्छी तरह आपका दीदार भी नसीब न हुआ और मुसीबत की बिजली टूट पडी। उम्मीद थी कि आप से दर्शन होने से ये सब तक्लीफें भूल जाऊँगी। और वो दाग जो मेरी इस्मत पर झूठा लगाया गया है दूर हो जाएगा। आह! दिल की आरजूएँ दिल में रही और मौत का पैगाम आ पहुँचा। अब कोई सूरत यहाँ से रिहाई की नजर नहीं आती। मगर हाँ! इतना शुक्र है कि गो लोग कुछ ही क्यों ना ख्याल करे लेकिन आप पर तो बखूबी वाजया है की जिस बात का मुझको इल्जाम लगया गया है सरासर झूठ और गलत है।"

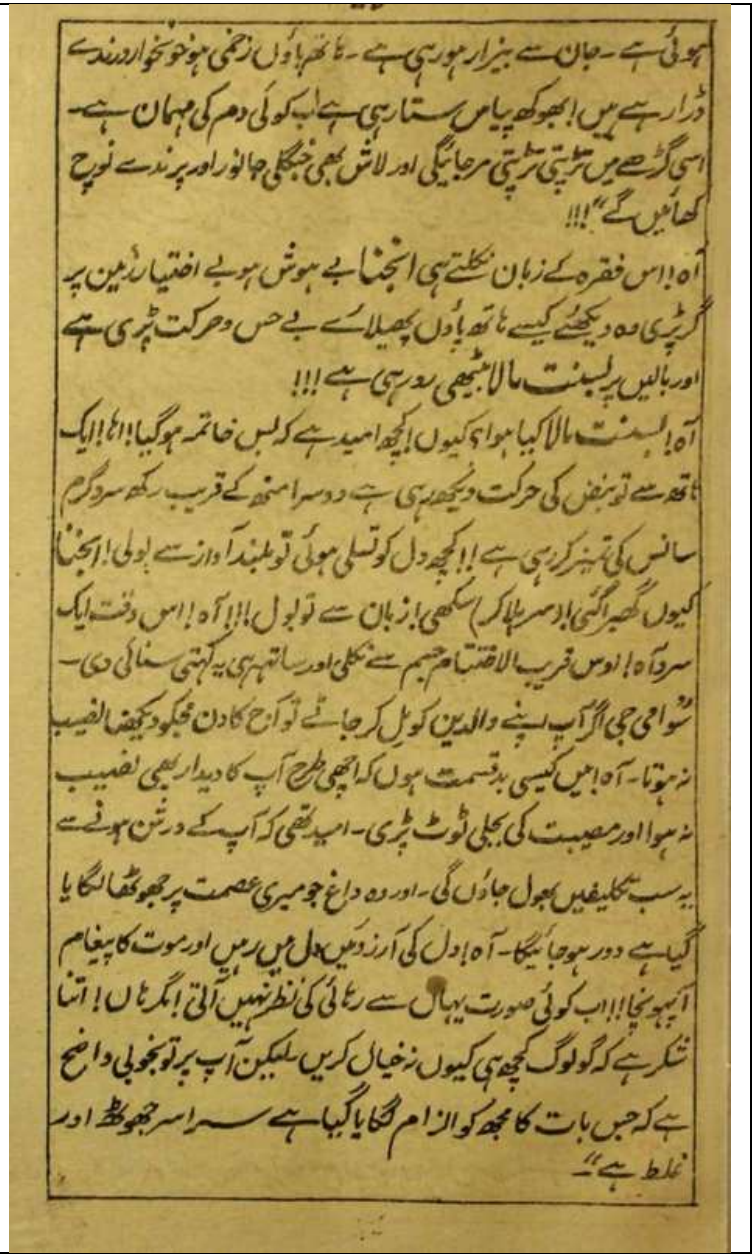
ہوئی ہے۔ جان سے بیزار ہو رہی ہے۔ ہاتھ پاؤں زخمی ہو خونخوار درندے
ڈرا رہے ہیں! بھوکھ پیاس ستا رہی ہے اب کوئی دم کی مہمان ہے۔
اسی گڑھے میں تڑپتی تڑپتی مرجائیگی اور لاش بھی جنگلی جانور اور پرندے نوچ
کھائیں گے"!!!

آہ! اس فقرہ کے زبان نکلتے ہی انجنا بے ہوش ہو بے اختیار زمین پر
گر پڑی وہ دیکھئے کیسے ہاتھ پاؤں پھیلائے بے حس و حرکت پڑی ہے
اور بالیں پر بسنت مالا بیٹھی رو رہی ہے!!!

آہ! بسنت مالا کیا ہوا؟ کیوں! کچھ امید ہے کہ بس خاتمہ ہو گیا! ہاں! ایک
ہاتھ سے تو نبض کی حرکت دیکھ رہی ہے دوسرا منھ کے قریب رکھ سرد گرم
سانس کی تمیز کر رہی ہے!! کچھ دل کو تسلی ہوئی تو بلند آواز سے بولی! انجنا
کیوں گھبرا گئی! (سر ہلا کر) سکھی! زبان سے تو بول!!! آہ! اس وقت ایک
سرد آہ! اوس قریب الاختتام جسم سے نکلی اور ساتھ ہی یہ کہتی سنائی دی۔
"سوامی جی اگر آپ اپنے والدین کو مل کر جاتے تو آج کا دن مجکو دیکھنا نصیب
نہ ہوتا۔ آہ! میں کیسی بدقسمت ہوں کہ اچھی طرح آپ کا دیدار بھی نصیب
نہ ہوا اور مصیبت کی بجلی ٹوٹ پڑی۔ امید تھی کہ آپ کے درشن ہونے سے
یہ سب تکلیفیں بھول جاؤں گی۔ اور وہ داغ جو میری عصمت پر جھوٹھا لگایا
گیا ہے دور ہو جائیگا۔ آہ! دل کی آرزوئیں دل میں رہیں اور موت کا پیغام
آپہونچا!! اب کوئی صورت یہاں سے رہائی کی نظر نہیں آتی! مگر ہاں! اتنا
شکر ہے کہ گو لوگ کچھ ہی کیوں نہ خیال کریں لیکن آپ پر تو بخوبی واضح
ہے کہ جس بات کا مجھ کو الزام لگایا گیا ہے سراسر جھوٹھ اور
غلط ہے"۔

ये कहा और सर्द आह ले खामोश हो गई। बसन्तमाला कुछ कहने को थी कि आंधी का तूफान आया और गुड गुड गुड की आवाज आई और कुछ वजनदार चीज इस गड्ढे मे गिरी। बसन्तमाला के दिल में ख्याल गुजरा कि शेर कूदा है। ये सोच कर वो तो अञ्जना के साथ लिपट गई और बडी हैरत से उस तरफ देखने लगी। जब कुदरती रोशनी का चमकार, जो सब रोशनियों से आला और अफजल है, पडा तो उस गिरी हुई चीज की नाहीत को पहुँची जिसको देखते ही बसन्तमाला की सब हैरानगी काफूर हो गई और जोर से चिल्ला उठी। अञ्जना! देख उस पार। बरहम परमात्मा की कुदरत निराली है। जिसको मैं शेर समझी थी वो तो एक दरख्त का टहना है।

ये कहा और अञ्जना का हाथ पकड बडी आसानी से दोनो ने उपर आ ईश्वर का शुक्रिया अदा किया। ओहो! अब तो बादल भी बैठना शुरु हो गया गया। उजाला यही तारिकी को बहकाए चला जाता है। और ये दोनों आगेको चली जाती हैं। थोडी सी दूर जाने पर एक जलता हुआ चिराग दिखाई दिया जिसको उन्होने अपना रहबर बना उसी तरफ का रुख कर लिया है और कैसे जल्द जल्द कदम उठाए जा रही है।

बाब (अध्याय) बारहवाँ

आह! ये क्या मामला है

रामनाथ के शमाल (उत्तर) में अभी एक जहाज ने लंगर किया है। जिसमे से बहुत से सिपाही फौजी वर्दी पहने उतर रहे हैं। मगर एक नौजवान जो सब से पहले बडे करोफर से उतरा है हाथ से छडी को घुमाता हुआ जहाज की तरफ देख रहा है। गोया इन सब के इन्तजार मे खडा है।

इसका शाहाना लिबास अमीराना वजह और जाहोजलाल बतला रहे है की ये कोई अफ्सर

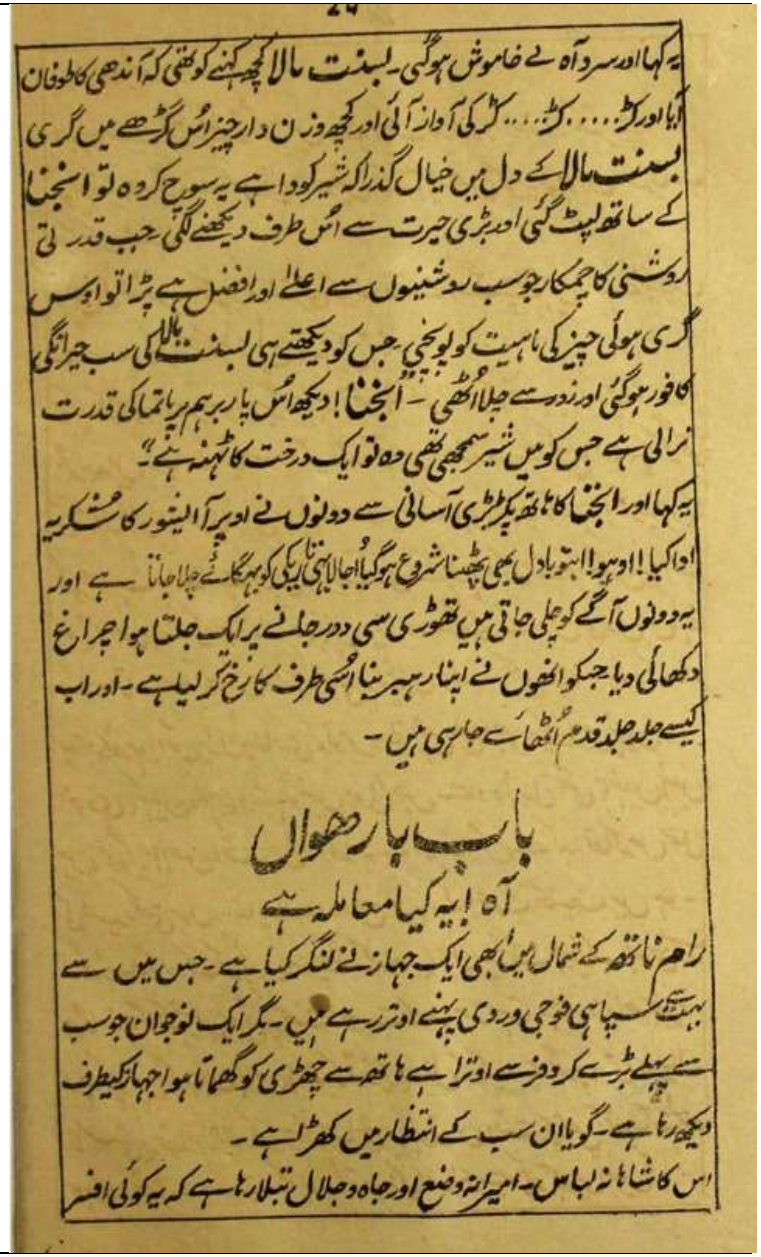

یہ کہا اور سرد آہ لے خاموش ہوگئی۔ بسنت مالا کچھ کہنے کو تھی کہ آندھی کا طوفان
آیا اور کڑ.... کڑ.... کڑ کی آواز آئی اور کچھ وزن دار چیز اُس گڑھے میں گری
بسنت مالا کے دل میں خیال گذرا کہ شیر کودا ہے یہ سوچ کر وہ تو انجنا
کے ساتھ لپٹ گئی اور بڑی حیرت سے اُس طرف دیکھنے لگی جب قدرتی
روشنی کا چمکار جو سب روشنیوں سے اعلےٰ اور افضل ہے پڑا تو اوس
گری ہوئی چیز کی ماہیت کو پہنچی۔ جس کو دیکھتے ہی بسنت مالا کی سب حیرانگی
کافور ہوگئی اور زور سے چلا اُٹھی۔ انجنا! دیکھ اُس پار برہم پرماتما کی قدرت
نرالی ہے جس کو میں شیر سمجھی تھی وہ تو ایک درخت کا ٹہنہ ہے۔"
یہ کہا اور انجنا کا ہاتھ پکڑ بڑی آسانی سے دونوں نے اوپر آ ایشور کا شکریہ
ادا کیا! اوہو! ابتو بادل بھی بیٹھنا شروع ہوگیا اُجالا ہی تاریکی کو بہکائے چلا جاتا ہے اور
یہ دونوں آگے کو چلی جاتی ہیں تھوڑی سی دور جانے پر ایک جلتا ہوا چراغ
دکھائی دیا جسکو انھوں نے اپنا رہبر بنا اُسی طرف کا رخ کر لیا ہے۔ اور اب
کیسے جلد جلد قدم اُٹھائے جا رہی ہیں۔

باب بارھواں

آہ! یہ کیا معاملہ ہے

رام ناتھ کے شمال میں ابھی ایک جہاز نے لنگر کیا ہے۔ جس میں سے
بہت سے سپاہی فوجی وردی پہنے اوتر رہے ہیں۔ مگر ایک نوجوان جو سب
سے پہلے بڑے کروفر سے اوترا ہے ہاتھ سے چھڑی کو گھماتا ہوا جہاز کیطرف
دیکھ رہا ہے۔ گویا ان سب کے انتظار میں کھڑا ہے۔
اس کا شاہانہ لباس۔ امیرانہ وضع اور جاہ و جلال بتلا رہا ہے کہ یہ کوئی افسر

या राजा का लडका है।

जब सब उतर चुके तो उनमे से एक ओहदादार जरा बुकतर पहने तलवार कमर से लगाए ढाल हाथ में लिए आया। जिसको ये नौजवान अफ्सर मुखातिब होकर कर रहा है

वही अफ्सर "देखो! हम मंत्री को साथ ले आगे चलते है। तुमने खबरदारी से सिपाह को ले कर मंजिल मंजिल आना" ये कहकर घोडे पर सवार हो गया। पहले तो उसने घोडे को खूब सरपट डाल दिया मगर बाद में न जाने क्या सोच कर बाग को इस कदर जोर से खैंच लिया है कि घोडे की गर्दन भी दोहरी हुई जाती है और ये रोके ही चला जाता है। अगरचा इसका घोडा बहुत चाहता है कि अपनी तेज रफ्तारी के जोहर दिखाए लेकिन ये अफ्सर उसको इस बात की इजाजत ही नहीं देता। और सर झुकाए दिल ही दिल में कहने लग जाता है "आह! आज रात कैसी परेशान ख्वाब दिखी है। ईश्वर करे ये झूठ हो। उस प्राणप्यारी को तो मैंने अच्छी तरह अभी देखा भी नहीं।" खुदही "कहीं वो ही बात तो नहीं हुई जिससे वो डरती थी? नहीं नहीं! मैं समझ गया। जिस वक्त मैं रवाना होने लगा था उसने कहा था कि मैं हमल की उम्मीद रखती हूँ। शायद अब वो वजह हमल के बाइस तकलीफ में हो।" घोडे को रोककर कुछ देर सोचने के बाद "हाँ बेशक बेशक! यही दुरुस्त होगा। जच्चा को अक्सर इस मौकह पर सख्त मुसीबत का सामना होता है। अंजाम बखैर हो।" फिर कुछ सोचकर "ऐं! इस बात को तो डेढ साल गुजर गया है। अगर प्रियजी का ख्याल रास्ती पर था और ईश्वर करे कि ऐसा ही हुआ हो तो इस वक्त बच्चा भी आठ सात माह का होगा।" थोडे सकूत के बाद "आह! ये क्या मामला है कुछ समझ में नहीं आता"

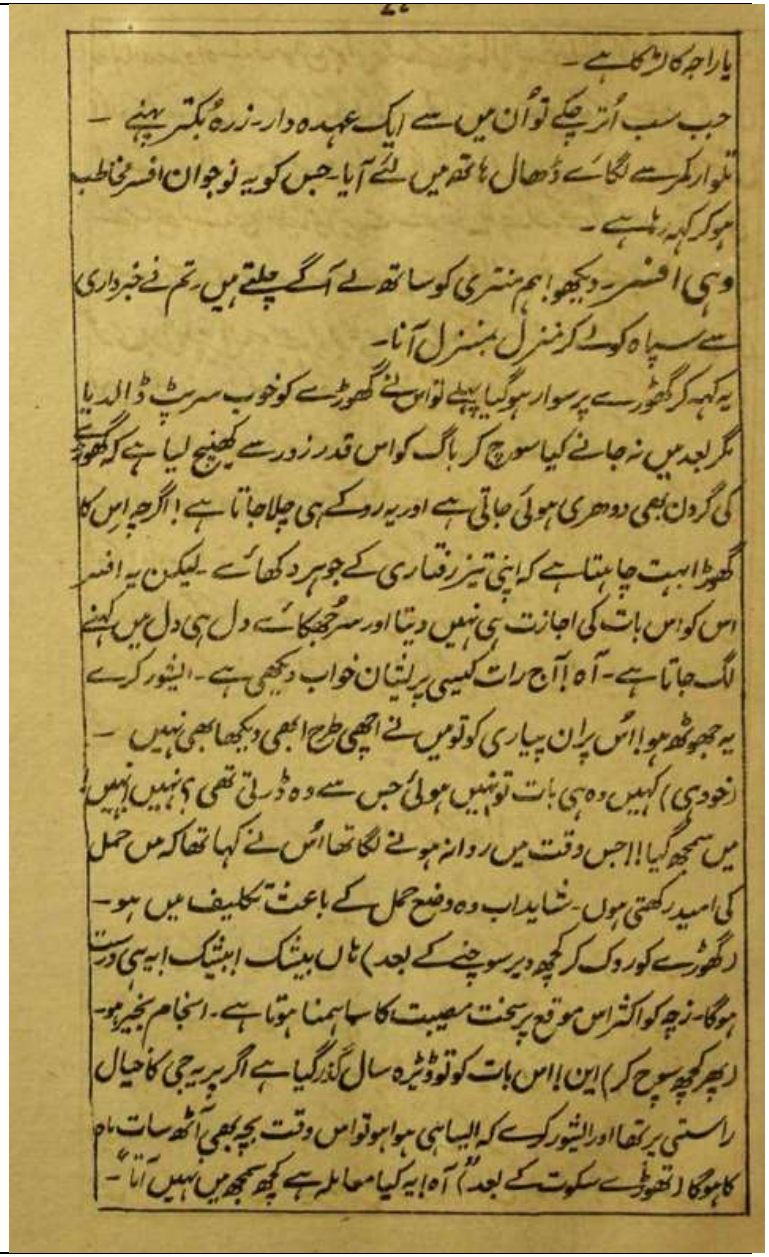

یا راجہ کا لڑکا ہے۔

جب سب اُتر چکے تو اُن میں سے ایک عہدہ دار۔ زرہ بکتر پہنے تلوار کمر سے لگائے ڈھال ہاتھ میں لئے آیا۔ جس کو یہ نوجوان افسر مخاطب ہو کر کہہ رہا ہے۔

وہی افسر۔ دیکھو! ہم منتری کو ساتھ لے آگے چلتے ہیں۔ تم نے خبرداری سے سپاہ کو لے کر منزل بمنزل آنا۔

یہ کہہ کر گھوڑے پر سوار ہو گیا پہلے تو اس نے گھوڑے کو خوب سرپٹ ڈال دیا مگر بعد میں نہ جانے کیا سوچ کر باگ کو اس قدر زور سے کھینچ لیا ہے کہ گھوڑے کی گردن بھی دوہری ہوئی جاتی ہے اور یہ روکے ہی چلا جاتا ہے! اگرچہ اس کا گھوڑا بہت چاہتا ہے کہ اپنی تیز رفتاری کے جوہر دکھائے۔ لیکن یہ افسر اس کو اس بات کی اجازت ہی نہیں دیتا اور سر جھکائے دل ہی دل میں کہنے لگ جاتا ہے۔ آہ! آج رات کیسی پریشان خواب دیکھی ہے۔ ایشور کرے یہ جھوٹھ ہو! اُس پران پیاری کو تو میں نے اچھی طرح ابھی دیکھا بھی نہیں۔ (خود ہی) کہیں وہ ہی بات تو نہیں ہوئی جس سے وہ ڈرتی تھی؟ نہیں نہیں میں سمجھ گیا! جس وقت میں روانہ ہونے لگا تھا اُس نے کہا تھا کہ میں حمل کی امید رکھتی ہوں۔ شاید اب وہ وضع حمل کے باعث تکلیف میں ہو۔ (گھوڑے کو روک کر کچھ دیر سوچنے کے بعد) ہاں بیشک بیشک! یہ ہی درست ہوگا۔ زچہ کو اکثر اس موقع پر سخت مصیبت کا سامنا ہوتا ہے۔ انجام بخیر ہو۔ (پھر کچھ سوچ کر) ایں! اس بات کو تو ڈیڑھ سال گذر گیا ہے اگر پریہ جی کا خیال راستی پر تھا اور ایشور کرے کہ ایسا ہی ہوا ہو تو اس وقت بچہ بھی آٹھ سات ماہ کا ہوگا (تھوڑے سکوت کے بعد) آہ! یہ کیا معاملہ ہے کچھ سمجھ میں نہیں آتا۔

ये कहा और सर्द सांस ले सोचता हुआ आहिस्ता आहिस्ता घोडे को रोके जा रहा है। नाजरीन! आप समझ तो गए ही होंगे कि ये अफ्सर पवन ही है जो लंका से वापिस आया है। इसकी ये हरकत देख मंत्री निहायत हैरान होकर बोला

मंत्री "महाराज! ऐसा क्या पेचीदा मामला ख्याल मुबरिक में आ गया जिसने चलते चलते ऐसा फिक्रमंद कर दिया कि घोडे को थाम कर सोचना पडा। क्या खैर तो है?"

पवन "क्या बताऊँ बहुतेरा सोचता हूँ मगर तकदीर के लिखे की तरह कुछ समझ में नहीं आता कि असलियत इसकी क्या है?"

मंत्री "अगर कोई राज पोशीदा (छुपा) न हो तो बन्दे को भी इस अमर से आगाह किजिए"

पवन "आह! क्या कहूँ! उस सीन को जो कल रात ख्वाब मे देखा है बयान करने से कलेजा मुँह को आता है। अन्ज्जना देवी निहायत बेचैन हो जमीन पर बेहोशो हरकत पडी है और रो रो कर कह रही है। हे प्राणप्यारे! तेरी दासी अब कोई दम की मेहमान है अब तो कृपा कर दर्शन दें ताकि ये अरमान दिल मे न रह जाए कि अन्त मे आपका दर्शन न हुआ। उफ! जिस वक्त से यह ख्वाब देखा है हजारों तरह के ख्याल पैदा हो माहिबे आब की तरह बेचैन कर रहे है और कुछ समझ में नहीं आता कि मामला क्या है"

मंत्री "बेशक बेशक! बिल्कुल दुरुस्त! आपका मुतफिक्र होना बेजा नहीं। वाकई ये हैरत अंगेज ख्वाब है। आप के मुँह से सुनकर मेरे ओसान खता हुए जाते हैं। मगर इन ख्वाबो का ऐतबार ही कुछ नहीं।"

पवन "ये तो मैं भी जानता हूँ कि इन का ऐतबार कुछ नहीं लेकिन दिल को चैन नहीं आता। जब तक बचशम खुद उसको देख नहीं लेता तस्कीन (आराम) नहीं होती।" ये कहा और घोडे को सरपट डाल मंजिले तय करते हुए रत्नपुर पहुँचे।

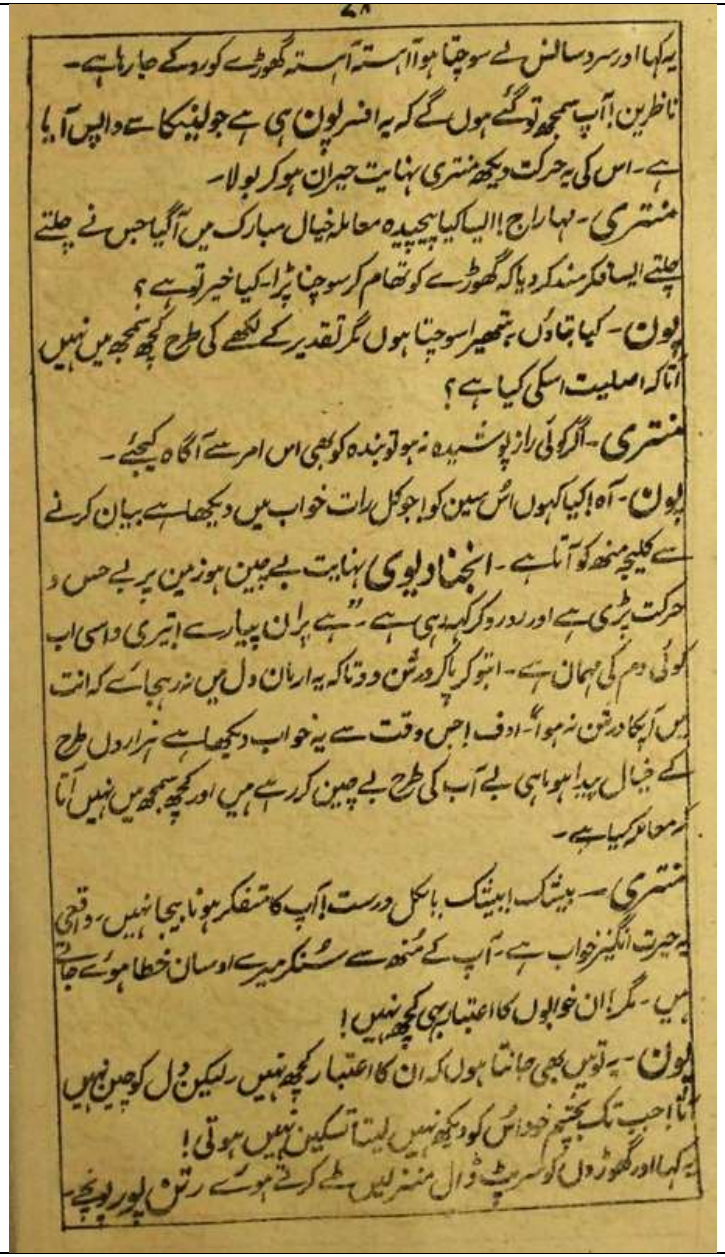

یہ کہا اور سرد سانس لے سوچتا ہوا آہستہ آہستہ گھوڑے کو روکے جا رہا ہے۔
ناظرین! آپ سمجھ تو گئے ہوں گے کہ یہ افسر پون ہی ہے جو لنکا سے واپس آیا
ہے۔ اس کی یہ حرکت دیکھ منتری نہایت حیران ہو کر بولا۔
منتری۔ مہاراج! ایسا کیا پیچیدہ معاملہ خیال مبارک میں آگیا جس نے چلتے
چلتے ایسا فکرمند کر دیا کہ گھوڑے کو تھام کر سوچنا پڑا۔ کیا خیر تو ہے؟
پون۔ کیا بتاؤں بہتیرا سوچتا ہوں مگر تقدیر کے لکھے کی طرح کچھ سمجھ میں نہیں
آتا کہ اصلیت اسکی کیا ہے؟
منتری۔ اگر کوئی راز پوشیدہ نہ ہو تو بندہ کو بھی اس امر سے آگاہ کیجئے۔
پون۔ آہ! کیا کہوں اُس سین کو! جو کل رات خواب میں دیکھا ہے بیان کرنے
سے کلیجہ منھ کو آتا ہے۔ انجنا دیوی نہایت بے چین ہو زمین پر بے حس و
حرکت پڑی ہے اور رو رو کر کہہ رہی ہے۔ "ہے پران پیارے! تیری داسی اب
کوئی دم کی مہمان ہے۔ اب تو کرپا کر درشن دو تاکہ یہ ارمان دل میں نہ رہ جائے کہ انت
میں آپکا درشن نہ ہوا۔" اوف! جس وقت سے یہ خواب دیکھا ہے ہزاروں طرح
کے خیال پیدا ہو ہو کی بے آب کی طرح بے چین کر رہے ہیں اور کچھ سمجھ میں نہیں آتا
کہ معاملہ کیا ہے۔
منتری۔ بیشک! بیشک! بالکل درست! آپ کا متفکر ہونا بیجا نہیں۔ واقعی
یہ حیرت انگیز خواب ہے۔ آپ کے منھ سے سُنکر میرے اوسان خطا ہوئے جاتے
ہیں۔ مگر! ان خوابوں کا اعتبار ہی کچھ نہیں!
پون۔ یہ تو میں بھی جانتا ہوں کہ ان کا اعتبار کچھ نہیں۔ لیکن دل کو چین نہیں
آتا! جب تک بچشم خود اُس کو دیکھ نہیں لیتا تسکین نہیں ہوتی!
یہ کہا اور گھوڑوں کو سرپٹ ڈال منزلیں طے کرتے ہوئے رتن پور پہنچے۔

जब पवन ने अञ्जना के महल को मुकफिल पाया तो दिल मे ख्याल गुजरा कि बच्चा पैदा होने के बाइस वालदा उनका अलहैदा रखना गवारा न कर अपने ही महल में ले गई होंगी। कुछ सोचकर जरूर ऐसा ही हुआ होगा। भला मुद्दतो के बाद उसको ये दिन नसीब हुआ यहाँ क्योंकर रहने देती थी।

ये कहा और महल में आते ही रानी कितुमति (वालदा), जो किसी ख्याल की धुन में सर झुकाए बैठी कुछ सोच रही है, के पाँव पर सर को रखा। पहले तो वो झिझक गई मगर बाद मे पवन को देख बाग बाग हो पेशानी (माथा) पर बोसा (चुमना) दिया और कलेजे से लगा ईश्वर का शुक्रिया अदा किया। और बोली

रानी "बेटा! तेरी मुफारकत (जुदाई) ने, परमेश्वर जानता है, जो हमारा हाल किया। दिन रात तेरा जिक्र, तेरा ही फिक्र दिल को मसलता रहा। तेरी कहानी दर्दे जबान थी। शुक्र है जो आज तुझको देखा। कलेजा ठण्डा हुआ। दिल के फिक्र दूर हुए। कहो तुम इतनी मुद्दत लंका में ही रहे?"

पवन "माताजी! क्या कहूँ जब खर और दूषण को छुडा लंका मे वापिस आए तो भीलों से तनाजा (संघर्ष) शुरु हो गया। उधर से फारिग हुए तो और ही झगडों में पड गया। गर्ज इसी सिरफिरी मे डेढ साल गुजर गया।"

गो पवन अपनी वालदा की बातों का जल्द जल्द जवाब दे रहा है मगर इसका परेशान दिल दिलीदिलो को अंदर ही अंदर जबज कर आँखो से काम ले रहा है। बहुतेरा इधर उधर देखता है मगर अञ्जना और बसन्तमाला को अब तक न देखकर बेकरार हो जाता है। और जल्दी से अपने मायूस दिल को सम्भाल कर वलदा के सवाल का जवाब दे रहा है। थोडी देर के बाद रानी उठकर दूसरे कमरे में गई तो पवन ने उस वक्त को गनीमत जान लौंडी से पूछा

جب پون نے انجنا کے محل کو مقفل پایا تو دلمیں خیال گذرا کہ بچہ پیدا ہونے کے باعث والدہ اُس کا علیحدہ رکھنا گوارا نہ کر اپنے ہی محل میں لے گئی ہوگی۔ کچھ سوچکر ضرور ایسا ہی ہوا ہوگا۔ بھلا مدتوں کے بعد اُس کو یہ دن نصیب ہوا یہاں کیونکر رہنے دیتی تھی۔

یہ کہا اور محل میں آتے ہی رانی کیتومتی (والدہ) کے پاؤں پر جو کسی خیال کی دھن میں سر جھکائے بیٹھی کچھ سوچ رہی ہے سر کو رکھا۔ پہلے تو وہ جھجک گئی مگر بعد میں پون کو دیکھ باغ باغ ہو پیشانی پر بوسہ دیا۔ اور کلیجہ سے لگا ایشور کا شکریہ ادا کیا اور بولی۔

رانی۔ بیٹا! تیری مفارقت نے پرمیشر جانتا ہے جو ہمارا حال کیا۔ دن رات تیرا ذکر تیرا ہی فکر دل کو مسلتا رہا۔ تیری کہانی دردِ زبان تھی۔ شکر ہے جو آج تجکو دیکھا کلیجہ ٹھنڈا ہوا۔ دل کے فکر دور ہوئے۔ کہو تم اتنی مدت لینکا میں ہی رہے؟

پون۔ ماتاجی! کیا کہوں جب کھر اور دوکھن کو چھوڑا لینکا میں واپس آئے تو بھیلوں سے تنازع شروع ہوگیا۔ اُدھر سے فارغ ہوئے تو اور ہی جھگڑوں میں پڑ گیا۔ غرض اسی ہیر پھیر میں ڈیڑھ سال گذر گیا۔

گو پون اپنی والدہ کی باتوں کا جلد جلد جواب دے رہا ہے مگر اُس کا پریشان دل ولولوں کو اندر ہی اندر ضبط کر آنکھوں سے کام لے رہا ہے۔ بہتیرا اِدھر اُدھر دیکھتا ہے مگر انجنا اور بسنت مالا کو اب تک نہ دیکھ کر بیقرار ہو جاتا ہے اور جلدی سے اپنے مایوس دل کو سنبھال کر والدہ کے سوال کا جواب دے رہا ہے۔ تھوڑی دیر کے بعد رانی اُٹھ کر دوسرے کمرے میں گئی تو پون نے اس وقت کو غنیمت جان لونڈی سے پوچھا۔

पवन “प्रियाजी और बसन्तमाला कहा हैं! जरा उनको भी खबर कर दो।”

लौंडी सर्द आह भर सर झुका खामोश

पवन हैरानगी से उसकी तरफ देखकर “क्यों खैर तो है?”

लौंडी बडबडाती हुई आवाज से “महाराज! उनको तो एक साल हुआ है कि यहाँ से...”

आह! इस बात को सुनकर पवन अचम्भा सा रह गया। दिल धडका कलेजा फडका। बदन मे सनसनाहट सी पैदा हो गई। आँखे लौंडी की तरफ देखते देखते पथरा गई। खून जहाँ हरकत कर रहा था बर्फ की तरह जम गया। लौंडी उसकी इस कदर परेशान सूरत देख घबरा गई और भागकर रानी को इस अमर की इत्तला की।

लौंडी से पवन का हाल सुनकर रानी के दिल मे ख्याल गुजरा शायद पवन उसकी बात समझा नहीं। असल मतलब की तह को पहुँचा नहीं। इसलिए मुतफिक्र हो गया है। ये सोच आनकर कहने लगी

रानी “बेटा! क्यों मगमून सूरत बनाए सर झुकाए बैठा है। मैंने तो दीदाओ दानिस्ता (जान बूझ कर) पहले इसी वास्ते जिक्र नहीं किया था कि सुनकर तुझको मलाल न हो। दिल में कुछ ख्याल न हो। उस बेहया ने तो ननगो नामूस (आचार संहिता) का कुछ भी ख्याल न किया। शरम हया को बालाए ताक रख गैरों से.. जब पूछा तेरी अंगूठी दिखा मुझको भरमाने लगी। कई तरह की बातें बना परचाने लगी। लेकिन मैंने उसी वक्त पातकी रथ मे बैठा शहर बदर किया। गैरों के तानों से अपनी आबरू को बचा लिया। बेटा इस बात का फिक्र न कर। फिर भी अच्छा हुआ जो वक्त पर खबर हो गई। अब यहाँ से महेन्द्रपुर गई है।”

नाजरीन! पवन जो लौंडी की कलाम जिसको मुसीबत का पयाम कहा जाए तो बेजा न होगा

پون - پریہ جی اور بسنت مالا کہاں ہیں! ذرا اُن کو بھی خبر کر دو؟

لونڈی - (سرد آہ بھر سر جھکا خاموش)

پون - (حیرانگی سے اُس کی طرف دیکھ کر) کیوں! خیر تو ہے؟

لونڈی - (بھرّائی ہوئی آواز سے) مہاراج! اُن کو تو ایک سال ہوا ہے کہ یہاں سے.....

آہ! اس بات کو سُنکر پون اچمبا سا رہ گیا۔ دل دھڑکا۔ کلیجہ پھڑکا۔ بدن میں سنسناہٹ سی پیدا ہو گئی۔ آنکھیں لونڈی کی طرف دیکھتے دیکھتے پتھرا گئیں خون جہاں حرکت کر رہا تھا برف کی طرح جم گیا۔ لونڈی اُس کی اس قدر پریشان صورت دیکھ گھبرا گئی۔ اور بھاگ کر رانی کو اس امر کی اطلاع کی۔

لونڈی سے پون کا حال سُنکر رانی کے دل میں خیال گذرا شائد پون اُس کی بات سمجھا نہیں۔ اصل مطلب کی تہ کو پہونچا نہیں۔ اس لئے متفکر ہو گیا ہے۔ یہ سوچ آنکر کہنے لگی۔

رانی - بیٹا! کیوں مغموم صورت بنائے سر جھکائے بیٹھا ہے۔ میں نے تو دیدہ دانستہ پہلے اسی واسطے ذکر نہیں کیا تھا کہ سُنکر تجکو ملال نہ ہو۔ دل میں کچھ خیال نہ ہو۔ اُس بے حیا نے تو ننگ و ناموس کا کچھ بھی خیال نہ کیا شرم حیا کو بالائے طاق رکھ غیروں سے.....

جب پوچھا تو تیری انگوٹھی دکھا مجکو بھرمانے لگی۔ گئی طرح کی باتیں بنا پرچانے لگی۔ لیکن میں نے اُسی وقت پاتکی رتھ میں بیٹھا شہر بدر کیا۔ غیروں کے طعنوں سے اپنی آبرو کو بچا لیا۔ بیٹا! اس بات کا فکر کر پھر بھی اچھا ہوا جو وقت پر خبر ہو گئی۔ اب یہاں سے مہندر پور گئی ہے۔

ناظرین! پون جو لونڈی کی کلام جس کو مصیبت کا پیام کہا جائے تو بیجا نہ ہوگا

सुनकर जो इस बाख्ता हो ही रहा था अब रानी की जबान से ये बाते निकल निकल कर इसके मायूस दिल पर तेज नश्तर का काम कर रही हैं। रंजोगम के लश्कर ने इस बेचारे के उजु उजु पर कब्जा करना शुरु कर दिया है। तबीयत का उलझन, दिल की बेकली (बेचैनी) या हवासों का इतिशार (संघर्ष) दिमागी कुवत को जायल कर रहा है। कुवते सामदाने ऐसी बेहुरमती की बातें सुनकर सर के दुपट्टे को अंदर खीच बहरा बना दिया है। जिगर का जौफ तरक्की पर है। दिल नीचे बैठने को भागा जाता है। तमन्नाओ का लुटा हुआ काफिला सामने दिखाई देने लगा। उधर बेकरार दिल ने अञ्जना की बदहवास सूरत को जो ख्वाब में देखी थी जल्दी से पेश कर दिया। जिसको देखते ही सब बदन काँप उठा और आहों का गुब्बार रेल के स्टीम की तरह कलेजे से निकल दिमाग को चढा तो बेइख्तियार होकर वहाँ से उठ खडा हुआ। और निहायत पुरदर्द लहजे में ये कहा

आह! झूठा दिया कंलक उस नहीं सांच रती एक दुख का कारण तो भी ईश्वर राखे टेक
तीन दिवस तक मैं रहा कहती रही कर जोड मात पिता से तुम मिलो शंका करे न और
समा जो मिला न कुछ मुझे गया यदतन काल निश्चय कारण आपके कर भूषण[१] दिया निकाल
हुआ निष्फल मेरा सब जतन धूल मिलाया नाम दुख दिया उसे इत घना आप हुई बदनाम
हाय डरती थी जिस बात से वही बना संजोग राय महेन्द्र की सुता तुझे मिला दुख अयोग

"उफ! क्या क्या आरजुएँ थी क्या क्या तमन्नाएँ थी! मगर आज सब खाक मे मिल गई।" बाहर की तरफ देख कर "आह! वो प्यारी सूरत अब कहाँ देखनी नसीब होगी? उस बेगुनाह को जो अजियत (कष्ट) पहुँची सब मेरे ही बाइस।" वालदा की तरफ देखकर "आह! माता तू कैसी संगदिल है। तुझको कुछ भी रहम न आया?" ये कहा और सर्द आह भर मंत्री को साथ ले वहाँ से अञ्जना की तलाश में निकल पडा

१ अंगूठी

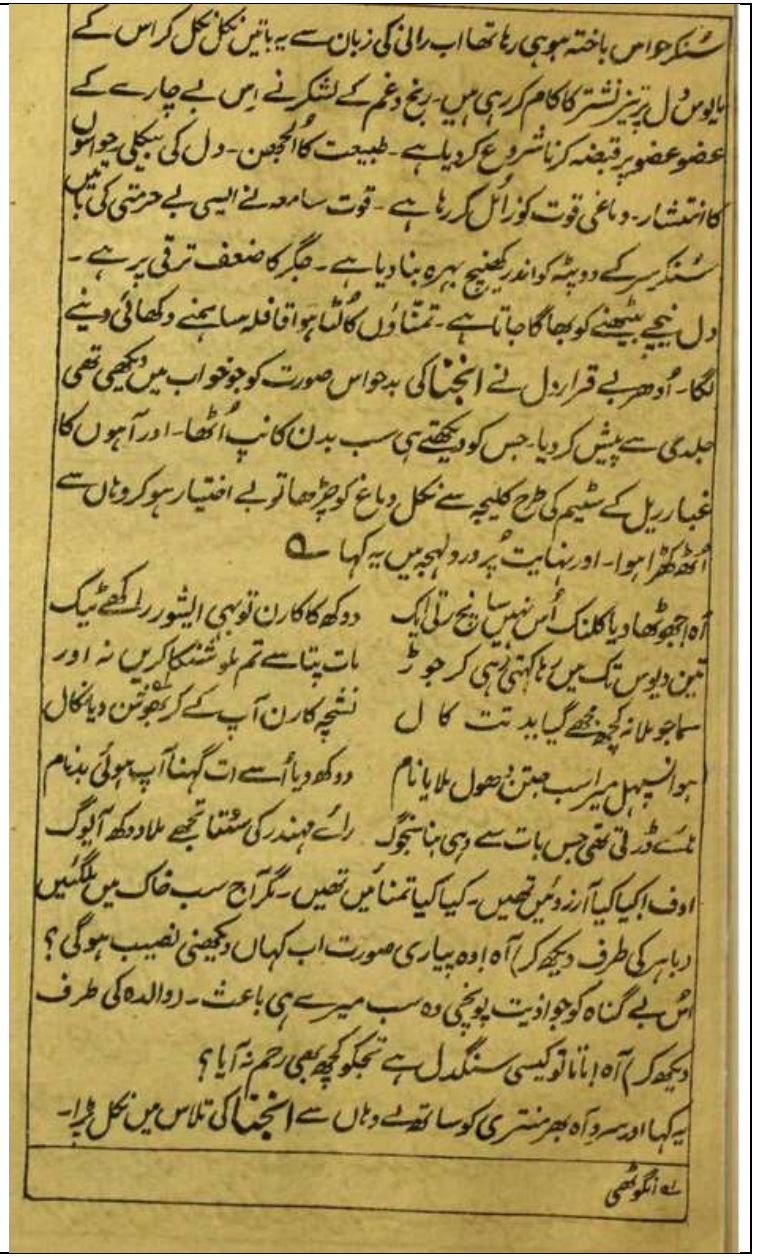
سُنکر حواس باختہ ہو ہی رہا تھا اب رانی کی زبان سے یہ باتیں نکل نکل کر اس کے
مایوس دل پر تیز نشتر کا کام کر رہی ہیں۔ رنج و غم کے لشکر نے اس بے چارے کے
عضو عضو پر قبضہ کرنا شروع کر دیا ہے۔ طبیعت کا اُلجھن۔ دل کی بیکلی حواسوں
کا انتشار۔ دماغی قوت کو زائل کر رہا ہے۔ قوت سامعہ نے ایسی بے حرمتی کی باتیں
سُنکر سر کے دوپٹہ کو اندر کھینچ بہرہ بنا دیا ہے۔ جگر کا ضعف ترقی پر ہے۔
دل نیچے بیٹھنے کو بھاگا جاتا ہے۔ تمناؤں کا لُٹا ہوا قافلہ سامنے دکھائی دینے
لگا۔ اُدھر بے قرار دل نے انجنا کی بدحواس صورت کو جو خواب میں دیکھی تھی
جلدی سے پیش کر دیا۔ جس کو دیکھتے ہی سب بدن کانپ اُٹھا۔ اور آہوں کا
غبار ریل کے سٹیم کی طرح کلیجہ سے نکل دماغ کو چڑھا تو بے اختیار ہو کر وہاں سے
اُٹھ کھڑا ہوا۔ اور نہایت پُر درد لہجہ میں یہ کہا ؎

آہ جھوٹھا دیا کلنک اُس نہیں سانچ رتی ایک دوکھ کا کارن تو بھی ایشور راکھے ٹیک
تین دیوس تک میں رہا کہتی رہی کر جوڑ مات پتا سے تم ملو شنکا کریں نہ اور
سما جو ملا نہ کچھ مجھے گیا بدتت کال نشچے کارن آپ کے کر بھوشن دیا نکال
ہوا نشپھل میرا سب جتن دھول ملایا نام دوکھ دیا اُسے اتنا گھنا آپ ہوئی بدنام
ہائے ڈرتی تھی جس بات سے وہی بنا سنجوگ رائے مہندر کی سُتا تجھے ملا دوکھ آیوگ

اوف! کیا کیا آرزوئیں تھیں۔ کیا کیا تمنائیں تھیں۔ مگر آج سب خاک میں ملگئیں
(باہر کی طرف دیکھ کر) آہ! وہ پیاری صورت اب کہاں دیکھنی نصیب ہوگی؟
اُس بے گناہ کو جو اذیت پہونچی وہ سب میرے ہی باعث۔ (والدہ کی طرف
دیکھ کر) آہ! ماتا تو کیسی سنگدل ہے تجکو کچھ بھی رحم نہ آیا؟
یہ کہا اور سرد آہ بھر منتری کو ساتھ لے وہاں سے انجنا کی تلاش میں نکل پڑا۔

لہ انگوٹھی

८२

बाब (अध्याय) तेरहवाँ

दिलेरी मे कम न होगा

सुबह का वक्त है। आफ्ताब तुलु (उदय) हो रहा है। उसकी सुर्खी माइल जर्द किरणें पोशोमुखाबिन के बुलन्द दरख्तों पर पड उनके जोबन की बहार दिखला रही है। और परिंदे उड उड कर दरख्तों की शाखों पर बैठ खुशी से चचहाते हुए अपनी नोकदार मनकारों से परों को साफ कर रहे हैं। पंजे फैला फैला कर अंगडाईया ले रहे हैं। और बाजे उड ऊड कर अपनी खुराक की तलाश में जा रहे हैं। मगर मनहूस गिद्ध एक पीपल की बुलन्द शाख पर बैठी हुई गर्दन फेर फेर कर इधर उधर अपने शिकार की जुस्तजू कर रही है। और अञ्जना देवी एक झोंपडी के बाहर, जो एक पहाड की सतह पर वाकह है और जिसके चारों तरफ जंगल दिखाई देता है, बैठी हुई अपने दाए हाथ को उलटा पुलटा कर देख कुछ सोचती हुई इधर उधर बडी हैरानगी से देख रही है। इसके चेहरे पर हद दर्जे की बढी हुई मायूसी बतला रही है कि किसी चीज के गुम होने से ये इस कदर परेशान हो रही है। और यही सही है। सुनिए बसन्तमाला से कह रही है।

अञ्जना बसन्त कहीं अंगूठी तो नहीं देखी?

बसन्तमाला ताज्जुब के लहजे में ऐं कौनसी?

अञ्जना वहीं जो स्वामीजी दे गए थे और कौन?

बसन्तमाला वो तो तुम्हारे हाथ में थी क्यों नहीं मिलती!

पशोमखा वन ये दरयाई कृष्णा के शमाल (उत्तर) मे सामाइन के जमाने में वाकह था जंगली जानवर यहाँ कशरते पाए जाते थे

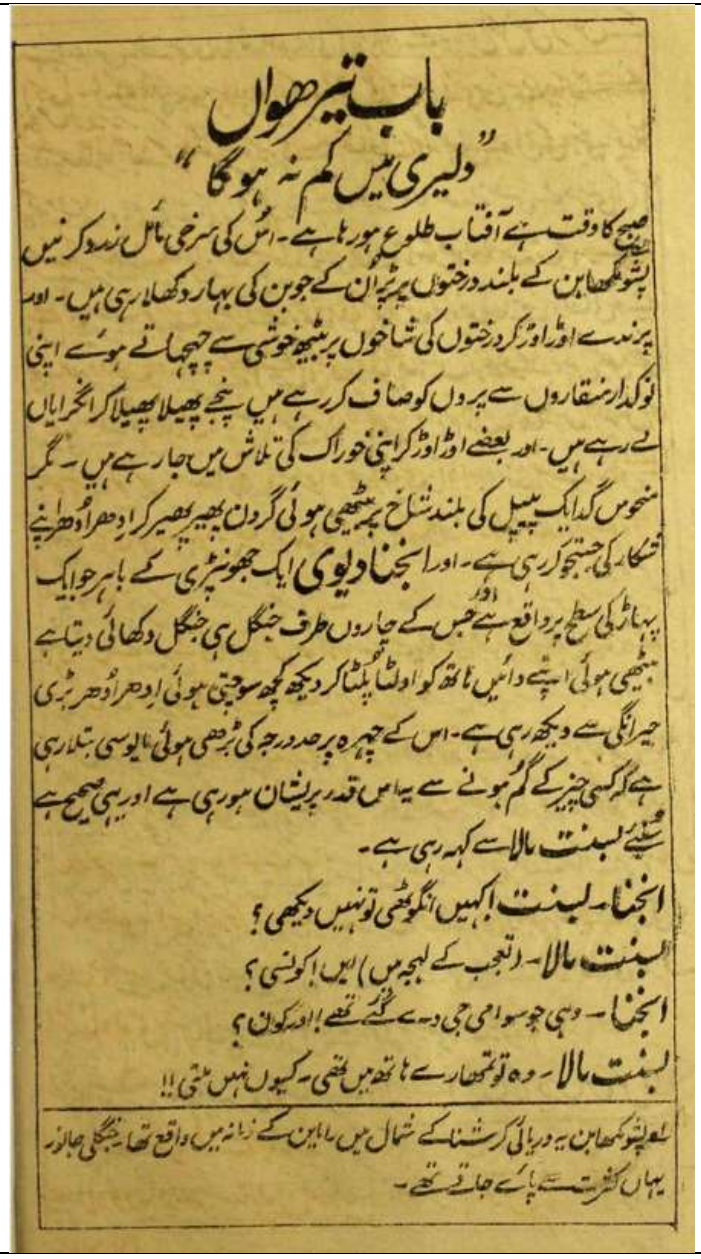

باب تیرھواں

"دلیری میں کم نہ ہوگا"

صبح کا وقت ہے آفتاب طلوع ہو رہا ہے۔ اُس کی سرخی مائل زرد کرنیں پشومکھابن کے بلند درختوں پر پڑ کر اُن کے جوبن کی بہار دکھلا رہی ہیں۔ اور پرندے اوڑ اوڑ کر درختوں کی شاخوں پر بیٹھ خوشی سے چہچہاتے ہوئے اپنی نوکدار منقاروں سے پروں کو صاف کر رہے ہیں پنجے پھیلا پھیلا کر انگڑایاں لے رہے ہیں۔ اور بعضے اوڑ اوڑ کر اپنی خوراک کی تلاش میں جا رہے ہیں۔ مگر منحوس گدا ایک پیپل کی بلند شاخ پر بیٹھی ہوئی گردن پھیر پھیر کر اِدھر اُدھر اپنے شکار کی جستجو کر رہی ہے۔ اور انجنا دیوی ایک جھونپڑی کے باہر جو ایک پہاڑ کی سطح پر واقع ہے اور جس کے چاروں طرف جنگل ہی جنگل دکھائی دیتا ہے بیٹھی ہوئی اپنے دائیں ہاتھ کو اولٹا پلٹا کر دیکھ کچھ سوچتی ہوئی اِدھر اُدھر بڑی حیرانگی سے دیکھ رہی ہے۔ اس کے چہرہ پر حد درجہ کی بڑھی ہوئی مایوسی بتلا رہی ہے کہ کسی چیز کے گم ہونے سے یہ اس قدر پریشان ہو رہی ہے اور یہی صحیح ہے سنیئے بسنت مالا سے کہہ رہی ہے۔

انجنا۔ بسنت! کہیں انگوٹھی تو نہیں دیکھی؟

بسنت مالا۔ (تعجب کے لہجہ میں) ایں! کونسی؟

انجنا۔ وہی جو سوامی جی دے گئے تھے! اور کون؟

بسنت مالا۔ وہ تو تمھارے ہاتھ میں تھی۔ کیوں نہیں ملتی!!

لہ پشومکھابن یہ دریائی کرشنا کے شمال میں مالابن کے زمانہ میں واقع تھا۔ جنگلی جانور یہاں کثرت سے پائے جاتے تھے۔

अञ्जना "हाय! गजब हुआ! वहीं एक जिन्दगी का सहारा थी। उसी को देख कर तसकीन होती थी। उसका गुम होना मेरी तमाम तमन्नाओ का गुम होना है। हाय! अब क्या करूँ?"

ये सुनकर बसन्तमाला बडी हैरानगी में पड गई। देर तक खडी सोचती रही। बाद मे कहने लगी "रात को कहीं इधर उधर गिर गई होगी। आओ तलाश तो करें।"

ये कहा और दोनों दूर तक सर झुकाए देखती हुई चली गईं। झुके झुके कमरे थक गईं बल्कि लकडी की तरह अकड गईं। मगर अंगूठी का कुछ पता न मिला तो मायूस हो वापिस उस झोपडी को आईं। तब अञ्जना सर्द आह भर कहने लगी "आह! वाहरी किस्मत वाहरे मुकद्दर! ये एक ही एक सहारा था वो भी जाता रहा! ये कहा और जार जार बुलन्द आवाज से रोने लग पडी।

योंही उसके रोने की आवाज उस साधू ने सुनी, जो इस झोंपडी मे ईश्वर के ध्यान में महव बैठा, जल्दी से बाहर निकल आया। आहा! इस जटाजूट दराज कद सफेद बराक रेश साधू को देखते ही अञ्जना देवी भौचक्की सी रह गई और बडी हैरानगी से एक दफा उसकी तरफ नजर उठा नीचे सर झुका सोच मे पड गई। तब उस साधू ने कहा

साधू बेटी! कुछ फिक्र न करो। सिर्फ इतना बतला दो कि तुम कौन हो और इस सुनसान वीरान जंगल में क्योंकर आना हुआ?

अञ्जना देवी उसकी बदराना शफकत बजुर्गाना मोहब्बत की बातें सुनकर हाथ जोडकर बोली

राजा महेन्द्रनगर का राय महेन्द्र नाम ता राजा की मैं सुता,[१] अञ्जना मेरा नाम
प्रह्लाद विद्याधर ससुर मम पवन नाम भरतार नाम नगर है रत्नपुर सास ने दिया निकार

१ यानि लडकी

انجنا۔ ہائے غضب ہوا وہی ایک زندگی کا سہارا تھی۔ اُسی کو دیکھ کر قدرے تسکین ہوتی تھی اُس کا گم ہونا میری تمام تمناؤں کا گم ہونا ہے۔ ہائے اب کیا کروں؟

یہ سُنکر بسنت مالا بڑی حیرانگی میں پڑ گئی دیر تک کھڑی سوچتی رہی بعد میں کہنے لگی "رات کو کہیں اِدھر اُدھر گر گئی ہوگی آؤ تلاش تو کریں"۔

یہ کہا اور دونوں دور تک سر جھکائے دیکھتی ہوئی چلی گئیں۔ جھکے جھکے کمریں تھک گئیں بلکہ لکڑی کی طرح اکڑ گئیں مگر انگوٹھی کا کچھ پتا نہ ملا تو مایوس ہو واپس اُس جھونپڑی کو آئیں۔ تب انجنا سرد آہ بھر کہنے لگی۔ آہ! واہ ری قسمت! واہ رے مقدر! یہ ہی ایک سہارا تھا وہ بھی جاتا رہا! یہ کہا اور زار زار بلند آواز سے رونے لگ پڑی۔

یونہی اُس کے رونے کی آواز اُس سادھو نے سُنی جو اس جھونپڑی میں ایشور کے دھیان میں محو بیٹھا تھا جلدی سے باہر نکل آیا۔

آہا اس جٹا جوٹ دراز قد سفید براق ریش سادھو کو دیکھتے ہی انجنا دیوی بھچک سی رہ گئی اور بڑی حیرانگی سے ایک دفعہ اُس کی طرف نظر اُٹھا نیچے سر جھکا سوچ میں پڑ گئی۔ تب اُس سادھو نے کہا۔

سادھو۔ بیٹی! کچھ فکر نہ کرو۔ صرف اتنا بتلا دو کہ تم کون ہو۔ اور اس سنسان ویران جنگل میں کیونکر آنا ہوا؟

انجنا دیوی اُس کی پدرانہ شفقت بزرگانہ محبت کی باتیں سُنکر ہاتھ جوڑ کر بولی ؎

راجہ مہندر نگر کا رائے مہندر نام تا راجہ کی میں سُتا[۱] انجنا میرا نام
پہلاد ودیا دھر سسر مم پون نام بھرتار نام نگر ہے رتن پور ساس نے دیا نکار

[۱] یعنی لڑکی

कलंक लगायो इत बुरा कर न सकूँ बखान विपट काल फिरूँ काटती आई तो स्थान
पिता कहूँ सच आपसे हूँ निर्दोष नार निश्चय सब हो जाएगा जब घर आवन भरतार
अञ्जना की मुसीबत को सुनकर साधू के दिल मे रहम आया। गर्दिशे फलक को लानत मलानत कर हमदर्दी का कलमा पढ कर कहने लगा।

साधू "बेटी कुछ गम न करो। जब तक दिल चाहे यहाँ बेफिक्र रहो। मगर हाँ इतना जरूर होगा कि बजबर जंगली फलो के यहाँ और कुछ मयसर न होगा।"

नाजरीन! अञ्जना ने इस बात को गनीमत जान साधू का शुक्रिया अदा किया। और वहाँ रहकर अपने अयामे गर्दिश के दिन गुजारने लगी।

जब अञ्जना देवी को इस जगह रहते कुछ अरसा गुजर गया तो वजह हमल का दिन भी आ गया और इस बेसर्दोसामानी मे हमारे बहादुर जरनैल ने जन्म लिया

चैत्र बदी अष्टमी पुष्य नक्षत्र जान दिन मंगल भरभात को जन्म लिया हनुमान
कार्य किए सुहावने मस्तक चन्द्र समान बडा पराक्रमी[१] भासता[२] नयन मृग सम जान
देख अञ्जना बारमबार मुख प्रभा का करती ध्यान
कठिन समय सहा तपाकर इसकी भगवान
कोई नहीं बिन आपके हो जिसका मुझको मान दासी हूँ तेरे द्वार की दीन बन्धु भगवान

हम अपने नाजरीन की दिलचस्पी के लिए जन्मकुण्डली[३] जो इस साधू ने तैयार की

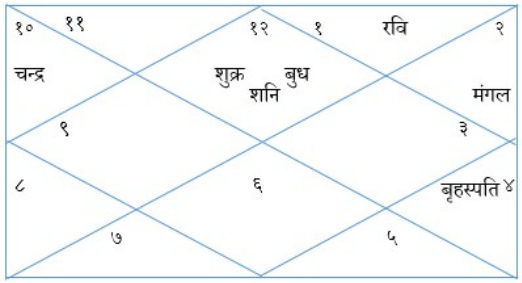

जैल मे दर्ज करते हैं।

१ सितारे वाला २ जाहिर होता ३ देखो रामायण सजरोफ गुजराती सफा ७३

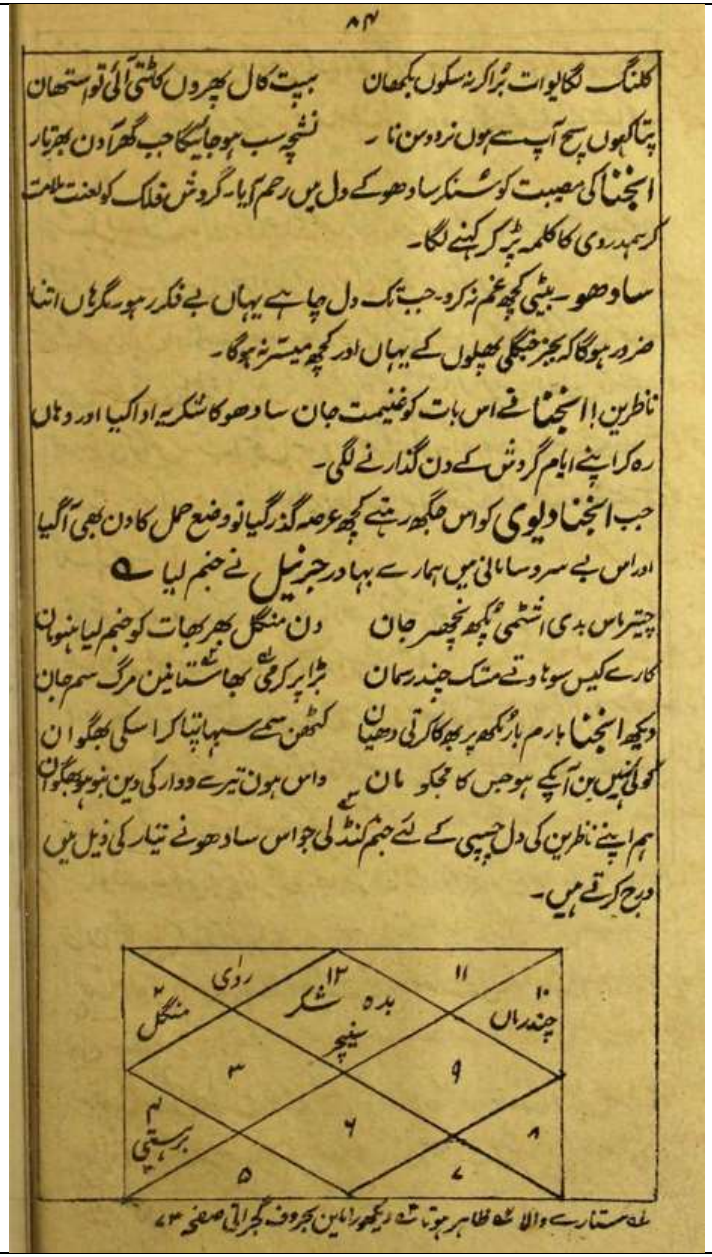

इस जन्म कुण्डली को कागज पर खींच कर साधू देर से देख रहा है। कभी तो इल्म ज्योतिष की किताब पर नजर डाल लेता है और कभी दिल ही दिल मे सोचने लग जाता है। जब कुछ देर इसी तरह गुजर गई तो बसन्तमाला ज्यादा सब्र की ताब न लाकर बोली। बसन्तमाला "महाराज! मुझको भी कुछ बताए"

साधू "बेटी!" खुश होकर "अगरचा अञ्जना की मुसीबत को देख मुझको भी मलाल हो रहा है। कई तरह का ख्याल हो रहा है। लेकिन इस होनहार लडके का जायचा देख उससे बढकर खुशी का सरूर आ रहा है। ये लडका दिलेरी में कम न होगा शुजात मे शेर का मुकाबला कर बहादुरी की दाद लेगा। इल्म मे यकताए जमाज होगा धर्म का पाबन्द रहेगा। खवेश दाकरबा सबकी नजरो मे अजीज। दगाबाजों और अधर्मियो[१] के वास्ते मौत का पयाम होगा। गर्ज जो वस्फ इसमें पाता हूँ एक से एक आली देखता हूँ। ईश्वर इसकी उम्र दराज करे।"

बसन्तमाला साधू की बाते सुनकर जल्दी से अञ्जना देवी के पास गई और सब हाल उसके गोशगुजार किया। जिसको सुनकर उसका वो चेहरा जो मुद्दतों की परेशानियों और रात दिन की मुसीबतों से हँसना भी भूल गया था इस वक्त कुछ खिला हुआ नजर आ रहा है। और लडके की तरफ देख कर दिल में कह रही है।

वो दिन कब पर बह आएगा जब घर आवन भरतार
नामकरण करूँ कर खुशी गाकर मंगलाचार
करे सभी वो हित मुझे जो करते धुतकार लोगन माहि उजली कब कर सो करतार

और कई तरह के ख्याल लडके को देख देख कर पैदा हो चुटकियाँ ले रहे है जब बेसरोसामानी के सामान देख आँखो से आंसू आ निकले तो बसन्तमाला ने कहा बसन्तमाला "सखी! मैं बडी ताज्जुब मे हूँ कि तू इस कदर दाना होकर भी नहीं सोचती कि तेरा इस वक्त गमगीन होना क्या क्या नतीजा पैदा करेगा। क्या इसका असर दूध पर पड

१ जो धर्म के बरखिलाफ जाने वाला

اس جنم کنڈلی کو کاغذ پر کھینچکر سادھو دیر سے دیکھ رہا ہے۔ کبھی تو علم جوتش کی
کتاب پر نظر ڈال لیتا ہے اور کبھی دل ہی دل میں سوچنے لگ جاتا ہے! جب کچھ
دیر اسی طرح گذر گئی تو بسنت مالا زیادہ صبر کی تاب نہ لاکر بولی۔

بسنت مالا۔ مہاراج! مجکو بھی کچھ بتائیے؟

سادھو۔ بٹیی! (خوش ہوکر) اگرچہ انجنا کی مصیبت کو دیکھ مجکو بھی ملال ہو رہا
ہے کئی طرح کا خیال ہو رہا ہے لیکن اس ہونہار لڑکے کا زائچہ دیکھ اُس سے بڑھکر
خوشی کا سرور آرہا ہے۔ یہ لڑکا دلیری میں کم نہ ہوگا۔ شجاعت میں شیر کا مقابلہ
کر بہادری کی داد لیگا علم میں یکتائے زمانہ ہو دھرم کا پابند رہیگا۔ خویش و اقربا
سب کی نظروں میں عزیز۔ دغا بازوں اور آدھرمیوں[1] کے واسطے موت کا پیام
ہوگا۔ غرض جو وصف اس میں پاتا ہوں ایک سے ایک اعلیٰ دیکھتا ہوں۔ ایشور
اسکی عمر دراز کرے

بسنت مالا سادھو کی باتیں سُنکر جلدی سے انجنا دیوی کے پاس گئی
اور سب حال اُس کے گوش گذار کیا۔ جس کو سُنکر اُس کا وہ چہرہ جو مدتوں
کی پریشانیوں اور رات دن کی مصیبتوں سے ہنسنا بھی بھول گیا تھا اس وقت
کچھ کھلا ہوا نظر آرہا ہے۔ اور لڑکے کی طرف دیکھ کر دل میں کہہ رہی ہے ؎

وہ دن کب پر بہہ آئیگا جب گھر آون بھرتار نام کرن کروں کر خوشی گا کر منگل چار
کریں سبھی وہ ہت مجھے جو کرتے دھتکار لوگن ماہیں اوجلی کب کر سو کرتار

اور کئی طرح کے خیال لڑکے کو دیکھ دیکھ کر پیدا ہو چٹکیاں لے رہے ہیں۔ جب
بے سروسامانی کے سامان دیکھ آنکھوں سے آنسو نکلے تو بسنت مالا نے کہا

بسنت مالا۔ سکھی! میں بڑے تعجب میں ہوں کہ تو اس قدر دانا ہو کر بھی نہیں
سوچتی کہ تیرا اس وقت غمگین ہونا کیا نتیجہ پیدا کریگا۔ کیا! اس کا اثر دودھ پر پڑ

[1] جو دھرم کے برخلاف جانے والا

बच्चे के लिए मुजिर (बुरा) न होगा? सच है हाथी के दांत दिखलाने के और खाने के और। प्यारी! क्या तू अपने कौल को भूल गई जो अक्सर कहा करती थी कि जो दुख सुख शरीर का भोग जान ईश्वर पर भरोसा रखता है वही दुनिया में खुश रहता है"।

अञ्जना "बसन्त! मैं सब कुछ जानती हूँ। हर चंद कोशिश कर बेकार दिल को संभालती हूँ मगर क्या करूँ ये मेरे काबू में नहीं रहता।"

आह! जिस वक्त ये लडका जमीन पर लेटे लेटे खुद ब खुद कभी हाथ पाँव को फैला और कभी सिमट कर नाक मुँह चढा रोने लग जाता है तो अञ्जना उसको बेकसी की हालत मे कुदरती फर्श पर लेटा देख बेचैन हो जल्दी से गोद में ले लेती है।

जब ग्यारह माह इसी तरह गुजर गए तो एक रोज दोपहर के वक्त जबकि बारिश हो रही है और अञ्जना देवी लडके को लिए झोंपडी मे बैठी दिल बहला रही है। मगर लडका एक ही जगह बैठे बैठे कुछ तंग आ गया है जोर जोर से चिल्ला चिल्ला कर रो रहा है। अगरचा अञ्जना खडी हो और एक दो कदम इधर उधर टहल कर भी उसको बहलाती है। मगर ये बच्चा रो रहा है।

बारिश थमी तो लडके को लेकर झोंपडी के बाहर आ खडी हुई और उन जंगली दरख्तों और खुदरा पौधों को, जो झोपडी के इर्द गिर्द दूर तक फैले हुए दिखाई देते हैं, उंगली के इशारों से लडके को दिखा उसका दिल बहला रही है।

आह! इन खुदरा पौधों के रंग बिरंगी फूलों और सब्जाजार के खुशनुमा सीन को देख अञ्जना को अपने बाग की बहार जो लडकपने के जमाने मे सैर के वक्त देखा करती थी याद आ गई। आँखो से आंसू बह निकले और दिल मे कई तरह के ख्याल पैदा हो कमजोर करने लगे। तब उसने बडे हौंसले से दिलिदिलो को मजबूत कर इधर से निगाह को रोक आसमान का नीला नीला रंग और उसमे जा बजा उन सफेद बादलो के टुकडों को देखना

بچہ کے لئے مُضر نہ ہوگا؟ آہ! سچ ہے ہاتھی کے دانت دکھانے کے اور کھانے کے اور۔ پیاری! کیا تو اپنے قول کو بھول گئی جو اکثر کہا کرتی تھی کہ "جو دکھ سُکھ سریر کا بھوگ جان ایشور پر بھروسہ رکھتا ہے وہی دنیا میں خوش رہتا ہے"

انجنا۔ بسنت! میں سب کچھ جانتی ہوں ہر چند کوشش کر بے قرار دل کو سنبھالتی ہوں۔ مگر کیا کروں یہ میرے قابو میں نہیں رہتا۔

آہ! جس وقت یہ لڑکا زمین پر لیٹے لیٹے خود بخود کبھی ہاتھ پاؤں کو پھیلا اور کبھی سمیٹ کر ناک مُنھ چڑھا رونے لگ جاتا ہے تو انجنا اس کو بیکسی کی حالت میں قدرتی فرش پر لیٹا دیکھ بے چین ہو جلدی سے گود میں لے لیتی ہے۔

جب گیارہ ماہ اسی طرح گذر گئے تو ایک روز دوپہر کے وقت جبکہ بارش ہو رہی ہے اور انجنا دیوی لڑکے کو لئے جھونپڑی میں بیٹھی دل بہلا رہی ہے۔ مگر لڑکا ایک ہی جگہ بیٹھے بیٹھے کچھ تنگ آگیا ہے جو زور سے چلا چلا کر رو رہا ہے اگرچہ انجنا کھڑی ہو اور ایک دو قدم ادھر اُدھر ٹہل کر بھی اس کو بہلاتی ہے۔ مگر یہ بچہ روہی رہا ہے۔

بارش تھمی تو لڑکے کو لے کر جھونپڑی کے باہر آکھڑی ہوئی۔ اور اُن جنگلی درختوں اور خودرو پودوں کو جو جھونپڑی کے ارد گرد دور تک پھیلے ہوئے دکھائی دیتے ہیں اُنگلی کے اشارہ سے لڑکے کو دکھا اس کا دل بہلا رہی ہے۔

آہ! ان خودرو پودوں کے رنگ برنگی پھولوں اور سبزہ زار کے خوشنما سین کو دیکھ انجنا کو اپنے باغ کی بہار جو لڑکپن کے زمانہ میں سیر کے وقت دیکھا کرتی تھی یاد آگئی۔ آنکھوں سے آنسو بہ نکلے اور دل میں کئی طرح کے خیال پیدا ہو کمزور کرنے لگے تب اس نے بڑے حوصلے سے دلی ولولوں کو ضبط کر اُدھر سے نگاہ کو روک آسمان کا نیلا نیلا رنگ اور اُس میں جابجا اُن سفید بادلوں کے ٹکڑوں کو دیکھنا

शुरु कर दिया है जिन को हवा ने छोटे लडकों की तरह अपना खिलौना बना रखा है। कभी वो टक्करें मिल एक हो जाते और कभी हवा का एक धप्पड लगने से हाथी और घोडों की शक्लो में हो जाते हैं। चीलें उडती उडती ऐसी बुलन्द हो गई की स्याह टिक्की के बगैर कुछ मालूम ही नहीं होता। मगर जब वो सफेद बादलों के नीचे आ जाती हैं तो गोया अबर के साथ जुड जाती हैं।

इस तरह अञ्जना देवी दिल बहला रही थी कि यकायक एक चमकदार चीज जो आफ्ताब का हमपल्ला मालूम होती है इस तरफ को आती हुई दिखाई दी। पहले तो बडे गौर से देखती रही बाद में मालूम हुआ कि कोई बवान आ रहा है। तब ये जल्दी से वही बैठ गई और नीचे सर झुका लिया। मगर इसको बैठे देख लडका चिल्ला उठा और जार जार रोना शुरु कर दिया।

नाजरीन! इस बवान में एक शख्स सफेद रेश उम्दा लिबास जेबतन किए एक औरत से बातें करता हुआ आ रहा था कि नागाह (अचानक) उसकी नजर अञ्जना पर पडी और लडके के रोने की आवाज कानों में पहुँची। न जाने उस के दिल मे क्या ख्याल गुजरा है कि बवान को थाम कर अपने हमनशीन औरत से कह रहा है।

वही शख्स "प्रियजी! आपने कुछ देखा?"

औरत "नहीं स्वामीजी! मैनें कुछ नहीं देखा क्या है?"

वही शख्स उंगली से इशारे से "वो देखो झोंपडी के आगे एक नौजवान औरत सर झुकाए गमगीन सूरत बनाए बैठी है। और शायद वो उसका लडका है जो पास ही बैठा रो रहा है।"

औरत गर्दन फेर कर पीछे को देख "हाँ" बेपरवाही से "किसी साधू

شروع کر دیا ہے۔ جن کو ہوا نے چھوٹے لڑکوں کی طرح اپنا کھلونا بنا رکھا ہے۔ کبھی وہ ٹکڑے مل کر ایک ہو جاتے ہیں اور کبھی ہوا کا ایک دھپڑ لگنے سے الگ الگ نظر آتے ہیں۔ ہاں بڑے بڑے بادل ہوا کے لگنے سے ہاتھی اور گھوڑوں کی شکلوں میں ہو جاتے ہیں۔ چیلیں اوڑتی اوڑتی ایسی بلند ہو گئی ہیں کہ سیاہ ٹکیہ کے بغیر کچھ معلوم ہی نہیں ہوتا۔ مگر جب وہ سفید بادلوں کے نیچے آجاتی ہیں تو گویا ابر کے ساتھ جڑ جاتی ہیں۔

اسی طرح انجنا دیوی دل بہلا رہی تھی کہ یکایک ایک چمکدار چیز جو آفتاب کا ہم پلہ معلوم ہوتی ہے اس طرف کو آتی ہوئی دکھائی دی۔ پہلے تو بڑے غور سے دیکھتی رہی۔ بعد میں معلوم ہوا کہ کوئی بوان آ رہا ہے۔ تب یہ جلدی سے وہیں بیٹھ گئی اور نیچے سر جھکا لیا۔ مگر اس کو بیٹھے دیکھ لڑکا چلا اٹھا اور زار زار رونا شروع کر دیا۔

ناظرین! اس بوان میں ایک شخص سفید ریش عمدہ لباس زیب تن کئے ایک عورت سے باتیں کرتا ہوا آ رہا تھا کہ ناگاہ اس کی نظر انجنا پر پڑی اور لڑکے کے رونے کی آواز کانوں میں پہنچی۔ نہ جانے اس کے دل میں کیا خیال گذرا ہے کہ بوان کو تھام کر اپنے ہمنشین عورت سے کہہ رہا ہے۔

وہی شخص۔ پریہ جی! آپ نے کچھ دیکھا؟

عورت۔ نہیں سوامی جی! میں نے کچھ نہیں دیکھا! کیا ہے؟

وہی شخص۔ (انگلی کے اشارے سے) وہ دیکھو جھونپڑی کے آگے ایک نوجوان عورت سر جھکائے غمگین صورت بنائے بیٹھی ہے اور شاید وہ اس کا لڑکا ہے جو پاس ہی بیٹھا رو رہا ہے۔

عورت۔ (گردن پھیر کر پیچھے کو دیکھ کے) ہاں (بے پرواہی سے) کسی سادھو

कि लडकी होगी। ऐं! इसका स्याह लिबास क्यों हऐ?”

वही शख्स “इस बात को तो मैं सोच रहा हूँ अगर साधू की लडकी होती तो ऐसे स्याह कपडे हर्गिज न पहनती। इसमे जरूर कुछ भेद है।”

ये कह कर बवान को दरख्तों की आड मे जमीन पर उतारा और खुद अञ्जना के पास जाकर बोला

वही शख्स “देवी तू कौन है और इस सुनसान वीरान जंगल मे क्यों रहती है?”

अञ्जना देवी जो अपने ही ख्याल मे सर झुकाए बैठी कुछ सोच रही है। इस नागहानी आवाज को सुनते ही चौंक पडी और जल्दी से सर उठा उपर की तरफ देखा तो फौरन उसके गले से लिपट फूट फूट कर रोने लग पडी।

गो ये शख्स भी उसकी शक्ल को देख शक में पड गया है और बहुतेरा दिल में सोचता है मगर कुछ समझ में नहीं आता की ये कौन है और क्यों रो रही है। आखिर जब कुछ देर इस तरह गुजरी तो तसल्ली की बातें कर प्यार दिलासा दे बडी मुश्किल से उसको अपने जिस्म से अलहैदा किया। ज्यों ही इसके चेहरे को गौर से देखा आवाज को बखूबी पहचाना तो खुद रफ्ता सा हो बोला।

वही शख्स हैरानगी से “ऐं अञ्जना तू कहाँ?”

आहा! किसी ने सच कहा

उसे फजल करते नहीं लगती बार न हो उससे मायुस उम्मीद हार

नाजरीन! देखिए ईश्वर की कुदरत कि इत्तफाका अञ्जना का मामू राजा प्रीती सूर्या अपनी औरत रवि सुन्दरी को साथ लिए सैर करता हुआ यहा आ गया है। पहले तो अञ्जना देवी को इस हालत मे देख पहचान नहीं सका। मगर जब उसने

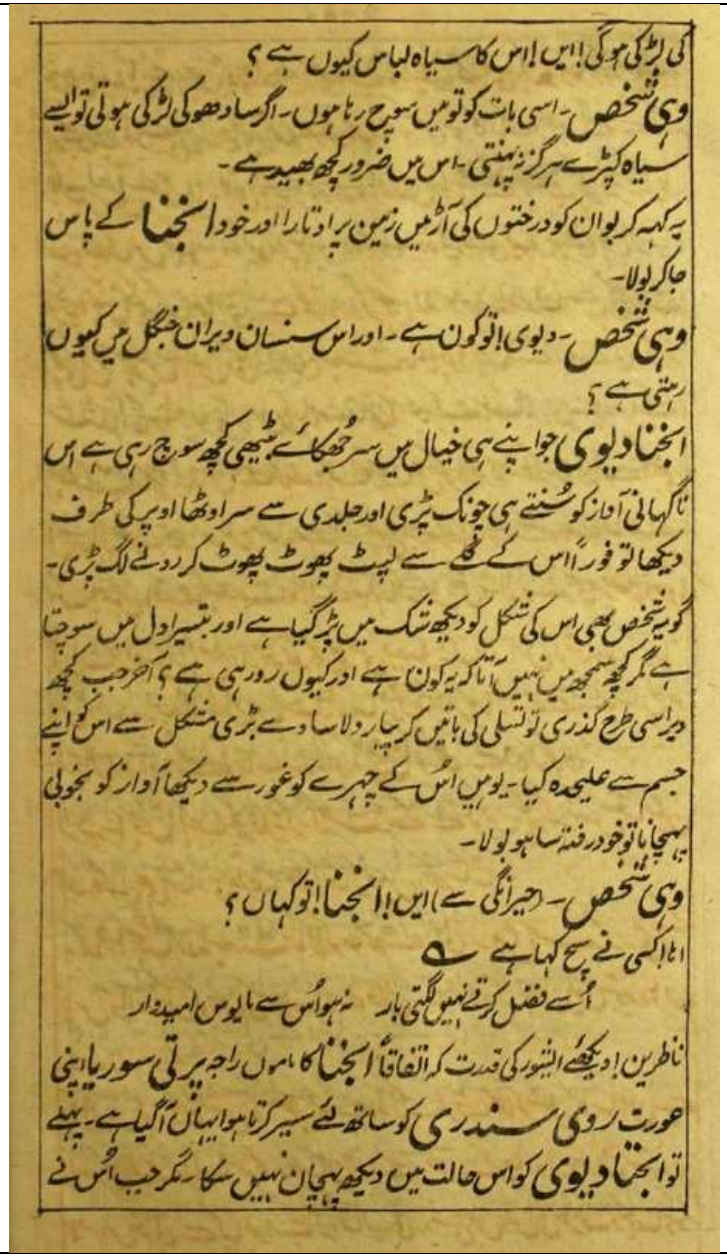

کی لڑکی ہوگی! ایں! اس کا سیاہ لباس کیوں ہے؟

وہی شخص - اسی بات کو تو میں سوچ رہا ہوں - اگر سادھو کی لڑکی ہوتی تو ایسے سیاہ کپڑے ہرگز نہ پہنتی - اس میں ضرور کچھ بھید ہے -

یہ کہہ کر بوان کو درختوں کی آڑ میں زمین پر اوتارا اور خود انجنا کے پاس جاکر بولا -

وہی شخص - دیوی! تو کون ہے - اور اس سنسان ویران جنگل میں کیوں رہتی ہے؟

انجنا دیوی جو اپنے ہی خیال میں سر جھکائے بیٹھی کچھ سوچ رہی ہے اس ناگہانی آواز کو سنتے ہی چونک پڑی اور جلدی سے سر اوٹھا اوپر کی طرف دیکھا تو فوراً اس کے گلے سے لپٹ پھوٹ پھوٹ کر رونے لگ پڑی -

گو یہ شخص بھی اس کی شکل کو دیکھ شک میں پڑ گیا ہے اور بسیار دل میں سوچتا ہے مگر کچھ سمجھ میں نہیں آتا کہ یہ کون ہے اور کیوں رو رہی ہے؟ آخر جب کچھ دیر اسی طرح گذری تو تسلی کی باتیں کر پیار دلاسا دے بڑی مشکل سے اس کو اپنے جسم سے علیحدہ کیا - یوں ہی اس کے چہرے کو غور سے دیکھا آواز کو بخوبی پہچانا تو خود رفتہ سا ہو بولا -

وہی شخص - (حیرانگی سے) ایں! انجنا! تو کہاں؟

آہا! کسی نے سچ کہا ہے ؎

اُسے فضل کرتے نہیں لگتی بار نہ ہو اُس سے مایوس امیدوار

ناظرین! دیکھئے ایشور کی قدرت کہ اتفاقاً انجنا کا ماموں راجہ پرتی سوریا اپنی عورت روی سندری کو ساتھ لئے سیر کرتا ہوا یہاں آگیا ہے - پہلے تو انجنا دیوی کو اس حالت میں دیکھ پہچان نہیں سکا - مگر جب اُس نے

पहचान कर ये कहा कि "अञ्जना तू कहाँ" आह! तब तो अञ्जना और भी बुलन्द आवाज से रो पडी और कुछ जवाब न दे सकी। तो राजा भी आंसू भरकर बोला राजा प्रीती सूर्या "बेटी! क्यों रो रो परेशान होती है? अब कुछ फिक्र न करो और ये बतला की इस जगह तेरा आना क्योंकर हुआ और ये स्याह कपडे क्यों पहने?"

अगरचा अञ्जना कुछ कहना चाहती है मगर रो रो कर हिचकी बंध जाने से उसकी बात अच्छी तरह समझ में नहीं आती लेकिन बसन्तमाला जो अञ्जना के रोने की आवाज सुनकर आ गई है और राजा को उसकी दास्ताने मुसीबत सुना रही है।

देखिए! बसन्तमाला की जबान से एक एक हरफ निकल कर राजा को मुतफक्किर बना रहा है। कभी अञ्जना की तरफ नजर उठा कर देखता है और कभी फिर सर झुकाए सुनने लग जाता है। उफ! जिस वक्त बसन्तमाला ने ये कहा कि उसकी वालदा ने भी प्रह्लाद विद्याधर की बात पर यकीन कर सच और झूठ का कुछ भी फैसला न किया और उसको शहर बदर कर दिया, उस वक्त राजा के बदन में सन्नाटा सा पड गया। चेहरा मारे गुस्से के सुर्ख हो तमतमा गया। ज्यादा सुनने की ताब न लाया और अञ्जना को गले से लगा कर बोला।

राजा "अञ्जना! अब कुछ फिक्र न कर। गुजिश्ता (अतीत) के लिए तो मैं कुछ कह नहीं सकता लेकिन आइन्दा कोई भी तुम्हारी तरफ नजर उठा कर नहीं देख सकता।"

ये कहा अञ्जना और बसन्तमाला को साथ लिए रानी रवि सुन्दरी के पास आया और उसको इस की मुसीबत के हाल से आगाह कर बवान मे बैठ वहाँ से रवाना हुआ।

आहा! बवान को देखिए! किश्तीनुमा शक्ल का है। एक तरफ कलाकौशल का सामान है। दूसरी तरफ एक किस्म का सायबान तना है जिस के चारों तरफ सुनहरी काम इस खूबी से किया हुआ है कि आफ्ताब की रोशनी मे इसकी तरफ देखना दुश्वार

پہچان کر یہ کہا کہ "انجنا تو کہاں" آہ! تب تو انجنا اور بھی بلند آواز سے رو پڑی اور
کچھ جواب نہ دیسکی تو راجہ بھی آنسو بھر کر بولا۔
راجہ پرتی سوریا۔ بیٹی! کیوں رو رو پریشان ہوتی ہے؟ اب کچھ فکر نہ کرو
اور یہ بتلا کہ اس جگہ تیرا آنا کیونکر ہوا۔ اور یہ سیاہ کپڑے کیوں پہنے؟
اگرچہ انجنا کچھ کہنا چاہتی ہے مگر رو رو کر ہچکی بندھ جانے سے اس کی بات
اچھی طرح سمجھ میں نہیں آتی۔ لیکن بسنت مالا جو انجنا کے رونے کی آواز
سنکر آگئی ہے اور راجہ کو اس کی داستانِ مصیبت سنا رہی ہے۔ دیکھیے!
بسنت مالا کی زبان سے ایک ایک حرف نکل کر راجہ کو متفکر بنا رہا ہے۔ کبھی
انجنا کی طرف نظر اٹھا کر دیکھتا ہے اور کبھی پھر سر جھکائے سننے لگ جاتا ہے۔
اُف! جس وقت بسنت مالا نے یہ کہا کہ اس کی والدہ نے بھی پرہلاد و دوسرے
کی بات پر یقین کر سچ اور جھوٹھ کا کچھ بھی فیصلہ نہ کیا اور اس کو شہر بدر کر دیا"
اُس وقت راجہ کے بدن میں سناٹا سا پڑ گیا۔ چہرہ مارے غصہ کے سرخ ہو
تمتما گیا۔ زیادہ سننے کی تاب نہ لایا اور انجنا کو گلے سے لگا کر بولا۔
راجہ۔ انجنا! اب کچھ فکر نہ کر۔ گذشتہ کے لئے تو میں کچھ کہہ نہیں سکتا لیکن
آئندہ کوئی بھی تمھاری طرف نظر اٹھا کر نہیں دیکھ سکتا۔
یہ کہا۔ انجنا اور بسنت مالا کو ساتھ لے رانی روی سندری کے
پاس آیا اور اُس کو اس کی مصیبت کے حال سے آگاہ کر بوان میں بیٹھ وہاں
سے روانہ ہوا۔
آہا! بوان کو دیکھئے کشتی نما شکل کا ہے۔ ایک طرف کلا کوشل کا سامان ہے
دوسری طرف ایک قسم کا سائبان تنا ہے۔ جس کے چاروں طرف سنہری
کام اس خوبی سے کیا ہوا ہے کہ آفتاب کی روشنی میں اس کی طرف دیکھنا دشوار

है। इस पर कारीगर ने मोतियों की झालर बना और उसमे थोडे थोडे फासले पर एक एक सोने का मसनोइ (बनावटी) मोती गेंद के बराबर इस हिकमत (कौशल) से लगाया हुआ है कि जैसे इसकी रफतार तेज होती जाती है वैसे इनकी चमक दमक ज्यादा खुशनुमा मालूम होती है।

ज्योंही अञ्जना देवी के लडके की नजर इन चमकदार मसनोइ मोतियों पर पडी बेइख्तियार गोदसे उछला[१] और उनको पकडना चाहा। मगर कामयाब नहीं हुआ और जमीन पर गिर पडा। आह! लडके को गिरता देख सब चिल्ला उठे। अगरचा उसी दम बवान को को रोका गया ताहम फासला बहुत हो गया। इसलिये बवान को पीछे लौटा जमीन पर उतारा। राजा तो लडके की तलाश मे चला गया और ये तीनों बदहवास हो उस तरफ को देख रही हैं जिस तरफ वो गया है। और बुरे बुरे ख्याल पैदा हो इनके मायूस दिल की चुटकियाँ ले परेशान कर रहे हैं। कि इतने मे राजा लडके को लेकर वापिस आया और बोला।

राजा "अञ्जना! तेरे लडके का जिस्म तो वज्र[२] की मानिद (जैसा) सख्त है। कि इतनी दूर से गिरा और गिरा भी पत्थर की चट्टान पर लेकिन शुक्र है कि जब मैं गया तो ये बैठा अंगूठा चूस रहा था। और मुझको देखते ही दोनों हाथ पसार रोने लग पडा।"

राजा की बातें सुन और लडके को देख सबकी जान मे जान आई। और रानी रविसुन्दरी ने

१ ये जो एक आम बात मशहूर है कि हनुमान ने पैदा होते ही आफ्ताब को उछल कर पकडा और मुँह मे छुपा लिया बरेख्याल कि ये एक सिर्फ फल खाने का है। नाजरीन! हकीकत मे न तो कोई फल था और न ही सूरज था। बल्कि इस बवान के चमकदार तलाई मसनोइ मोती थे जबकी मुसन्निफों ने आफ्ताब से तशबीह दी थी। और बाद मे सिकाकारो ने इस मुगाल्ते को फोत कर आफताब ही बना लिया। देखो अञ्जना मतबनो रास सफा ३४

२ जिसका जिस्म मुतफिर की मानिंद अजब हो

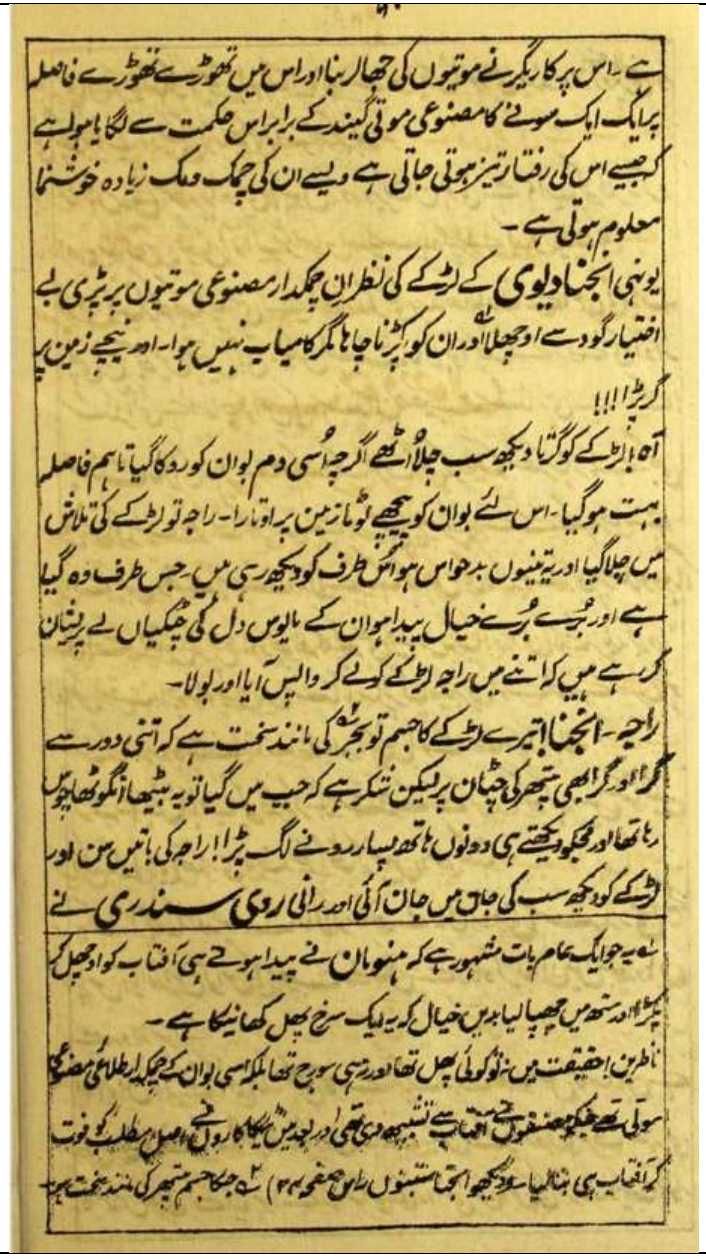

ہے۔ اس پر کاریگر نے موتیوں کی جھالر بنا اور اس میں تھوڑے تھوڑے فاصلہ
پر ایک ایک سونے کا مصنوعی موتی گیند کے برابر اس حکمت سے لگایا ہوا ہے
کہ جیسے اس کی رفتار تیز ہوتی جاتی ہے ویسے ان کی چمک دمک زیادہ خوشنما
معلوم ہوتی ہے۔

یونہی انجنا دیوی کے لڑکے کی نظر ان چمکدار مصنوعی موتیوں پر پڑی بے
اختیار گود سے اوچھلا[1] اور ان کو پکڑنا چاہا مگر کامیاب نہیں ہوا۔ اور نیچے زمین پر
گر پڑا!!!

آہ! لڑکے کو گرتا دیکھ سب چلا اٹھے اگرچہ اُسی دم بوان کو روکا گیا تاہم فاصلہ
بہت ہو گیا۔ اس لئے بوان کو پیچھے لوٹا زمین پر اوتارا۔ راجہ تو لڑکے کی تلاش
میں چلا گیا اور یہ تینوں بدحواس ہو اُس طرف کو دیکھ رہی ہیں۔ جس طرف وہ گیا
ہے اور بُرے بُرے خیال پیدا ہو ان کے مایوس دل کی چٹکیاں لے پریشان
کر رہے ہیں کہ اتنے میں راجہ لڑکے کو لے کر واپس آیا اور بولا۔

راجہ۔ انجنا! تیرے لڑکے کا جسم تو بجر[2] کی مانند سخت ہے کہ اتنی دور سے
گرا اور گرا بھی پتھر کی چٹان پر لیکن شکر ہے کہ جب میں گیا تو یہ بیٹھا انگوٹھا چوس
رہا تھا اور مجھکو دیکھتے ہی دونوں ہاتھ پسار رونے لگ پڑا! راجہ کی باتیں سن اور
لڑکے کو دیکھ سب کی جان میں جان آئی اور رانی روی سندری نے

[1] یہ جو ایک عام بات مشہور ہے کہ ہنومان نے پیدا ہوتے ہی آفتاب کو اوچھل کر
پکڑا اور منہ میں چھپا لیا بدیں خیال کہ یہ ایک سرخ پھل کھانیکا ہے۔
ناظرین! حقیقت میں نہ تو کوئی پھل تھا اور نہ ہی سورج تھا بلکہ اسی بوان کے چمکدار طلائی مصنوعی
موتی تھے جنکو مصنفوں نے آفتاب سے تشبیہ دی تھی اور بعد میں نیکاکاروں نے اصل مطلب کو فوت
کر آفتاب ہی بنا لیا۔ دیکھو انجنا استبنوں راس صفحہ ۳۴) [2] جنکا جسم پتھر کی مانند سخت ہے

जल्दी से लडके को राजा से लेकर छाती से लगाया और पेशानी पर बोसा (चुम्बन) देकर कहने लगी बेटा बजरंगी क्यान की सैर की। तब से उसको सब कोई बजरंगी कहने लग पडा। और बवान वहाँ से आगे को रवाना हुआ।

नाजरीन! अञ्जना देवी तो अपने मामू के साथ हनुपुर को जा रही है और पवन बेचारा मालूम नहीं कहाँ भटक रहा है। आओ जरा इसका भी तो पता लें।

बाब (अध्याय) चौदहवाँ

ऐं दम भर में इसको क्या हो गया

राजा महेन्द्र राय के महल मे अभी एक शख्स नफीस पोशाक पहने छडी हाथ मे लिए चौकी पर आनकर बैठा है और रानी बेगमोहिनी उसकी पेशानी को बोसा दे सामने खडी खैरो आफियत पूछ रही है। लेकिन उसकी झुकी हुई गर्दन, दबी हुई नजर और इस नोदरो को देखकर आह सर्द भरना बतला रहा है कि इस शख्स के आनेसे उसके दिलको सख्त सदमा पहुचा है। और बेशक यही दुरुस्त मालूम होता है। देखिए! कैसे आहिस्ता आहिस्ता कदम रखती हुई अब अपने कमरे को जा रही है। और दिल में ये ख्याल पैदा हो उसको और भी जाने पर मजबूर कर रहे हैं। आह! जब वो अञ्जना का हाल दरयाफ्त करेगा तो क्या बताऊँगी।

उफ! उसने तो मुझको कहीं का न रखा। अगर मर जाती तो अच्छा होता। आज इसके (पवन) सामने सरनगूँ तो न होना पडता। ऐ जमीन तू फट जा कि मैं तुझमें समा जाऊँ ताकि अञ्जना का जिक्र सुनने की नौबत न पहुँचे।

नाजरीन! ये तो इस तरह दिल मे कहती हुई पलंग पर जाकर लेट गई है। मगर वो नोदारो शख्स, जो गालिबन पवन ही है अञ्जना की तलाश करता करता यहा आ गया है, रानी की ये हरकत देख निहायत हैरान हो गया और अब बडी मायूसी से इधर उधर देख रहा है लेकिन

جلدی سے لڑکے کو راجہ سے لیکر چھاتی سے لگایا۔ اور پیشانی پر بوسہ دیکر کہنے لگی "بیٹا بجرنگی کیان کی سیر کی" تب سے اس کو سب کوئی بجرنگی کہنے لگ پڑا اور بوان وہاں سے آگے کو روانہ ہوا۔

ناظرین! انجنا دیوی تو اپنے ماموں کے ساتھ ہنوں پور کو جا رہی ہے اور پون بیچارا معلوم نہیں کہاں بھٹک رہا ہے۔ آؤ ذرا اس کا بھی تو پتہ لیں

باب چودھواں

"ایں دم بھر میں اس کو کیا ہو گیا"

راجہ مہندر رائے کے محل میں ابھی ایک شخص نفیس پوشاک پہنے چھڑی ہاتھ میں لئے چوکی پر آنکر بیٹھا ہے اور رانی بیگم موہنی اُس کی پیشانی کو بوسہ دے سامنے کھڑی خیر عافیت پوچھ رہی ہے۔ لیکن اس کی جھکی ہوئی گردن دبی ہوئی نظر اور اس نووارد کو دیکھکر آہ سرد بھرنا بتلا رہا ہے کہ اس شخص کے آنیسے اسکے دلکو سخت صدمہ پونچا ہے اور بیشک یہی درست معلوم ہوتا ہے۔ دیکھئے کیسے آہستہ آہستہ قدم رکھتی ہوئی اب اپنے کمرے کو جا رہی ہے۔ اور دل میں یہہ خیال پیدا ہوا اس کو اور بھی جانے پر مجبور کر رہے ہیں۔ آہ! جب وہ انجنا کا حال دریافت کریگا تو کیا بتاؤں گی۔ اوف! اُس نے تو مجکو کہیں کا نہ رکھا۔ اگر مر جاتی تو اچھا ہوتا۔ آج اس کے (پون) سامنے سرنگوں تو نہ ہونا پڑتا! اے زمین تو پھٹ جا کہ میں تجھ میں سما جاؤں تاکہ انجنا کا ذکر سُننے کی نوبت نہ پونچے" ناظرین یہ تو اس طرح دل میں کہتی ہوئی پلنگ پر جا کر لیٹ گئی ہے مگر وہ نووارد شخص جو غالباً پون ہی ہے۔ انجنا کی تلاش کرتا کرتا یہاں آگیا ہے۔ رانی کی یہ حرکت دیکھ نہایت حیران ہو گیا اور اب بڑی مایوسی سے اِدھر اُدھر دیکھ رہا ہے۔ لیکن

९२

अञ्जना को न पाकर उसका बेकरार दिल और भी बेचैन होता जाता है। इस अमर मे हर चंद गौर करता है कि क्या मामला है जो वो (अञ्जना) दिखाई नहीं देती। मगर मुकद्दर के लिखे की तरह जब कुछ समझ मे न आया तो घबराकर वहाँ से उठना चाहा कि इतने मे प्रसन्न कीर्ति का लडका सामने आता हुआ नजर पडा। जल्दी से पकड गोद मे बैठा लिया और पूछने लगा।

पवन "बेटा! तेरी पहुवा कहा है?"

लडका मयूसाना लहजे मे "ऐं पहुवा! सुना है वो तो रोती हुई यहाँ से पशुमखा वन को चली गई थी। यहाँ तो सिर्फ थोडी देर खडी रोती रही। बाद मे दादी ने गुस्सा होकर बाहर निकाल दिया था।" आह! इस बात को सुनते ही पवन का रंग फक हो गया, दिली आरजुएँ नाउम्मीदी मे बदल गई। पशुमखा के नाम ने उसके हर एक अजा को उसके दिल की तरह बेकार कर दिया। अब ये कहे तो क्या कहे, करे तो क्या करे। बहुतेरा दिल को सम्भाला है मगर वो किसी तरह सम्भलता ही नहीं और खुद रफ्ता हो आलमे सकूत मे उस चौकी पर बेहोशोहरकत होकर देखता का देखता रह जाता है।

जब कुछ देर इस तरह गुजरी तो फिर दिमाग में खराश सी पैदा हुई जिसने बिजली की तरह इसकी रग रग मे हरकत दे मुहर खामोशी तो तोड जबान को वाक्या। "आह! मुझसे कैसी गलती हुई। मेरे ही बाइश उस प्राणप्यारी पर गम का पहाड टूट पडा।" अञ्जना के वालदैन की तरफ इशारा कर "तुमही कुछ सोचते। उसके हाल पर रहम करते। तुम्हारा तो लख्ते जिगर थी। मगर तुम सब से ज्यादा बेरहम और बेमुरव्वत निकले जो उसकी इस हालत पर भी कुछ ख्याल न किया। उफ! कैसा खून सफेद हो गया। रहम तो दुनिया से जाता ही रहा।" कुछ सकूत के बाद "प्यारी अञ्जना! तू किन मुसीबतों में फस गई।

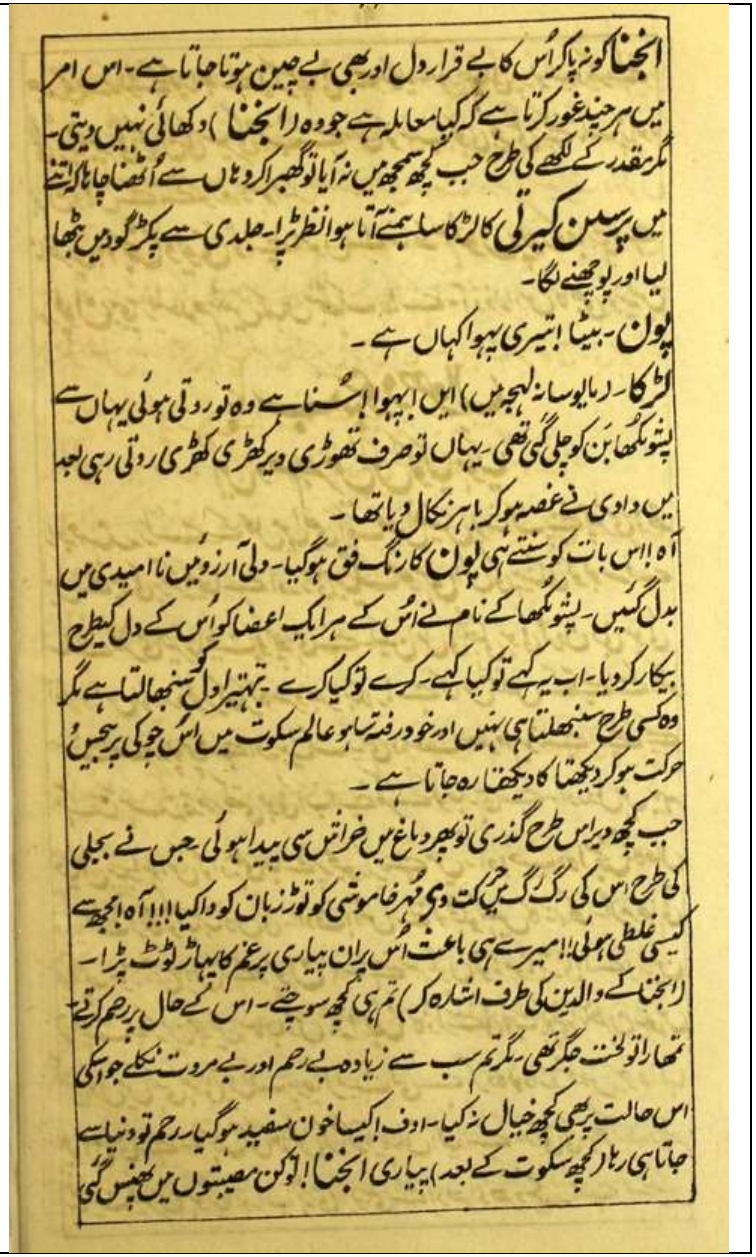
انجنا کو نہ پاکر اُس کا بے قرار دل اور بھی بے چین ہوتا جاتا ہے۔ اس امر
میں ہر چند غور کرتا ہے کہ کیا معاملہ ہے جو وہ (انجنا) دکھائی نہیں دیتی۔
مگر مقدر کے لکھے کی طرح جب کچھ سمجھ میں نہ آیا تو گھبرا کر وہاں سے اُٹھنا چاہا کہ اتنے
میں پرسن کیرتی کا لڑکا سامنے آتا ہوا نظر پڑا۔ جلدی سے پکڑ گود میں بٹھا
لیا اور پوچھنے لگا۔

پون۔ بیٹا! تیری پہوا کہاں ہے۔

لڑکا۔ (مایوسانہ لہجہ میں) ایں! پہوا! سُنا ہے وہ تو روتی ہوئی یہاں سے
پشومکھا بن کو چلی گئی تھی۔ یہاں تو صرف تھوڑی دیر کھڑی کھڑی روتی رہی بعد
میں دادی نے غصہ ہو کر باہر نکال دیا تھا۔

آہ! اس بات کو سنتے ہی پون کا رنگ فق ہو گیا۔ دلی آرزوئیں نا امیدی میں
بدل گئیں۔ پشومکھا کے نام نے اُس کے ہر ایک اعضا کو اُس کے دل کی طرح
بیکار کر دیا۔ اب یہ کہے تو کیا کہے۔ کرے تو کیا کرے۔ تہیرا دل سنبھالتا ہے مگر
وہ کسی طرح سنبھلتا ہی نہیں اور خود رفتہ سا ہو عالم سکوت میں اُس چوکی پر بجز
حرکت ہو کر دیکھتا کا دیکھتا رہ جاتا ہے۔

جب کچھ دیر اس طرح گذری تو پھر دماغ میں خراش سی پیدا ہوئی جس نے بجلی
کی طرح اس کی رگ رگ میں حرکت دی مُہر خاموشی کو توڑ زبان کو وا کیا!!! آہ! مجھ سے
کیسی غلطی ہوئی!! میرے ہی باعث اُس پر ان پیاری پر غم کا پہاڑ ٹوٹ پڑا۔
(انجنا کے والدین کی طرف اشارہ کر) تم ہی کچھ سوچتے۔ اس کے حال پر رحم کرتے
تمہارا تو لخت جگر تھی۔ مگر تم سب سے زیادہ بے رحم اور بے مروت نکلے جو اس کی
اس حالت پر بھی کچھ خیال نہ کیا۔ اوف! کیسا خون سفید ہو گیا۔ رحم تو دنیا سے
جاتا ہی رہا (کچھ سکوت کے بعد) پیاری انجنا! تو کن مصیبتوں میں پھنس گئی

९३

जिन पर तेरी उम्मीदें नाज करती थी वही तेरे दुश्मन हो गए। तो गमख्वार कौन होता? उफ! तेरे नन्हे से दिल ने ऐसी बेहुरमती की बातें क्योंकर बर्दाश्त की होगी? तू ऐसी जेहोशजी इल्म धर्म मे मुस्तैद, हुस्ने सूरत और हुस्ने सीरत दोनों मे यकया मगर अफ्सोस तेरी किस्मत ने इन सबको खाक मे मिला दिया।" पवन की बाते सुनकर एक खवास ने रानी से जाकर कहा

खवास "माताजी! आप किसी फिक्र में पडी हैं? किसी बात को सोच रही हैं? जरा बाहर निकलकर पवनजी की बातें तो सुनिए। क्या कह रहे हैं।"

रानी अफसोस के लहजे "वही अञ्जना की शिकायत करते होंगे।"

खवास "जी नहीं! वो तो सरासर झूठ और गलत करार देते हैं। और अञ्जना को बेकसूर और आप पर बेरहमी का इल्जाम लगाते हैं।"

रानी सर्द आह भरकर "आह! ऐसी किस्मत कहाँ।"

खवास "जरा चलकर तो सुनिए।"

रानी जल्दी से उठकर दालान की तरफ आई। ज्यूँही पवन की आवाज कान में पहुँची वही खडी हो गई। जब वो कह चुका तब आगे बढकर बोली।

रानी "आह! मैंने तो तेरे बाप कि तहरीर पर अमल किया। उसको सच जान अपने लख्ते जिगर को शहरे बदर किया। क्या ये झूठ है?"

पवन "और क्या! बिल्कुल झूठा इतहाम सरासर गलत। ईश्वर जाने तुम सबकी अक्ल पर क्यों पर्दा पड गया कि किसी ने भी इस बात को तहकीक नहीं किया। और ज्यादातर गजब ये किया कि जो किसी पर नहीं वो जुल्म बेचारी अञ्जना पर किया गया। उफ! तुमने भी अपनी बेटी की बेज्जती ही चाही। भला कुछ तो सोचा होता।" मालूम नहीं इन बातों में क्या जादू भरा हुआ है इन को सुनते ही रानी धम से

جن پر تیری امیدیں ناز کرتی تھیں وہی تیرے دشمن ہو گئے۔ تو غمخوار کون ہوتا؟
اوف! تیرے ننھے سے دل نے ایسی بے حرمتی کی باتیں کیونکر برداشت کی ہونگی؟
تو ایسی ذیہوش ذی علم دھرم میں مستعد حسن صورت اور حسن سیرت دونوں
میں یکتا۔ مگر افسوس تیری قسمت نے اِن سب کو خاک میں ملا دیا۔" پون
کی باتیں سُنکر ایک خواص نے رانی سے جاکر کہا۔

خواص۔ ماتاجی! آپ کس فکر میں پڑی ہیں۔ کس بات کو سوچ رہی ہیں۔
ذرا باہر نکلکر پون جی کی باتیں تو سُنئے کیا کہہ رہے ہیں۔

رانی۔ (افسوس کے لہجہ) وہی انجنا کی شکایت کرتے ہونگے۔

خواص۔ جی نہیں! وہ تو سراسر جھوٹھ اور غلط قرار دیتے ہیں اور انجنا
کو بے قصور اور آپ پر بیرحمی کا الزام لگاتے ہیں۔

رانی۔ (سرد آہ بھر کر) آہ! ایسی قسمت کہاں!!

خواص۔ ذرا چل کر تو سنئیے؟

رانی جلدی سے اُٹھکر دالان کی طرف آئی یونہی پون کی آواز کان میں پونچی
وہیں کھڑی ہو گئی۔ جب وہ کہہ چکا تب آگے بڑھکر بولی۔

رانی۔ آہ! میں نے تو تیرے باپ کی تحریر پر عمل کیا۔ اُسی کو سچ جان اپنے
لخت جگر کو شہر بدر کیا! کیا وہ بات جھوٹھ ہے؟

پون۔ اور کیا! بالکل جھوٹھا اتہام سراسر غلط!! ایشور جانے تم سب کی عقل پر کیوں پردہ
پڑ گیا کہ کسی نے بھی اس بات کو تحقیق نہیں کیا۔ اور زیادہ تر غضب یہ کیا کہ جو
کسی پر نہیں وہ ظلم بیچاری انجنا پر کیا گیا۔

اوف! تم نے بھی اپنی بیٹی کی بے عزتی ہی چاہی! بھلا کچھ تو سوچا ہوتا!۔
معلوم نہیں اِن باتوں میں کیا جادو بھرا ہوا ہے کہ ان کو سنتے ہی رانی دھم سے

जमीन पर गिर पडी है। चेहरे का रंग फक हो गया, मुँह पर हवाइयाँ उडने लगी, हाथ पाँव सर्द हो गए, दांतो के जबडे मिल गए हैं और दम रुक रुक कर आ रहा है।

रानी की ये हालत होने से महल मे कोहराम मच गया। कोई राजा के पास भागा जाता है और कोई वैध (डाक्टर) के। चूँकि पवन की चरक शास्त्र से कुछ वाक्फियत थी इसलिए रानी के दिल की हरकत को महसूस कर नब्ज की रफ्तार पर गौर किया, तो सकते की मर्ज का हमपल्ला पाया। फौरन जायफल जल्दतरी हाथ पाँव में मला, तानेशर खिला, लखलखा सूंघाया। जिससे रानी को होश आई और हाय अञ्जना! कहकर फिर खामोश हो गई।

एक तरफ राजा बैठा हुआ इसकी हालत को देखकर अफसोस कर रहा है। दूसरी तरफ प्रसन्न कीर्ति आंसू बहा रहा है। और तमाम कुनबा बेचैन हो कह रहा है "ऐं दम भर में इसको क्या हो गया?"

नाजरीन! बहुत देर तक रानी की यही हालत रही। कभी तो होश आ जाती और कभी वही पहली सूरत। आखिर बडी कोशिश और तरद्दुद के बाद रानी को कुली सेहत हुई तो उठकर बैठ गई और जारोजार दिल खोल कर रोई। गम का गुब्बार जो मगज को चढ गया था हलका हुआ तो कहने लगी।

रानी "मैंने बेगुनाह अञ्जना के हाल पर कुछ भी ख्याल न किया और न ही उसकी मुसीबत को देखकर मेरे सख्त सीने से एक आह ही निकली, और न ही आँखो से आंसू टपका। उफ! कोई वालदा ऐसी न होगी जैसी कि मैं कमबख्त! जिसने भूखी प्यासी देखकर भी पानी तक न पूछा। आह! मेरा भला कहाँ होगा। आकबत (मरने के बाद) मैं क्या जवाब दूँगी"

१ इल्म तबीयत की किताब

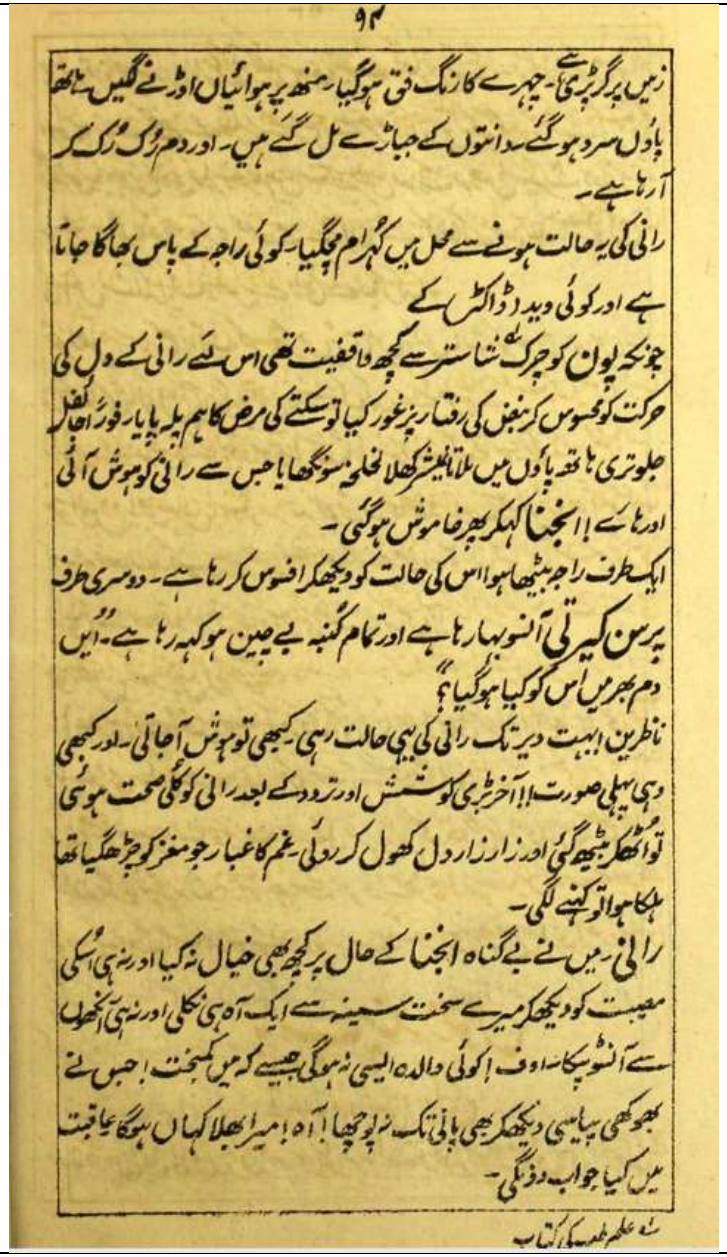

زمین پر گر پڑی۔ چہرے کا رنگ فق ہوگیا۔ منھ پر ہوائیاں اوڑنے لگیں۔ ہاتھ پاؤں سرد ہوگئے۔ دانتوں کے جبڑے مل گئے ہیں۔ اور دم رُک رُک کر آرہا ہے۔

رانی کی یہ حالت ہونے سے محل میں کہرام مچگیا۔ کوئی راجہ کے پاس بھاگا جاتا ہے اور کوئی وید (ڈاکٹر) کے

چونکہ پون کو چرک[1] شاستر سے کچھ واقفیت تھی اس لئے رانی کے دل کی حرکت کو محسوس کر نبض کی رفتار پر غور کیا تو سکتے کی مرض کا ہم پلہ پایا۔ فوراً جائفل جلوتری ہاتھ پاؤں میں ملا تانیشر کھلا لخلخہ سونگھایا جس سے رانی کو ہوش آئی اور ہائے! انجنا کہکر پھر خاموش ہوگئی۔

ایک طرف راجہ بیٹھا ہوا اس کی حالت کو دیکھکر افسوس کر رہا ہے۔ دوسری طرف پرسن کیرتی آنسو بہا رہا ہے اور تمام کنبہ بے چین ہو کہہ رہا ہے۔ "ایں دم بھر میں اس کو کیا ہوگیا؟"

ناظرین! بہت دیر تک رانی کی یہی حالت رہی۔ کبھی تو ہوش آجاتی۔ اور کبھی وہی پہلی صورت!! آخر بڑی کوشش اور تردد کے بعد رانی کو کلی صحت ہوئی تو اُٹھکر بیٹھ گئی اور زار زار دل کھول کر روئی۔ غم کا غبار جو مغز کو چڑھ گیا تھا ہلکا ہوا تو کہنے لگی۔

رانی۔ میں نے بے گناہ انجنا کے حال پر کچھ بھی خیال نہ کیا اور نہ ہی اُسکی مصیبت کو دیکھکر میرے سخت سینہ سے ایک آہ ہی نکلی اور نہ ہی آنکھوں سے آنسو ٹپکا۔ اوف! کوئی والدہ ایسی نہ ہوگی جیسے کہ میں کمبخت! جس نے بھوکھی پیاسی دیکھکر بھی پانی تک نہ پوچھا! آہ! میرا بھلا کہاں ہوگا عاقبت میں کیا جواب دونگی۔

[1] علم طب کی کتاب

ये कहा और फिर रोना शुरु कर दिया। तब राजा ने कहा।

राजा "प्रियजी! इस कदर घबराने से तो कुछ हासिल नहीं होगा। वक्त जो गुजर गया उसका फिक्र करना बेफायदा है। इन्सान का फिक्र और लकडी का घुन बराबर है। इसको छोडो और ईश्वर पर यकीन रखो। वही हर हाल मे सब का निगहबान (रक्षक) है। हाँ आइन्दा की फिक्र करो कि अब क्या करना चहिए।"

रानी सर्द आह भरकर बोली।

अञ्जना दीनी तराह काम मैं खोटा कीना जरा न की विचार मुफ्त मे असचबस कीना
करें मुझको दुतकार नगर के सारे वासी क्या रंक क्या राय करे सब मुझको हांसी
सुनी विद्याधर की बात न माना तेरा कहना हाय मेरी राजदुलारी पडा दुख तुझको सहना
मेरा हर वो भया खडूर सोच न मैंने कीनी न जानूँ कारण क्या हुई मत मेरी हीनी
अब क्या करूँ उपाय बात मैं आप बिगाडी कठिन उसतहा गर्भ गई वन देखे प्यारी
न सुने अञ्जना बैन न कुछ निश्चय कीना बिन देखे अपराध बेटी को मैं तराह दीना
हाय जाए पेट मेरा फूट जब से तेरी उए आह दूर मेरे पर से अञ्जना प्यासी जावे
हाय पाली दुख उठा बहुत मैं लाड लडाए होती थी बेचैन जरा दुखी उसको पाए
गई जंगल सिधार आह वो मेरी प्यारी मैं भी अति खोटो बेटी दहन सखी तुम्हारी
हूँ ऐसी निर्लज प्राण न मेरे छूटे देख बेटी की विपत नयन न मेरे फूटे
धरग ज्यूँ संसार बात ये सुनने जानी हुए दास बेचैन गिरी धरती पर रानी

बाब (अध्याय) पंदहरवा

हाय वो कहाँ गई

नाजरीन! रानी की बातें सुन और उसकी ये हालत देखकर पवनजी आँखो के

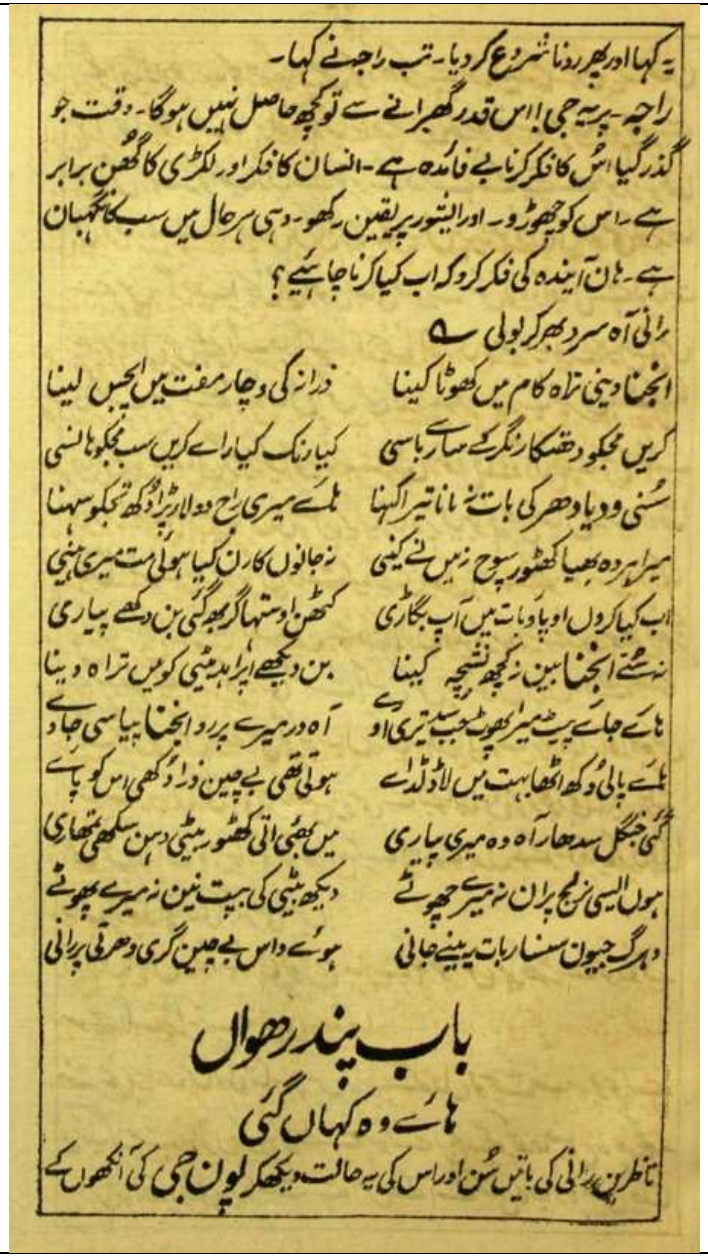

یہ کہا اور پھر رونا شروع کر دیا۔ تب راجہ نے کہا۔
راجہ۔ پریہ جی! اس قدر گھبرانے سے تو کچھ حاصل نہیں ہوگا۔ وقت جو گذر گیا اُس کا فکر کرنا بے فائدہ ہے۔ انسان کا فکر اور لکڑی کا گھن برابر ہے۔ اس کو چھوڑو۔ اور ایشور پر یقین رکھو۔ وہی ہر حال میں سب کا نگہبان ہے۔ ہاں آیندہ کی فکر کرو کہ اب کیا کرنا چاہیئے؟

رانی آہ سرد بھر کر بولی ؎

انجنا دینی تراہ کام میں کھوٹا کینا ذرا نہ کی وچار مفت میں ایجس لینا
کریں مجکو دھتکار نگر کے سارے باسی کیا رنک کیا راے کریں سب مجکو ہانسی
سُنی ودیادھر کی بات نہ مانا تیرا کہنا ہائے میری راج دلارے پڑا دُکھ تجکو سہنا
میرا ہردہ بھیا کھوٹو سوچ نہیں نے کینی نہ جانوں کارن کیا ہوئی مت میری ہینی
اب کیا کروں اوپاو بات میں آپ بگاڑی کٹھن اوستھا گربھ گئی بن دیکھے پیاری
نہ مینے انجنا بین نہ کچھ نشچہ کینا بن دیکھے اپرادھ بیٹی کو میں تراہ دینا
ہائے جائے پیٹ میرا پھوٹ جب سے تیری اوئے آہ دور میرے پر رہ انجنا پیاسی جاوے
ہائے پالی دُکھ اٹھا بہت میں لاڈ لڈائے ہوتی تھی بے چین ذرا دُکھی اس کو پائے
گئی جنگل سدھار آہ وہ میری پیاری میں بھی اتی کھوٹو بیٹی دہن سکھی تمھاری
ہوں ایسی نرلج پران نہ میرے چھوٹے دیکھ بیٹی کی بپت نین نہ میرے پھوٹے
دھرگ جیون سنسار بات یہ ہینے جانی ہوئے داس بے چین گری دھرتی پر رانی

باب پندرھواں

ہائے وہ کہاں گئی

ناظرین رانی کی باتیں سُن اور اس کی یہ حالت دیکھکر پون جی کی آنکھوں کے

आगे वही फोटो ख्वाब का फिर गया जिस को देखकर ये पहले रोज लंका में परेशान हुआ था। खुदरफता सा हो खडा हो गया और मंत्री को साथ ले महेन्द्रपुर से निकल उस रास्ते को इख्तियार किया है जो बड के दरख्त के नीचे से होकर पशुमखा वन को जा रहा है। अगरचा दिल मे कई तरह के ख्याल पैदा हो उसकी मायूसी को बढा रहे हैं। मगर जब अञ्जना की भोली भाली सूरत उसको याद आ जाती है तो निहायत बेकरार हो दिल मे कहने लग जाता है। "अञ्जना! तेरी तमाम तकलीफों का बाइश मैं ही कमबख्त हुआ। पहले बारह (१२) साल उस तरह गुजरे। और अब तेरी बात को न माना और अंगूठी दे टालकर चला गया तो ये नौबत पहुँची।" खुदही "वालदा ने भी तो गजब ही कर दिया। मालूम नहीं उसकी अक्ल पर क्या पर्दा पड गया जो कुछ भी ख्याल न किया। उफ! अञ्जना! तेरे दिल मे उस वक्त क्या गुजरी होगी जब तुझको ..... कहा गया होगा। आह! तेरे नाजुक दिल ने इन बातो को क्योंकर बर्दाश्त किया होगा।" थोडे से सकूत के बाद "वाहरी किस्मत किस किस पर अफसोस करूँ। देखिए जिसका लख्ते जिगर थी उसने भी तो कुछ ख्याल न किया बल्कि पानी तक न पूछा। आह! वो किस उम्मीद से यहाँ आई होगी और कैसी मायूसी से पशुमखा वन को" खुद ही "ऐ पशुमखा वन! वहाँ तो बेशुमार खुंखार दरिंदे फिरते होंगे वो क्या करती होगी। वहाँ तो कोई पनाह की जगह भी नहीं।"

आह! इस ख्याल के आते ही पवन निहायत बदहवास हो घोडे को रोक सोचने लग पडा तब मंत्री ने कहा

मंत्री "इस मे कोई शक नहीं कि आप के दिल को सख्त सदमा पहुँचा है। मगर अब गुजिश्ता बातों को याद करने से सिवाए रंज के कुछ हासिल न होगा। महराज! तकदीर बडी जबरदस्त है। उसके आगे किसी का चारा नहीं चलता।

آگے وہی فوٹو خواب کا پھر گیا۔ جس کو دیکھکر یہ پہلے روز لینکا میں پریشان
ہوا تھا۔ خود رفتہ سا ہو کھڑا ہو گیا۔ اور منتری کو ساتھ لے مہندر پور سے
نکل اُس رستہ کو اختیار کیا ہے جو بڑ کے درخت کے نیچے سے ہو کر پشومکھا
بن کو جا رہا ہے۔ اگرچہ دل میں کئی طرح کے خیال پیدا ہو اُس کی مایوسی کو بڑھا
رہے ہیں۔ مگر جب انجنا کی بھولی بھالی صورت اُس کو یاد آجاتی ہے تو نہایت
بیقرار ہو دل میں کہنے لگ جاتا ہے "انجنا! تیری تمام تکلیفوں کا باعث میں
ہی کمبخت ہوا پہلے تو بارہ ۱۲ سال اُس طرح گذرے۔ اور اب تیری بات کو نہ مانا
اور انگوٹھی دے ٹال کر چلا گیا تو یہ نوبت پہنچی" (خود ہی) "والدہ نے بھی تو غضب
ہی کر دیا! معلوم نہیں اُس کی عقل پر کیا پردہ پڑ گیا جو کچھ بھی خیال نہ کیا! اوف!
انجنا! تیرے دل میں اُس وقت کیا گذری ہوگی؟ جب تجکو..... کہا
گیا ہوگا۔ آہ! تیرے نازک دل نے ان باتوں کو کیونکر برداشت کیا ہوگا!" (تھوڑے
سے سکوت کے بعد) "واہ ری قسمت! کس کس پر افسوس کروں۔ دیکھئے جسکا
لخت جگر تھی اُس نے بھی تو کچھ خیال نہ کیا۔ بلکہ پانی تک نہ پوچھا۔ آہ! وہ کس
امید سے یہاں آئی ہوگی اور کیسی مایوسی سے پشومکھا بن کو (خود ہی) "ایں! پشو
مکھا بن!! وہاں تو بیشمار خونخوار درندے پھرتے ہوں گے۔ وہ کیا کرتی ہوگی!
وہاں تو کوئی پناہ کی جگہ بھی نہیں!"

آہ! اس خیال کے آتے ہی پون نہایت بدحواس ہو گھوڑے کو روک
سوچنے لگ پڑا۔ تب منتری نے کہا۔

منتری۔ اس میں کوئی شک نہیں کہ آپ کے دل کو سخت صدمہ پہنچا ہے
مگر اب گذشتہ باتوں کو یاد کرنے سے سوائے رنج کے کچھ حاصل نہ ہوگا۔
مہاراج! تقدیر بڑی زبردست ہے اس کے آگے کسی کا چارہ نہیں چلتا

उस बेचारी की किस्मत में तो यही लिखा था। किसी का कुछ कसूर नहीं। आप खुद दाना हैं। इन बातों को अच्छी तरह जानते हैं। मेरे कहने की जरूरत नहीं।"

पवन "मंत्री मैं सब कुछ जानता हूँ। अच्छी तरह समझता हूँ। अपने न सम्भलने वाले दिल को बहुतेरा सम्भालता हूँ। मगर जब उसकी वो शक्ल जो ख्वाब मे देखी थी और पशुमखा वन का जाना याद आता है तो सर आसमान की तरह चक्कर खा जाता है। और बेइख्तियार हो जाता हूँ। सच कहता हूँ मैं अब वो पवन नहीं रहा। रंजोगम का मुकाबला है। न खाने से रखबत न पानी की प्यास है। रात को नीद नहीं आती। माहिबेआब की तरह तडपता रहता हूँ। अगर कुछ ख्याल है तो ये कि वो बेगुनाह कैसी मुसीबत मे पड गई। पशुमखा वन जैसे सुनसान वीरान जंगल में क्योंकर रहती होगी? वहाँ तो एक रोज रहना दुशवार है। उसको तो साल भर के करीब हो गया। अब उसको कहाँ देखूँगा।" खुद ही "अच्छा अगर मिल गई तो बेहतर। वरना पवन भी जिन्दा न रहेगा। इसी जगह भटकता मर जाएगा।"

मंत्री "क्यों इस कदर घबराते हो? सब्र और इस्तकलाल से काम लो। अगर उसकी हयात (जिन्दगी) है तो कोई उसको नुकसान नहीं पहुँचा सकता। हाँ तकलीफ जरूर है।" इस तरह की बातें करते करते पशुमखा वन पहुँच गए। जिसको देखते ही बदन मे सनसनाहट सी हो गई। कई तरह के ख्याल पैदा हो बिच्छू की तरह डंक मारने लगे। और शाहे मशरिक भी मगरिब मे जा छुपा और रात की तारिकी और भी सितम करने लगी। तो एक दरख्त के साए में घोडों का बाग डोरों से बांध दिया। और खुद कुदरती सब्ज मखमली फर्श पर जमीन का तकिया बना लेट गए। नींद तो कोसो दूर है। हाँ करवटे लेते और सर्द आहे भरते रात गुजर गई। सुबह होते ही पवन रफाए हाजत के लिए मंत्री से कहकर चल पडा।

اُس بیچاری کی قسمت میں یونہی لکھا تھا۔ کسی کا کچھ قصور نہیں۔ آپ خود دانا ہیں۔ اِن باتوں کو اچھی طرح جانتے ہیں میرے کہنے کی ضرورت نہیں۔

پون۔ منتری! میں سب کچھ جانتا ہوں۔ اچھی طرح سمجھتا ہوں۔ اپنے نہ سنبھلنے والے دل کو بہتیرا سنبھالتا ہوں۔ مگر جب اُس کی وہ شکل جو خواب میں دیکھی تھی اور پشومکھا بن کا جانا یاد آتا ہے تو سر آسمان کی طرح چکر کھا جاتا ہے اور بے اختیار ہو جاتا ہوں۔ سچ کہتا ہوں میں اب وہ پون نہیں رہا۔ رنج و غم کا مقابلہ ہے نہ کھانے سے رغبت نہ پانی کی پیاس ہے۔ رات کو نیند نہیں آتی۔ ماہی بے آب کی طرح تڑپتا رہتا ہوں۔ اگر کچھ خیال ہے تو یہ کہ وہ بیگناہ کس مصیبت میں پڑ گئی۔ پشومکھا بن جیسے سُنسان ویران جنگل میں کیونکر رہتی ہوگی؟ وہاں تو ایک روز رہنا دشوار ہے۔ اُس کو تو سال بھر کے قریب ہو گیا۔ اب اُس کو کہاں دیکھوں گا (خود ہی) اچھا! اگر مل گئی تو بہتر ورنہ پون بھی زندہ نہ رہیگا۔ اسی جگہ بھٹکتا بھٹکتا مر جائیگا!!!

منتری۔ کیوں اس قدر گھبراتے ہو؟ صبر اور استقلال سے کام لو اگر اُس کی حیات ہے تو کوئی اُس کو نقصان نہیں پونچا سکتا۔ ہاں تکلیف ضرور ہے۔

اس طرح کی باتیں کرتے کرتے پشومکھا بن میں پونچ گئے۔ جس کو دیکھتے ہی بدن میں سنسناہٹ سی ہو گئی۔ کئی طرح کے خیال پیدا ہو بچھو کی طرح ڈنک مارنے لگے۔ اور شاہِ مشرق بھی مغرب میں جا چھپا۔ اور رات کی تاریکی اور بھی ستم کرنے لگی تو ایک درخت کے سائے میں گھوڑوں کو باگ ڈوروں سے باندھ دیا۔ اور خود قدرتی سبز مخملی فرش پر زین کا تکیہ بنا لیٹ گئے۔ نیند تو کوسوں دور ہے ہاں کروٹیں لیتے اور سرد آہیں بھرتے رات گذر گئی۔ صبح ہوتے ہی پون رفع حاجت کے لئے منتری سے کہکر چل پڑا۔

आह! देखिए कैसी मायूसी से सर झुकाए जा रहा है कि दफतन (अचानक) जो कुछ ख्याल दिल मे आ गया। तो वहाँ खडा हो सोचने लग पडा और अब बडी हैरत से इधर उधर देख रहा है।

नाजरीन! वही ख्वाब का फोटो नजर में फिर गया है। और कानों में अञ्जना की आहोजारी की आवाज गूंज उठी है। और दिल में उसकी मुसीबत की दास्तान छिड गई है जिसने इसको निहायत बेकरार कर दिया है। बस फिर क्या था कभी तो रो पडता है और कभी खामोश हो दीवानों की तरह दाएँ बाएँ देखता हुआ जा रहा है। जब पाँच सात कोस इसी हालत मे चला गया तो एक नदी दिखाई दी, जिसको देखते ही वहीं खडा हो गया है और अब पीछे की तरफ देखकर कह रहा है "उफ! बडी दूर आ गए" ये कहकर रफाए हाजत (शौच) की और स्नान कर नित कर्म[१] किया। जब वहाँ से वापिस हुआ तो रास्ता भूल गया क्योंकि आती दफा अपने ख्याल की धुन में ऐसा महव (खोया) था कि रास्ते की कुछ तमीज न कर सका। और तमाम दिन इसी सरगरदानी (इधर उधर घूमना) में गुजरा। मगर मंत्री और घोडों का कुछ पता न मिला। जब फिरते फिरते शाम हो गई, बदन सुस्त पड गया, टांगो ने जवाब से दिया, आँखे देखते देखते थक गई और दिल घबरा गया तो हारकर एक दरख्त के नीचे बैठ गया। आह! इस वक्त जो पवन के दिल मे गुजर रही है वही जानता है। या कुछ थोडा बहुत उसका अक्स इस वक्त मुसन्निफ के दिल पर पड रहा है जो उसकी हालत को अपने दिल मे महसूस कर लिख रहा है।

नाजरीन! जरा गौर फरमावें की एक अमीर का लडका जो नाजो नैमत से पला हो और तमाम उम्र ऐशो इशरत में बसर की हो। उस वक्त जबकि वो अपनी प्यारी बेगुनाह मुसीबत जदा औरत की तलाश में एक गमख्वार को साथ के घर से निकला और

१ संध्या उपासना

آہ! دیکھئے کیسی مایوسی سے سر جھکائے جا رہا ہے۔ کہ دفعتاً جو کچھ خیال دل میں آگیا تو وہیں کھڑا ہو سوچنے لگ پڑا اور اب بڑی حیرت سے اِدھر اُدھر دیکھ رہا ہے۔

ناظرین! وہی خواب کا فوٹو نظر میں پھر گیا ہے۔ اور کانوں میں انجنا کی آہ و زاری کی آواز گونج اٹھی ہے اور دل میں اُسی کی مصیبت کی داستان چھڑ گئی ہے۔ جس نے اس کو نہایت بیقرار کر دیا ہے۔ بس پھر کیا تھا کبھی تو رو پڑتا ہے اور کبھی خاموش ہو دیوانوں کی طرح دائیں بائیں دیکھتا ہوا جا رہا ہے جب پانچ سات کوس اسی حالت میں چلا گیا تو ایک ندی دکھائی دی۔ جس کو دیکھتے ہی ہیں کھڑا ہو گیا ہے۔ اور اب پیچھے کی طرف دیکھ کر کہہ رہا ہے۔ "اُف! بڑی دور آ گئے" یہ کہہ کر رفع حاجت کی اور اشنان کرنت[1] کرم کیا۔ جب وہاں سے واپس ہوا تو راستہ بھول گیا۔ کیونکہ آتی دفعہ اپنے خیال کی دُھن میں ایسا محو تھا کہ راستہ کی کچھ تمیز نہ کر سکا۔ اور تمام دن اسی سرگردانی میں گذرا مگر منتری اور گھوڑوں کا کچھ پتہ نہ ملا۔ جب پھرتے پھرتے شام ہو گئی بدن سُست پڑ گیا۔ ٹانگوں نے جواب دیدیا۔ آنکھیں دیکھتے دیکھتے تھک گئیں اور دل گھبرا گیا۔ تو ہار کر ایک درخت کے نیچے بیٹھ گیا۔

آہ! اس وقت جو پون کے دل میں گذر رہی ہے وہی جانتا ہے۔ یا کچھ تھوڑا بہت اُس کا عکس اس وقت مصنف کے دل پر پڑ رہا ہے جو اُس کی حالت کو اپنے دل میں محسوس کر لکھ رہا ہے۔

ناظرین ذرا غور فرمادیں کہ ایک امیر کا لڑکا جو ناز و نعمت سے پلا ہو اور تمام عمر عیش و عشرت میں بسر کی ہو۔ اُس وقت جب کہ وہ اپنی پیاری بیگناہ! مصیبت زدہ عورت کی تلاش میں ایک غمخوار کو ساتھ لے گھر سے نکلا۔ اور

और ऐसे लकोदफ जंगल में हजारों खुंखार दरिंदे और बेशुमार जहरीले जानवर हों और कोई जगह पनाह की न हो तो इस हालत में उसके रफीक का गुम होना और खुद तनहा रहना एक थोडी सी बात नहीं। एक तरफ तो औरत का गम और मंत्री की जुदाई सता रही है और दूसरी तरफ जंगली जानवरों की खौफनाक आवाजें कानों में पहुँच दिल को हिला रही हैं। और आफ्ताब का मगरिब को जाना रात की आमद आमद सुना रहा है। मगर इन सबकी कुछ भी परवाह न करता हुआ हमारा बहादुर उसी दरख्त के नीचे बेसरोसामान तकदीर की शिकायत करता हुआ कह रहा है "ऐ बेरहम फलक! तुझे जरा भी गमजदों की हालत पर रहम नहीं आता। जरा ख्याल तो कर माँ बाप को छोड घर बार से मुँह मोड मंत्री को साथ ले उस प्राणप्यारी की तलाश मे आया था कि दो घडी उससे बात कर गम गलत कर लिया करूँगा। लेकिन हाय तुझको वो भी नागवार गुजरा और पहली ही मंजिल में उसको जुदा कर दिया। ऐ जालिम! इतना क्यों सता रहा है। तेरे जुल्म की कुछ इन्तहा भी है कि नहीं। मैने कौन सा ऐसा गुनाह किया जिस के एवज हाथ धोकर मेरे पीछे पड गया है। अगर तुझको यही मंजूर है तो मिसबत कहता हूँ की मेरा खातमा कर ताकि हर रोज की तकलीफ से निजात हो।" फिर खुद ही कुछ सोचकर "नहीं नहीं! ऐसा न करना ईश्वर के वास्ते ऐसा हर्गिज न करना। मैंने अभी उस प्राणप्यारी से मिलकर अपने कसूर की माफी माँगनी है। आह! वो इस वीरान जंगल मे क्योंकर रहती होगी।" ये कहा और बेहोश हो वहीं लेट गया। जब कुछ अरसे के बाद होश आई तो क्या देखता है कि चारो तरफ आलमे सकूत है। न तो कोई परिन्दा ही पर फडकता है और न ही किसी दरिंदे की आवाज आती है। हाँ कभी कभी गीदड हुआ हुआ करते सुनाई देते हैं। या हवा फराटे भर रही है। और रात भी ऐसी अंधेरी है कि हाथ

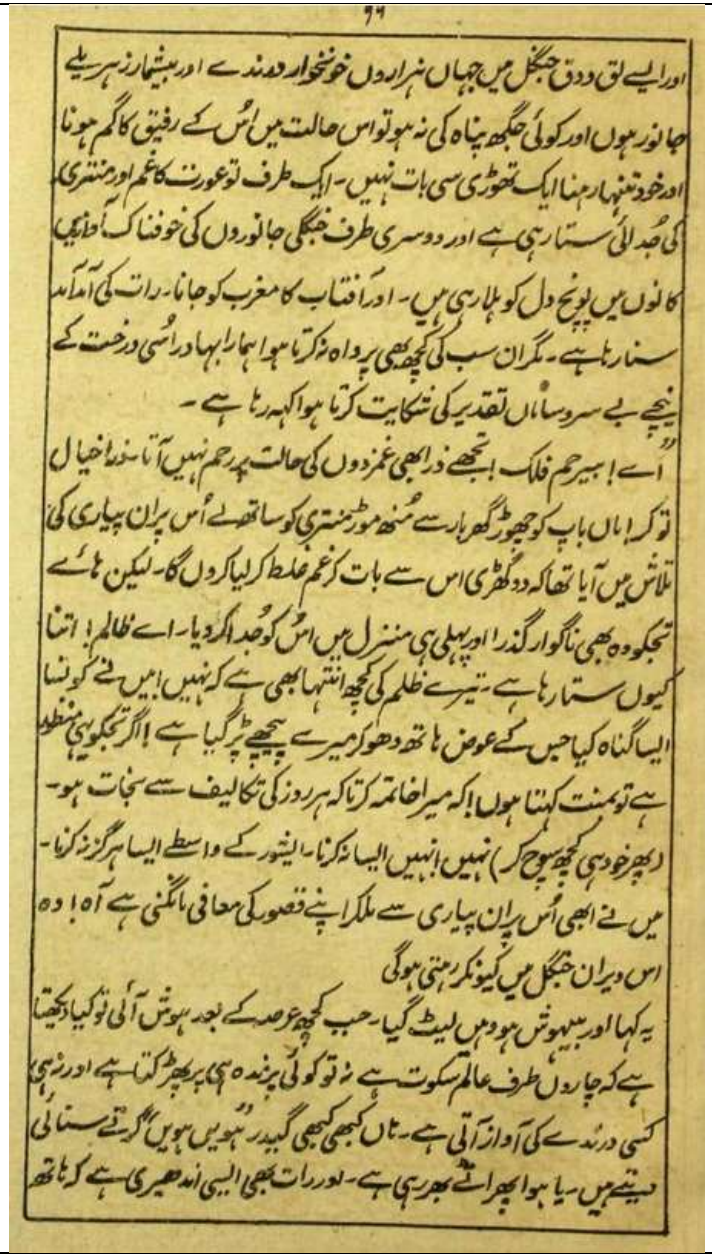

को हाथ नहीं सूझता। वही खुदरो पौधे, जिन को दिन में देखने से उस परब्रह्म की कुदरत नजर आती थी, इस वक्त डरावने मालूम होते हैं। आह! पवन की अजीब हालत हो रही है। अगर मुँह सर लपेट लेटता है तो अञ्जना की वही मायूस सूरत सामने आ जाती है। जिस के साथ ही बुरे बुरे ख्याल दिमाग से उतर चुटकियाँ लेने लग जाते हैं। तो बेकरार हो उठ बैठता है। हाँ अगर कुछ तस्कीन (आराम) होती है तो आसमान पर तारों को देखने से। मगर अफसोस इसके मुंतशिर (बिखरे हुए) ख्यालात इसको इस तरफ देखने की भी इजाजत नहीं देते। ज्योँही आसमान की तरफ देखता है वही फलक के जोरोजफा याद आ जाते हैं, तो बेचैन हो जाता है। गर्ज इसी परेशानी मे रात गिजरी तो सुबह को फिर तलाश करना शुरु कर दिया। मगर कुछ सुराग न मिला। जब चार दिन इसी तरह गुजर गए और तमाम जंगल छान मारा और उसका कुछ पता न मिला तो हैरान हो एक दरख्त के नीचे बैठ गया। अभी थोडी देर ही सुस्ताया होगा कि फिर कुछ वहम सा उठा और दाहिनी तरफ जो बहुत से गुंजान दरख्त दिखाई दिए चला गया। थोडी दूर जाने पर एक मसमारशुदा चाह (गड्ढा) दिखाई दिया। न मालूम क्या नजर पडा कि उसमे झांकते ही चला गया और अब कुछ चीज जमीन पर से उठाकर देख रहा है।

आह! ये क्या है कि जिसको देखते देखते इसके चेहरे का रंग फक हो गया है और हैरत अंगेज ख्यालों ने पैदा हो इसके मायूस दिल पर कबजा कर लिया है।

नाजरीन! ये वही अंगूठी है जो इसने अञ्जना को बतौर निशानी के दी थी। जिसको अब उस जगह देखकर हवास बाफ्ता हो रहे हैं। और कई तरह के ख्याल पैदा

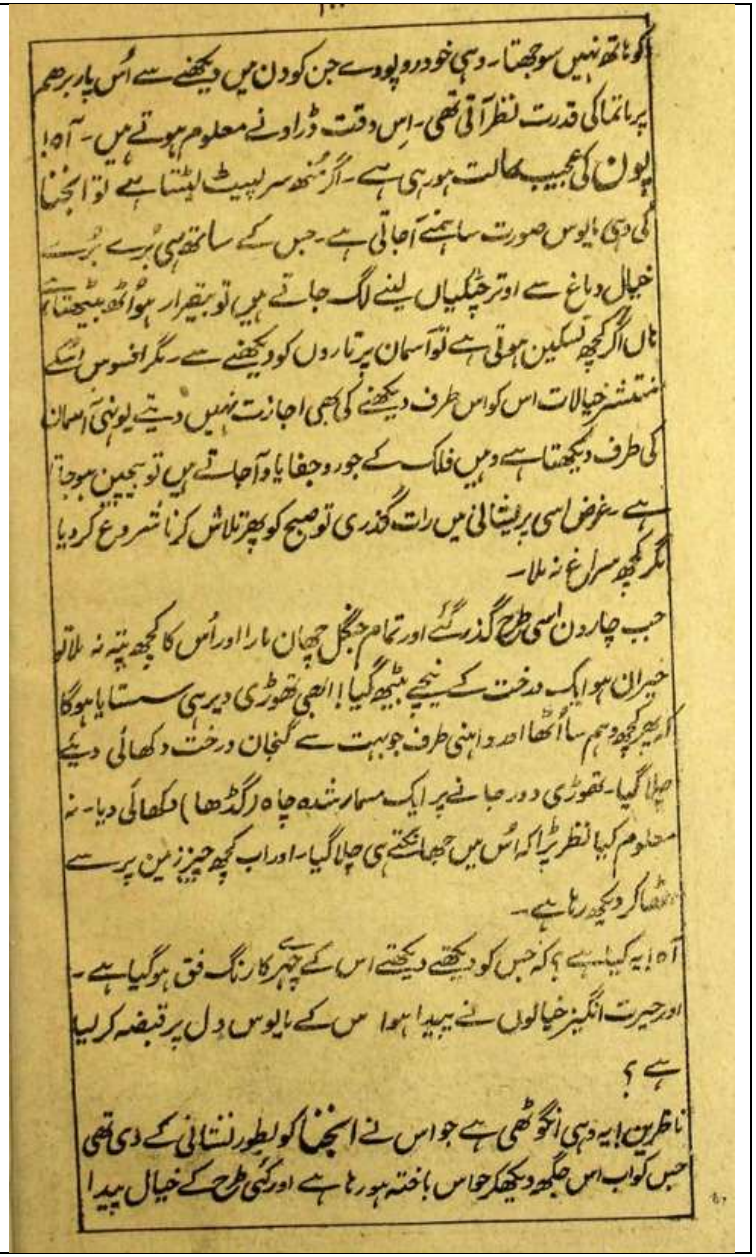

کو ہاتھ نہیں سوجھتا۔ وہی خودرو پودے جن کو دن میں دیکھنے سے اُس پار برہم
پرماتما کی قدرت نظر آتی تھی۔ اِس وقت ڈراونے معلوم ہوتے ہیں۔ آہ!
پون کی عجیب حالت ہو رہی ہے۔ اگر منھ سر لپیٹ لیٹتا ہے تو انجنا
کی وہی مایوس صورت سامنے آجاتی ہے۔ جس کے ساتھ ہی بُرے بُرے
خیال دماغ سے اوتر چٹکیاں لینے لگ جاتے ہیں تو بیقرار ہو اُٹھ بیٹھتا ہے
ہاں اگر کچھ تسکین ہوتی ہے تو آسمان پر تاروں کو دیکھنے سے۔ مگر افسوس اُسکے
منتشر خیالات اس کو اس طرف دیکھنے کی بھی اجازت نہیں دیتے یونہی آسمان
کی طرف دیکھتا ہے وہیں فلک کے جور و جفا یاد آجاتے ہیں تو بیچین ہو جاتا
ہے۔ غرض اسی پریشانی میں رات گذری تو صبح کو پھر تلاش کرنا شروع کر دیا
مگر کچھ سراغ نہ ملا۔

جب چار دن اسی طرح گذر گئے اور تمام جنگل چھان مارا اور اُس کا کچھ پتہ نہ ملا تو
حیران ہو ایک درخت کے نیچے بیٹھ گیا! ابھی تھوڑی دیر ہی سستایا ہوگا
کہ پھر کچھ وہم سا اُٹھا اور داہنی طرف جو بہت سے گنجان درخت دکھائی دیئے
چلا گیا۔ تھوڑی دور جانے پر ایک مسمار شدہ چاہ (گڈھا) دکھائی دیا۔ نہ
معلوم کیا نظر پڑا کہ اُس میں جھانکتے ہی چلا گیا۔ اور اب کچھ چیز زمین پر سے
اُٹھا کر دیکھ رہا ہے۔

آہ! یہ کیا ہے؟ کہ جس کو دیکھتے دیکھتے اس کے چہرے کا رنگ فق ہو گیا ہے۔
اور حیرت انگیز خیالوں نے پیدا ہو اس کے مایوس دل پر قبضہ کر لیا
ہے؟

ناظرین! یہ وہی انگوٹھی ہے جو اس نے انجنا کو بطور نشانی کے دی تھی
جس کو اب اس جگہ دیکھکر حواس باختہ ہو رہا ہے اور کئی طرح کے خیال پیدا

हो इसके दिमाग से दिल और दिल से दिमाग को जा रहे हैं। मगर कुछ समझ मे नहीं आता कि ये अंगूठी उस गड्ढे में क्योंकर आई। आखिर उसकी हैरानी हद दर्जे की बढ हई तो सर को पकडे वही बैठ गया। थोडी देर के सकूत के बाद जिस ख्याल ने इसके दिमाग को परागन्दा कर दिल दिल को परेशानगी में डाल बोलने पर आमादा किया वो ये है। "बस अञ्जना का मिलना दुश्वार है" ये कहा और खामोश हो गया। थोडी देर के बाद सर्द आह भर कहने लगा।

"आह! मेरा ख्याल था कि वो जंगल में नहीं आई वरना जरूर उसका कुछ न कुछ सुराग मिलता। लेकिन हाय! अफसोस उसको तो किसी दरिंदे ने हमेशा के लिए मुझसे जुदा कर दिया है। वरना वो जीते जी कभी इसको अपने से अलैहदा न करती। प्यारी! तेरी मौत का बाइश मैं ही बदबख्त हुआ। आह! इस जगह इस उम्मीद से आया था कि तुम को तलाश कर तुम्हारा गम गलत करूँगा। और जिन के सामने तेरी इस्मत पर धब्बा लगाया गया था उनही के रूबरू तेरी पाकदामनी साबित करूँगा। मगर हाय अफसोस कोई भी आरजू पूरी न हुई और सब उम्मीदे खाक में मिल गईं। अब मेरा भी जीना ला हासिल है। तबीर कुनद बंदा तकदीर कुनद खंदा।"

इस तरह कह ही रहा था कि सर चक्कर खा गया। आँखो के आगे अंधेरा छा गया तो सर को पकड कर वही बैठ गया। जब कुछ अफाका हुआ तो कहने लगा "मेरी सजा अब यही है कि इसी जगह जलकर खाक हो जाऊँ।"

ये सोच और मुसम्मम (पक्का) इरादा कर के उसी गड्ढे मे लकडियाँ जमह कर चिता बनाई और पत्थरी से आग निकाल उसमे लगाई। और आसमान की तरफ देखकर कहने लगा "ऐ फलक सितमगर तुमने मेरी सब उम्मीदों का खून कर दिया सब आरजुओं को खाक में"

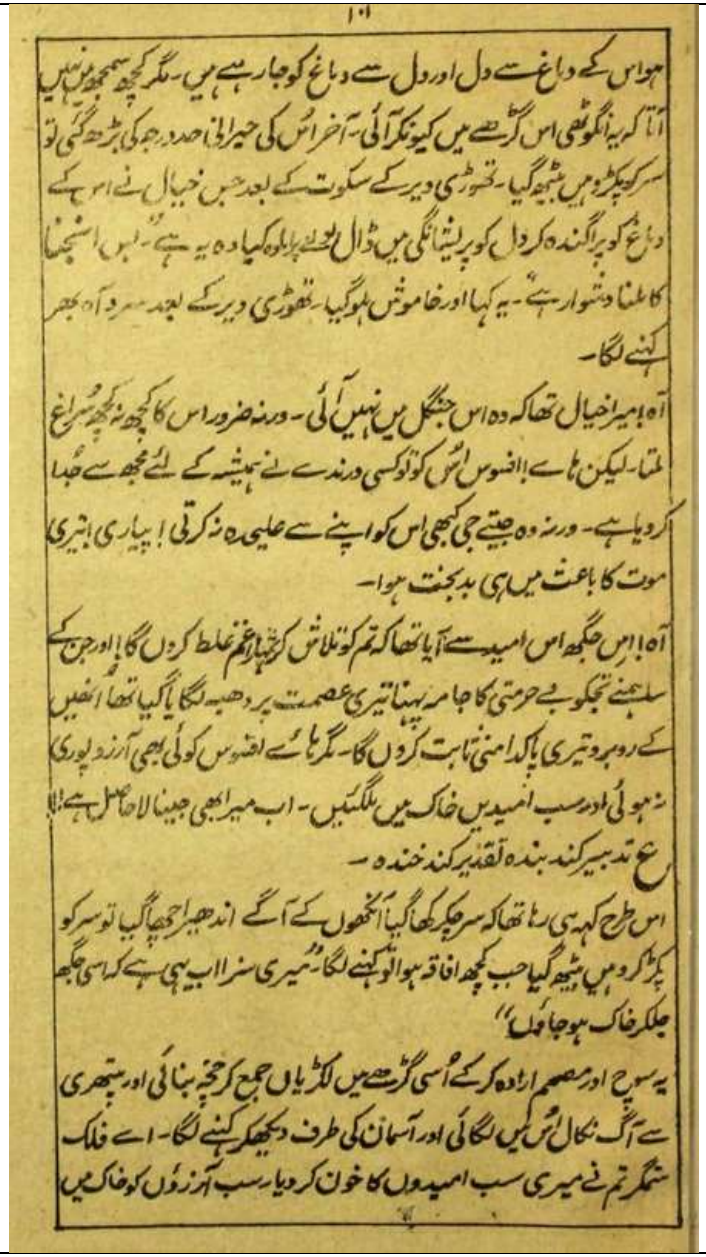

मिला दिया और इस प्यारी सूरत को हमेशा के लिए मुझसे जुदा कर दिया। जालिम! तेरी ही बदौलत मुझको भी इस दुनिया से नामुराद जाना पडा। अच्छा तेरा भला हो। ये कहा और ईश्वर से प्रार्थना कर

बाब (अध्याय) सोलहवाँ

मेरी अक्ल पर क्यों पत्थर पड गए

शाम का वक्त है जबकि रात कि तारिकी बढ रही है। और राजा प्रह्लाद विद्याधर के महल में भी जा बजा शमादान रोशन हैं। मगर ताहम तमाम महल में कुछ सन्नाटा सा छा रहा है। और कमरे कमरे में दहशत बरस रही है। किसी के बोलने की आवाज नहीं आती। हाँ सर्द आहों की आंधी चल रही है। रानी कितुमती गमगीन सूरत बनाए सर झुकाए पलंग पर बैठी है और राजा प्रह्लाद विद्याधर एक जरनिगार चौकी पर परेशान सूरत बनाए रानी की तरफ देख रहा है। और चंद ख्वासे थोडी दूर सामने चुपचाप खडी हैं। जब कुछ देर यूँही गुजर गई तो राजा रानी से मुखातिब हो पुरदर्द लहजे में कहने लगा।

राजा "प्रियजी! क्या पवन अञ्जना के बयान कि तसदीक (पुष्टी) करता है? और अब कहाँ गया है?"

रानी सर्द आह भर कर "जी हाँ! वो तो उसकी जलावतनी सुनते ही अफसरदाखातर हो बगैर खाना खाने के अञ्जना को बेकसूर बतलाता हुआ उसकी तलाश मे शायद महेन्द्रपुर को चला गया है।"

राजा तेवर बाल गुस्से मे हो "आह! गजब हुआ! मुफ्त में मैं उस बेगुनाह

ملا دیا۔ اور اُس پیاری صورت کو ہمیشہ کے لئے مجھ سے جُدا کر دیا۔ ظالم! تیری ہی بدولت مجکو بھی اس دنیا سے نامراد جانا پڑا۔ اچھا تیرا بھلا ہو۔ یہ کہا اور ایشور سے پرارتھنا کر

باب سولھواں

میری عقل پر کیوں پتھر پڑ گئے

شام کا وقت ہے جب کہ رات کی تاریکی بڑھ رہی ہے اور مصنوعی روشنی گھر گھر ہونی شروع ہو گئی ہے۔ اگرچہ راجہ پرھلاد و دیادھر کے محل میں بھی جا بجا شمعدان روشن ہیں۔ مگر تاہم تمام محل میں کچھ سناٹا سا چھا رہا ہے اور کمرے کمرے میں وحشت برس رہی ہے۔ کسی کے بولنے کی آواز نہیں آتی۔ ہاں! سرد آہوں کی آندھی چل رہی ہے۔ رانی کیتومتی غمگین صورت بنائے سر جھکائے پلنگ پر بیٹھی ہے اور راجہ پرھلاد و دیادھر ایک زرنگار چوکی پر پریشان صورت بنائے رانی کی طرف دیکھ رہا ہے۔ اور چند خواصیں تھوڑی دور سامنے چپ چاپ کھڑی ہیں۔

جب کچھ دیر یونہی گذر گئی تو راجہ رانی سے مخاطب ہو پر درد لہجہ میں کہنے لگا۔

راجہ۔ پریہ جی! کیا پون انجنا کے بیان کی تصدیق کرتا ہے؟ اور اب کہاں گیا ہے؟

رانی۔ (سرد آہ بھر کر) جی ہاں! وہ تو اُس کی جلاوطنی سنتے ہی افسردہ خاطر ہو بغیر کھانا کھانے کے انجنا کو بے قصور بتلاتا ہوا اسکی تلاش میں شاید مہندر پور کو چلا گیا ہے۔

راجہ۔ (تیور بدل غصہ میں ہو) آہ! غضب ہوا! مفت میں میں اُس بیگناہ

अञ्जना की पाकदामनी पर शक लाया। हाय! मेरी अक्ल पर क्यों पत्थर पड गए कि कुछ ही ख्याल न किया और तुम्हारी बातों में आ उसकी बेहुरमती का बाइश हुआ।" थोडे सकूत के बाद "उफ! पवन दिल में क्या ख्याल करता होगा? महेन्द्र राय को क्या जवाब दूँगा। आह! तुमने तो मुझको सबकी नजरों से गिरा दिया। खाक में मिला दिया और अब 'जी हाँ' कर सुनाया।"

नाजरीन! रानी जो पवन की तकरीर को सुनकर पहले ही से बेकरार हो रही थी अब राजा को पुर गजब देख और भी घबरा हैरत में पड गई। अगरचा इसके सब अजा सुस्त पड गए हैं। मगर कलेजा ही है जो रह रह कर उछल पडता है। और दिल देकाबू हुआ जाता है। नजर जमीन पर दहशत बरसा रही है। दिमाग अपना ही मनतक पढ रहा है कि ना आक़िबत अंदेशी का नतीजा ही है जो आज पेश आ रहा है। और रानी बेचारी अपने किए पर पशेमान (पछता) हो रही है। राजा की बातों का जवाब देना तो दरकिनार दिल में मौत से हमकलाम हो रही है। आखिर राजा की बाते सुनते सुनते गम का गुब्बार कलेजे से निकल मगज में पहुँचा तो गरदनी खाती हुई पलंग से नीचे गिर पडी।

रानी की ये हालत देखकर राजा को और ही फिक्र दामनगीर हो गई। जल्दी से उसको उठा कर कहने लगा।

राजा "प्रियजी! अब तुम्हारा इस कदर घबराना ला हासिल है। इन बातों पर पहले गौर करनी चाहिए ताकि बाद मे नदामत (शर्म) उठानी न पडे। मुझको हैरानगी तो इस बात पर आती है कि जरा जरा बात पर तुम इस कदर दलील करना कि घण्टों गुजार देना और अब ऐसे नाजुक मामले पर कुछ भी ख्याल न किया। जरूर तुम किसी के बहकाने मे आ गई होगी वरना ऐसी उम्मीद तुम से तो हर्गिज न थी।"

रानी सर्द आह भर राजा की तरफ देखकर "हाय! मुझको तो कमबख्त ललिता[१] ने धोखा

१ एक लौंडी का नाम

انجنا کی پاکدامنی پر شک لایا! ہائے میری عقل پر کیوں پتھر پڑ گئے کہ کچھ ہی خیال نہ کیا۔ اور تمھاری باتوں میں آ اُس کی بے حرمتی کا باعث ہوا! (تھوڑے سکوت کے بعد) اوف! پون دل میں کیا خیال کرتا ہوگا؟ مہندر رائے کو کیا جواب دونگا۔ آہ! تم نے تو مجکو سب کی نظروں سے گرا دیا۔ خاک میں ملا دیا اور اب "جی ہاں" کہہ سنایا!

ناظرین! رانی جو پون کی تقریر کو سُنکر پہلے ہی سے بیقرار ہو رہی تھی۔ اب راجہ کو پُرغضب دیکھ اور بھی گھبرا حیرت میں پڑ گئی۔ اگرچہ اس کے سب اعضا سُست پڑ گئے ہیں۔ مگر کلیجہ ہی ہے جو رہ رہ کر اوچھل پڑتا ہے اور دل بے قابو ہوا جاتا ہے نظر زمین پر دہشت برسا رہی ہے۔ دماغ اپنا ہی منطق پڑھ رہا ہے کہ ناعاقبت اندیشی کا نتیجہ یہی ہے جو آج پیش آ رہا ہے اور رانی بیچاری اپنے کئے پر پشیمان ہو رہی ہے۔ راجہ کی باتوں کا جواب دینا تو درکنار دل میں موت سے ہمکلام ہو رہی ہے۔ آخر راجہ کی باتیں سُنتے سُنتے غم کا غبار کلیجے سے نکل مغز میں پہونچا تو گردنی کھاتی ہوئی پلنگ سے نیچے گر پڑی!

رانی کی یہ حالت دیکھکر راجہ کو اور ہی فکر دامنگیر ہو گئے۔ جلدی سے اُس کو اُٹھا کر کہنے لگا۔

راجہ۔ پریہ جی اب تمھارا اس قدر گھبرانا لاحاصل ہے اِن باتوں پر پہلے غور کرنی چاہئے۔ تاکہ بعد میں ندامت اُٹھانی نہ پڑے۔ مجکو حیرانگی تو اس بات پر آتی ہے کہ ذرا ذرا بات پر تو اس قدر دلیل کرنا کہ گھنٹوں گذار دینا۔ اور اب ایسے نازک معاملہ پر کچھ بھی خیال نہ کیا! ضرور تم کسی کے بہکانے میں آ گئی ہوگی۔ ورنہ ایسی امید تم سے تو ہرگز نہ تھی۔

رانی۔ (سرد آہ بھر راجہ کی طرف دیکھ کر) ہائے مجکو تو کمبخت للتا[۱] نے دھوکھا

۱ ایک لونڈی کا نام

दिया। मालूम नहीं उसने क्या जादू कर दिया कि बगैर तहकीक किए मैं उस बेचारी से बदजब हो गई। उफ! मैंने बडा जुल्म किया।"

राजा "बेशक! इसमे कोई शक नहीं तुमने सख्त गलती की। न सिर्फ खुद बल्कि मुझको भी मुगालते मे डाला।" सर्द सांस लेकर "मगर खैर अब इन बातों से क्या होता है। उसके मुकद्दर में ही ऐसा लिखा था।" कुछ सोचने के बाद लौंडी से मुखातिब हुआ।

राजा "देखो! अभी रथवान से कहदो कि सुबह होते ही रथ तैयार करके ले आवे। हम प्यारी जी के साथ महेन्द्रपुर जावेंगे।"

बाब (अध्याय) सत्रहवाँ

राजा प्रीति सुर्या

दोपहर ढल चुकी है। आफ्ताब हसरत भरी निगाहों से दुनिया को देखता हुआ मगरिब को जा रहा है। मगर जमीन अभी तक पा प्यादा चलने वालो को न जाने हसकी वजह से या कुछ और बात से कि आगे बढने नहीं देती। इसलिए हम तो पीछे ही रह गए हैं मगर हमारी नजर किसी के देखने के इश्तियाक (लालसा) मे बहुत दूर आगे निकल गई हैं। सामने कुछ सब्जी सी दिखाई देती है लेकिन दूरी के बाइश हम अच्छी तरह देख नहीं सकते। हाँ सीन तो एक दिलकश मालूम होता है जिसके देखने के शौक ने हमको बेइख्तियार कर उनके नजदीक पहुँचा ही दिया। वह शकूक जो हमारे दिल में पैदा हो रहे थे रफह हो गए। और उस सब्ज वजार की माहियत को पहुँचे तो मालूम हुआ कि वह दरख्त जो दिखाई दे रहे थे कई एक किस्मों

دیا۔ معلوم نہیں اُس نے کیا جادو کر دیا کہ بغیر تحقیق کئے میں اُس بیچاری سے
بدظن ہو گئی۔ اوف! میں نے بڑا ظلم کیا!!!

راجہ۔ بیشک! اس میں کچھ شک نہیں! تم نے سخت غلطی کی۔ نہ صرف خود
بلکہ مجھکو بھی مغالطہ میں ڈالا (سرد سانس لیکر) مگر خیر اب ان باتوں سے کیا ہوتا
ہے۔ اُس کے مقدر میں ہی ایسا لکھا تھا! (کچھ سوچنے کے بعد) لونڈی سے
مخاطب ہوا۔

راجہ۔ دیکھو! ابھی رتھوان سے کہدو کہ صبح ہوتے ہی رتھ تیار کر کے لے آوے
ہم پریہ جی کے ساتھ مہندر پور جاویں گے۔

باب سترھواں

راجہ پرتی سوریا

دوپہر ڈھل چکی ہے۔ آفتاب حسرت بھری نگاہوں سے دنیا کو دیکھتا ہوا
مغرب کو جا رہا ہے۔ مگر زمین ابھی تک پا پیادہ چلنے والوں کو نہ جانے نحسہ کی وجہ
سے یا کچھ اور بات ہے کہ آگے بڑھنے نہیں دیتی اس لئے ہم تو پیچھے ہی رہ گئے
ہیں۔ مگر ہماری نظر کسی کے دیکھنے کے اشتیاق میں بہت دور آگے نکل گئی
ہے۔ سامنے کچھ سبزی سی دکھائی دیتی ہے۔ لیکن دوری کے باعث
ہم اچھی طرح دیکھ نہیں سکتے۔ ہاں سین تو ایک دلکش معلوم ہوتا ہے۔ جس کے
دیکھنے کے شوق نے ہم کو بے اختیار کر اُن کے نزدیک پہنچا ہی دیا! وہ شکوک
جو ہمارے دل میں پیدا ہو رہے تھے رفع ہو گئے۔ اور اُس سبزہ زار کی ماہیت
کو پہنچی تو معلوم ہوا کہ وہ درخت جو دکھائی دے رہے تھے کئی ایک قسموں

के हैं। मगर सब से ज्यादा आम के हैं जिन की हर एक डाली कशरत से फैलने के बाइश नीचे झुकी हुई है। गरीब क्या अमीर जिसने एक दफा इन आमों को देख पाया फौरन दिल ललचा गया। इसमे कोई शक नहीं कि गरीबों के लिए जिन्दगी का सहारा हैं क्योंकि जिसने दो चार भी खा लिए फिर दिन भर खाने का नाम न लिया। लेकिन अमीरो के लिए ये आली दरजे की नजीर बन कर दिखला रहे हैं कि जिस तरह हम सब के लिए फल तैयार कर सर झुकाए पुकार कर कह रहे हैं कि आओ मन माने आम तोडो और खाओ। इसी तरह तुम भी अपने फर्ज को याद कर मस्तहकों के हक को न भूलो और गरीबों को हिकारत की नजर से न देखो। क्योकि ईश्वर ने तुमको आली रुतबा दिया है। खैर अब इस तकरीर को जाने दो और इस अंगूर की बेल को देखो जिसके सब्ज पत्तों में से अदवे अदवे अंगूर के खुशे कैसे खुशनुमा दिखाई दे रहे हैं। और नजदीक ही गुलाब मोतियार बेल और कई तरह के खुशबुदार फूल अपनी खुशबु के खजाने से देखने वाले के दिमाग को मोत्तर कर रहे हैं। गर्ज जहाँ नजर पडती है निराला की नजारा दिखाई देता है। इस तरह सैर करते और कुदरती दिलचस्पियों को देखते हुए बाएँ तरफ को बढे। चंद आलीशान मकान दिखाई दिए तो दिल में आबादी का गुमान हुआ। उसी धुन में उस तरफ को चल दिए। थोडी दूर गए होंगे कि हमारा ख्याल सही निकला और एक शहर नजर पडा। ये तो हनुपुर है जहाँ अञ्जना देवी अपने मामू के साथ आई है।

आओ जरा उस बेचारी का हाल तो दरयाफ्त करें।

ओहो! राजा प्रीति सुर्या के घर तो कोई लडका लडकी नहीं और न ही अभी कुछ होने की उम्मीद है। तो फिर उसके महल के आगे शादियानें कैसे बज रहे हैं। और धूमधाम कैसी हो रही है। क्यों साहिब हैरान क्यो हो गए? अञ्जना

کے ہیں۔ مگر سب سے زیادہ آم کے ہیں جن کی ہر ایک ڈالی کثرت سے پھلنے
کے باعث نیچے جھکی ہوئی ہے۔ غریب کیا امیر جس نے ایک دفعہ ان
آموں کو دیکھ پایا فوراً دل للچا گیا! اس میں کوئی شک نہیں کہ غریبوں کے
لئے زندگی کا سہارا ہیں کیونکہ جس نے دو چار بھی کھا لئے پھر دن بھر کھانے کا
نام نہ لیا۔ لیکن امیروں کے لئے یہ اعلیٰ درجہ کی نظیریں کر دکھلا رہے ہیں کہ
جس طرح ہم سب کے لئے پھل تیار کر سر جھکائے پکار کر کہہ رہے ہیں کہ آؤ من
مانے آم توڑو اور کھاؤ اسی طرح تم بھی اپنے فرض کو یاد کر مستحقوں کے حق کو نہ بھولو
اور غریبوں کو حقارت کی نظر سے نہ دیکھو کیونکہ ایشور نے تم کو اعلیٰ رتبہ دیا ہے خیر یہ
اس تقریر کو جانے دو۔ اور اس انگور کی بیل کو دیکھو جس کے سبز پتوں میں سے ادوے
ادوے انگور کے خوشے کیسے خوشنما دکھائی دے رہے ہیں۔ اور نزدیک ہی گلاب
موتیا رویل اور کئی طرح کے خوشبودار پھول اپنی خوشبو کے خزانے سے دیکھنے والے کے
دماغ کو معطر کر رہے ہیں۔ غرض جہاں نظر پڑتی ہے نرالا ہی نظارہ دکھائی دیتا ہے
اس طرح سیر کرتے اور قدرتی دلچسپیوں کو دیکھتے ہوئے بائیں طرف کو جو بڑھے چند
عالیشان مکان دکھائی دیئے۔ تو دل میں آبادی کا گمان ہوا۔ اسی دھن میں اس
طرف کو چلدئے۔ تھوڑی دور گئے ہوں گے کہ ہمارا خیال صحیح نکلا اور ایک شہر نظر
پڑا۔

اہا! یہ تو ہنوپور ہے۔ جہاں انجنا دیوی اپنے ماموں کے ساتھ آئی ہے۔
آؤ ذرا اس بیچاری کا حال تو دریافت کریں۔
اوہو! راجہ پرتی سوریا کے گھر تو کوئی لڑکا لڑکی نہیں اور نہ ہی ابھی کچھ ہونے
کی امید ہے تو پھر اس کے محل کے آگے شادیانے کیسے بج رہے ہیں۔ اور
دھوم دھام کیسی ہو رہی ہے؟ کیوں صاحب! حیران کیوں ہو گئے! انجنا

के लडके का नामकरण संस्कार हो रहा है। उसी की खुशी मनाई जा रही है। राजा ने अपने शहर के नाम पर लडके का नाम हनुमान रखा है। वह देखिए इस वक्त अञ्जना भी उम्दा लिबास जेबेतन किए बैठी है। मगर उसका चेहरा कुछ ऐसा बशाश नहीं बल्कि उदास सा मालूम होता है। और दूसरी औरतो का गाना बजाना भी नहीं भाता। ये इसी फिक्र में है कि अगर आज अपने घर होती तो स्वामी (पवन) जी इस मौके को देख कैसे खुश होते। हाय! मालूम नहीं वो कहा हैं और मेरी निस्बत क्या ख्याल रखते हैं?

नाजरीन! जब अञ्जना देवी को इस जगह रहते कुछ अरसा गुजर गया मगर असजतराबी न गई, तो एक रोज रानी रवि सुन्दरी ने राजा से कहा।

रानी "महाराज! अञ्जना देवी दिन रात गमगीन रहती है। दिन आहोजारी करते और रात करवटें लेते और सर्द आहें भरते गुजार देती है। मेरे ख्याल से आप इसको महेन्द्रपुर ले जावें और उनकी तसल्ली कर वहाँ छोड आवें तो अच्छा है।"

राजा "प्रियजी! बेशक आप का ख्याल दुरुस्त है। मैंने भी अक्सर इसको गमगीन ही देखा है।" ये कहकर उसी वक्त रथ तैयार कर बसन्तमाला और अञ्जना को साथ ले महेन्द्रपुर को रवाना हुआ।

बाब (अध्याय) अठारहवाँ

अब तक वापिस नहीं आए

ठीक दोपहर का वक्त है जबकि आफ्ताब ने अपनी गजबनाक शवाई डालकर दुनिया को सुनसान बना रखा है। इस वक्त न तो कोई दरिंदा ही बोलता सुनाई

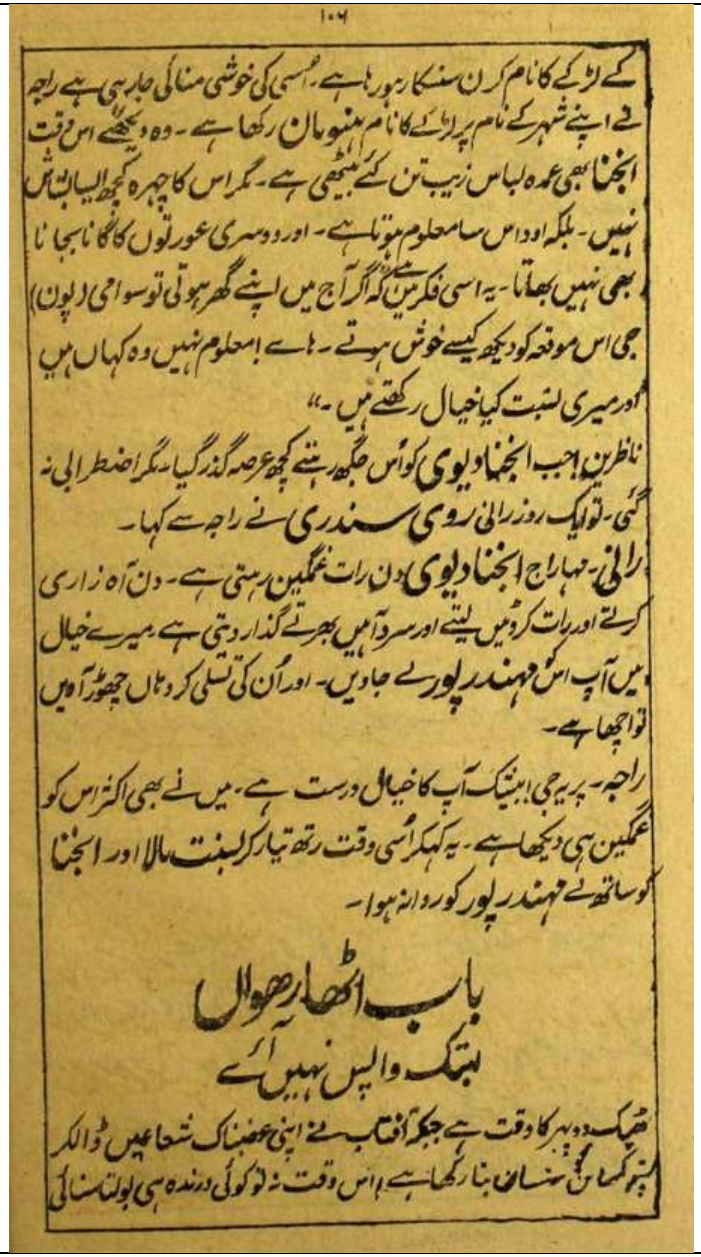

١٠٦

کے لڑکے کا نام کرن سنسکار ہو رہا ہے۔ اُسی کی خوشی منائی جا رہی ہے راجہ نے اپنے شہر کے نام پر لڑکے کا نام ہنومان رکھا ہے۔ وہ دیکھئے اس وقت انجنا بھی عمدہ لباس زیب تن کئے بیٹھی ہے۔ مگر اس کا چہرہ کچھ ایسا بشاش نہیں۔ بلکہ اوداس سا معلوم ہوتا ہے۔ اور دوسری عورتوں کا گانا بجانا بھی نہیں بھاتا۔ یہ اسی فکر میں ہے کہ اگر آج میں اپنے گھر ہوتی تو سوامی (پون) جی اس موقعہ کو دیکھ کیسے خوش ہوتے۔ ہائے! معلوم نہیں وہ کہاں ہیں اور میری نسبت کیا خیال رکھتے ہیں۔"

ناظرین! جب انجنا دیوی کو اُس جگہ رہتے کچھ عرصہ گذر گیا۔ مگر اضطرابی نہ گئی۔ تو ایک روز رانی روی سندری نے راجہ سے کہا۔

رانی۔ مہاراج انجنا دیوی دن رات غمگین رہتی ہے۔ دن آہ زاری کرتے اور رات کروٹیں لیتے اور سرد آہیں بھرتے گذار دیتی ہے۔ میرے خیال میں آپ اس کو مہندر پور لے جاویں۔ اور اُن کی تسلی کر وہاں چھوڑ آویں تو اچھا ہے۔

راجہ۔ پریہ جی! بیشک آپ کا خیال درست ہے۔ میں نے بھی اکثر اس کو غمگین ہی دیکھا ہے۔ یہ کہکر اُسی وقت رتھ تیار کر بسنت مالا اور انجنا کو ساتھ لے مہندر پور کو روانہ ہوا۔

باب اٹھارھواں

ابتک واپس نہیں آئے

ٹھیک دوپہر کا وقت ہے جبکہ آفتاب نے اپنی غضبناک شعاعیں ڈالکر دنیا کو سنسان بنا رکھا ہے۔ اس وقت نہ تو کوئی درندہ ہی بولتا سنائی

देता है और न ही कोई परिंदा उडता हुआ नजर आता है। क्यामत की उदासी छा रही है। हाँ कभी कभी हवा के झोंके आकर पत्तों की खडखडाहट करते हुए गुजर जाते हैं। बाद मे फिर सन्नाटे का आलम हो जाता है। अलबत्ता एक जानवर कूहकू कहता हुआ सुनाई दिया है। आह! ऐसे सुनसान वीरान जंगल में एक बांका जवान मूँछो को ताव दिए उम्दा सफेद पौशाक जेबतन किए, दुपट्टे का आँचल सर पर डाले एक दरख्त के नीचे खडा है। और जंगली झाडियों की तरफ देख रहा है। उसकी हसरत भरी निगाहे चारो तरफ दौड दौड कर किसी गमख्वार की तलाश में जाती हैं मगर बडी मायूसी के साथ वापिस आ जाती हैं। ईश्वर जाने दिल मे क्या सोचता है जो कुछ देर सर झुका जमीन की तरफ देखकर फिर सामने देखने लग जाता है। मगर जब इसका गमजदा दिल इसके काबू से निकल उसको मजबूर कर देता है तो उस बेखुदी के आलम मे दीवानों की तरह तीस चालीस कदम इधर उधर चला जाता है और रह रह कर झाडियों की तरफ देखता हुआ गमगीन हो वपिस आ जाता है। और जरासी आहट आने से चौकन्ना हो इधर उधर को देखने लग जाता है। उफ! इस वक्त तो गरमी निहायत दरजे की हो रही है और जंगल भी खौफनाक दिखाई देता है। ये नौजवान कौन है और क्यों इस कदर हैरान हो रहा है? आओ जरा इस को देखे तो सही कहीं पवन जी का मंत्री तो नहीं। आहा! ये तो वही है। वो देखो दोनों घोडे अभी तक वैसे बंधे हैं। बेचारा हैरान न हो तो क्या करे? वो रफह हाजत को सुबह से गए अब तक वापिस नहीं आए बदहवास न हो तो क्या करे! जब थोडा सा दिन बाकी रह गया तो दिल मे मुख्तलिफ ख्यालात पैदा हो घबराहट पैदा करने लगे। तब एक घोडे पर सवार हो दूसरे की बागडोर पकड इधर उधर तलाश करने लग पडा।

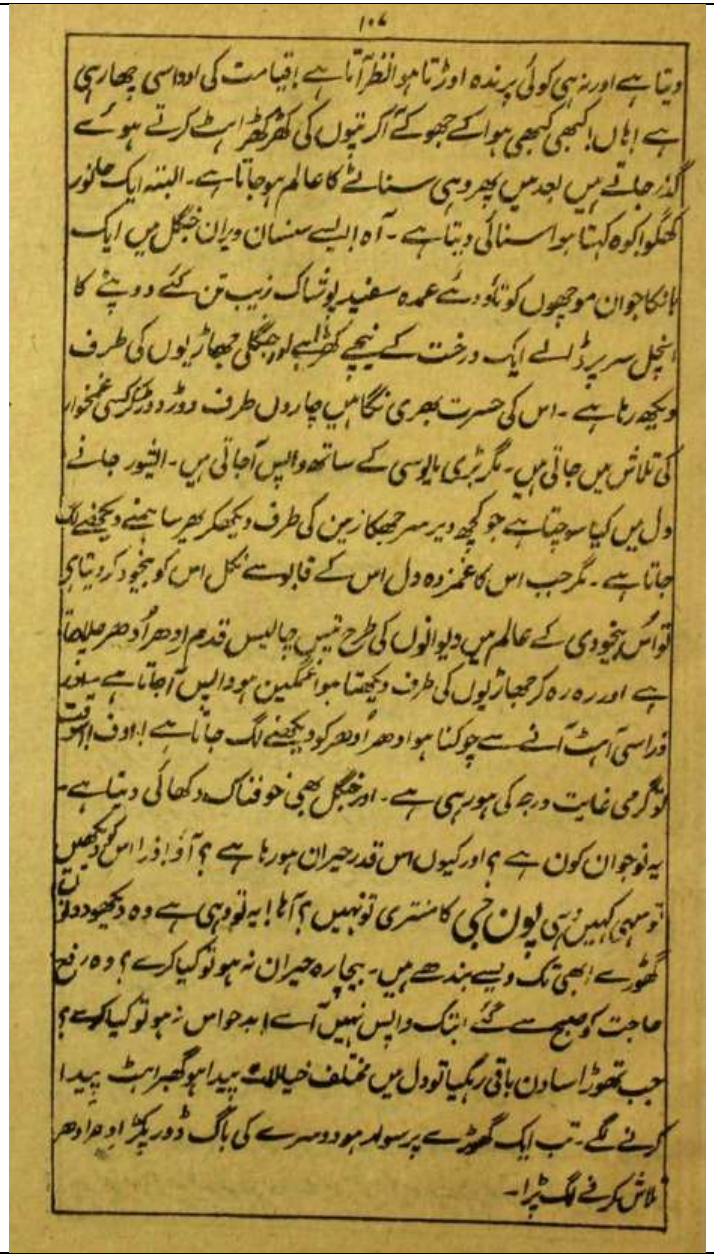

सात आठ कोस तक खूब चक्कर लगाया मगर पवन का कहीं भी पता न मिला तो हैरान हो कई तरह के ख्याल दौडाता हुआ शाम के वक्त एक दरख्त के नीचे बैठ गया और निहायत बेचैनी से रात बसर की। जब सुबह हुई तो फिर इसी काम मे मशगूल हो गया। दो रोज तक जब उनका कुछ भी निशान न मिला तो ख्याल किया कि शायद उनको अञ्जना मिल गई है और उसी खुशी में मुझे भूल महेन्द्रपुर चले गए हैं। ये सोचकर फौरन घोडे पर सवार हो महेन्द्रपुर को चल दिया।

बाब (अध्याय) उन्नीसवा

ये सब मेरे ही पूर्व कर्मों का फल है

जब दूसरी मर्तबा रानी बेगमोहिनी बेहोश हो जमीन पर गिर पडी तो राजा महेन्द्र राय बहुत घबरा गया और बडी कोशिश के बाद उसको होश मे ला कहने लगा।

राजा "प्रियजी! क्यों इस कदर फिक्र करती हो? अच्छा जो उसकी तकदीर मे लिखा था हो गया अब उन बातों को छोडो और उसके तलाश करने की फिक्र करो। उस बेचारी को तो एक घडी साल के बराबर गुजरती होगी। मालूम नहीं किस मुसीबत मे है।" इधर उधर देखकर "हैं! पवन कहा गया? उफ! तुम्हारी घबराहट में उसकी भी किसी ने खबर नहीं ली।"

रानी सर्द आह भर बात काटकर "स्वामीजी! मेरे कुछ इख्तियार में नहीं। जब मुझको अपनी बदसलूकी जो मैंने अञ्जना देवी के साथ की है याद आती है और सीने से बुखारात पैदा हो चक्कर दे बेहोश कर देते हैं तो बेबस हो जाती हूँ।

سات آٹھ کوس تک خوب چکر لگایا۔ مگر پون کا کہیں بھی پتا نہ ملا تو حیران ہو کئی طرح کے خیال دوڑاتا ہوا شام کے وقت ایک درخت کے نیچے بیٹھ گیا اور نہایت بیچینی سے رات بسر کی جب صبح ہوئی تو پھر اُسی کام میں مشغول ہو گیا۔ دو روز تک جب اُنکا کچھ بھی نشان نہ ملا تو خیال کیا کہ شاید اُنکو انجنا ملگئی ہے اور اُسی خوشی میں مجھے بھول مہندر پور چلے گئے ہیں۔ یہ سوچ کر فوراً گھوڑے پر اسوار ہو مہندر پور کو چلدیا۔

باب انیسواں

یہ سب میرے ہی پورب کرموں کا پھل ہے

جب دوسری مرتبہ رانی بیگم موہنی بیہوش ہو زمین پر گر پڑی تو راجہ مہندر رائے بہت گھبرا گیا۔ اور بڑی کوشش کے بعد اُس کو ہوش میں لانے لگا۔

راجہ۔ پریہ جی۔ کیوں اس قدر فکر کرتی ہو! اچھا جو اُس کی تقدیر میں لکھا تھا ہو گیا اب ان باتوں کو چھوڑو اور اُس کے تلاش کرنیکی فکر کرو۔ اُس بیچاری کو تو ایک ایک گھڑی سال کے برابر گذرتی ہوگی معلوم نہیں کس مصیبت میں ہے (اِدھر اُدھر دیکھکر) ہیں! پون کہاں گیا؟ اوف! تمھاری گھبراہٹ میں اُس کی بھی کسی نے خبر نہیں لی؟

رانی۔ (سرد آہ بھر بات کاٹکر) سوامی جی! میرے کچھ اختیار میں نہیں۔ جب مجکو اپنی بدسلوکی جو میں نے انجنا دیوی کے ساتھ کی ہے یاد آتی ہے۔ تو بے اختیار ہو دل دھڑک کلیجہ پھڑک کر رہجاتا ہے۔ اور سینے سے بخارات پیدا ہو مغز کو چیر سر کو چکر دے بیہوش کر دیتے ہیں تو بے بس ہو جاتی ہوں

हाय! कोई भी ऐसा नहीं करता जैसा कि मैंने।"

राजा "प्रियजी! जो वक्त गुजर जाए दाना उसका फिक्र नहीं करते। बल्कि उससे तजुर्बा हासिल कर आइन्दा की एहतियात करते हैं।"

राजा अभी नजरिए को अच्छी तरह कहने ही नहीं पाया कि शोर गोगा की आवाज आई। मगर कुछ समझ में न आया कि ये क्या माजरा है। लेकिन हाँ सब के कान इस तरफ रुजू हो गए हैं और बडी हैरत से बाहर की तरफ देख रहे हैं कि इतने मे एक ख्वास दोडती हुई आई और कहने लगी "माताजी! अञ्जना आ गई है।"

गरचा इस बात को सुनते ही सब के चेहरों के रंग खुशी में तबदील हो गए हैं। मगर रानी के तो गोया मुर्दा जिस्म मे जान ही पड गई है। वो देखिए कैसी जल्दी से उठकर कह रही है। "आई! कहाँ! मेरी प्यारी बेटी कहाँ है?"

इतने में अञ्जना सामने आती हुई नजर पडी। इस वक्त न जाने रानी के कमजोर बदन मे ऐसी ताकत कहाँ से आ गई कि इस फुर्ती से कदम उठाया कि उसको (अञ्जना) को आगे बढने की भी फुर्सत न दी और गले से लगा रोती हुई नजर पडी।

आहा! इस वक्त तो हर एक आगे बढकर अञ्जना का दर्द शरीक हो आंसू बहा रहा है। रानी कितुमती की लानत मलामत कर दिल के बुखार निकाल रहा है। और राजा प्रीति सूर्या अञ्जना की सर गुजश्त महेन्द्र राय को सुना रहा है।

नाजरीन! अभी बहुत सी औरतें अञ्जना देवी के इर्द गिर्द झुरमुट बांधे बैठी बातें कर रही थी कि इतने मे एक ख्वास मे आनकर खबर दी कि राजा प्रह्लाद विद्याधर और रानी कितुमती आए हैं। ये सुनकर राजा प्रीति सूर्य और महेन्द्र राय तो उनकी पेशकदमी को आगे गए। रानी बेगमोहिनी और अञ्जना देवी रानी कितुमती का इन्तजार महल में करने लगी।

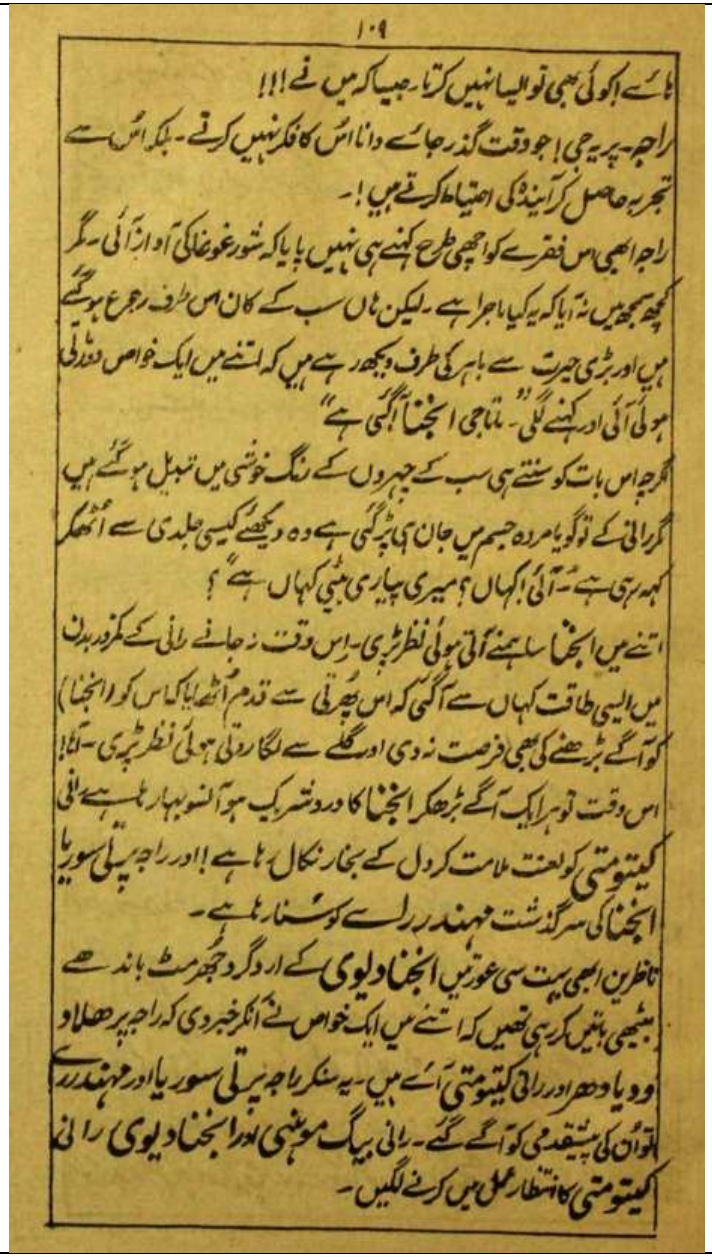

ज्योंहि रानी ने कदम दहलीज पर रखा अञ्जना उसके पाँव पर गिर पडी और बडी आजजी (विनम्रता) से बोली।

अञ्जना "आज का दिन कैसा मुबारक है कि मैं आप के दर्शन कर रही हूँ। माताजी! आप अच्छी तरह तो हैं?"

अञ्जना देवी की बातें सुनकर रानी कुतुमती शर्मिन्दा सी हो गई। शरम से आँखे नीचे को झुक गई। बदन में काटो तो खून नाम को नहीं रहा। दिल में मौत को तरजीह (चुन) दे रही है। और अपनी बदसलूकियाँ याद आ खामोशी का कूफल लगा रही है। जवाब दे तो क्योंकर!

नोट नाजरीन! देखिए रानी कितुमती क्यों इस कदर शर्मिन्दा हो जिन्दगी से मौत को तरजीह दे रही है। क्या अब अञ्जना या उसके वालदैन ने उसको कुछ कहा है? नहीं ये इसकी खुद अपनी ही कम फहमी का खमरा है जिसने इसकी गर्दन को झुका, मुँह को छुपा रखा है। जो हर इन्सान इसको लानत मलामत कर शर्मिन्दा कर रहा है। आँखे सामने होने से गुरेज (बचना) करती हैं। जबान हमकलाम होने से शर्म जानती है। मगर ये सब कुछ क्यों? एक बात के न सोचने का नतीजा है इसलिए प्यारे नाजरीन जो काम सोच विचार कर किया जाए ख्वाह उसका अंजाम अच्छा हो या बुरा मगर इस कदर रंज नहीं आता जैसा कि देख रहे हो।

शाबाश अञ्जना तुझको और सदजमत तेरी वालदा को जिसकी गोद मे तूने परवरिश पाई और जिससे इन्सानियत के जोहर सीखे। बावजूद इसके कि रानी कितुनती ही तुम्हारी सब मुसीबतों का बाइश हुई मगर तुमने उन बातों की कुछ भी परवाह न कर इसीके पाँव पर सर को रखकर बतला दिया कि इन्सान में कहाँ तक बरदाश्त करने की ताकत मौजूद है।

इसे आजकल की मस्तोरातो (औरतो) तुम भी जरा विचारो और अञ्जना की तकलीफ का मुकाबला कर के देखो। अगर तुम में से कोई होती तो जब तक बाल बाल न उखाड लेती कभी चैन न पडता। गृहिणी जाहलाज है दुरुस्त नहीं जो कोई कमअक्ली के बाइश तुमसे बदसलूकी करे उसको समझाने की कोशिश करो और नरमी से काम लो। तुम्हारा ये बरताव उसको वो सदमा पहुँचा सकता है जो दूसरी तरह बिल्कुल नामुमकिन और गैरदई है।

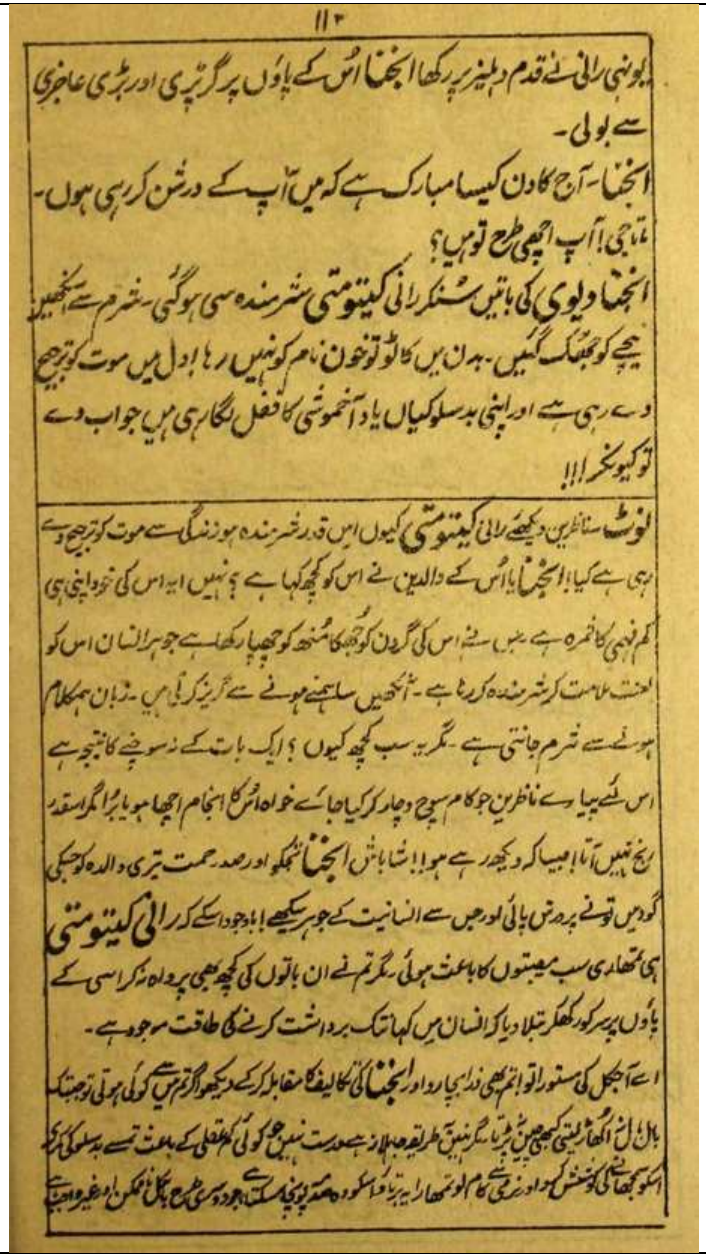

یونہی رانی نے قدم دہلیز پر رکھا انجنا اُس کے پاؤں پر گر پڑی اور بڑی عاجزی سے بولی۔

انجنا۔ آج کا دن کیسا مبارک ہے کہ میں آپ کے درشن کر رہی ہوں۔ ماتاجی! آپ اچھی طرح تو ہیں؟

انجنا دیوی کی باتیں سُنکر رانی کیتومتی شرمندہ سی ہو گئی۔ شرم سے آنکھیں نیچے کو جھک گئیں۔ بدن میں کاٹو تو خون نام کو نہیں رہا۔ دل میں موت کو ترجیح دے رہی ہے اور اپنی بدسلوکیاں یاد آ خموشی کا قفل لگا رہی ہیں جواب دے تو کیونکر!!!

نوٹ۔ ناظرین دیکھئے رانی کیتومتی کیوں اس قدر شرمندہ ہو زندگی سے موت کو ترجیح دے رہی ہے کیا! انجنا یا اُس کے والدین نے اس کو کچھ کہا ہے؟ نہیں! یہ اس کی خود اپنی ہی کم فہمی کا ثمرہ ہے۔ جس نے اس کی گردن کو جھکا منھ کو چھپا رکھا ہے جو ہر انسان اس کو لعنت ملامت کر شرمندہ کر رہا ہے۔ آنکھیں سامنے ہونے سے گریز کرتی ہیں۔ زبان ہمکلام ہونے سے شرم جانتی ہے۔ مگر یہ سب کچھ کیوں؟ ایک بات کے نہ سوچنے کا نتیجہ ہے اس لئے پیارے ناظرین جو کام سوچ وچار کر کیا جائے خواہ اُس کا انجام اچھا ہو یا بُرا مگر اسقدر رنج نہیں آتا! جیسا کہ دیکھ رہے ہو! شاباش انجنا تجھکو اور صد رحمت تیری والدہ کو جسکی گود میں تو نے پرورش پائی اور جس سے انسانیت کے جوہر سیکھے! باوجود اسکے کہ رانی کیتومتی ہی تمھاری سب مصیبتوں کا باعث ہوئی۔ مگر تم نے ان باتوں کی کچھ بھی پرواہ نہ کر اسی کے پاؤں پر سر کو رکھکر بتلا دیا کہ انسان میں کہاں تک برداشت کرنے کی طاقت موجود ہے۔

اے آجکل کی مستورات تو اتم بھی ذرا سی روا اور انجنا کی تکالیف کا مقابلہ کر کے دیکھو اگر تم میں سے کوئی ہوتی تو جبتک بال بال اُکھاڑ لیتی کبھی چین نہ پڑتا۔ مگر نہیں یہ طریقہ جاہلانہ ہے درست نہیں جو کوئی کم عقلی کے باعث تمسے بدسلوکی کرے اسکو سمجھانے کی کوشش کرو اور نرمی سے کام لو تمھارا پیرایہ اسکو وہ صدمہ پہنچا سکتا ہے جو دوسری طرح بالکل ناممکن اور غیر واجب ہے

अञ्जना हाथ जोडकर "माताजी! आप क्यों नहीं बोलती? मेरा कसूर माफ कर दें। मैं आपकी लौंडी हूँ। बगैर आपके कोई सहारा नहीं रखती।"

कितुमती बडी नरम आवाज से "तेरा कुछ कसूर नहीं बल्कि मैं तेरी गुनहगार हूँ। हाय! तेरी मुसीबत का बाइश मैं ही बदनसीब हुई।"

अञ्जना "आप इस सब बात की कुछ फिक्र न करें। आपके कुछ इख्तियार नहीं। ये सब मेरे ही पूर्वले कर्मों का फल है। माताजी! जरा गौर तो किजिए" वालदा की तरफ इशारा करके "ये मेरी वालदा खडी हैं। मैंने क्या किसी ने भी इनकी पेशानी पर बल पडे हुए कभी नहीं देखे और रहम दिल भी ऐसी है कि जरा सा किसी को तकलीफ मे देखने से बेचैन हो जाती हैं। मगर अफसोस मेरे पुर्वले कर्म ऐसे बुरे थे कि मुझको भूखी प्यासी देखकर भी इनको रहम न आया और शहर से बाहर निकाल दिया। मैं सच कहती हूँ। मेरा अफसोस किसी पर नहीं सिर्फ अपने ही कर्मों का दोष है।"

जब अञ्जना ने इस तरह कहा तो सब की आँखो से आंसू निकल पडे। तब बसन्तमाला मे कहा

बसन्तमाला "अब रोने से क्या हासिल है। अच्छा! जो होना था सो हो गया। अब" हनुमान को आगे करके "ये देखो ईश्वर ने तुमको वो लाल दिया है जिसके वास्ते हर एक भटक रहा है।"

ये कहकर रानी कितुमती की गोद मे उसको दे दिया और चुटकी बजा कहने लगी "बेटा बजरंगी! नानी दादी दोनो की खूब खबर लो।" बसन्तमाला की चुटकी सुनते ही हमारा बहादुर जरनैल हँस पडा। आहा! उसका मुस्कराना क्या है जादू है कि जिसने सबको अपनी तरफ रुजू कर लिया है। इस वक्त तो रंज इस घर से ऐसे भागा जैसे रोशनी से अंधेरा। रानी कितुमती और बेगमोहिनी के चेहरों से तो मालूम होता है

انجنا۔ (ہاتھ جوڑ کر) ماتاجی! آپ کیوں نہیں بولتی میرا قصور معاف کرو۔ میں آپکی لونڈی ہوں۔ بغیر آپ کے کوئی سہارا نہیں رکھتی!

کیتومتی (بڑی نرم آواز سے) تیرا کچھ قصور نہیں! بلکہ میں تیری گنہگار ہوں! ہائے! تیری مصیبت کا باعث میں ہی بدنصیب ہوئی۔

انجنا۔ آپ اس بات کی کچھ فکر نہ کریں۔ آپ کے کچھ اختیار نہیں۔ یہ سب میرے ہی پورب کے کرموں کا پھل ہے۔ ماتاجی! ذرا غور تو کیجئے (والدہ کیطرف اشارہ کرکے) یہ میری والدہ کھڑی ہیں۔ میں نے کیا کسی نے بھی انکی پیشانی پر بل پڑے ہوئے کبھی نہیں دیکھے۔ اور رحم دل بھی ایسی ہیں کہ ذرا سا کسی کو تکلیف میں دیکھنے سے بے چین ہو جاتی ہیں۔ مگر افسوس میرے پورب کے کرم ایسے برے تھے کہ مجکو بھوکھی پیاسی دیکھکر بھی ان کو رحم نہ آیا۔ اور شہر سے باہر نکالدیا! میں سچ کہتی ہوں میرا افسوس کسی پر نہیں۔ صرف اپنے ہی کرموں کا دوش ہے۔

جب انجنا نے اس طرح کہا تو سب کی آنکھوں سے آنسو نکل پڑے تب بسنت مالا نے کہا۔

بسنت مالا۔ اب رونے سے کیا حاصل ہے۔ اچھا! جو ہونا تھا سو ہو گیا اب (ہنومان کو آگے کرکے) یہ دیکھو ایشور نے تم کو وہ لعل دیا ہے جس کے واسطے ہر ایک بھٹک رہا ہے۔

یہ کہکر رانی کیتومتی کی گود میں اس کو دیدیا اور چٹکی بجا کہنے لگی۔ بیٹا بجرنگی نانی دادی دونوں کی خوب خبر لو۔ بسنت مالا کی چٹکی سنتے ہی ہمارا بہادر جرنیل ہنس پڑا۔ آہا! اس کا مسکرانا کیا ہے جادو ہے کہ جس نے سب کو اپنی طرف رجوع کر لیا ہے! اس وقت تو سچ اس گھر سے ایسے بھاگا جیسے روشنی سے اندھیرا۔ رانی کیتومتی اور بیگم موہنی کے چہروں سے تو معلوم ہوتا ہے

कि तमाम जहान की खुशी आज इन दोनो के दरश में आई है। अगर बेगमोहिनी लडके को लेती है तो कितुमती बेसब्री से इन्तजार करती दिखाई देती है।

इत्तफाक से रानी कितुमती प्यार कर रही थी कि हमारे बहादुर जरनैल की निगाह उसके कान पर पडी। जिसमें मालूम नहीं क्या ऐसा चमकदार जेवर पडा हुआ है कि जिस को देखते ही पकड लिया और उसे जोर से खीचा कि बेइख्तियार होकर रानी की चीख निकल गई। सब औरतें नीचे मुँह कर मुस्करा पडी। रानी शर्मिन्दा सी हो गई और अञ्जना देवी मुश्किल से उसका हाथ छुडा मुस्कराती हुई दूसरे दालान को जा रही है। और हम अपने ख्याल को लेकर जहाँ राजा महेन्द्र राय, प्रह्लाद विद्याधर और प्रीति सूर्या बैठे हैं, जाते हैं।

बाब (अध्याय) बीसवाँ

क्या वो यहाँ नहीं आए

ओहो! यहाँ तो अञ्जना देवी ही की दास्तान छिडी हुई है। उसी का ही जिक्र हो रहा है। वो देखिए राजा महेन्द्र राय और प्रीति सूर्या कैसे बोल रहे हैं। मगर प्रह्लाद विद्याधर चुपचाप बैठा सर झुकाए इनकी बातें सुन रहा है। दिल में अपने आप को लानत मलामत कर कह रहा है अगर मैं रानी की बातों में न आता तो आज मुझको ये नदामत (शर्मिन्दगी) न उठानी पडती। इनके शिकवें बजा हैं क्योंकि हर एक अमर का जिम्मेदार मैं ही हूँ। रानी को कौन पूछता है। मैंने सख्त नादानी की, बेशक नादानी की। इतने में एक शख्स जिसके मुरझाए हुए गर्द आलूदा चेहरे और होंठो की

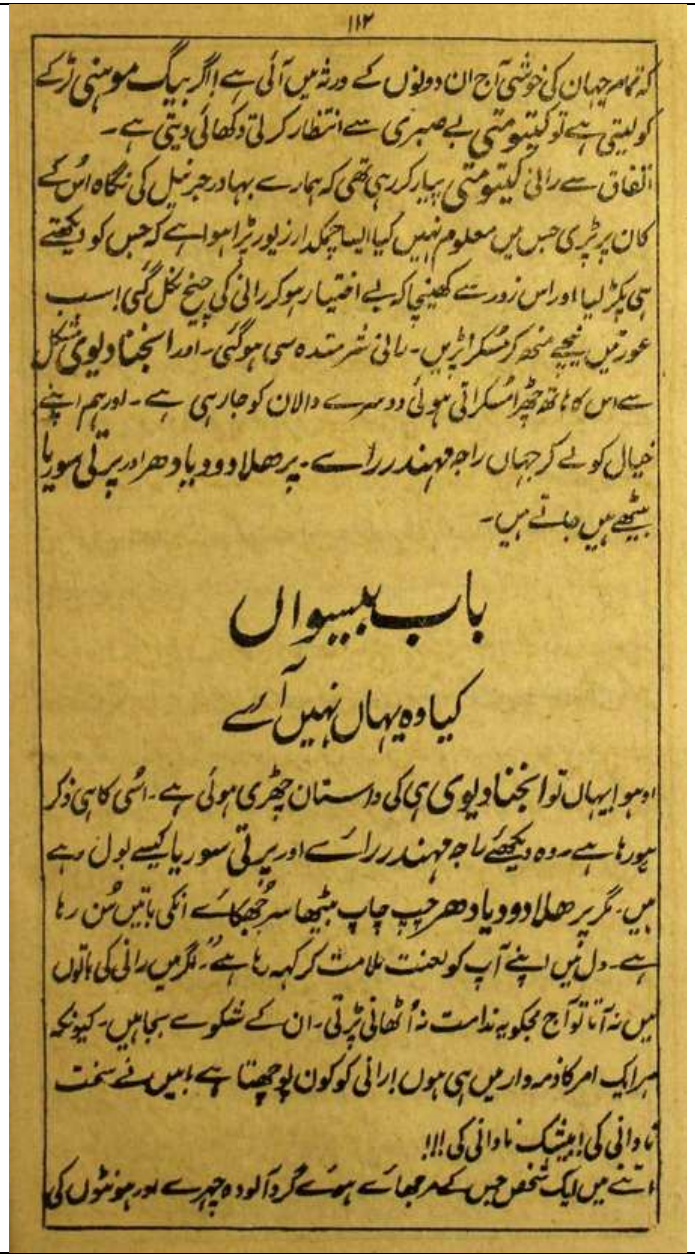

۱۱۲

کہ تمام جہان کی خوشی آج ان دونوں کے ورثہ میں آئی ہے! اگر بیگم موہنی لڑکے
کو لیتی ہے تو کیتومتی بے صبری سے انتظار کرتی دکھائی دیتی ہے۔
اتفاق سے رانی کیتومتی پیار کر رہی تھی کہ ہمارے بہادر جرنیل کی نگاہ اُس کے
کان پر پڑی جس میں معلوم نہیں کیا ایسا چمکدار زیور پڑا ہوا ہے کہ جس کو دیکھتے
ہی پکڑ لیا اور اس زور سے کھینچا کہ بے اختیار ہو کر رانی کی چیخ نکل گئی! سب
عورتیں نیچے منہ کر مسکرا پڑیں۔ رانی شرمندہ سی ہو گئی۔ اور انجنا دیوی مشکل
سے اس کا ہاتھ چھڑا مسکراتی ہوئی دوسرے دالان کو جا رہی ہے۔ اور ہم اپنے
خیال کو لے کر جہاں راجہ مہندر رائے۔ پرھلاد ودیا دھر اور پریتی سوریا
بیٹھے ہیں چلتے ہیں۔

باب بیسواں

کیا وہ یہاں نہیں آئے

اوہو! یہاں تو انجنا دیوی ہی کی داستان چھڑی ہوئی ہے۔ اُسی کا ہی ذکر
ہو رہا ہے۔ وہ دیکھئے راجہ مہندر رائے اور پریتی سوریا کیسے بول رہے
ہیں۔ مگر پرھلاد ودیا دھر چپ چاپ بیٹھا سر جھکائے انکی باتیں سُن رہا
ہے۔ دل میں اپنے آپ کو لعنت ملامت کر کہہ رہا ہے "مگر میں رانی کی باتوں
میں نہ آتا تو آج مجکو یہ ندامت نہ اُٹھانی پڑتی۔ ان کے شکوے بجا ہیں۔ کیونکہ
ہر ایک امر کا ذمہ دار میں ہی ہوں! رانی کو کون پوچھتا ہے! میں نے سخت
نادانی کی! بیشک نادانی کی!!!
اتنے میں ایک شخص جس کے مرجھائے ہوئے گرد آلودہ چہرے اور ہونٹوں کی

खुशकी से मालूम होता है कि कहीं दूर से आ रहा है। आया और सर तसलीम मखम कर बडी हैरानगी से इधर उधर देख रहा है।

राजा प्रह्लाद विद्याधर इस नोदारो शख्स को देख कर बोला

प्रह्लाद विद्याधर "ऐं तुम कहाँ और पवन किधर है?"

नोदारो हैरानगी से "क्या वो यहाँ नहीं आए?"

राजा "क्या कहा? क्या तुमको मालूम नहीं? तुम उनके साथ थे।"

नोदारो "हाय! सितम हुआ। अब क्या करूँ?"

राजा बडी सोच में होकर "क्यों खैर तो है?"

आह! इन फिकरों ने सबको बदहवास कर दिया और बेसब्री से उसके जवाब का इन्तजार करने लगे।

नोदारो "महाराज! हम दोनों पशुमखा वन को अञ्जना देवी की तलाश में गए तो वहाँ पहुँचकर रात एक दरख्त के नीचे बसर की। सुबह होते ही वो रफह हाजत को गए और फिर वापिस न आए। हर चंद तलाश किया मगर कुछ पता न मिला। तब मेरे दिल मे ख्याल गुजरा कि अञ्जना देवी के मिल जाने के बाइश वो महेन्द्रपुर चले गए हैं। लेकिन हाय अफसोस! मेरा ख्याल गलत निकला।"

राजा "क्यों घबराते हो। पवन नादान नहीं, आज नहीं तो कल आ जाएगा। ज्यादातर जिसका फिक्र था वो तो आ ही गई है।"

नाजरीन! आप समझ तो गए होंगे कि ये नोदारो पवन का मंत्री है जो राजा का कलाम सुनकर हैरान हो कह रहा है।

मंत्री "क्या अञ्जना देवी आ गई?"

राजा "हाँ! वो तो हमारे से थोडी देर पहले आ गई थी!"

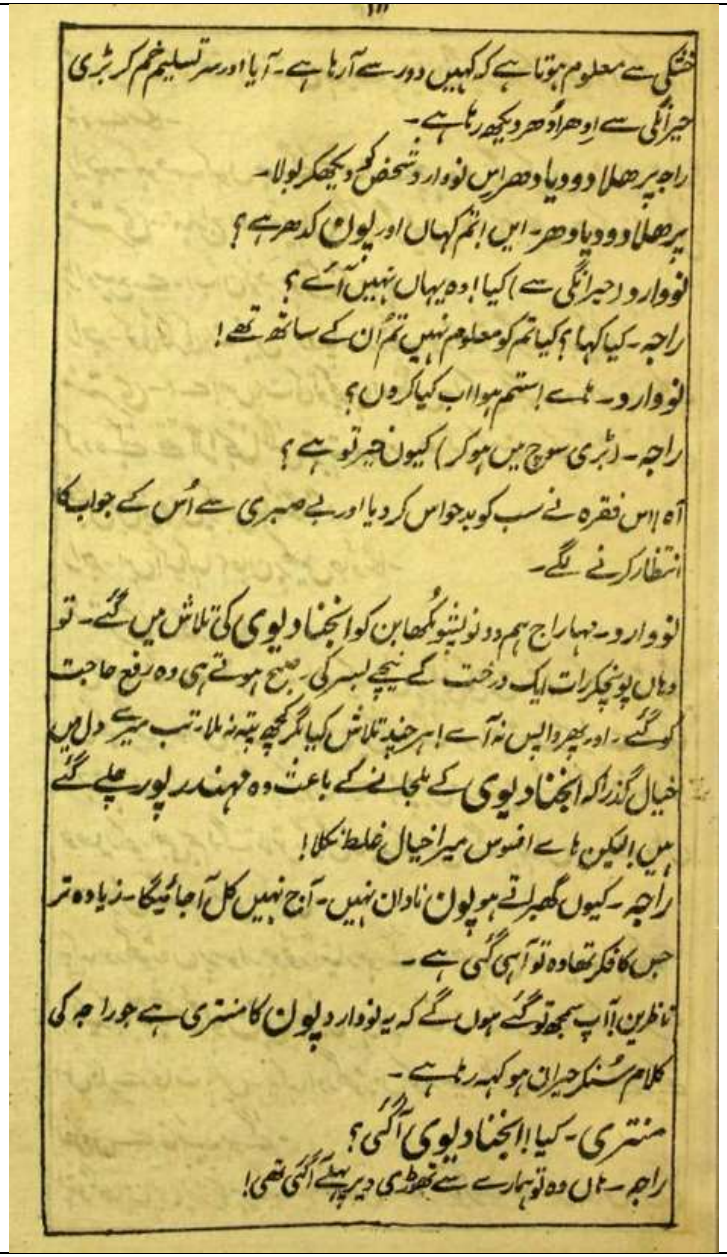

خشکی سے معلوم ہوتا ہے کہ کہیں دور سے آرہا ہے۔ آیا اور سر تسلیم خم کر بڑی حیرانگی سے اِدھر اُدھر دیکھ رہا ہے۔

راجہ پرھلاد و دیادھر اس نووارد شخص کو دیکھکر بولا۔

پرھلاد و دیادھر۔ ایں! تم کہاں اور پون کدھر ہے؟

نووارد (حیرانگی سے) کیا! وہ یہاں نہیں آئے؟

راجہ۔ کیا کہا؟ کیا تم کو معلوم نہیں تم اُن کے ساتھ تھے!

نووارد۔ ہائے! ستم ہوا اب کیا کروں؟

راجہ۔ (بڑی سوچ میں ہوکر) کیوں خیر تو ہے؟

آہ! اس فقرہ نے سب کو بدحواس کر دیا اور بے صبری سے اُس کے جواب کا انتظار کرنے لگے۔

نووارد۔ مہاراج ہم دونو پشومکھا بن کو انجنا دیوی کی تلاش میں گئے۔ تو وہاں پونچکر رات ایک درخت کے نیچے بسر کی۔ صبح ہوتے ہی وہ رفع حاجت کو گئے۔ اور پھر واپس نہ آئے! ہر چند تلاش کیا مگر کچھ پتہ نہ ملا۔ تب میرے دل میں خیال گذرا کہ انجنا دیوی کے ملجانے کے باعث وہ مہندر پور چلے گئے ہیں! لیکن ہائے افسوس میرا خیال غلط نکلا!

راجہ۔ کیوں گھبراتے ہو پون نادان نہیں۔ آج نہیں کل آجائیگا۔ زیادہ تر جس کا فکر تھا وہ تو آہی گئی ہے۔

ناظرین! آپ سمجھ تو گئے ہوں گے کہ یہ نووارد پون کا منتری ہے جو راجہ کی کلام سُنکر حیران ہو کہہ رہا ہے۔

منتری۔ کیا! انجنا دیوی آگئی؟

راجہ۔ ہاں وہ تو ہمارے سے تھوڑی دیر پہلے آگئی تھی!

आह! इस बात को सुनते ही मंत्री निहायत परेशान हो देखता का देखता रह गया और कुछ जवाब न दे सका।

राजा "कहो चुप क्यों हो गए? तुम्हारे चेहरे का रंग क्यों उडता जा रहा है?"

मंत्री "महाराज! वो तो यहाँ आ गई मगर पवन का मिलना मुश्किल है। क्योकि जंगल बडा वसीह है। अब उनको खबर होती क्योंकर हो?"

राजा "कोई फिक्र की बात नहीं। दो चार रोज तक खुद तलाश करके आ जाएगा।"

मंत्री "हाय! इस बात की तो कुछ परवाह नहीं। लेकिन मुझको तो रोना इस बात का है कि कहते थे अगर अञ्जना मिल गई तो बेहतर वरना मैं भी किसी को मुँह न दिखाऊँगा और इसी जंगल में अपनी जान पर खेल जाऊँगा।"

राजा "ऐं क्या कहा? जान पर खेल जाऊँगा!"

मंत्री "जी हाँ!"

इस छोटे से फिकरें ने राजा के दिल पर बिजली की तरह असर किया। कलेजा फडफडाया दिल घबरा गया। हवास बाखता हो आँखो मे आंसू भर गए तो राजा महेन्द्र राय ने कहा।

राजा महेन्द्र राय "आप क्यों ऐसे बेचैन होते हैं? दिल को मजबूत कर हौसला रखो। अभी हम लोग तलाश कर उनका पता निकालेंगे। जहाँ होंगे वहाँ से लाएगे। आप तसल्ली रखे।"

ये कहा और घोडो पर सवार हो फौरन तैयार हो गए। राजा प्रीति सूर्या ने हर एक से बताकीद कहा कि जिस शख्स को पवनजी मिल जाए वही अपना निशान बुलन्द कर दे ताकि दूसरे इस फिक्र से निजात पाएँ। ये कहा और घोडों को सरपट डाल दिया और देखते देखते नजरों से गायब हो गए।

पशुमखा वन मे पहुच हर एक जान फेशानी से जुस्तजू करने लगा मगर अफसोस दिल की

آہ! اس بات کو سنتے ہی منتری نہایت پریشان ہو دیکھتا کا دیکھتا رہ گیا۔ اور کچھ جواب نہ دے سکا۔

راجہ۔ کہو چپ کیوں ہو گئے؟ تمھارے چہرہ کا رنگ کیوں اوڑتا جا رہا ہے؟

منتری۔ مہاراج! وہ تو یہاں آ گئی مگر پون کا ملنا مشکل ہے کیونکہ جنگل بڑا وسیع ہے۔ اب اُن کو خبر ہو تو کیونکر ہو؟

راجہ۔ کوئی فکر کی بات نہیں۔ وہ چار روز تک خود تلاش کر کے آ جائیگا۔

منتری۔ ہے! اس بات کی تو کچھ پرواہ نہیں۔ لیکن مجکو تو رونا اس بات کا ہے کہ وہ کہتے تھے "اگر انجنا ملگئی تو بہتر ورنہ میں بھی کسی کو منھ نہ دکھاؤنگا۔ اور اسی جنگل میں اپنی جان پر کھیل جاؤنگا"!

راجہ۔ ایں! کیا کہا؟ جان پر کھیل جاؤنگا۔

منتری۔ جی! ہاں۔

اس چھوٹے سے فقرہ نے راجہ کے دل پر بجلی کی طرح اثر کیا۔ کلیجہ پھڑپھڑایا دل گھبرا گیا۔ حواس باختہ ہوا آنکھوں میں آنسو بھر گئے۔ تو راجہ مہندر رائے نے کہا راجہ مہندر رائے۔ آپ کیوں ایسے بے چین ہوتے ہیں۔ دل کو مضبوط کرو حوصلہ رکھو۔ ابھی ہم لوگ تلاش کر اُن کا پتہ نکالیں گے۔ جہاں ہونگے وہاں سے لائیں گے آپ تسلی رکھیں۔

یہ کہا اور گھوڑوں پر سوار ہو فوراً تیار ہو گئے۔ راجہ پرتی سوریا نے ہر ایک سے بتاکید کہا کہ جس شخص کو پون جی ملجائیں وہی اپنا نشان بلند کر دے۔ تاکہ دوسرے اس فکر سے نجات پائیں۔ یہ کہا اور گھوڑوں کو سرپٹ ڈال دیا۔ اور دیکھتے دیکھتے نظروں سے غائب ہو گئے۔

پشومکھا بن میں پہونچ ہر ایک جانفشانی سے جستجو کرنے لگا۔ مگر افسوس دل کی

मुराद किसी की पूरी न हुई।
दुसरे रोज दोपहर के बाद एक जगह से धुएँ के गुब्बार निकलते हुए दिखाई दिए जिनको देखकर सबको गुमान आबादी का हुआ तो उस तरफ घोडो को डाल दिया। नाजरीन! हम तो इन लोगो के पीछे पीछे चले आए हैं। और महल का कुछ हाल मालूम नहीं कि उन बेचारियों पर इस खबर के सुनने से क्या गुजरी।
आह! इस खबर ने तो यहाँ गजब ही कर दिया हुआ है। उसी घर मे जिसमे अभी हँस हँस कर बातें हो रही थी मातमी फर्श बिछा खामोशी का कूफ्ल (ताला) लगा रखा है। आए दिन की मुसीबत को देख सबके चेहरे पर उदासी की घटा छा रही है। और बाजों की आँखो से तो आंसू भी गिर रहे हैं। लेकिन रानी कितुमती की आँखे तो अबर नू बहार की तरह बरस रही हैं।
ओहो! जरा अञ्जना की तरफ तो देखना बाहर से कैसी हँसती हुई आ रही है। और अब इस खबर को सुनते ही आँखो में अंधेरा छा गया। खून रगो मे खुश्क हो दिल धडक उठा। और कलेजा झिझक झिझक कर सीने में दब गया। जहाँ खडी थी वहीं खडी रह गई है। अब इसकी वजा ख्वादाब हो के बेखुदी के आलम में इसके हाथ पाँव फूल गए हों या उस वक्त की बढी हुई हसरत ने इसके पाँव जमीन में गाड दिए हों। आखिर कुछ ही क्यों न हो मगर इन बातों को सुनकर वो एक कदम भी आगे न बढा सकी। और सकते के आलम में वहीं ठिठक कर रह गई। और कई तरह के ख्याल पैदा हो बेचैन करने लगे।

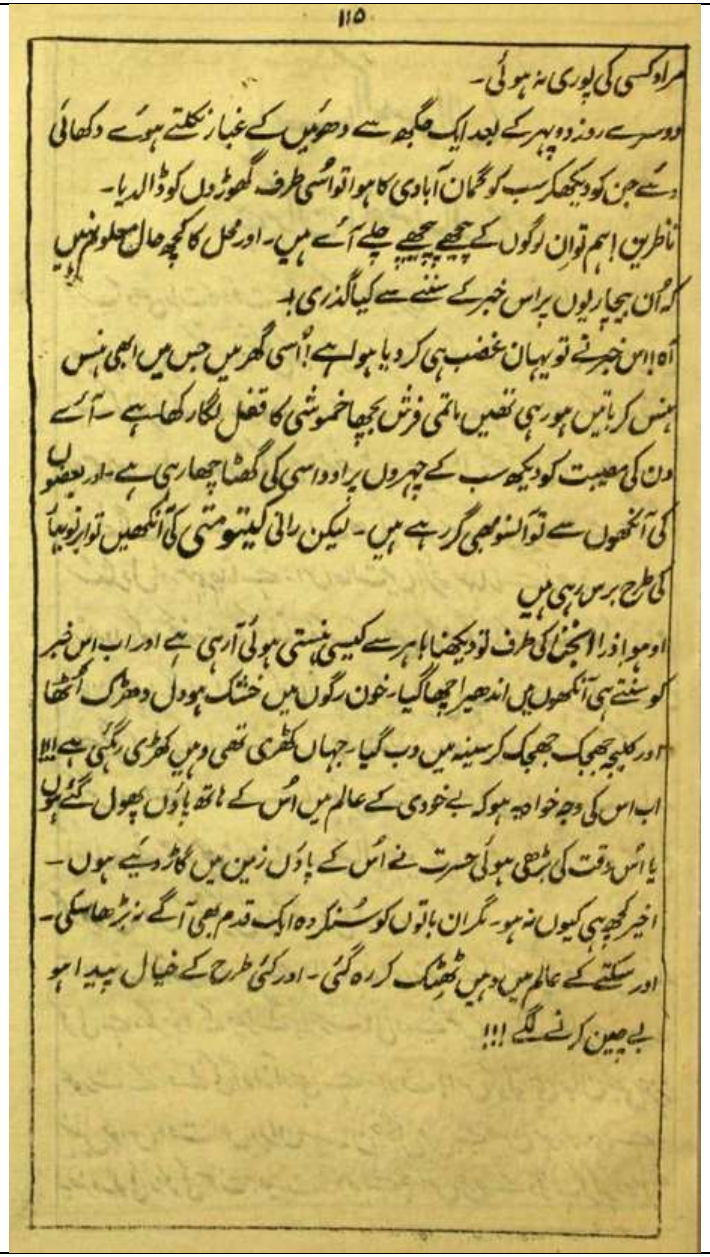

مراد کسی کی پوری نہ ہوئی۔
دوسرے روز دوپہر کے بعد ایک جگہ سے دھوئیں کے غبار نکلتے ہوئے دکھائی دئے جن کو دیکھکر سب کو گمان آبادی کا ہوا تو اُسی طرف گھوڑوں کو ڈالدیا۔
ناظرین! ہم تو اِن لوگوں کے پیچھے پیچھے چلے آئے ہیں۔ اور محل کا کچھ حال معلوم نہیں کہ اُن بیچاریوں پر اس خبر کے سننے سے کیا گذری ہے۔
آہ! اس خبر نے تو یہاں غضب ہی کر دیا ہوا ہے! اُسی گھر میں جس میں ابھی ہنس ہنس کر باتیں ہو رہی تھیں ماتمی فرش بچھا خموشی کا قفل لگا رکھا ہے۔ آئے دن کی مصیبت کو دیکھ سب کے چہروں پر اداسی کی گھٹا چھا رہی ہے۔ اور بعضوں کی آنکھوں سے تو آنسو بھی گر رہے ہیں۔ لیکن رانی کیتومتی کی آنکھیں تو ابر نوبہار کی طرح برس رہی ہیں
اوہو! ذرا انجنا کی طرف تو دیکھنا باہر سے کیسی ہنستی ہوئی آرہی ہے اور اب اس خبر کو سنتے ہی آنکھوں میں اندھیرا چھا گیا۔ خون رگوں میں خشک ہو دل دھڑک اُٹھا اور کلیجہ جھجک جھجک کر سینہ میں دب گیا۔ جہاں کھڑی تھی وہیں کھڑی رہ گئی ہے!!!
اب اس کی وجہ خواہ یہ ہو کہ بے خودی کے عالم میں اُس کے ہاتھ پاؤں پھول گئے ہوں یا اُس وقت کی بڑھی ہوئی حسرت نے اُس کے پاؤں زمین میں گاڑ دیئے ہوں۔ اخیر کچھ ہی کیوں نہ ہو۔ مگر ان باتوں کو سُنکر وہ ایک قدم بھی آگے نہ بڑھا سکی۔ اور سکتے کے عالم میں وہیں ٹھٹک کر رہ گئی۔ اور کئی طرح کے خیال پیدا ہو بے چین کرنے لگے!!!

बाब (अध्याय) इक्कीसवाँ

हे प्राणनाथ तुम कहाँ हो

करीब आधी रात का वक्त होगा जबकि अंधेरी रात ने अपने चारों दामन फैला पशुमखा वन की डरावनी शक्ल को और भी आरास्ता (अलंकृत) कर रखा है। इन्सान तो दिन में ही बहुत कम नजर आते थे मगर खूंखार दरिंदे और परिंदे बेशुमार थे। लेकिन इस वक्त वो भी मोदहारे जोगी की तरह बेखबर पडे हैं। हाँ कभी कभी मनहूस उल्लू शोर मचाने लग जाता है। या हवा फर्राटे भरती हुई सुनाई देती है जिसको सुनकर दिल और सहम जाता है। इस हालत में अगर कुछ सहारा है तो सिर्फ आसमान पर तारों को देखने से। मगर कुजरफतार फलक को ये भी नागवार गुजरा कि स्याह बादल तमाम आसमान पर छा गए और अंधेरा घटाटोप हो गया। लेकिन आप जानते है कि जो सच्चे दिल से नेकी करने पर कमर बांध लेते है चाहे कितनी रुकावटे उनके आगे क्यों न आये वो अपने इरादे से बाज नहीं रहते। इसी तरह इस वक्त बहादुर तारों ने रहम को छोडना मुनासिब ख्याल नहीं किया और बेशकीमती अबर में सुराख कर मायूस दिलों को तस्कीन देना शुरु कर दिया।

आह! इस वक्त तो दिन के अंधे उल्लू ने भी न जाने क्या सोचकर खामोशी इख्तियार कर ली है। मगर हवा के फर्राटे बराबर सुनाई देते हैं। या एक जुल्म रसीदा औरत के रोने की आवाज आ रही है। उफ! इसको तो अपनी जान भी अजीज नहीं जो इस वक्त इस वीरान सुनसान जंगल मे बेचैन हो रो रही है। ये जरूर कोई न कोई सख्त मुसीबत जदा है जो इस तरह के विलाप कर कह रही है।

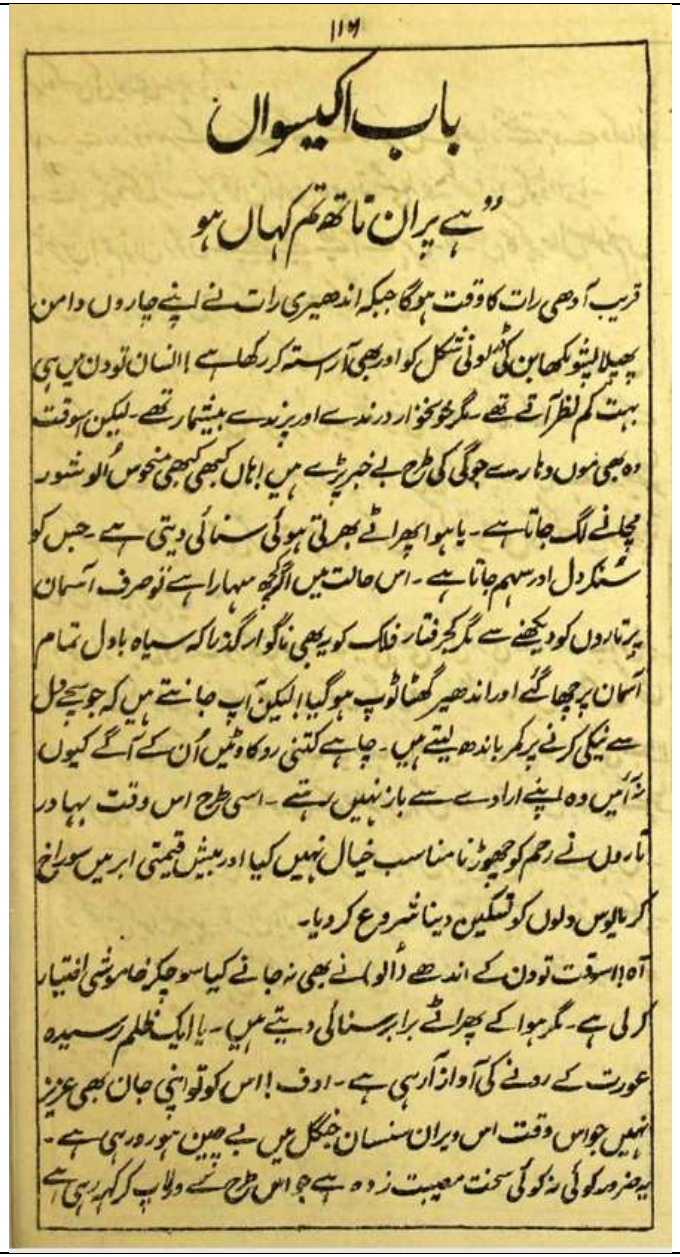

۱۱۶

باب اکیسواں

"ہے پران ناتھ تم کہاں ہو"

قریب آدھی رات کا وقت ہوگا جبکہ اندھیری رات نے اپنے چاروں دامن
پھیلا پشو کھا بن کی ڈراونی شکل کو اور بھی آراستہ کر رکھا ہے! انسان تو دن میں ہی
بہت کم نظر آتے تھے مگر خونخوار درندے اور پرندے بیشمار تھے۔ لیکن اسوقت
وہ بھی موں دبائے جوگی کی طرح بے خبر پڑے ہیں! ہاں کبھی کبھی منحوس الو شور
مچانے لگ جاتا ہے۔ یا ہوا پھراٹے بھرتی ہوئی سنائی دیتی ہے۔ جس کو
سنکر دل اور سہم جاتا ہے۔ اس حالت میں اگرچہ سہارا ہے تو صرف آسمان
پر تاروں کو دیکھنے سے مگر کجرفتار فلک کو یہ بھی ناگوار گذرا کہ سیاہ بادل تمام
آسمان پر چھا گئے اور اندھیر گھٹاٹوپ ہوگیا! لیکن آپ جانتے ہیں کہ جو سچے دل
سے نیکی کرنے پر کمر باندھ لیتے ہیں۔ چاہے کتنی روکاوٹیں اُن کے آگے کیوں
نہ آئیں وہ اپنے ارادے سے باز نہیں رہتے۔ اسی طرح اس وقت بہادر
تاروں نے رحم کو چھوڑنا مناسب خیال نہیں کیا اور بیش قیمتی ابر میں سوراخ
کر مایوس دلوں کو تسکین دینا شروع کر دیا۔

آہ! اسوقت تو دن کے اندھے (الو) نے بھی نہ جانے کیا سوچکر خاموشی اختیار
کر لی ہے۔ مگر ہوا کے پھراٹے برابر سنائی دیتے ہیں۔ یا ایک ظلم رسیدہ
عورت کے رونے کی آواز آرہی ہے۔ اوف! اس کو تو اپنی جان بھی عزیز
نہیں جو اس وقت اس ویران سنسان جنگل میں بے چین ہو رو رہی ہے۔
یہ ضرور کوئی نہ کوئی سخت مصیبت زدہ ہے جو اس طرح سے واویلا کر کہہ رہی ہے

"हे प्राणनाथ! तुम कहाँ हो? मेरे नयन चकोर की तरह आपके दर्शन को तरस रहे हैं। कृपा कर चाँद सा मुखडा दिखा इन को तस्कीन दो। हाय! आप के दिल में ऐसी बाते क्यों आ गई? स्वामीजी मुझको बगैर आपके और कोई सहारा नहीं।"

आह! अञ्जना को तो हम महल में छोड आए हैं। ये दूसरी मुसीबत जदा कौन है। चलो जरा मालूम तो करे जमाने की गर्दिश ने कौन सा ऐसा सलूक इससे किया है जिसने इसको यहाँ तक पहुचाया है।

ऐं ये तो वही मुसीबत की मारी अञ्जना देवी ही है जो अपने खाविन्द का हाल सुनकर सब्र न कर सकी और किसी पर यकीन न कर खुद तलाश करती हुई यहाँ पहुँची है।

शाबाश अञ्जना तुझको! पतिव्रता इसी को कहते हैं कि अजीज जान और खौफनाक जंगल की भी कुछ परवाह नहीं की और घर से बेसरोसामान निकल पडी है। ईश्वर तेरी मुराद बरलावे।

प्यारे नाजरीन! रात के पहले हिस्से की बाबत तो हम कह नहीं सकते। लेकिन आधी रात से लेकर जब तक सुबह की सफेदी ने अपना सुर्ख नकाब चेहरे से दूर नहीं किया इसकी आहोजारी की आवाज बराबर आ रही है। मगर अब तो जहाँ गुंजान झाडियाँ दिखाई देती हैं एक एक जगह तो दीवानों की तरह दस दस दफह पडताल करती और कहती जा रही है।

"ऐ परिंदो मेरे हाल पर तुम ही तरस करो और मेरे प्रणनाथ को देखा हो तो बताओ! ऐ जंगली दरख्तों तुम बसबब ऊँचाई के सब कुछ देखते हो स्वामीजी का पता तुम ही बताओ। ऐ पहाड की बुलन्द चोटियो ईश्वर तुमको हमेशा सरसब्ज रखे मेरे हाल पर तुम ही दया करो। हाय! कोई भी जवाब नहीं देता। सच है मुसीबत का कोई भी साथी नहीं होता।"

"ہے پران ناتھ! تم کہاں ہو؟ میرے نین چکور کی طرح آپ کے درشن کو ترس رہے ہیں۔ کرپا کر چاند سا مکھڑا دکھا۔ ان کو تسکین دو! ہائے! آپ کے دل میں ایسی باتیں کیوں آگئیں۔ سوامی جی! مجکو بغیر آپ کے اور کوئی سہارا نہیں!!

آہ! انجنا کو تو ہم محل میں چھوڑ آئے ہیں۔ یہ دوسری مصیبت زدہ کون ہے چلو ذرا معلوم تو کریں زمانہ کی گردش نے کونسا ایسا سلوک اس سے کیا ہے جس نے اس کو یہاں تک پونچایا ہے!

ایں! یہ تو وہی مصیبت کی ماری انجنا دیوی ہی ہے جو اپنے خاوند کا حال سُنکر صبر نہ کر سکی اور کسی پر یقین نہ کر خود تلاش کرتی ہوئی یہاں پونچی ہے

شاباش انجنا تجکو اپنی برتا اسی کو کہتے ہیں کہ عزیز جان اور خوفناک جنگل کی بھی کچھ پرواہ نہیں کی اور گھر سے بے سروسامان نکل پڑی ہے۔ ایشور تیری مراد برلاویں!

پیارے ناظرین! رات کے پہلے حصہ کی بابت تو ہم کہہ نہیں سکتے۔ لیکن آدھی رات سے لیکر جبتک صبح کی سفیدی نے اپنا سرخ نقاب چہرہ سے دور نہیں کیا۔ اس کی آہ زاری کی آواز برابر آرہی ہے۔ مگر اب تو جہاں گنجان جھاڑیاں دکھائی دیتی ہیں ایک ایک جگہ کو دیوانوں کی طرح دس دس دفعہ پڑتال کرتی اور کہتی جا رہی ہے۔

"اے پرندو! میرے حال پر تم ہی ترس کرو۔ اور میرے پران ناتھ کو دیکھا ہو تو بتاؤ! اے جنگلی درختو تم بسبب اونچائی کے سب کچھ دیکھتے ہو۔ سوامی جی کا پتہ تم ہی بتاؤ! اے پہاڑ کی بلند چوٹیو! ایشور تم کو ہمیشہ سرسبز رکھے میرے حال پر تم ہی دیا کرو۔ ہائے! کوئی بھی جواب نہیں دیتا! سچ ہے! مصیبت کا کوئی بھی ساتھی نہیں ہوتا"۔

इस तरह तलाश करती और कहती जा रही है कि दरख्तों में से कुछ रोशनी सी नजर पडी और धुआँ उडता हुआ मालूम हुआ। जल्दी जल्दी कदम उठा उस तरफ को बढी। थोडी दूर गई होगी कि आग के शोले निकलते हुए दिखाई दिए और पास ही एक आदमी खडा देखा। आह! अब तो निहायत हैरान हो बडे गौर से उस तरफ देखती हुई जा रही है। चंद ही कदम और बढी होगी कि उस शख्स को पहचान लिया और पहचानते ही गम का पहाड गिर पडा। कलेजा सम्भाला तो दिल बैठ गया दिल को हाथ मे लिया तो सर ने आसमान की तरह चक्कर खाया। आह! जब सर को पकडा तो पाँव डगमगाए। लेकिन वाह री मुहब्बत तूने सबको खाक में मिला अपना ही जोहर दिखाया। या तो अञ्जना हवास बाख्ता परेशान यहाँ खडी दिखाई दे रही थी या मकनाते कि तरह पवन को चिमटी हुई कहती सुनाई दी

अञ्जना "हाय! ये क्या करने लगे हो स्वामीजी ऐसा न करो"

पवन "ऐं" पीछे को देखकर "प्रियजी तुम कहाँ!"

इतने में राजा प्रह्लाद विद्याधर ने आवाज दी

प्रह्लाद विद्याधर "बेटा! क्या करते हो? खबरदार ऐसा जुल्म न करना।"

महेन्द्र राय "ये बहादुरो का काम नहीं। होश करो शूरवीर ऐसा नहीं करते।"

गर्ज हर तरफ से इस किस्म की आवाजें आई तो पवन उन सबको देख हैरान हो गया। चंद मिनट मे वही जंगल खुशी के नाहरों से गूँज उठा। मुबारिक सलामत की आवाजें आने लगी।

नाजरीन! जंगल में मंगल इसी को कहते हैं। देखिए ये वही जगह है जिसको थोडी देर बाद सब मनहूस कहते और देखकर आह सर्द भरते, लेकिन अब सबसे यही

اس طرح تلاش کرتی اور کہتی جا رہی ہے کہ درختوں میں سے کچھ روشنی سی نظر
پڑی اور دھواں اوڑتا ہوا معلوم ہوا۔ جلدی جلدی قدم اُٹھا اس طرف کو بڑھی
تھوڑی دور گئی ہوگی کہ آگ کے شعلے نکلتے ہوئے دکھائی دیئے۔ اور پاس ہی
ایک آدمی کھڑا دیکھا۔ آہ اب تو نہایت حیران ہو بڑے غور سے اُس طرف دیکھتی
ہوئی جا رہی ہے۔ چند ہی قدم اور بڑھی ہوگی کہ اُس شخص کو پہچان لیا۔ اور
پہچانتے ہی غم کا پہاڑ گر پڑا۔ کلیجہ سنبھالا تو دل بیٹھ گیا۔ دل کو ہاتھ میں لیا تو سر
نے آسمان کی طرح چکر کھایا۔ آہ! جب سر کو پکڑا تو پاؤں ڈگمگائے۔ لیکن واہ ری!
محبت! تم نے سب کو خاک میں ملا اپنا ہی جوہر دکھایا۔ یا تو انجنا حواس باختہ
پریشان یہاں کھڑی دکھائی دے رہی تھی یا مقناطیس کی طرح پون کو چمٹی
ہوئی کہتی سُنائی دی!

انجنا۔ ہائے! یہ کیا کرنے لگے ہو! سوامی جی! ایسا نہ کرو!!

پون۔ (پیچھے کو دیکھکر) پریہ جی! تم کہاں؟

اتنے میں راجہ پرھلاد و ودیاودھر نے آواز دی۔

پرھلاد و ودیاودھر۔ بیٹا! کیا کرتے ہو خبردار ایسا ظلم نہ کرنا۔

مہندر رائے۔ یہ بہادروں کا کام نہیں۔ ہوش کرو! شورویر ایسا نہیں
کرتے۔

غرض ہر طرف سے اسی قسم کی آوازیں آئیں تو پون ان سب کو دیکھ حیران
ہو گیا۔ چند منٹ میں وہی جنگل خوشی کے نعروں سے گونج اٹھا۔ مبارک
سلامت کی آوازیں آنے لگیں۔

ناظرین! جنگل میں منگل اسی کو کہتے ہیں۔ دیکھئے یہ وہی جگہ ہے جس کو تھوڑی
دیر بعد سب منحوس کہتے اور دیکھ کر آہ سرد بھرتے۔ لیکن اب سب سے یہی

मुबारिक है। जहाँ सबके चेहरे जो थोडी देर पहले गमगीन और उदास नजर आते थे अब खिलखिलाते नजर आ रहे हैं। और हर एक का चेहरा मारे खुशी के सुर्ख हो रहा है। कोई पवन को गले से लगा कर पेशानी पर बोसा दे रहा है। कोई अञ्जना देवी की तरफ इशारा कर उसकी हिम्मत पर अश अश कर रहा है। एक चिता को देख मनहूस करार देता है। दूसरा इसके बर खिलाफ इसको मुबारिक ख्याल करता है क्योकि इसके जरिए ही सबका इस जगह आना हुआ और पवन का सुराग मिला। राजा प्रीति सूर्या जो पास ही खडा है सुनिए क्या कह रहा है।

राजा प्रीति सूर्या इन लोगो की तरफ मुखातिब होकर "बेशक बेशक! यही दुरुस्त है। अगर धुआँ यहाँ से नमुदार (शुरु) न होता तो इस तरफ कोई भी न आता।" राजा महेन्द्र राय की तरफ देखकर "महेन्द्र! मेरी राय में यहाँ हवन किया जाए तो अच्छा है क्योंकि यही जगह मुबारिक है जहाँ सबकी मुराद बर आई, मुद्दत के रंजोगम दूर हुए।" राजा महेन्द्र राय "मैंने पहले ही दीवानदर को सामग्री[१] के वास्ते भेज दिया है। उंगली का इशारा करके "वो देखिए घोडा दौडाए जाता हुआ दरख्तों में से नजर आ रहा है।" थोडे अरसे के बाद दीवानदर आ गया और हवन करना शुरु हो गया।

आहा! इस वक्त तमाम जंगल खुशबु से महक रहा है। बजाए उन दरिंदो की खौफनाक आवाजों के वेद मुक्कदस (पवित्र) के छन्दो की आवाज गूँज रही है। जिनको सुनकर हर एक का रूह खुश हो उस परब्रह्म परमात्मा का धन्यवाद कर रहा है।

ओहो! जरा अञ्जना देवी को तो देखना, पवन को देख देख कर कैसी खुश हो रही है। इसका मुद्दतो का मुरझाया हुआ चेहरा इस वक्त किस कदर रौनक पुर नजर आता है।

१ सामग्री याने हवन की चीजें

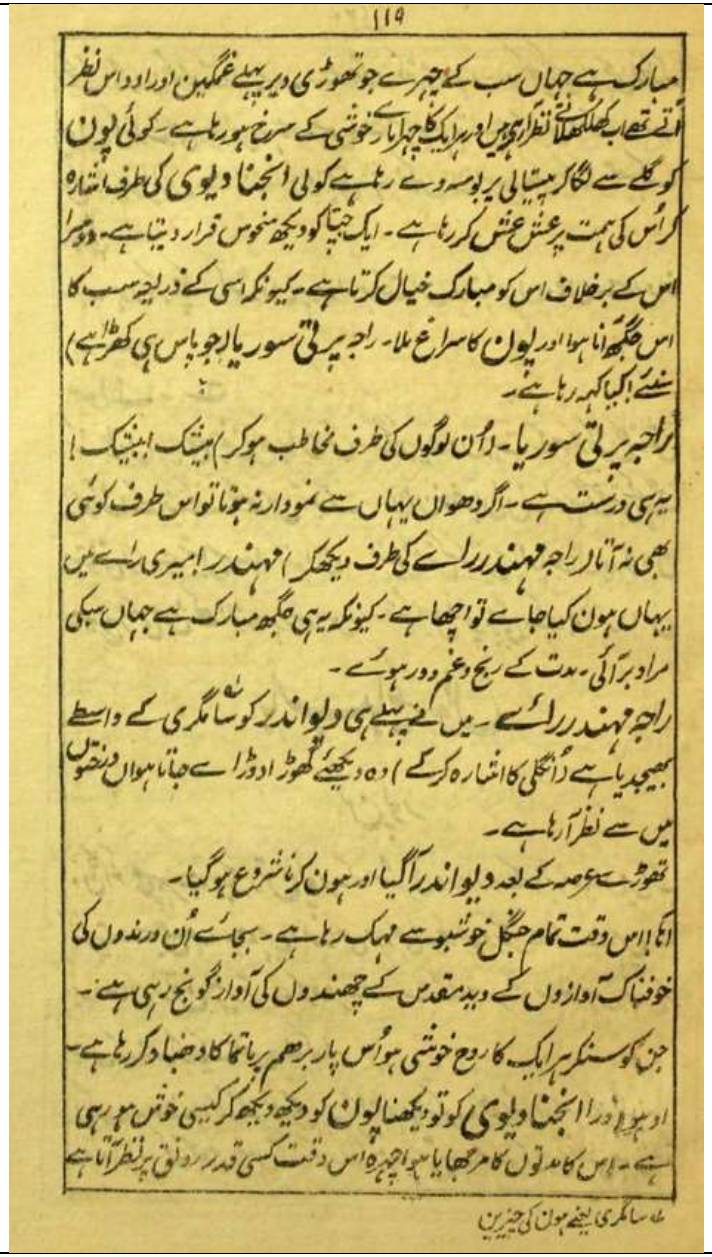

مبارک ہے جہاں سب کے چہرے جو تھوڑی دیر پہلے غمگین اور اداس نظر آتے تھے اب کھلکھلاتے نظر آ رہے ہیں اور ہر ایک کا چہرا مارے خوشی کے سرخ ہو رہا ہے۔ کوئی پون کو گلے سے لگا کر پیشانی پر بوسہ دے رہا ہے کوئی انجنا دیوی کی طرف اشارہ کر اُس کی ہمت پر عش عش کر رہا ہے۔ ایک چتا کو دیکھ منحوس قرار دیتا ہے۔ دوسرا اس کے برخلاف اس کو مبارک خیال کرتا ہے۔ کیونکہ اسی کے ذریعہ سب کا اس جگہ آنا ہوا اور پون کا سراغ ملا۔ راجہ پرتی سوریا (جو پاس ہی کھڑا ہے) سنئے! کیا کہہ رہا ہے۔

راجہ پرتی سوریا۔ (اُن لوگوں کی طرف مخاطب ہو کر) بیشک! بیشک! یہی درست ہے۔ اگر دھواں یہاں سے نمودار نہ ہوتا تو اس طرف کوئی بھی نہ آتا (راجہ مہندر رائے کی طرف دیکھ کر) مہندر! میری رائے میں یہاں ہون کیا جائے تو اچھا ہے۔ کیونکہ یہی جگہ مبارک ہے جہاں سبکی مراد بر آئی۔ مدت کے رنج و غم دور ہوئے۔

راجہ مہندر رائے۔ میں نے پہلے ہی دیوانندر کو سامگری[۱] کے واسطے بھیجدیا ہے (اُنگلی کا اشارہ کر کے) وہ دیکھئے گھوڑا دوڑائے جاتا ہوا درختوں میں سے نظر آ رہا ہے۔

تھوڑے عرصہ کے بعد دیوانندر آگیا اور ہون کرنا شروع ہو گیا۔

آہا! اس وقت تمام جنگل خوشبو سے مہک رہا ہے۔ بجائے اُن درندوں کی خوفناک آوازوں کے وید مقدس کے چھندوں کی آواز گونج رہی ہے۔ جن کو سنکر ہر ایک کا روح خوشی ہو اُس پار برہم پرماتما کا دھیان کر رہا ہے۔ اوہو! ذرا انجنا دیوی کو تو دیکھنا پون کو دیکھ دیکھ کر کیسی خوش ہو رہی ہے۔ اس کا مدتوں کا مرجھایا ہوا چہرہ اس وقت کسی قدر رونق پر نظر آتا ہے

۱ سامگری یعنے ہون کی چیزیں

देखिए वो गर्दन झुकाए इन सबसे अलग खडी है। और कभी कभी ऊँची नजर कर पवन की तरफ भी देख लेती है। जिससे मालूम होता है कि इस वक्त वो सब रंजोगम भूल उससे बात करना चाहती है। लेकिन इन सबको देखकर झिझक जाती है।

जब हवन कर चुके तो घोडो पर सवार हो खुनदानोशादा वहाँ से रवाना हुए।

मौलिफ

शुभ दिन प्यारी अञ्जना आज हुआ प्रकाश
गए बीत दिन विपत के हुआ दुखों का नाश
दुख उठाए इत घने सुने वचन अयोग
दिन दिन खुशियाँ माँ अब और बहोग खुशी के होग
सतवन्ती तू ना रहे शील सबा गुणवान
नहीं दोष किसी को तै दिया लिया भाग पूर्वला मान
धीरज राखी मन दुखे ईश्वर पर विश्वास
शुभ फल निश्चय पावेगी कहे जोड कर दास

बाब (अध्याय) बाइसवाँ

रत्नपुर

दिन का आखिरी पहर है जबकि रत्नपुर के मशरीकी दरवाजे के बाहर मसीदा में लोग कशरत से जमह हो रहे हैं। और अभी और भी इक्के बाद दिगरे (अन्य) आ रहे हैं। प्रधान रत्नवीर बडे करोफर से रोसाए शहर के साथ हँस हँस कर बातें कर रहा था कि एक शख्स ने कहा

एक "उफ! अञ्जना देवी पर बडा जुल्म हुआ। कैसा झूठा एहताम लगाया गया।"

दूसरा "कुछ समझ में नहीं आता कि रानी कितुमती से क्योंकर गलती हुई। वो तो

دیکھئے وہ گردن جھکائے ان سب سے الگ کھڑی ہے - اور کبھی کبھی اونچی نظر کر
پون کی طرف بھی دیکھ لیتی ہے - جس سے معلوم ہوتا ہے کہ اس وقت وہ سب
رنج و غم بھول اس سے بات کرنا چاہتی ہے لیکن ان سب کو دیکھکر جھجک
جاتی ہے -

جب ہون کر چکے تو گھوڑوں پر سوار ہو خندان و شاداں وہاں سے روانہ
ہوئے -

مولف - ؎

شبھ دن پیاری انجنا آج ہوا پرکاش — گئے بیت دن بپت کے ہوا دکھوں کا ناش
دکھ اٹھائے اتنے گھنے سنے بچن آیوگ — دن دن خوشیاں ماں اب اور ہوگ خوشی کے ہوگ
ستونتی تو نا رہے شیل سبا گنوان — نہیں دوش کسی کو تیں دیا لیا بھاگ پورب لا مان
دھیرج راکھی من دکھے ایشور پر وشواس — شبھ پھل نشچے پاویگی کہے جوڑ کر داس

باب بائیسواں

رتن پور

دن کا آخری پہر ہے جبکہ رتن پور کے مشرقی دروازہ کے باہر میداں میں لوگ
کثرت سے جمع ہو رہے ہیں - اور ابھی اور بھی یکے بعد دیگرے آ رہے ہیں -
پردھان رتن بیر بڑے کروفر سے روسائے شہر کے ساتھ ہنس ہنس کر
باتیں کر رہا تھا کہ ایک شخص نے کہا -

ایک - اوف! انجنا دیوی پر بڑا ظلم ہوا - کیسا جھوٹھا اتہام لگایا گیا -
دوسرا - کچھ سمجھ میں نہیں آتا - کہ رانی کیتومتی سے کیونکر ایسی غلطی ہوئی وہ

ऐसी दाना औरत हैं।"

तीसरा "लुत्फ तो यही है। और ज्यादातर ताजुब की ये बात है कि राजा इस तरफ कुछ मतवज्जा ही नहीं हुआ।"

चौथा "उसकी वजा मैं बतलाता हूँ। और हकीकत में यही होगी चूँकि रानी कितुमती दानाई मे बेनजीर हैं और आज तक कोई भी ऐसी बातें वकोई में नहीं आई जिससे किसी को शिकायत का मौका मिला हो। और यही सबब है जिसने राजा को मुगालते में डाला। वरना वो तो कभी इस धोखे में न आता।"

पाँचवाँ "जो कुछ आपने फरमाया दुरुस्त है। मगर ऐसी बातों पर जो दूसरे की तबाही का बाइश हो गौर करना लाजमी है ता वक्त ये के कि पूरे तौर पर इत्मिनान न हो जाए उन पर अमल करना इंसानियत से बाईद (दूर) है।"

रत्नवीर "किसी का कुछ कसूर नहीं। ये ललिता की आग लगाई हुई है जो रानी की बहुत मुँह चढी थी। उसने रानी की अक्ल पर ऐसा पर्दा डाला और बदसन किया कि बिना लिहाज किसी तहकीकात करने के अञ्जना को शहर बदर कर दिया।"

इस तरह की बातें कर ही रहे थे कि एक सवार घोडा दौडाता हुआ आया। और प्रधान से कुछ कहने की देर हुई कि सब लोग उठ खडे हुए और शादियानें बजने शुरु हो गए। ऐ! ये शादियाने कैसे? और लोग क्यों खडे हो गए हैं?

नाजरीन! वो देखिए चंद सवार आगे आगे घोडो को सरपट डाले आ रहे हैं। और उनके पीछे राजा प्रह्लाद विद्याधर और पवन वगैहरा हैं जिनके इस्तकबाल के लिए ये सब लोग जमह हैं। और खुशी मनाई जा रही है।

वो लो! अब तो बिल्कुल करीब ही आ गए और घोडों को रोक उतर रहे हैं। राजा प्रह्लाद विद्याधर

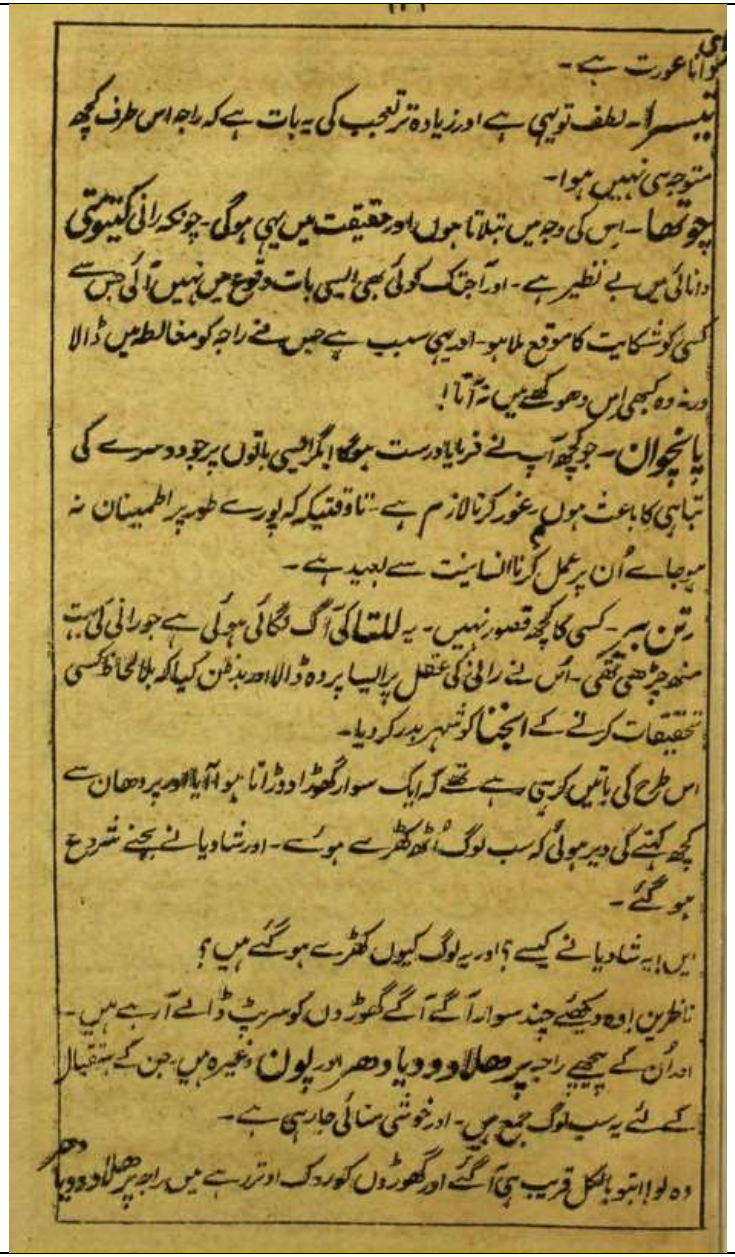

पहले प्रधान से बातें कर बाद मे सबसे खैरो आफियत पूछ रहा है। और इसी तरह पवन भी अपनी प्रेम भरी बातों से सबको खुश कर रहा है।

आहा! इस वक्त क्या उम्दा नजारा है। कि सब के चेहरे मारे खुशी के सुर्ख हो रहे हैं। फूलों के हार पहनाए जा रहे हैं। और शादियानों की आवाज इस रौनक के जोबन को और भी बढा रही है। और अञ्जना देवी रथ मे बैठी हुई इस नजारे को देखकर कह रही है।

धन दिन है ये आज का धन तुझको करतार
निकली थी इस नगर से काला वेश, मै धार
था समय वो महा कठिन कोई न पूछिन हार
बलहारी जगदीश के था जिसका मुझे आधार

ये कहकर बार बार खालिके खल्क (सृष्टि के रचयिता) के आगे सर झुका उस का शुक्रिया अदा कर रही है। और हमारे बहादुर हनुमान जी हुजूम (भीड) को देख देख कर कैसे खुश हो रहे हैं। और मुस्करा कर लोगो को अपनी तरफ मुतवजा कर रहे हैं। गर्ज बडी धूमधाम से शहर में दाखिल हुए। रत्नपुर का नजारा इस वक्त का कबिले दीद है। जा बजा शादियाने बज रहे हैं। रोशनी का सामान देख दिवाली की रात फीकी पड गई है। अगरचा इस कदर खुशी को देख रंजोगम भी हद की आग में जलकर नेस्तनाबूद हो रहा है। मगर ताहम रानी कितुमती को देखिए। कैसे सर झुकाए मुँह छुपाए रथ में बैठी है। ये क्यों! अपनी ना आकबत अन्देशी पर परेशान हो रही है और बदसलूकियों को याद कर खुद बखुद शरमा रही है। आँखे लोगो के चेहरों को देखना और जान सब के पाँवो की सैर कर रही है। सुनिए वो औरते जो सामने इस मकान सफीक पर आ रही हैं क्या कह रही हैं

चलो सखी उठ देखे हुआ ये कौतुक क्या — देखा आई अञ्जना बाजे रहे बजा
साँची निकली अञ्जना धरग जीवन इस सास
झूठा दे कलंक इस बहु को किया निरास

१ पोशाक

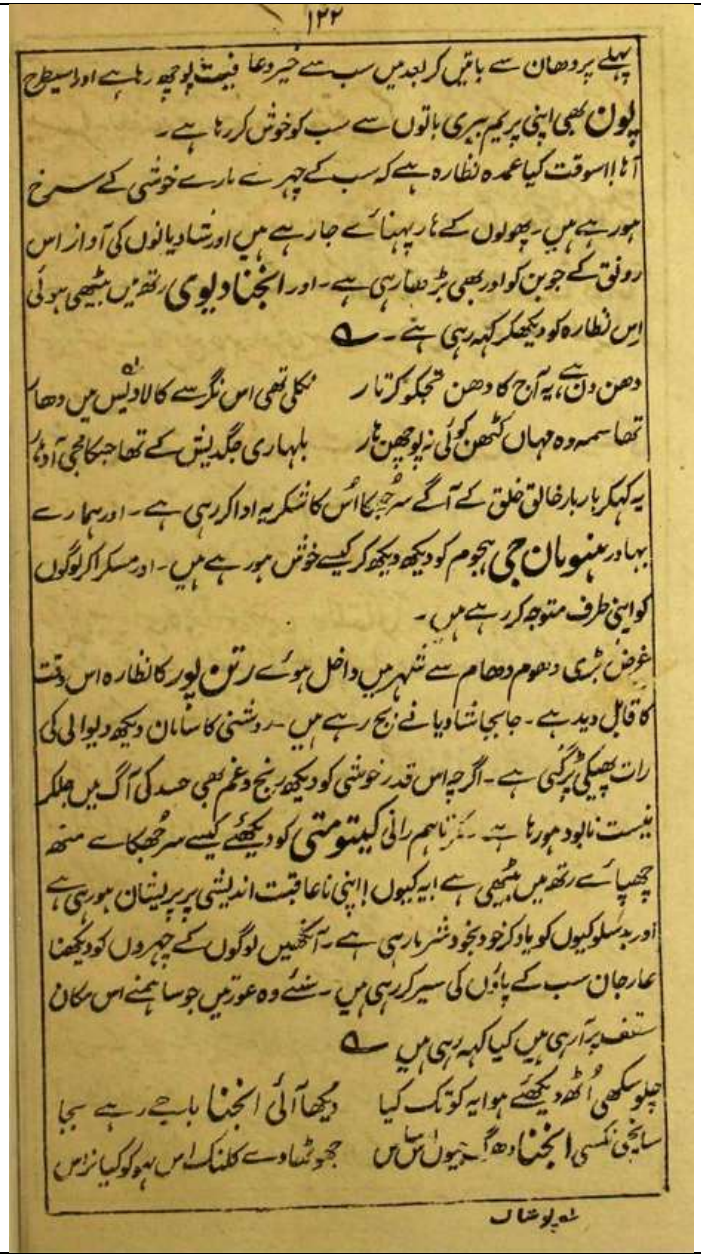

پہلے پردھان سے باتیں کر بعد میں سب سے خیر و عافیت پوچھ رہا ہے اور اسیطرح
پون بھی اپنی پریم بھری باتوں سے سب کو خوش کر رہا ہے۔
آہا! اسوقت کیا عمدہ نظارہ ہے کہ سب کے چہرے مارے خوشی کے سرخ
ہو رہے ہیں۔ پھولوں کے ہار پہنائے جا رہے ہیں اور شادیانوں کی آواز اس
رونق کے جوبن کو اور بھی بڑھا رہی ہے۔ اور انجنا دیوی رتھ میں بیٹھی ہوئی
اس نظارہ کو دیکھکر کہہ رہی ہے۔ ؎

دھن دن ہے یہ آج کا دھن تجکو کرتار — نکلی تھی اس نگر سے کالا دیس میں دھار
تھا سمے وہ جہاں کٹھن کوئی نہ پوچھن ہار — بلہاری جگدیش کے تھا جسکا مجھے آدھار

یہ کہکر بار بار خالق خلق کے آگے سر جھکا اُس کا شکریہ ادا کر رہی ہے۔ اور ہمارے
بہادر ہنومان جی ہجوم کو دیکھ دیکھ کر کیسے خوش ہو رہے ہیں۔ اور مسکرا کر لوگوں
کو اپنی طرف متوجہ کر رہے ہیں۔

غرض بڑی دھوم دھام سے شہر میں داخل ہوئے رتن پور کا نظارہ اس وقت
کا قابل دید ہے۔ جابجا شادیانے بج رہے ہیں۔ روشنی کا سامان دیکھ دیوالی کی
رات پھیکی پڑ گئی ہے۔ اگرچہ اس قدر خوشی کو دیکھ رنج و غم بھی حسد کی آگ میں جلکر
نیست نابود ہو رہا ہے۔ تاہم رانی کیتومتی کو دیکھئے کیسے سر جھکائے منھ
چھپائے رتھ میں بیٹھی ہے! یہ کیوں! اپنی ناعاقبت اندیشی پر پریشان ہو رہی ہے
اور بدسلوکیوں کو یاد کر خود بخود شرما رہی ہے۔ آنکھیں لوگوں کے چہروں کو دیکھنا
عار جان سب کے پاؤں کی سیر کر رہی ہیں۔ سنئے وہ عورتیں جو سامنے اس مکان
سے نکل کر آ رہی ہیں کیا کہہ رہی ہیں ؎

چلو سکھی اُٹھ دیکھئے ہوا یہ کوتک کیا — دیکھا آئی انجنا باجے رہے بجا
سانچی نکسی انجنا دھار گئی جیوں اس ساس — جھوٹا دے کلنک اس بہو کو کیا نراس

۱ پوشاک

बालक गोद सुहावे ता मस्तक चँद समान
धन धन तुझको अञ्जना तेरा ईश्वर राखा मान
पवन की प्यारी देखो कैसा चढा उमंग
चले चाल गज मस्त की नयन गोढा रंग
कितुमती न लाज से देखे सीस उठा
जीती है ये पापनी मेरी नकिया बस खा
चाह मुनी प्यारी कह गए कहो मुख से बात विचार
पहले गुण अवगुण पडताल कर जो पीछे हो ना हार
इस तरह की जा बजा बातें हो रही हैं। हर एक रानी को हिकारत की नजर से देख रहा है। जब तक महल में दाखिल न हुई इन बातों का सिलसिला भी खत्म न हुआ।

बाब (अध्याय) तेइसवाँ

रानी कितुमती

सुबह का वक्त है रानी कितुमती अपने कमरे में सर झुकाए बैठी है। और कई तरह के ख्याल उसके दिमाग से उतर कलेजे को दबा रहे हैं जबान को बन्द कर रहे हैं। अञ्जना देवी की हाजिजाना गुफ्तगू कानों में गूँज रही है। और अपनी बदसलूकियों को याद कर दिल में कह रही है। "उफ! मैंने बेकसूर अञ्जना को क्यों ऐसे सख्त अल्फाज कहे? क्यों उसकी बेहुरमती का बाइश हुई? वो तो एक पारसा (पवित्र) और नेकबख्त लडकी है। मैं क्यों उससे बदगुमान हो गई?" कुछ सकूत के बाद "हाय! ललिता! तेरा सत्यानाश हो। तूने ही मुझको उससे गुमराह कर खाक में मिलाया।" फिर खुदही "मैं खुद बेवकूफ हूँ जिसने तेरी बातों पर यकीन कर बेचारी अञ्जना को निकाल दिया।" कुछ सोचकर "बस अब मुझको यही लाजिम है कि लोगों के दिलों से इस शिकायत को रफह करने की कोशिश करूँ। जहाँ तक हो सके अञ्जना को खुश रखूँ और घर के इन्तजाम में दखल न दूँ। वो जाने और घर। वो बडी लायक है।"

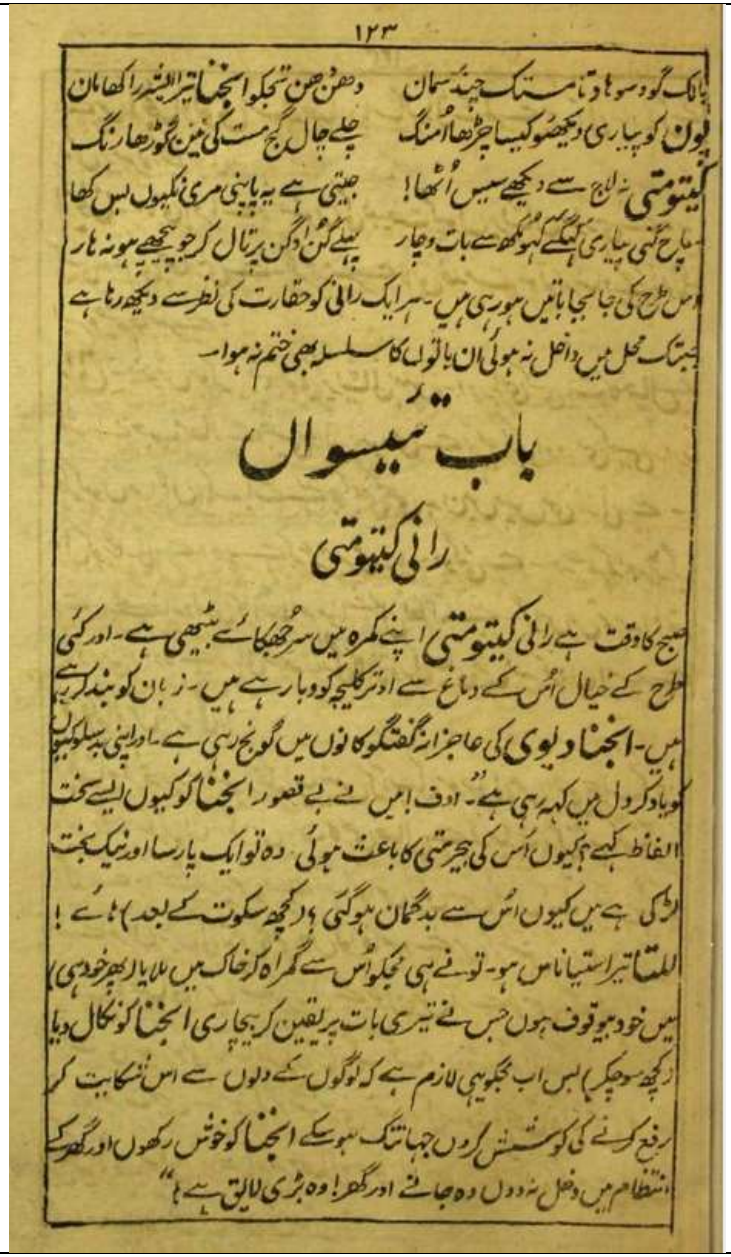

بالک گود سوہاوتا مستک چند سمان — دھن دھن تجکو انجنا تیرا ایشور راکھا مان
پون کو پیاری دیکھو کیسا چڑھا اُمنگ — چلے چال گج مست کی نین گوڑھا رنگ
کیتومتی نہ لاج سے دیکھے سیس اُٹھا! — جیتی ہے یہ پاپنی مری نکیوں بس کھا
چاہ گنی پیاری کہگئے کہو مکھ سے بات وچار — پہلے گُن اوگن پڑتال کر جو پیچھے ہو نہ ہار
اس طرح کی جا بجا باتیں ہو رہی ہیں۔ ہر ایک رانی کو حقارت کی نظر سے دیکھ رہا ہے جبتک محل میں داخل نہ ہوئی ان باتوں کا سلسلہ بھی ختم نہ ہوا۔

باب تیئسواں

رانی کیتومتی

صبح کا وقت ہے رانی کیتومتی اپنے کمرہ میں سر جھکائے بیٹھی ہے۔ اور کئی طرح کے خیال اُس کے دماغ سے اوتر کلیجہ کو دبا رہے ہیں۔ زبان کو بند کر رہے ہیں۔ انجنا دیوی کی عاجزانہ گفتگو کانوں میں گونج رہی ہے۔ اور اپنی بدسلوکیوں کو یاد کر دل میں کہہ رہی ہے۔ "اوف! میں نے بے قصور انجنا کو کیوں ایسے سخت الفاظ کہے؟ کیوں اُس کی بیحرمتی کا باعث ہوئی۔ وہ تو ایک پارسا اور نیک بخت لڑکی ہے میں کیوں اُس سے بدگمان ہوگئی؟ (کچھ سکوت کے بعد) ہائے! للتا تیرا ستیاناس ہو۔ تو نے ہی مجکو اُس سے گمراہ کر خاک میں ملایا (پھر خود ہی) میں خود بیوقوف ہوں جس نے تیری بات پر یقین کر بیچاری انجنا کو نکال دیا (کچھ سوچکر) بس اب مجکو یہی لازم ہے کہ لوگوں کے دلوں سے اس شکایت کو رفع کرنے کی کوشش کروں جہاں تک ہو سکے انجنا کو خوش رکھوں اور گھر کے انتظام میں دخل نہ دوں وہ جانے اور گھر! وہ بڑی لائق ہے۔"

इतने में अञ्जना देवी संध्या उपासना कर रानी के कमरे में आई और उसके पाँव पर सर को रखकर बोली।

अञ्जना "माताजी! फरमाइए दुश्मनों की तबीयत क्यों परेशान हो रही है? ये कैसी उदासी छा रही है? अगर कुछ मेरे लायक खिदमत हो तो इरशाद किजिए। लौंडी बसरोचश्म हाजिर है।"

रानी खुश होकर "बेटी कोई परेशानी नहीं और न ही किसी बात का ख्याल है। ईश्वर ने जब तुम्हारी जैसी लायक बहु दी है तो फिर मुझको उदासी कैसी और फिक्र क्यों हो। हाँ एक बात है जो कभी कभी बदन मे टीस सी मारती है, दिल को बिगाडती है। वो ये कि उम्र मेरी ज्यादा हो गई है और जिस्म कमजोर पड गया है। मुझसे खानादारी का इन्तजाम होना मुश्किल नजर आता है। अगर इसमे तुम मेरा हाथ बटाओ तो मेरा इरादा है कि बाकी हिस्सा जिन्दगी का ईश्वर की भक्ति मे बसर करूँ। उम्मीद है तुम मुझको मायूस न करोगी।"

अञ्जना कुछ देर सोचकर "मुझको जेबा (शोभा) नहीं कि आपकी मौजूदगी में ऐसी जुर्रत कर इन बातों का हौसला करूँ। मगर इस बात का भी ख्याल है कि मेरा अजर करना आप को नागवार न गुजरे। इसलिए अगरचा मैं अपने आप को इस लायक नहीं ख्याल करती लेकिन अगर आप मेरे निगरा रहेंगी तो मैं भी इसको अंजाम देने में कोशिश करूँगी।"

नाजरीन! अञ्जना की बातें सुनकर रानी के खून में मारे खुशी के कुछ ऐसी हरकत पैदा हो गई कि तमन्नाओं की तरह रग रग में दौडने लग पडा। और उसी वक्त जरोजवहरात उसके सपुर्द कर गोशा नशीनी (निवृत) इख्तियार की और अञ्जना देवी कारोबार में मसरूफ हो गई। उधर राजा प्रह्लाद विद्याधर आनान हकूमत पवन के हाथ दे यादे हक में मसरूफ हो गया।

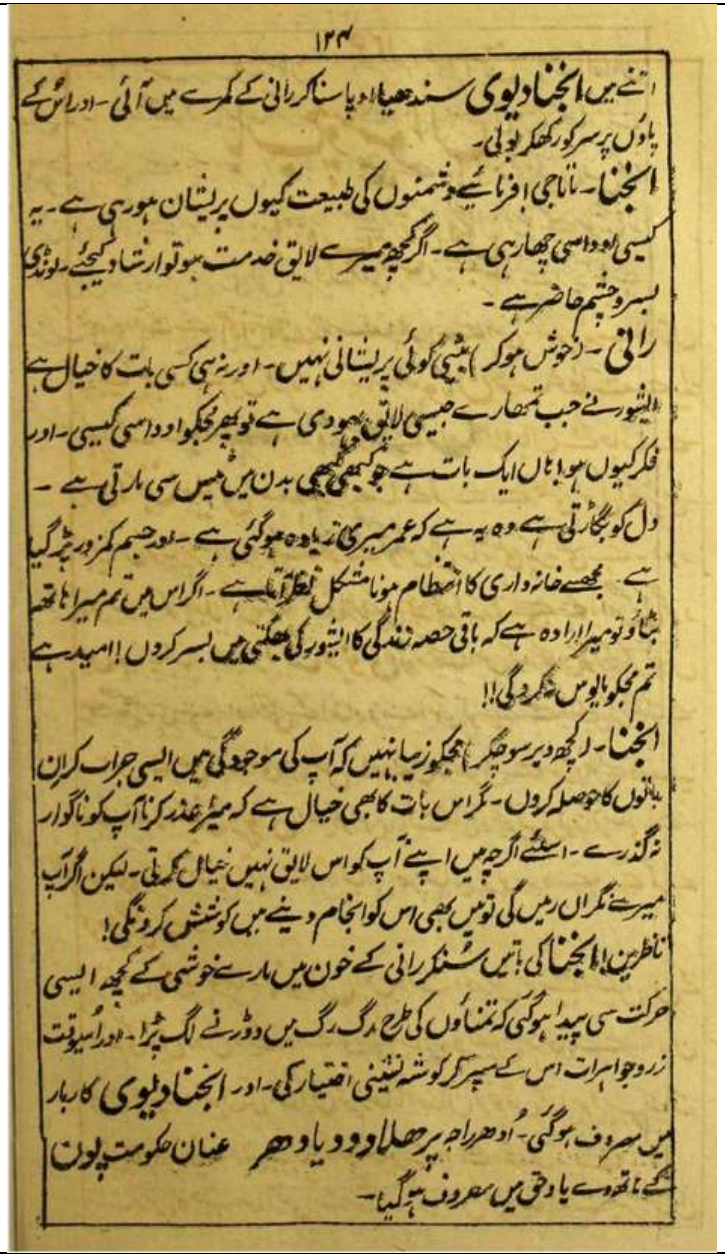

۱۲۴

اتنے میں انجنا دیوی سندھیا اوپاسنا کر رانی کے کمرے میں آئی - اور اُس کے پاؤں پر سر کو رکھکر بولی -

انجنا - ماتاجی! فرمائیے دشمنوں کی طبیعت کیوں پریشان ہو رہی ہے - یہ کیسی اداسی چھا رہی ہے - اگر کچھ میرے لایق خدمت ہو تو ارشاد کیجئے - لونڈی بسر و چشم حاضر ہے -

رانی - (خوش ہوکر) بیٹی کوئی پریشانی نہیں - اور نہ ہی کسی بات کا خیال ہے ایشور نے جب تمھارے جیسی لایق بہو دی ہے تو پھر مجکو اداسی کیسی - اور فکر کیوں ہو - ہاں ایک بات ہے جو کبھی کبھی بدن میں ٹیس سی مارتی ہے - دل کو بگاڑتی ہے وہ یہ ہے کہ عمر میری زیادہ ہوگئی ہے - اور جسم کمزور پڑ گیا ہے - مجھسے خانہ داری کا انتظام ہونا مشکل نظر آتا ہے - اگر اس میں تم میرا ہاتھ بٹاؤ تو میرا ارادہ ہے کہ باقی حصہ زندگی کا ایشور کی بھگتی میں بسر کروں! امید ہے تم مجکو مایوس نہ کروگی!!

انجنا - (کچھ دیر سوچکر) مجکو زیبا نہیں کہ آپ کی موجودگی میں ایسی جرأت کر ان باتوں کا حوصلہ کروں - مگر اس بات کا بھی خیال ہے کہ میرا عذر کرنا آپ کو ناگوار نہ گذرے - اسلئے اگرچہ میں اپنے آپ کو اس لایق نہیں خیال کرتی - لیکن اگر آپ میرے نگراں رہیں گی تو میں بھی اس کو انجام دینے میں کوشش کرونگی!

ناظرین! انجنا کی باتیں سُنکر رانی کے خون میں مارے خوشی کے کچھ ایسی حرکت سی پیدا ہوگئی کہ تمناؤں کی طرح رگ رگ میں دوڑنے لگ پڑا - اور اُسیوقت زر و جواہرات اس کے سپرد کر گوشہ نشینی اختیار کی - اور انجنا دیوی کاربار میں مصروف ہوگئی - اُدھر راجہ پرھلاد و دیادھر عنان حکومت پون کے ہاتھ دے یاد حق میں مصروف ہوگیا -

बाब (अध्याय) चौबीसवाँ

वानर दीप मे तहलका मच गया

सुबह का वक्त है। अभी आसमान पर तारे झिलमिला रहे हैं और परिंदे दरख्तों पर बैठे चहचहा रहे हैं। कि हमारा बहादुर हनुमान ख्वाब गफलत से बेदार हो पलंग से उतर इधर उधर देख रहा है और अंगडाइयाँ लिए जा रहा है। ज्योंहि अञ्जना देवी संध्या उपासना के कमरे से निकलती हुई नजर पडी वही उसको जा पकडा। आहा! एक हाथ से तो उसकी साडी पकड रखी है और दूसरे को फैला उसके मुँह की तरफ देख कुछ कह रहा है। गोया उसकी गोद में जाना चाहता है। मगर अञ्जना देवी को देखना। इसको देख देख कर कैसी खुश हो मुस्करा रही है और उंगली के इशारे से इसको लेने से इंकार कर रही है। और इसने भी अब रोनी सी शक्ल बना दोनों हाथों से पकड वही रोक लिया है। भला अञ्जना देवी इसको इस हालत में देख क्योंकर गवारा कर सकती है। जल्दी से उठा छाती से लगा लिया और पेशानी को बोसा दे अपने कमरे को चली गई है।

नाजरीन! अगरचा होनहार हनुमान इस वक्त दो बरस का है लेकिन इसके जिस्म की डीलडौल देखने वाले को पाँच साल का यकीन हो जाता है। दिन ब दिन अपने वालदैन की तमन्नाओं को बढाता और उनको खुश करता हुआ जब सात साल का हुआ तो एक लायक पण्डित इसकी तालीम के वास्ते मुकर्रर किया।

सात बरस का जब हुआ अञ्जनी सुत हनुमान
विद्या धन करवाते पण्डित चतुर सुजान

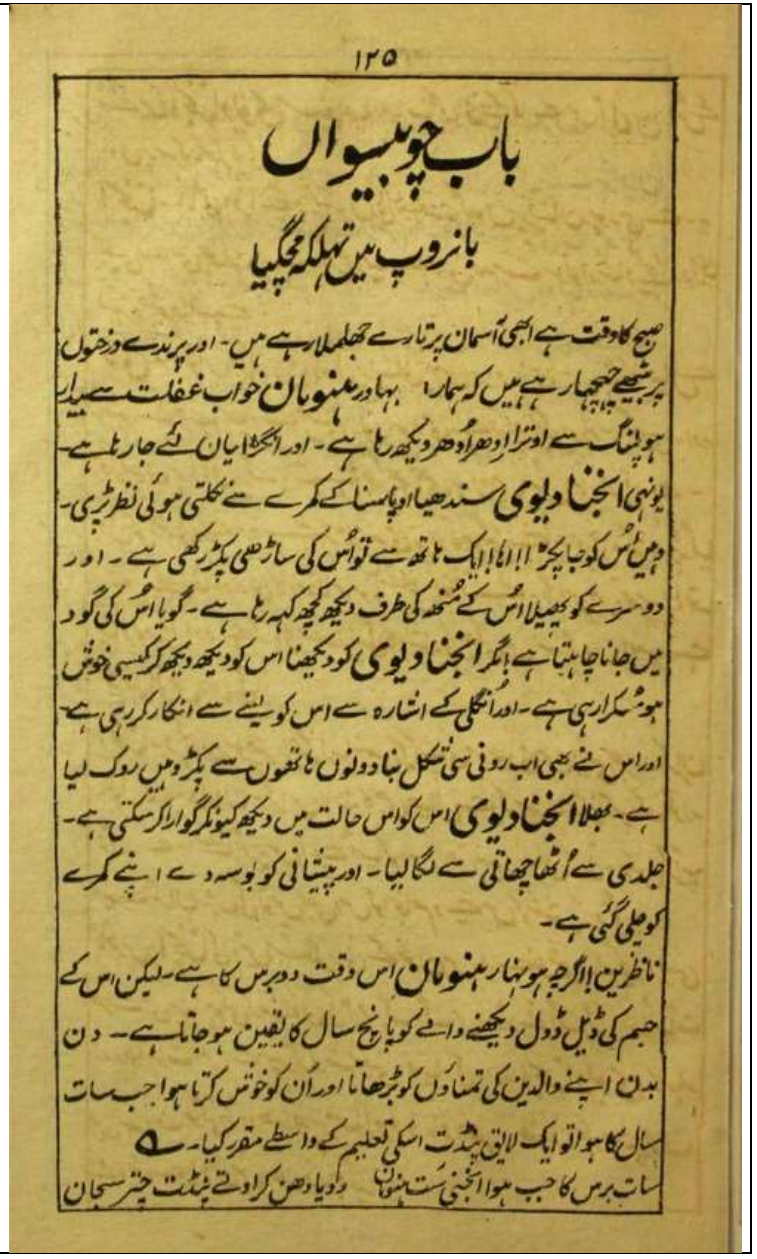

۱۲۵

باب چوبیواں

بانروپ میں تہلکہ مچگیا

صبح کا وقت ہے ابھی آسمان پر تارے جھلملا رہے ہیں۔ اور پرندے درختوں پر بیٹھے چہچہا رہے ہیں کہ ہمارا بہادر ہنومان خواب غفلت سے بیدار ہو پلنگ سے اوترا ادھر اُدھر دیکھ رہا ہے۔ اور انگڑائیاں لئے جا رہا ہے۔ یونہی انجنا دیوی سندھیا اوپاسنا کے کمرے سے نکلتی ہوئی نظر پڑی۔ وہیں اُس کو جا پکڑا!! اہا! ایک ہاتھ سے تو اُس کی ساڑھی پکڑ رکھی ہے۔ اور دوسرے کو پھیلا اُس کے مُنھ کی طرف دیکھ کچھ کہہ رہا ہے۔ گویا اُس کی گود میں جانا چاہتا ہے! مگر انجنا دیوی کو دیکھنا اس کو دیکھ دیکھ کر کیسی خوش ہو مُسکرا رہی ہے۔ اور اُنگلی کے اشارہ سے اس کو لینے سے انکار کر رہی ہے۔ اور اس نے بھی اب رونی سی شکل بنا دونوں ہاتھوں سے پکڑ وہیں روک لیا ہے۔ بھلا انجنا دیوی اس کو اس حالت میں دیکھ کیونکر گوارا کر سکتی ہے۔ جلدی سے اُٹھا چھاتی سے لگا لیا۔ اور پیشانی کو بوسہ دے اپنے کمرے کو چلی گئی ہے۔

ناظرین! اگرچہ ہونہار ہنومان اس وقت دو برس کا ہے۔ لیکن اس کے جسم کی ڈیل ڈول دیکھنے والے کو پانچ سال کا یقین ہو جاتا ہے۔ دن بدن اپنے والدین کی تمناؤں کو بڑھاتا اور اُن کو خوش کرتا ہوا جب سات سال کا ہوا تو ایک لائق پنڈت اسکی تعلیم کے واسطے مقرر کیا۔ ۵

سات برس کا جب ہوا انجنی سُت ہنومان
وِدیا دھن کراوتے پنڈت چتر سجان

सरस्वती बैठी मुख दिखे जो पढता हनुमान
वो जी बैर न देखता कहता नोक जबान
छः साल नौ मास में पढ विद्या पाया मान
ऐसा हुआ विद्वान ये देख पण्डित हुए हैरान

चौदह साल की उम्र मे व्याकरण (संस्कृत ग्रामर) वगैहरा को खूब अच्छी तरह समझ लिया। ऋग् यजुर् साम वेद को पढ लिया। गर्ज संस्कृत विद्या मे वो महारत पैदा की कि बडे बडे पण्डितों और विद्वानों ने भी उसको इज्जत की निगाहों से देख उसकी तारीफ की। मल विद्या (हुनर कुश्ती) मे वो शोहरत हासिल की कि तमाम वानर दीप में तहलका मच गया। कई एक मशहूर नामवर पहलवानों ने भी, जो अपने आप को बेनजीर ख्याल करते थे, उसके बहादुराना दाव पेंचो को देख हैरानगी इख्तियार की। जब कभी किसी को उनसे कुश्ती करने का मौका मिला, अव्वल तो पहले ही खशम अलूदा नजर पडने से उसके ओसान खता हो गए। अगर किसी तरह जुर्रत भी की तो ऐसा नीचा देखा कि फिर उम्र भर सामने आने का हौसला न हुआ। फन सिपाहगिरि, आहा! इसमें भी कमाल ही कर दिखाया। थोडे अरसे मे वो अतालिक जो इसको सिखलाने के लिए मुकर्रर किए गए है उसके गुर जरसानी तीर अंदाजी और शमशीरजनी के हुनरों को देख अगश्त बदनदा हैं। गनीम की फौज को मगलूब (आत्मसमर्पण) करने के नक्शें और तजवीजें सुनकर पुराने तजुर्बाकार सिपहसालार भी उसकी अक्ल और दानाई पर अश अश कर रहे हैं।

मुख्तसर (संक्षेप) ये कि हमारा जरनैल अपने जमाने मे लासानि (अतुल्य) है। इस बहादुर कि जवाँमर्दी की बाबत तोल तोल लिखने की जरूरत नहीं क्योंकि आर्यावर्त का बच्चा बच्चा इसके शुजात (प्राक्रम) की दाद दे रहा है। और रामायण के मुसन्निफों ने इस मजमून (विषय) पर कई वर्क स्याह कर दिए हैं। हाथ कंगन को आरसी क्या रामायण देखिए।

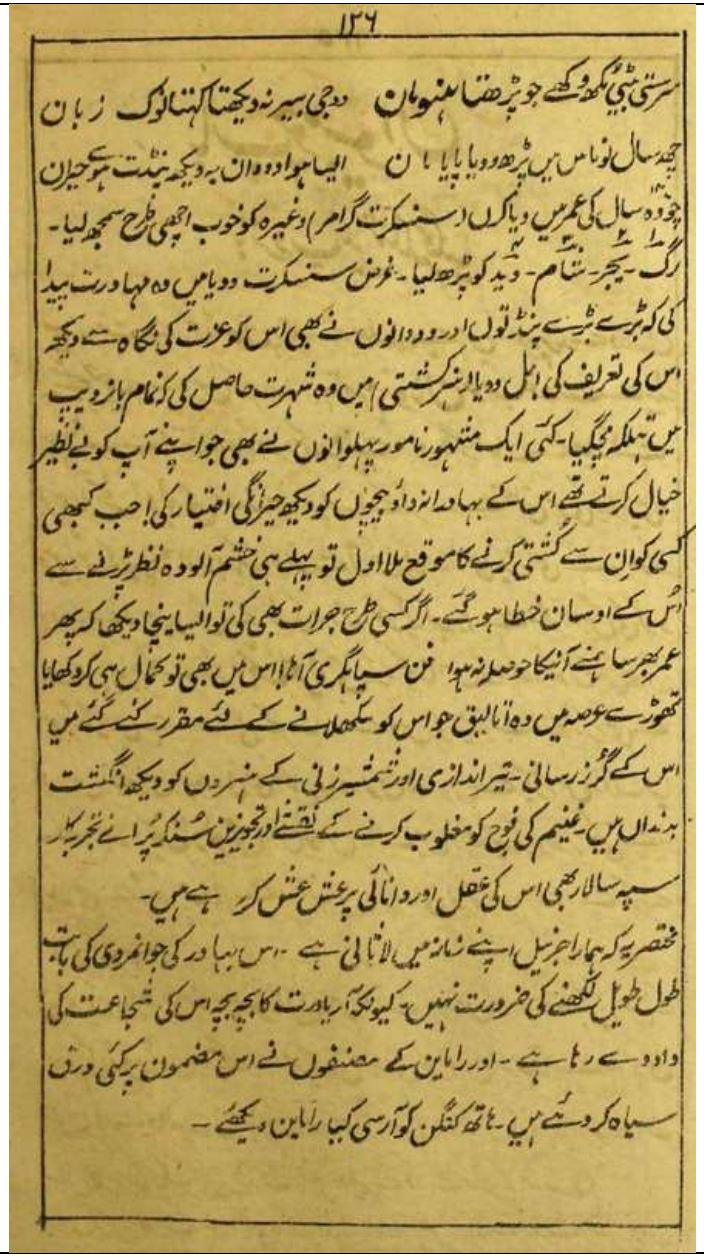

سرستی بیٹی لکھ دکھے جو پڑھتا ہنومان دوجی بیر نہ دیکھتا کہتا لوک زبان
چھ سال نو ماس میں پڑھ ودیا پایا مان ایسا ہوا وہ وان بہ دیکھ پنڈت ہوئے حیران

چودہ سال کی عمر میں ویاکرن (سنسکرت گرامر) وغیرہ کو خوب اچھی طرح سمجھ لیا۔ رگ۔ یجر۔ سام۔ وید کو پڑھ لیا۔ غرض سنسکرت ودیا میں وہ مہادرت پیدا کی کہ بڑے بڑے پنڈتوں اور ودوانوں نے بھی اس کو عزت کی نگاہ سے دیکھ اس کی تعریف کی۔ مل ودیا (ہنر کشتی) میں وہ شہرت حاصل کی کہ تمام بازو پہلوانوں میں ہلکہ مچ گیا۔ کئی ایک مشہور نامور پہلوانوں نے بھی جو اپنے آپ کو بے نظیر خیال کرتے تھے اس کے بہادرانہ داؤ پیچوں کو دیکھ حیرانگی اختیار کی۔ جب کبھی کسی کو ان سے کشتی کرنے کا موقع ملا اول تو پہلے ہی چشم آلودہ نظر پڑنے سے اس کے اوسان خطا ہو گئے۔ اگر کسی طرح جرات بھی کی تو ایسا نیچا دیکھا کہ پھر عمر بھر سامنے آنیکا حوصلہ نہ ہوا۔ فن سپاہگری آہا! اس میں بھی تو کمال ہی کر دکھایا تھوڑے عرصہ میں وہ اتالیق جو اس کو سکھلانے کے لئے مقرر کئے گئے تھے اس کے گرز رسانی۔ تیر اندازی اور شمشیر زنی کے ہنروں کو دیکھ انگشت بدنداں ہیں۔ غنیم کی فوج کو مغلوب کرنے کے نقشے اور تجویزیں سنکر پرانے تجربہ کار سپہ سالار بھی اس کی عقل اور دانائی پر عش عش کر رہے ہیں۔

مختصر یہ کہ ہمارا جرنیل اپنے زمانہ میں لاثانی ہے۔ اس بہادر کی جوانمردی کی بابت طول طویل لکھنے کی ضرورت نہیں۔ کیونکہ آریاورت کا بچہ بچہ اس کی شجاعت کی داد دے رہا ہے۔ اور راماین کے مصنفوں نے اس مضمون پر کئی ورق سیاہ کر دئے ہیں۔ ہاتھ کنگن کو آرسی کیا راماین دیکھئے۔

बाब (अध्याय) पचीसवाँ

मैं बुजदिल नहीं नामर्द नहीं हूँ

दिन के पिछले पहर का वक्त है। परछावे ढल चुके हैं। धूप की तेजी भी अब वो नहीं रही जो थोडी देर पहले महसूस हो रही थी। ऐसे वक्त में हमारा ख्याल जहाँ पहुचता है, वो रत्नपुर के राजा का दरबार है जिसमे राजा प्रह्लाद विद्याधर का लडका पवन बडे आन बान से एक मरसह तख्त पर सर झुकाए एक खत हाथ में लिए बैठा है। और सामने कुछ फासले पर एक सिपाही फौजी वर्दी पहने बाअदब दस्तबस्ता खडा है। ईश्वर जाने इस खत मे क्या लिखा है कि पवन बडी हैरानगी से रह रह कर इसको देख रहा है। हाँ कभी कभी दबी हुई नजर उस नौजवान पर जो तख्त की दाएँ तरफ सुर्ख पोशाक पहने सर पर मुकुट रखे बैठा है, डाल लेता है। और हाजरीन दरबारी नजर इस तरफ काम कर रहे हैं। तमाम कमरे मे आलमे सकूत है। सन्नाटा सा छा रहा है। मगर किसी की जुर्रत नहीं पडती कि जरा उठकर इस खत की माहियत दरयाफ्त करे या बाइशे हैरानगी का पूछे। जब कुछ अरसा इसी तरह गुजरा तो इन सबके मुँह पर लगी हुई मोहरे खामोशी को जिसने बीच में आकर तोडा वो वही नौजवान हमारा बहादुर जरनैल हनुमान है। सुनिए क्या कह रहा है।

हनुमान "महाराज! आपको इस कदर मुतफिक्र देखकर मेरा दिल बेचैन हो कई एक तरह के पेंच ताब खा रहा है। अगर बतलाने मे कुछ हर्ज न हो तो मुझको भी इस अमर से आगाह किजिए।"

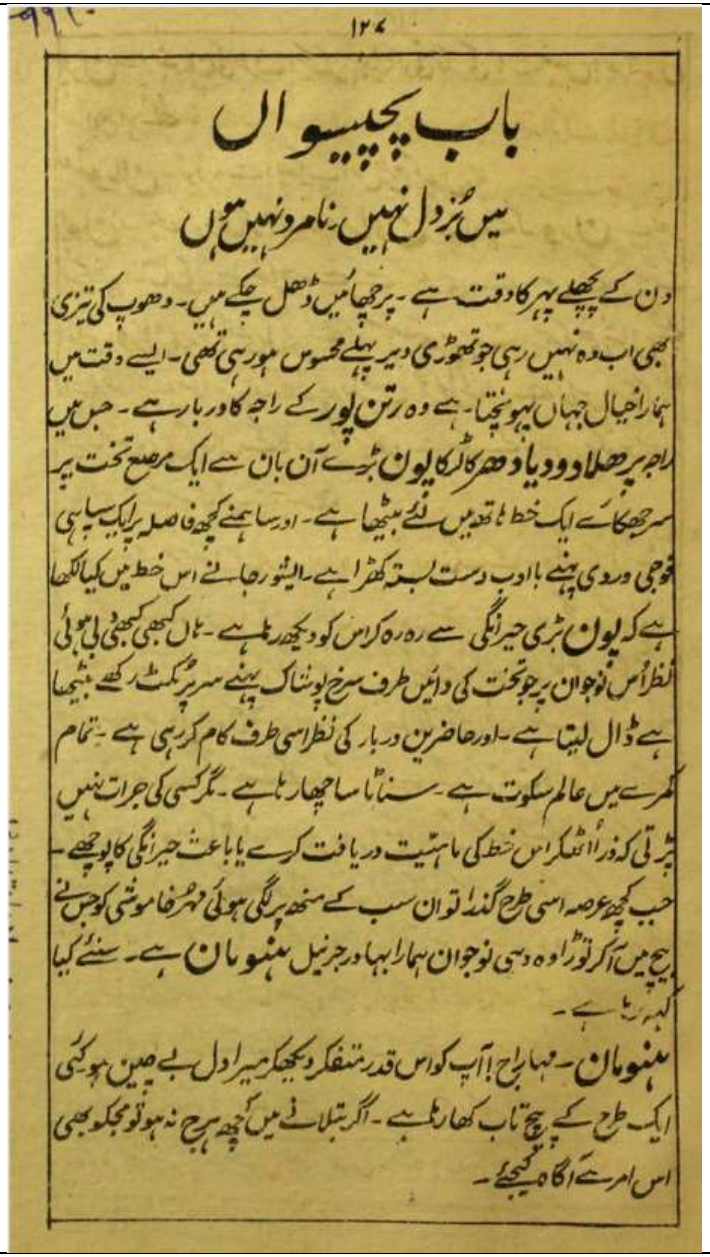

۱۲۷

باب پچیسواں

میں بزدل نہیں۔ نامرد نہیں ہوں

دن کے پچھلے پہر کا وقت ہے۔ پرچھائیں ڈھل چکے ہیں۔ دھوپ کی تیزی بھی اب وہ نہیں رہی جو تھوڑی دیر پہلے محسوس ہو رہی تھی۔ ایسے وقت میں ہمارا خیال جہاں پہونچتا ہے وہ رتن پور کے راجہ کا دربار ہے۔ جس میں راجہ پرہلاد ودیادھر کا لڑکا پون بڑے آن بان سے ایک مرصع تخت پر سر جھکائے ایک خط ہاتھ میں لئے بیٹھا ہے۔ اور سامنے کچھ فاصلہ پر ایک سپاہی فوجی وردی پہنے باادب دست بستہ کھڑا ہے۔ ایشور جانے اس خط میں کیا لکھا ہے کہ پون بڑی حیرانگی سے رہ رہ کر اس کو دیکھ رہا ہے۔ ہاں کبھی کبھی دبی ہوئی نظر اس نوجوان پر جو تخت کی دائیں طرف سرخ پوشاک پہنے سر پر مکٹ رکھے بیٹھا ہے ڈال لیتا ہے۔ اور حاضرین دربار کی نظر اسی طرف کام کر رہی ہے۔ تمام کمرے میں عالم سکوت ہے۔ سناٹا سا چھا رہا ہے۔ مگر کسی کی جرات نہیں پڑتی کہ ذرا اٹھکر اس خط کی ماہیت دریافت کرے یا باعث حیرانگی کا پوچھے۔ جب کچھ عرصہ اسی طرح گذرا تو ان سب کے منھ پر لگی ہوئی مہر خاموشی کو جس نے بیچ میں آکر توڑا وہ وہی نوجوان ہمارا بہادر جرنیل ہنومان ہے۔ سنئے کیا کہہ رہا ہے۔

ہنومان۔ مہاراج! آپ کو اس قدر متفکر دیکھکر میرا دل بے چین ہو گیا ایک طرح کے پیچ تاب کھا رہا ہے۔ اگر بتلانے میں کچھ ہرج نہ ہو تو مجکو بھی اس امر سے آگاہ کیجئے۔

पवन हनुमान की तरफ देखकर "बेटा कोई फिक्र की बात नहीं। तुम क्यों हैरान हो गए?"

हनुमान "तो फरमाइये फिर आप इस तरह क्यों?"

पवन खत दिखाकर "महाराजा रावण लिखता है कि वरुण ने फिर सरकशी इख्तियार की है। खिराज देने से इंकारी है। इसलिए उस ना आकबत अंदेशी वरुण पर फौजकशी की गई है। और सथीम पर्वत पर हम को भी शामिल होने के वास्ते लिखा है। सो इस अमर का कि हमारी गैर हाजरी में तुम यहाँ के करोबार को अंजाम दे सकोगे कि नहीं क्योकि तुम्हारा ख्याल इस तरफ बहुत कम है।"

जब सुना युद्ध का नाम हनुमान मेहर खायो अति उमंग के साथ वचन कर जोड सुनायो

आज्ञा दीजे तात युद्ध को मैं वहाँ जाऊँ मारूँ शत्रु जाए रावण दुख मिटाऊँ

है मन मेरे में चाह पतार होग को देखूँ क्या क्या करे करतब[१] सभी जा मै पीकूँ[२]

जो भुजा[३] मेरे में जोर जारन महान दिखाऊँ

वरुण को आऊँ पछाड जगत में कीर्ति पाऊँ

बालक मुझको जान पिता तुम मन घबराओ

दे आज्ञा मुझको तात दास का मान बढाओ

पवन हनुमान की तरफ देखकर "वरुण और उसको लडके बडे होशियार और तजुर्बेकार हैं। कई एक दफह तो मैं इनको खुद आजमा चुका हूँ बल्कि हर एक पहलू से देख चुका हूँ। तुम अभी उनके मुकाबले के लायक नहीं हो क्योंकि खुर्द साल नातजुर्बेकार हो। मैदान का नजारा देखा नहीं। मैं क्योंकर जाने की इजाजत दे सकता हूँ।"

हनुमान "बेशक आपका फरमान दुरुस्त है। इस मे कोई शक नहीं कि मैंने अभी तक कोई जंग नहीं देखी और नतजुर्बेकार भी जरूर हूँ। लेकिन

१ करतब याने हुनर २ पीकूँ याने देखूँ ३ बाजू

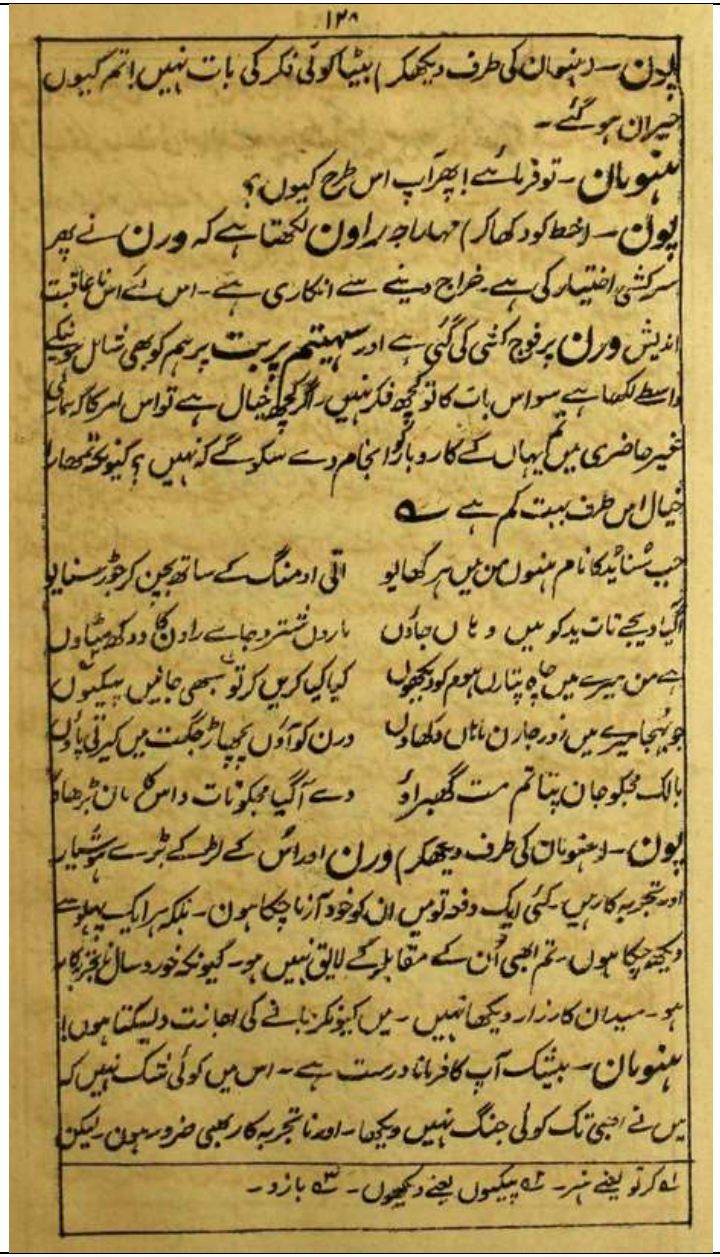

मैं बुजदिल नहीं, नामर्द नहीं हूँ। जो अपने काम को धब्बा लगा खानदान को बदनाम करूँगा। अगर आप मुझको जाने की इजाजत देंगे तो मैं भी इस बात को साबित कर दिखाऊँगा कि बहादुरी उस को कहते है। शुजात इसका नाम है। और ये भी आपको बखूबी रोशन हो जाएगा कि मैदान कारजार में किसी ने उसको नीचा दिखा पसपा किया।"

हनुमान की इस बहादुराना गुफ्तगू को सुनकर पवन निहायत खुश होकर बोला।

पवन "बेशक बेशक! मुझको तुम पर ऐसी ही उम्मीद है। बल्कि पूरा इतमिनान है कि जरूर ऐसा ही कर दिखाओगे। लेकिन वरुण और पुण्डरीक भी कम नहीं। उन्होने कई एक मारिक देखे हैं। जमाने के नशदीबो खैराज से वाकिफ हैं। खर और दूषण[१] जैसो को तो उन्होने जैर कर दिया। तुम तो अभी बच्चे हो।

हनुमान "आप का बार बार इस बात पर जोर देना कि मैं नातजुर्बेकार हूँ, लडाई की मुश्किलों से नावाकिफ हूँ शायद शफकतपदराना के बाइश है जो दिल मे समा गया है। लेकिन गौर तो किजिए। कब तक मैं इस बात को सोचकर जंग से गुरेज और अपने दिली जोश तो जब्त कर सकता हूँ। आखिर एक रोज तो इसी हालत में जाना होगा। बहरकिफ अपने आपको आजमाना होगा।"

नाजरीन! हाजरीन दरबार हनुमान को गुफतगू को सुनकर पवन से मुखातिब हो कहने लगे "महाराज! ईश्वर साहिबजादे की हिम्मतों को बढावे। इससे ज्यादा इसके हौसलें बुलन्द करे। बेशक इनकी आली हिम्मती दिलेरी और इस्तकलाल से हम लोगो को यकीन है और हर तरह से तसल्ली है। आप कुछ फिक्र न करे और जाने से हर्गिज न रोके। सिपहसालार तो साथ होगा।" जब सबने इस तरह कहा और हनुमान को साबित कदम देखा कि जाने से

१ ये दोनो रावण के रिश्तेदार थे

میں بزدل نہیں نامرد نہیں ہوں جو اپنے نام کو دھبہ لگا خاندان کو بدنام کرونگا
اگر آپ مجکو جانے کی اجازت دیں گے تو میں بھی اس بات کو ثابت کر دکھاؤنگا
کہ بہادری اس کو کہتے ہیں۔ شجاعت اس کا نام ہے۔ اور یہ بھی آپ کو
بخوبی روشن ہو جائیگا کہ میدان کارزار میں کس نے اُس کو نیچا دکھا پس پا کیا۔
ہنومان کی اس بہادرانہ گفتگو کو سُنکر پون نہایت خوش ہو کر بولا۔
پون۔ بیشک! بیشک! مجکو تم پر ایسی ہی امید ہے۔ بلکہ پورا اطمینان ہے
کہ ضرور ایسا ہی کر دکھاؤ گے۔ لیکن ورن اور پنڈریک بھی کم نہیں انھوں
نے کئی ایک معرکے دیکھے ہیں۔ زمانہ کے نشیب و فراز سے واقف ہیں۔
کھر اور دوکھن جیسوں کو تو انھوں نے زیر کر دیا۔ تم تو ابھی بچہ ہو!
ہنومان۔ آپ کا! بار بار اس بات پر زور دینا کہ میں ناتجربہ کار ہوں۔ لڑائی
کے مسئلہ سے ناواقف ہوں شاید شفقت پدرانہ کے باعث ہے۔ جو
دل میں سما گیا ہے۔ لیکن غور تو کیجئے۔ کب تک میں اس بات کو سوچکر جنگ
سے گریز اور اپنے دلی جوش کو ضبط کر سکتا ہوں۔ آخر ایک روز تو اسی حالت
میں جانا ہوگا۔ بہر کیف اپنے آپ کو آزمانا ہوگا!
ناظرین! حاضرین دربار ہنومان کی گفتگو سُنکر پون سے مخاطب ہو
کہنے لگے۔ "مہاراج! ایشور صاحبزادے کی ہمتوں کو بڑھاوے اس سے
زیادہ اس کے حوصلہ کو بلند کرے۔ بیشک انکی عالی ہمتی دلیری اور استقلال
سے ہم لوگوں کو یقین ہے۔ اور ہر طرح سے تسلی ہے۔ آپ کچھ فکر نہ کریں
اور جانے سے ہرگز نہ روکیں۔ سپہ سالار تو ساتھ ہوگا"
جب سب نے اس طرح کہا اور ہنومان کو ثابت قدم دیکھا کہ جانے سے

۱ یہ دونوں راون کے رشتہ دار تھے

बाज नहीं आता, तो कुछ देर सोचने के बाद तैयारी का हुक्म दिया। और दूसरे रोज एक जरारोस्ता फौज को देकर सथीम पर्वत को रवाना किया।

बाब (अध्याय) छबीसवाँ

सथीम पर्वत

ये पहाड लंका के जुनूब (दक्षिण) मशरिक (पूर्व) में वाकह है। इसके नीचे बाएँ तरफ एक बडा वसीह मैदान है जहाँ कुछ सरसब्ज दरख्त लहलहाते हुए नजर आ रहे हैं। और जिनके बीच में से एक निशान जिसका फरेरा हवा में उडता हुआ आसमान से बातें करता दिखाई दे रहा है।

अब हम अपने ख्याल को लेकर यहाँ पहुँच कर क्या देखते हैं कि दाएँ हाथ की तरफ एक छोटी सी नदी जिसका नीलको सतफाफ पानी है, बह रही है। और चंद नौजवान जिनकी कतह वजह से मालूम होता है कि किसी लशकर से तालुक रखते हैं स्नान कर संध्या उपासना कर रहे हैं। इनको देख ही रहे थे कि हमारी निगाह बाएँ तरफ को पडी तो एक बेशुमार लशकर दिखाई दिया जिसके देखने के शौक में हम वहाँ पहुँच गए।

आहा! जितनी सिपाह नजर आ रही है उनमे से ज्यादा हिस्से की रंगत स्याह है। ऐसे नहीं जैसी कि हब्शी, इनके रंग बनिस्बत उनके अच्छी है। हाँ चेहरे की शक्ल कुछ मिलती जुलती है। कद दरमियाना है। भांति भांति की वर्दिया पहने इधर उधर टहल रहे हैं। और बाजे बैठे गपाशरिक उडा रहे हैं। इनको देखते हुए जब हम थोडी दूर और आगे बढे तो क्या देखते हैं कि

باز نہیں آتا تو کچھ دیر سوچنے کے بعد تیاری کا حکم دیا۔ اور دوسرے روز ایک جرارہ ستہ فوج کا دیکر ستھیم پربت کو روانہ کیا۔

باب چھبیسواں

ستھیم پربت

یہ پہاڑ لنکا کے جنوب مشرق میں واقع ہے۔ اس کے نیچے بائیں طرف ایک بڑا وسیع میدان ہے۔ جہاں کچھ سرسبز درخت لہلہاتے ہوئے نظر آرہے ہیں۔ اور جن کے بیچ میں سے ایک نشان جس کا پھریرا ہوا میں اڑتا ہوا آسمان سے باتیں کرتا دکھائی دے رہا ہے۔

اب ہم اپنے خیال کو لے کر یہاں پونچکر کیا دیکھتے ہیں کہ دائیں ہاتھ کی طرف ایک چھوٹی سی ندی جس کا نیلگوں شفاف پانی بہ رہی ہے۔ اور چند نوجوان جن کی قطع وضع سے معلوم ہوتا ہے کہ کسی لشکر سے تعلق رکھتے ہیں اشنان کر سندھیا لوپاسنا کر رہے ہیں۔ ان کو دیکھ ہی رہے تھے کہ ہماری نگاہ بائیں طرف کو پڑی تو ایک بیشمار لشکر دکھائی دیا۔ جس کے دیکھنے کے شوق میں ہم وہاں پونچگئے۔

آہا! جتنی سپاہ نظر آرہی ہے اُن میں سے زیادہ حصہ کی رنگت سیاہ ہے ایسے نہیں جیسے کہ حبشی۔ ان کے رنگ بہ نسبت اُن کے اچھی ہیں۔ ہاں چہروں کی شکل کچھ ملتی جلتی ہے۔ قد درمیانہ ہے بہانت بھانت کی وردیاں پہنے ادھر اُدھر ٹہل رہے ہیں۔ اور بعضے بیٹھے گپا شٹک اڑا رہے ہیں ان کو دیکھتے ہوئے جب ہم تھوڑی دور اور آگے بڑھے تو کیا دیکھتے ہیں کہ

१३१

एक खेमे में चंद अफ्सर बैठे हुए बात कर रहे हैं। उनमे से बाजों के सरों पर ताज की किस्म के जडाऊँ मुकुट रखे हैं जिनपर बेशकीमती जवाहरात जडे हुए जगमग जगमग कर रहे हैं। मालूम होता है कि ये कोई राजा महाराजा हैं जो इस जाहोजलाल से बैठे हैं। आओ जरा इनकी गुफ्तगू तो सुने।

एक ताजदार "पवन अब तक नहीं आया और न ही वो इलची वापिस आया है।"

दूसरा "कुछ सबब ही ऐसा हो गया होगा। वरना ऐसी उम्मीद उससे हर्गिज नहीं कि आपके हुक्म न तामील करे।"

वही पहला शख्स "पवन भी एक तजुर्बेकार जवान है। पिछले दफा उसने वरुण को खूब हाथ दिखाए थे। लेकिन वो बडा बेशर्म है जो फिर भी बाज नहीं आता।"

तीसरा "महाराज! सुना है कि उसका लडका उससे बढकर बहादुर मनचला और फुर्तीला जवान है। इस वानरदीप में तो उसका कोई सानी नहीं।"

पहला शख्स "अच्छा" बात काट और कुछ सोचकर "आज का दिन और इन्तजार कर लो। कल तो जरूर यहाँ से चल दूँगा। अबकी दफा खुद ही कुछ ही क्यों न हो। वरुण को इस सरकशी की सजा दिए बगैर कभी न छोडूँगा। वो क्या याद करेगा कि रावण से वास्ता पडा था।"

इतने मे एक शख्स ने आनकर उस पहले ताजदार को जो गालिबन रावण है कहा। नोदारो आदाब बजा लाकर "महाराज! पवन जी का लडका हनुमान भी सेना लेकर आ रहा है।"

रावण खुश होकर "सुग्रीव तुम और राजा वज्रबाहू हनुमान की पेशवाई को जाओ।"

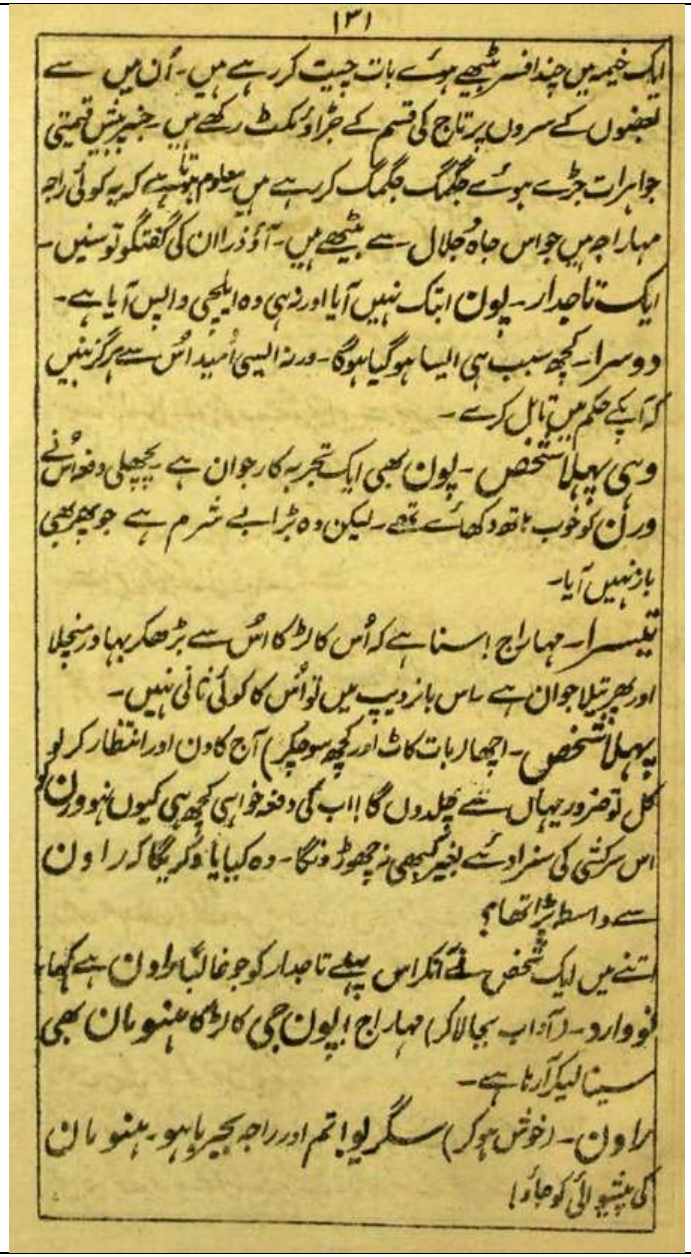

۱۳۱

ایک خیمہ میں چند افسر بیٹھے ہوئے بات چیت کر رہے ہیں۔ اُن میں سے
بعضوں کے سروں پر تاج کی قسم کے جڑاؤ مکٹ رکھے ہیں جنپر بیش قیمتی
جواہرات جڑے ہوئے جگمگ جگمگ کر رہے ہیں معلوم ہوتا ہے کہ یہ کوئی راجہ
مہاراجہ ہیں جو اس جاہ و جلال سے بیٹھے ہیں۔ آؤ ذرا ان کی گفتگو تو سنیں۔

ایک تاجدار۔ پون ابتک نہیں آیا اور نہ ہی وہ ایلچی واپس آیا ہے۔

دوسرا۔ کچھ سبب ہی ایسا ہو گیا ہوگا۔ ورنہ ایسی اُمید اُس سے ہرگز نہیں
کہ آپکے حکم میں تامل کرے۔

وہی پہلا شخص۔ پون بھی ایک تجربہ کار جوان ہے۔ پچھلی دفعہ اُس نے
ورن کو خوب ہاتھ دکھائے تھے۔ لیکن وہ بڑا بے شرم ہے جو پھر بھی
باز نہیں آیا۔

تیسرا۔ مہاراج! سنا ہے کہ اُس کا لڑکا اُس سے بڑھکر بہادر منچلا
اور پھرتیلا جوان ہے۔ اس بانردیپ میں تو اُس کا کوئی ثانی نہیں۔

پہلا شخص۔ (اچھا بات کاٹ اور کچھ سوچکر) آج کا دن اور انتظار کر لو
کل تو ضرور یہاں سے چلدوں گا! اب کی دفعہ خواہی کچھ ہی کیوں نہ ہو ورن کو
اس سرکشی کی سزا دئے بغیر کبھی نہ چھوڑونگا۔ وہ کیا یاد کریگا کہ راون
سے واسطہ پڑا تھا؟

اتنے میں ایک شخص نے آکر اس پہلے تاجدار کو جو غالباً راون ہے کہا
نو وارد۔ (آداب بجالاکر) مہاراج! پون جی کا لڑکا ہنومان بھی
سینا لیکر آرہا ہے۔

راون۔ (خوش ہوکر) سگریو! تم اور راجہ بجیر باہو۔ ہنومان
کی پیشوائی کو جاؤ!

ये सुनकर दोनों वहाँ से उठे और बडी इज्जत के साथ हनुमान को उसी खेमे मे लाए और उनकी गुफ्तगू को सुन, बहादुराना वजूद को देख हर एक फरख्ता हो गया। आहा! इल्म और शीरी जबान भी दुनिया में एक नादिर चीज है। जो हर एक के दिल को अपनी तरफ इस तरह माइल कर लेती है जैसे चाँद की खूबसूरती चकोर और भादों कि काली घटा मोर को।

नाजरीन! जो लोग यहाँ इस वक्त मौजूद हैं ख्वाह उम्र मे छोटे है या बडे सब हनुमानजी को इज्जत की निगाह से देखते रहे हैं। और इनकी आलिमाना तकरीर को सुनकर उनकी लियाकत पर अश अश कर रहे हैं। गर्ज बडी देर तक इधर उधर की बातों में मशगूल रहे। आखिर सुबह को कूच की तजवीज करार पाई और तमाम फौज को हुक्म सुनाया गया।

बाब (अध्याय) सत्ताइसवाँ

फौजकशी

सुबह का वक्त है। हर एक सिपाही अपने अपने बिस्तरों को बांधकर छक्कडों पर लाद रहा है। और एक शख्स जो गालिबन इनका अफ्सर है घोडे को इधर उधर दौडाता हुआ हर एक को जल्दी करने की ताकीद कर रहा है। और कभी कभी आसमान की तरफ नजर कर कहने लग जाता है। "उफ! बहुत दिन चढ गया। कूच का वक्त हो गया है। जल्दी करो!"

थोदी देर के बाद कूच का शंख बजा। जिसको सुनते ही सब से पहले हनुमान जी अपनी सिपाह को लेकर आगे बढे और उनके पीछे सुग्रीव और राजा

یہ سُنکر دونو وہاں سے اُٹھے اور بڑی عزت کے ساتھ ہنومان کو اوسی خیمہ میں لائے۔ اور ان کی گفتگو کو سُن بہادرانہ وجود کو دیکھ ہر ایک فریفتہ ہوگیا آہا! علم اور شیریں زبان بھی دنیا میں ایک نادر چیز ہیں۔ جو ہر ایک کے دل کو اپنی طرف اس طرح مائل کرلیتی ہیں جیسے چاند کی خوبصورتی چکور اور بھادوں کی کالی گھٹا مور کو۔

ناظرین! جو لوگ یہاں اس وقت موجود ہیں خواہ عمر میں چھوٹے ہیں یا بڑے سب ہنومان جی کو عزت کی نگاہ سے دیکھ رہے ہیں۔ اور ان کی عالمانہ تقریر کو سُنکر انکی لیاقت پر عش عش کر رہے ہیں۔ غرض بڑی دیر تک ادھر اُدھر کی باتوں میں مشغول رہے۔ آخر صبح کوچ کی تجویز قرار پائی اور تمام فوج کو حکم سنایا گیا۔

باب ستائیسواں

فوج کشی

صبح کا وقت ہے ہر ایک سپاہی اپنے اپنے بستروں کو باندھکر چھکڑوں پر لاد رہا ہے اور ایک شخص جو غالباً ان کا افسر ہے گھوڑے کو ادھر اُدھر دوڑاتا ہوا ہر ایک کو جلدی کرنے کی تاکید کر رہا ہے۔ اور کبھی کبھی آسمان کی طرف نظر کر کہنے لگ جاتا ہے۔ "اوف بہت دن چڑھ گیا۔ کوچ کا وقت ہوگیا ہے۔ جلدی کرو"

تھوڑی دیر کے بعد کوچ کا سنکھ بجا۔ جس کو سنتے ہی سب سے پہلے ہنومان جی اپنی سپاہ کو لے کر آگے بڑھے۔ اور ان کے پیچھے سُگریو اور راجہ

वज्रबाहू हो लिया। और रावण इन सबको बढे हुए जोश को देख खनदानोशादा जा रहा है। बहादुर सिपाह का साफे बांध कदम मिलाकर चलना और कांधो पर नंगी तलवारों का चमकते हुए दिखाई देना बतला रहा है कि ये लोग कवाइदे जंग से बखुबी वाकिफ है। जैसे इन बहादुरों का कदम आगे बढता जाता है वैसे इनके चेहरे जोशे जंग से सुर्ख होते जा रहे हैं।

नाजरीन! क्षत्रिय के वास्ते इससे बढकर और कोई खुशी नहीं कि जवाँमर्दी से दुश्मन का मुकाबला कर मैदाने जंग मे काम आए। यही सबब है कि ये लोग खुशी के नारे बुलन्द कर मंजिले तय करते हुए जा रहे हैं। जब दुरमती नगर कुछ थोडे फासले पर रहा तो एक तजुर्बेकार मंत्री को वरुण के पास इस गरज से भेजा कि उसको समझा कर जंग से बाज रखे और खिराज देने पर आमादा करे।

मंगलपुर के मैदान मे जिस वक्त ये मंत्री पहुँचा तो क्या देखता है कि बेशुमार फौज छावनी डाले पडी है। कई एक सिपाही कील कांटे से लैस हो लडाई का सामान दुरुस्त कर रहे हैं। और जा बजा खेमे नस्ब हैं। और ऐन वक्त में एक आलीशान खेमा दिखाई दे रहा है जिसके चारो तरफ नंगी तलवारे कंधो पर रखे सिपाही पहरा दे रहे हैं। ज्योंहि इस मंत्री को एक सिपाही ने इस आलीशान खेमे की तरफ जाते देखा ईश्वर जाने इससे क्या पूछा कि वही इसको रोक दिया और खुद पर्दा उठा खेमे के अन्दर चला गया। और थोडी देर के बाद वापिस आ इसको भी उसी खेमे मे ले गया है जहाँ राजा वरुण बडी शानोशौकत के साथ

بجر باہو ہو لیا۔ اور راون ان سب کے بڑھے ہوئے جوش کو دیکھ
خندان و شاداں جا رہا ہے۔ بہادر سپاہ کا صفیں باندھ قدم ملا کر چلنا
اور کاندھوں پر ننگی تلواروں کا چمکتے ہوئے دکھائی دینا بتلا رہا ہے کہ یہ
لوگ قواعد جنگ سے بخوبی واقف ہیں۔ جیسے ان بہادروں کا قدم
آگے بڑھتا جاتا ہے ویسے ان کے چہرے جوش جنگ سے
سرخ ہوتے جا رہے ہیں۔

ناظرین! چھتری کے واسطے اس سے بڑھکر اور کوئی خوشی نہیں کہ جوانمردی
سے دشمن کا مقابلہ کر میدان جنگ میں کام آئے۔ یہی سبب ہے کہ
یہ لوگ خوشی کے نعرے بلند کر منزلیں طے کرتے ہوئے جا رہے ہیں
جب درمتی نگر کچھ تھوڑے فاصلہ پر رہا تو ایک تجربہ کار منتری کو
ورن کے پاس اس غرض سے بھیجا کہ اس کو سمجھا کر جنگ سے باز رکھے
اور خراج دینے پر آمادہ کرے۔

منگل پور کے میدان میں جس وقت یہ منتری پہنچا تو کیا دیکھتا ہے
کہ بے شمار فوج چھاونی ڈالے پڑی ہے۔ کئی ایک سپاہی کیل کانٹے سے
لیس ہو لڑائی کا سامان درست کر رہے ہیں۔ اور جا بجا خیمے نصب ہیں
اور عین وسط میں ایک عالیشان خیمہ دکھائی دے رہا ہے جسکے چاروں
طرف ننگی تلواریں کاندھوں پر رکھے سپاہی پہرہ دے رہے ہیں۔ یونہی
اس منتری کو ایک سپاہی نے اس عالیشان خیمہ کی طرف جاتے دیکھا
ایشور جانے اس سے کیا پوچھا کہ وہیں اس کو روک دیا۔ اور خود پردہ اوٹھا
خیمہ کے اندر چلا گیا۔ اور تھوڑی دیر کے بعد واپس آ اس کو بھی اسی خیمہ میں
لے گیا ہے۔ جہاں راجہ ورن بڑی شان و شوکت کے ساتھ

चंद फौजी अफ्सरो को लिए बैठा है। पुण्डरीक और राजीव[१] भी मौजूद हैं। मंत्री ने दाखिल होते ही सर तसलीम खम किया और सामने खडा हो गया।

वरुण उसकी तरफ देख और इशारा कर "बैठ जाइए। तुम्हारा किस तरह आना हुआ?"

मंत्री हाथ जोडकर "महाराज! राजा रावण का भेजा हुआ आपकी खिदमत में हाजिर हुआ हूँ। अगर जान की अमान पाऊँ तो जो कुछ उन्होने फरमाया है अर्ज करूँ।"

वरुण "हाँ हाँ बेशक कहिए। कुछ फिक्र मत करो जो कुछ उन्होने कहा है कहो। उस पर बखूबी गौर किया जाएगा। मुनासिब जवाब दिया जाएगा।"

मंत्री "परमेश्वर आपके सलामत रखे इकबाल बुलन्द करे। अगरचा मेरी ताकत से बाहर है कि आपके सामने बोलने की जुर्रत करूँ या जबान ही हिलाऊँ। लेकिन क्या करूँ मजबूर हूँ। आका का हुक्म बजा लाना मेरा फर्ज है।"

वरुण "हाँ बेशक कहिए। शौक से उनके इरादे से आगह किजिए। इलची हमेशा बरी इल्जमा है। तुम पर भी इल्जाम नहीं आ सकता।"

मंत्री "महाराज! जंग करने से तरफैन नुक्सान होगा। कई एक नौजवान अपनी वालदैनों को दाग मुफारकत दे जाएँगे और औरतों के अजीज शौहर हमेशा के लिए जुदा हो जाएँगे। नतीजा मालूम नहीं किसीके हक मे अच्छा और किसीके हक बुरा हो। इसलिए मुनासिब यही है और महाराजा रावण की भी यही आरजू है कि आप बकाया खिराज भेज दे और आइन्दा के लिए

१ पुण्डरीक और राजीव दोनो वरुण के लडके थे

چند فوجی افسروں کو لیئے بیٹھا ہے۔ پنڈریک[۱] اور راجیو بھی موجود ہیں
منتری نے داخل ہوتے ہی سرِ تسلیم خم کیا۔ اور سامنے کھڑا ہو گیا۔
ورن۔ (اُس کی طرف دیکھ اور اشارہ کر) بیٹھ جائیے۔ تمھارا کس طرح آنا ہوا؟
منتری۔ (ہاتھ جوڑ کر) مہاراج! راجہ راون کا بھیجا ہوا آپ کی خدمت میں حاضر ہوا ہوں۔ اگر جان کی امان پاؤں تو جو کچھ اونھوں نے فرمایا ہے عرض کروں۔
ورن۔ ہاں! ہاں! بے شک کہیئے کچھ فکر مت کرو۔ جو کچھ انہوں نے کہا ہے کہو! اُس پر بخوبی غور کیا جائے گا۔ مناسب جواب دیا جائیگا
منتری۔ پرمیشور آپ کو سلامت رکھے۔ اقبال بلند کرے۔ اگرچہ میری طاقت سے باہر ہے کہ آپ کے سامنے بولنے کی جرات کروں۔ یا زبان ہی ہلاؤں۔ لیکن کیا کروں مجبور ہوں۔ آقا کا حکم بجا لانا میرا فرض ہے۔
ورن۔ ہاں! بے شک کہیئے۔ شوق سے اُن کے ارادے سے آگاہ کیجیئے۔ ایلچی ہمیشہ بری الذمہ ہیں۔ تم پر کوئی بھی الزام نہیں آسکتا۔
منتری۔ مہاراج! جنگ کرنے سے طرفین کا نقصان ہوگا۔ کئی ایک نوجوان اپنے والدینوں کو داغ مفارقت دے جائیں گے۔ اور عورتوں کے عزیز شوہر ہمیشہ کے لئے جدا ہو جائیں گے۔ نتیجہ معلوم نہیں کس کے حق میں اچھا اور کس کے حق میں برا ہو! اس لئے مناسب یہی ہے۔ اور مہاراجہ راون کی بھی یہی آرزو ہے کہ آپ بقایا خراج بھیجدیں اور آیندہ کیلئے

[۱] پنڈریک اور راجیو دونوں ورن کے لڑکے تھے۔

मुनासिब शरायत तहरीर कर माफी माँगिए। ताकि जंग की नौबत न पहुँचे। खूनरेजी खलक न हो। रावण का मुकाबला करना बच्चो का खेल नहीं।"

वरुण ये बात सुनते ही आग बगूला हो गया। गुस्से से मुँह तमतमा तैश में आकर बोला

वरुण "रावण अपने दिल में क्या सोचता है। किस बात पर नाजा है। ये जो खिराज का बातिल ख्याल उसके दिमाग से खारिज हो रहा है उसको जरूर खराब करेगा। इस बात की उम्मीद अब हर्गिज न रखे। मुझको इंद्र यम और कुबेर राजा न समझे। मैं वरुण हूँ। अब इस बात का फैसला" तलवार पर हाथ रखकर "यही शमशीर करेगी और फिर उसको पछताना पडेगा। अगर वो लडाई पर आमादा है तो इस तरफ से भी इंकार नहीं।" ये कहकर मंत्री को विदा किया। पुण्डरीक और राजीव को फौज की तैयारी का हुक्म दिया।

नाजरीन! वरुण की गुफ्तगू तो आप सुन चुके। अब रावण को चलकर देखिए कि वरुण का पैगाम पहुँचने पर हनुमान सुग्रीव वगैहरा से क्या कह रहा है।

रावण "मैं नहीं चाहता था कि लडाई बरपा हो। नाहक में खूनरेजी खलक हो। मगर क्या किया जावे। वो खुद बरसरे पर खाश हो ऐसी आजम से आया है। और किसी तरह से नहीं समझता। तो हम को भी मुनासिब यही है कि अहसान फरामोश की खूब खबर ली जाए। ऐसे शख्स से रियाअत करनी गोया औरो का हौसला बढाना है।"

हनुमान "जो कुछ आपने फरमाया दुरुस्त है। भला ये हो सकता है कि हम लोग अब दर गुजर करें। सुलह के तालिब हो हमेशा के लिए कलंक का टीका लगा लेवें। नहीं! हम लोग लडेंगे। जरूर लडेंगे। और अपनी अपनी लियाकतों

مناسب شرائط تحریر کر معافی مانگئے۔ تاکہ جنگ کی نوبت نہ پہونچے۔ خونریزی
خلق نہ ہو۔ راون کا مقابلہ کرنا بچوں کا کھیل نہیں؟ گی
ورن۔ یہ باتیں سنتے ہی آگ بگولا ہوگیا۔ غصہ سے منھ تمتما۔ طیش میں آکر
بولا۔
ورن۔ راون اپنے دل میں کیا سوچتا ہے۔ کس بات پر نازاں ہے
یہ جو خراج کا باطل خیال اُس کے دماغ سے خارج ہو رہا ہے۔ اُس کو ضرور
خراب کریگا۔ اس بات کی امید اب ہرگز نہ رکھے۔ مجکو اندر۔ یم اور کبیر
راجہ نہ سمجھے۔ میں ورن ہوں۔ اب اس بات کا فیصلہ (تلوار پر ہاتھ
رکھکر) یہی شمشیر کریگی۔ اور پھر اُس کو پچھتانا پڑیگا۔ اگر وہ لڑائی پر آمادہ ہے
تو اس طرف سے بھی انکار نہیں؟
یہ کہکر منتری کو وداع کیا۔ پنڈریک اور راجیو کو فوج کی تیاری کا حکم دیا
ناظرین! ورن کی گفتگو تو آپ سُن چکے۔ اب راون کو چلکر دیکھئے کہ ورن
کا پیغام پہونچنے پر ہنومان۔ سگریو وغیرہ سے کیا کہہ رہا ہے۔
راون۔ میں نہیں چاہتا تھا کہ لڑائی برپا ہو ناحق میں خونریزی خلق ہو۔
مگر کیا کیا جاوے۔ وہ خود بر سرے پرخاش ہوا اسی عزم سے آیا ہے۔ اور
کسی طرح سے نہیں سمجھتا تو ہم کو بھی مناسب یہی ہے کہ اس احسان فراموش
کی خوب خبر لی جائے۔ ایسے شخص سے رعایت کرنی گویا اوروں کا
حوصلہ بڑھانا ہے۔
ہنومان۔ جو کچھ آپ نے فرمایا درست ہے! بھلا یہ ہو سکتا ہے کہ
ہم لوگ اب درگذر کریں۔ صلح کے طالب ہو ہمیشہ کے لئے کلنک کا
ٹیکا لگالیویں! نہیں! ہم لوگ لڑینگے! ضرور لڑینگے!! اور اپنی اپنی لیاقتوں

के जोहर दिखा उसको बतला देंगे कि सरकशी करने की ये सजा होती है। वादा खिलाफी का ये नतीजा। महाराज! लोहा लोहे से काटा जाता है। लाठी के देव कभी बातों से नहीं मानते।" जब इसकी ताईद सब हाजरीन ने की तब रावण खुश होकर बोला।

रावण "शाबाश शाबाश! आप लोगो पर ऐसी ही उम्मीद है। आप ही लोगो की अक्ल के पुरजोर स्टीम से इस हकूमत की ट्रेन चल रही है। इसमे कोई शक नहीं कि वो बडा बद दिमाग और बेलिहाज है। जितनी सजा उसको दी जाए वाजिब है।" ये कहा और जंग का मुसम्मम इरादा कर सिपाह को आरास्ता होने का हुक्म दिया।

बाब (अध्याय) अठाइसवाँ

मैदानेजंग

सुबह का वक्त है। पो फट गई है। रोशनी फैलती जाती है और रात की रही सही तारिकि आलम से काफूर हो रही है। ऐसे वक्त में हमारा ख्याल जहाँ पहुँचता है मंगलपुर का वो वसीह मैदान है जिसमे एक तरफ बेशुमार लशकर लिए रावण हैमाजन है, दूसरी तरफ वरुण छावनी डाले पडा है। मगर दोनों लशकरों में मामुल से ज्यादा चहल पहल हो रही है। सोने वाले अंगडाईयाँ लेकर उठ रहे हैं और बाजे अभी नींद में कुछ ऐसे मस्त हैं कि उनके बिरादर सिपाही उनको आवाजें दे देकर जगा रहे हैं लेकिन वह करवटे बदल और हूँ हूँ कर रह जाते हैं। इस सीन को देखकर गुमान

کے جوہر دکھا اُس کو بتلا دیں گے کہ سرکشی کرنے کی یہ سزا ہوتی ہے۔ وعدہ خلافی کا یہ نتیجہ۔ مہاراج! لوہا لوہے سے کاٹا جاتا ہے۔ لاٹھی کے دیو کبھی باتوں سے نہیں مانتے۔

جب اس کی تائید سب حاضرین نے کی۔ تب راون خوش ہو کر بولا۔

راون۔ شاباش! شاباش! آپ لوگوں پر ایسی ہی امید ہے۔ آپ ہی لوگوں کی عقل کے پُرزور سٹیم سے اس حکومت کی ٹرین چل رہی ہے۔ اس میں کوئی شک نہیں کہ وہ بڑا بد دماغ اور بے لحاظ ہے۔ جتنی سزا اس کو دی جائے واجب ہے۔

یہ کہا اور جنگ کا مصمم ارادہ کر سپاہ کو آراستہ ہونے کا حکم دیا۔

باب اٹھائیسواں

میدان جنگ

صبح کا وقت ہے۔ پو پھٹ گئی ہے۔ روشنی پھیلتی جاتی ہے۔ اور رات کی رہی سہی تاریکی عالم سے کافور ہو رہی ہے۔ ایسے وقت میں ہمارا خیال جہاں پہنچتا ہے منگل پور کا وہ وسیع میدان ہے۔ جس میں ایک طرف بیشمار لشکر لئے راون ہیمزن ہے۔ دوسری طرف ورن چھاونی ڈالے پڑا ہے۔ مگر دونوں لشکروں میں معمول سے زیادہ چہل پہل ہو رہا ہے۔ سونے والے انگڑیاں لے لیکر اُٹھ رہے ہیں۔ اور بعضے ابھی نیند میں کچھ ایسے مست ہیں کہ اُن کے برادر سپاہی اُن کو آوازیں دے دے کر جگا رہے ہیں۔ لیکن وہ کروٹیں بدل اور ہوں ہوں کر رہ جاتے ہیں۔ اس سین کو دیکھ کر گمان

१३७

होता है कि जरूर आज इन दोनो लशकरों के माबैन (बीच) लडाई होगी। क्योंकि हर एक सिपाही रफह हाजत से फारिग हो हो कर कमरे कस रहा है। हथियार बांध रहा है। और बाजे तलवारों की धारों को उंगलियाँ लगा लगा देख और ये कहकर कि आज तुम्हारी काट और तेजी देखी जाएगी मयानों में डाल रहे हैं। कमानों को तान तान कर आजमा रहे हैं और तरकशों को तीरों से पूर कर कांधो पर लटकाए जाते हैं। नेजा (भाला) और बरछी पर भी नजर डाली जा रही है। गर्ज इस वक्त हर सिपाही अपनी वो सूरत वजह बना रहा है जो एक बहादुर जवाँमर्द की होनी चाहिए। इतने में नाकूस बजा जिसकी आवाज सुनते ही तरह तरह की वर्दियाँ पहने कमानों को ताने चिला चढाए बहादुर सिपाही मैदाने जंग में दिखाई दिए।

आहा! कैसे साफे बांधे खडे हैं। क्या ताकत जो एक भी लाइन से कदम इधर उधर को या किसी के बात कर अपने ख्याल को दूसरी तरफ लगाए। नहीं! हर एक अपने अपने सिपहसालार की तरफ देख रहा है और मुन्तजिर (प्रतिक्षा) इस बात के कि कब लडाई शुरु करने का हुक्म मिले और हम अपने तीरों को दुश्मन के खून से तर कर जीम को शिकस्त दें। इसी जोश में इनके चेहरे सुर्ख हो रहे हैं और एक एक लमहा पहर के बराबर गुजर रहा है।

हमारे बहादुर जरनैल हनुमान की फौज को देखना कैसे कतार बांधे खडी है। कि एक तिल भर का भी फर्क नहीं। और आप (हनुमान जी) कैसी खूबी से साथ छाती ताने गुजर हाथ मे लिए हर एक सिपाही का दिल बढाते हुए इधर उधर टहल रहे हैं। और इसी तरह राजा वज्रबाहू और सुग्रीव भी अपनी अपनी सिपाह देख खुश हो रहा है। कि इतने मे नाकूस की जोश आमेज आवाज बुलन्द हुई, जिसको सुनते ही बहादुरों के वो तीर जो अभी कमानों में ताने नजर आ रहे थे दुश्मनों

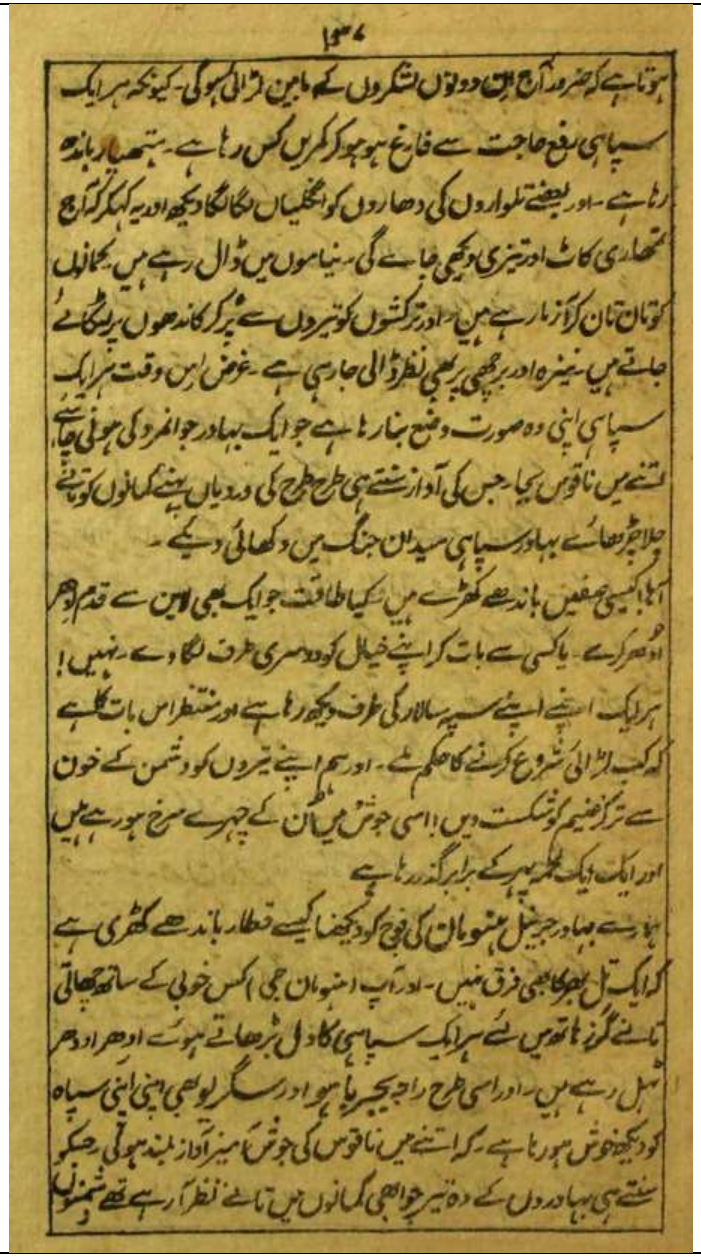

की छातियों को जख्मी करते हुए दिखाई दे रहे हैं। वही मैदान जो अभी साफ सुथरा नजर आ रहा था एक पल भर में बुजदिलों के लिए होलनाक हो डराने लगा और खून से तर हो बहादुरो के जोश को बढाने लगा।

हनुमान जी का फुर्तीला हाथ तीरों की बरखा कर हैरानगी पैदा कर रहा है। क्या ताकत जो एक वार भी खाली जाए। इसका तीर क्या, तकदीर का फैसला करने वाला है। सुग्रीव और वज्रबाहू के तीरों ने भी मुखालिफ (प्रतिद्वंद्वी) की फौज में खलबली मचा रखी है। जिसको एक ही लगा, बेखौफ हो हमेशा के लिए सो गया।

पुण्डरीक जो उन के मुकाबले पर खडा है, दिलावरी मे कम नहीं। क्या शिस्त बांध कर तीर चला अपनी बहादुरी के पूरे जौहर दिखला रहा है। जिसको देखकर बुजदिल भी लडने को आगे बढा रहे हैं। आह! सुग्रीव की सिपाह को तो बेढब घेरा है कि एक कदम भी आगे बढने नहीं देते। जरा पुण्डरीक को तो देखो कैसा आगे बढ रहा है कि इसको जान का भी खौफ नहीं। बेतहाशा दुश्मनो मे घुसा जा रहा है। अगरचा मुखालिफ के तीरों ने बहादुरों के जिस्मों को जख्मी कर रंगीन पौशाके पहना दी हैं। लेकिन इनका कदम बराबर आगे को बढता जा रहा है।

करीब था, कि वरुण की फौज गालिब आ दुश्मनो को मैदाने जंग से शिकस्त दे, कि इतने मे रावण की सिपाह में इनको अपनी तरफ बढते देखा। ऐसा जोश फैला कि वो सिपाही जिन पर बुजदिली का गुमान था या कमजोरी का ख्याल था देखिए कैसी जोर से कमानों तो तान तीरों को छोड रहे हैं। और आगे बढकर नेजा और बरछी से भी काम ले रहे हैं। देखना सैंकडों जान पर खेल गए लेकिन दुश्मन को वहीं रोक लिया। बहादुर हनुमान जी ने इस जोर से नाकूस बजाया कि तमाम मैदान गूँज उठा।

کی چھاتیوں کو زخمی کرتے ہوئے دکھائی دے رہے ہیں! وہی میدان جو ابھی صاف ستھرا نظر آرہا تھا ایک پل بھر میں بزدلوں کے لئے ہولناک ہو ڈرانے لگا۔ اور خون سے تر ہو بہادروں کے جوش کو بڑھانے لگا۔

ہنومان جی کا پھرتیلا ہاتھ تیروں کی برکھا کر حیرانگی پیدا کر رہا ہے۔ کیا طاقت جو ایک وار بھی خالی جائے۔ اس کا تیر کیا تقدیر کا فیصلہ کرنے والا ہے۔ سگریو اور بجیر باہو کے تیروں نے بھی مخالف کی فوج میں کھلبلی مچا رکھی ہے۔ جس کو ایک بھی لگا بے خوف ہو ہمیشہ کے لئے سو گیا!!!

پنڈریک جو اُن کے مقابلہ پر کھڑا ہے دلاوری میں کم نہیں۔ کیا شست باندھکر تیر چلا اپنی بہادری کے پورے جوہر دکھلا رہا ہے۔ جس کو دیکھکر بزدل بھی لڑنے کو آگے بڑھ رہے ہیں۔ آہ! سگریو کی سپاہ کو تو بے ڈھب گھیرا ہے کہ ایک قدم بھی آگے بڑھنے نہیں دیتے۔ ذرا پنڈریک کو تو دیکھو! کیسا آگے بڑھ رہا ہے کہ اس کو جان کا بھی خوف نہیں بے تحاشا دشمنوں میں گھسا جا رہا ہے! اگرچہ مخالف کے تیروں نے بہادروں کے جسموں کو زخمی کر رنگین پوشاکیں پہنا دی ہیں لیکن ان کا قدم برابر آگے کو بڑھتا جا رہا ہے۔

قریب تھا کہ ورن کی فوج غالب آ دشمن کو میدان جنگ سے شکست دے کہ اتنے میں راون کی سپاہ میں ان کو اپنی طرف بڑھتے دیکھ ایسا جوش پھیلا کہ وہ سپاہی جن پر بزدلی کا گمان تھا یا کمزوری کا خیال تھا دیکھئے! کس زور سے کمان کو تان تیر پر تیر چھوڑ رہے ہیں۔ اور آگے بڑھکر نیزہ اور برچھی سے بھی کام لے رہے ہیں۔ دیکھنا! سینکڑوں جان پر کھیل گئے۔ لیکن دشمن کو وہیں روک لیا!

بہادر ہنومان جی نے اس زور سے ناقوس بجایا کہ تمام میدان گونج اُٹھا۔

१३९

उधर जंग के बखतरियों ने ऐसा राग अलापना शुरु किया कि बहादुर सिपाही बावजूद हजारों लाशों के जो जमीन पर पडी नजर आ रही हैं और जमीन लालाजार बन रही है देखकर जरा भी न घबराते हुए आगे को बढ दुश्मन को पीछे हटा रहे हैं। आह! क्या हैरतनाक समा है कि एक पल भर मे वो बहादुर सिपाही जो, मूँछो को ताव दिए छाती ताने रावण के बाएँ तरफ खडा दुश्मन की छाती को अपने तीरों का निशाना बना रहा था, जमीन पर लोटता हुआ नजर आ रहा है। अगरचा दुश्मन के तीरो ने इसके जिगर को छेदकर जमीन पर गिरा दिया है। लेकिन कमान इसके हाथ में तानी की तानी रह गई है। रावण की नजर ज्योंही इस बहादुर पर पडी गजबनाक को यकबारगी हमले का हुक्म दिया। फिर क्या था बहादुरों ने तीर कमान को फेंक ढाल तलवार को हाथ में ले नेजा और बरछी के मौकह को देख दुश्मन को जा घेरा। दोनों तरफ से ऐसी तलवार चली कि खून कि नदियाँ बह गई। बेशुमार बहादुर जमीन पर हमेशा के लिए सो गए और हसरत भरी निगाहों से देखते के देखते रह गए।

इस वक्त बुजदिल सुपाही तो दम चुरा पीछे को हट रहे हैं और बहादुर इस मौके को गनीमत जान दिल के अरमान निकाल बहादुराना जौहर दिखाने को आगे बढ रहे हैं। करीब था, कि वरुण की सिपाह मैदानें जंग से मुँह मोड फतेह की उम्मीद छोड पीछे का रास्ता ले, कि इतने में आफ्ताब उनके हाल पर रहम कर अपनी तेज किरणों को समेटता हुआ मगरिब में जा छुपा। और चाँद ने अपनी मनोहरता दिखा शूरवीरों के जोश को शीतल[१] किया। इसलिए बहादुरों को अपनी तकदीर का फैसला दूसरे रोज पर रखना पडा।

१ ठण्डा किया

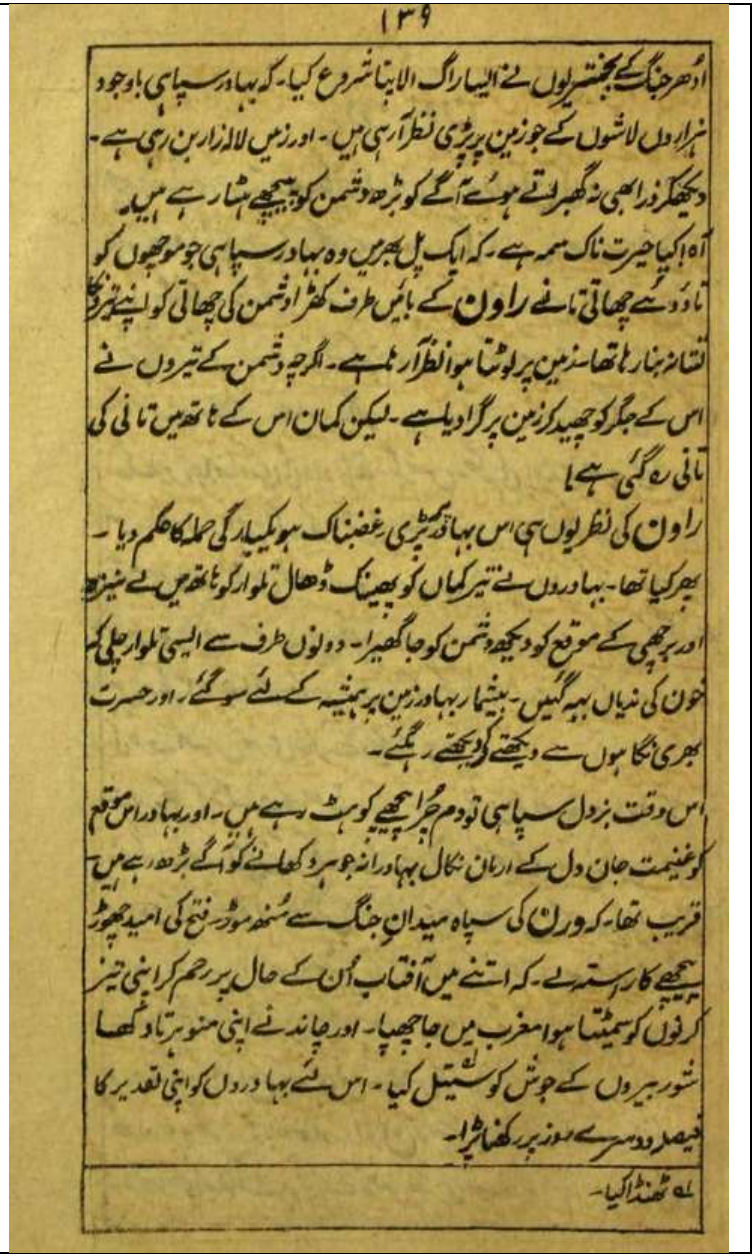

१ ٹھنڈا کیا۔

१४०

दूसरा दिन

सुबह होते ही जब आफ्ताब की तेज किरणों का पुरतों रावण की सिपाह पर पडा तो जादू का काम कर गया। जिसको देखते ही बहादूरों की तलवारें मयानों से निकल चमकती हुई दिखाई देने लगी। नेजा और बरछियाँ खुंखार जबाने निकाल दुश्मन को धमकाने लगी। बहादुरों के चेहरों से मालूम होता था कि लडाई का इन्तजार बेसब्री से कर रहे हैं। अगर सिपहसालार का खौफ न होता तो कभी के मैदाने जंग में जा बहादुरी की दाद लेते। मगर नहीं। हुक्म की पाबदी जरूरी थी इसलिए दिलावरान जंग का जोश भरे सीनों से इन्तजार करना पडा। थोडी देर मे नाकूस बजा और बहादुर मैदाने जंग मे नजर आए। दूसरी तरफ वरुण के सिपाही भी जोर शोर से तैयारियाँ कर मुन्तजिर हुक्म के खडे हैं। लेकिन बाजे जो नतजुर्बेकार हैं आफ्ताब को देख घबराहट में पड एक दूसरे की तरफ अफसोस भरी नजर से देख रहे हैं।

शायद ये कल की शिकस्त का बाइस है जिसने इनको इस कदर मायूस कर सुस्त बना रखा है। दाना पुण्डरीक एक ही नजर में समझ गया और जरा भी न घबराता हुआ बुलन्द आवाज से बोला "अफसोस का मुकाम है की वरुण की सिपाह और ये सुस्ती! बहादुरो शूरवीरो का ये काम नहीं कि एक दिन की शिकस्त होने पर रज्मगाह से दिल चुराए। क्षत्रिय वही है जो मैदाने जंग में दुश्मन को मारे या खुद मरे। रावण की वही फौज है जिसको तुमने कई दफह शिकस्त दी है। खर और दूषण को बांध और रावण को भगा चुके हो। अगर एक दिन की शिकस्त से तुम्हारी ये हालत हो गई है तो बस क्षत्रिय होने का दम न भरो, अभी वैश्य

دوسرا دن

صبح ہوتے ہی جب آفتاب کی تیز کرنوں کا پرتو راون کی سپاہ پر پڑا۔ تو
جادو کا کام کر گیا۔ جس کو دیکھتے ہی بہادروں کی تلواریں نیاموں سے نکل چمکتی
ہوئی دکھائی دینے لگیں۔ نیزہ اور برچھیاں خونخوار زبانیں نکال دشمن کو
دھمکانے لگیں۔ بہادروں کے چہروں سے معلوم ہوتا تھا کہ لڑائی کا انتظار
بے صبری سے کر رہے ہیں۔ اگر سپہ سالار کا خوف نہ ہوتا۔ تو کبھی کے میدان
جنگ میں جا بہادری کی داد لیتے۔ مگر نہیں۔ حکم کی پابندی ضروری تھی۔
اس لئے دلاوران جنگ کو جوش بھرے سینوں سے انتظار کرنا پڑا۔
تھوڑی دیر میں ناقوس بجا۔ اور بہادر میدان جنگ میں نظر آئے۔ دوسری
طرف ورن کے سپاہی بھی زور شور سے تیاریاں کر منتظر حکم کے کھڑے
ہیں۔ مگر بعضے جو ناتجربہ کار ہیں آفتاب کو دیکھ گھبراہٹ میں پڑ ایک دوسرے
کی طرف افسوس بھری نظر سے دیکھ رہے ہیں۔
شاید یہ کل کی شکست کا باعث ہے جس نے ان کو اس قدر مایوس کر سست
بنا رکھا ہے! دانا پنڈریک ایک ہی نظر میں سمجھ گیا۔ اور ذرا بھی نہ گھبراتا
ہوا بلند آواز سے بولا۔ افسوس کا مقام ہے کہ ورن کی سپاہ اور یہ سستی؟
بہادر و با شعور بیروں کا یہ کام نہیں کہ ایک دن کی شکست ہونے پر رزم گاہ
سے دل چرائیں؟ چھتری وہی ہے جو میدان جنگ میں دشمن کو مارے یا
خود مرے! راون کی وہی فوج ہے جس کو تم نے کئی دفعہ شکست دی ہے۔
کھر اور دوکھن کو باندھ اور راون کو بھگا چکے ہو! اگر ایک دن کی شکست
سے تمھاری یہ حالت ہو گئی ہے تو بس چھتری ہونے کا دم نہ بھرو ذرا بھی ویش

१४१

और शूद्रों में जा मिलो। मुझको ऐसे क्षत्रियों की जरूरत नहीं जिनको अपने नाम की गैरत नहीं। बहादुरो! जिन को तुम इस वक्त मैदान में खडे देख रहे हो, आज ही देखोगे कि दुश्मन को पामाल (रौंद) कर दुनिया मे नाम पाएँगे और तुम्हारे जैसे बुजदिल हमेशा के लिए शरमसार हो पछताएँगे। जाओ तुम जैसो की जरूरत नहीं। जाओ!"

नाजरीन! पुण्डरीक की बातें बिजली की तरह बहादुरों के खून में असर कर गई। वही गमगीन चेहरे सुर्ख हो गए और तलवारें मयानों से निकाल बडे जोश के साथ रज्मगाह मे नजर आए।

पुण्डरीक इस कदर सिपाह मे जोश देख निहायत खुश हुआ और अपने वालिद से जाकर बोला।

पुण्डरीक "महाराज! सुग्रीव के मुकाबले मे आप (वरुण) हैं। और रावण के सामने मै खुद और राजीव।" और इसी तरह दिलावराने जंग को भी तकसीम (बांट) कर दिया। इतने मे नाकूस बजा जिसकी आवाज सुनते ही बजतरियों ने जंग का राग अलापना शुरु किया। बहादुर कल के अरमान दिल खोल कर निकालने लगे। और खुंखार तलवारें मैदाने जंग में चमक अपने जौहर दिखाने लगे। हजारों सिपाही क्षण भर मे घायल हो नीचे सर झुका डगमगाने लगे। और खुंखार दरिंदे दूर से मुर्दा लाशों को देख खुशी मनाने लगे।

आह! वो सिपाही जो अभी अपनी तलवारों का वार करते हुए नजर आ रहे थे जमीन पर लेट तडप तडप कर जान दे रहे हैं। और हसरत भरी निगाहों से दूसरों की तरफ देख रहे हैं। बाजे जो कुछ फासले पर खडे हैं तीरों से काम ले दुश्मन को परेशान कर रहे

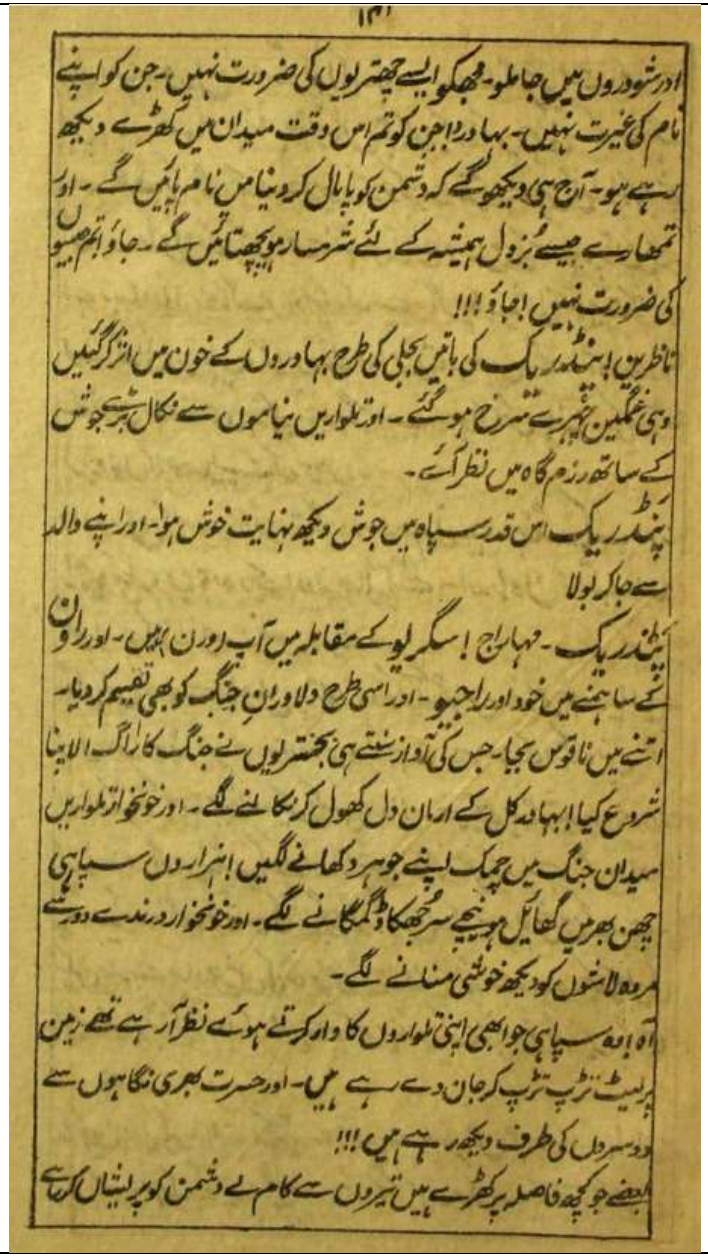

हैं। बहादुर वरुण और सुग्रीव एक दूसरे पर वार कर शुजात दिखला रहे हैं। हमारे बहादुर जरनैल हनुमान जी को देखना कैसी फुर्ती के साथ सब तरफ चक्कर लगा देख रहे हैं, कि जो कमजोर नजर आए उसकी इमदाद को पहुँचे। उफ! जरा रावण को देखना, आफत नागेहानि (अचानक) की तरह वरुण की सिपाह पर आन पडा है। बहादुरो की नाक में दम कर रखा है। अगरचा तरफेसानी भी बहुत कोशिश करते दिखाई देते हैं मगर इसके मुकाबले की ताब नहीं रखते। आह! बहादुरो के खून से नदी बह निकली है। मगर गजब ये हुआ कि उस पर आफ्ताब की शवाईं पड बुजदिलों का हौसला पस्त कर रही हैं।

हा हा! वरुण की सिपाह तो बहुत कमजोर मालूम होती है। पुण्डरीक और राजीव कहाँ है? वो देखो दोनो भाई आ गए और रावण को तब ऐसा घेरा है कि जरा फुरसत नहीं देते। उफ! किस जोर से रावण पर तलवार का वार किया है। मगर उसने भी खूब बचा लिया। क्यों न हो ये बडा तजुर्बेकार है। इसने बहुत से मारिके देखे है। अगर ऐसा न करता तो कभी न बचता। देखो कैसी सफाई से पीछे हट तीरों का वार कर रहा है। अगरचा पुण्डरिक और राजीव दोनों को जख्मी कर दिया है। मगर बहादुर पुण्डरीक जख्मी हो शेर की तरह गरज कर रावण के सर पर पहुँच ही गया है। लेकिन हमारे बहादुर जरनैल की नगाह भी इस तरफ पड गई है। वो देखो! बिजली की तरह वहाँ पहुँच कर गरज कर वार कर रहा है। आखिर पुण्डरीक को बेहोश कर जमीन पर गिरा ही दिया है।

राजीव भाई की ये हालत देख बडे गुस्से से हनुमान जी पर लपका। मगर रावण ने पीछे से होकर एक ही बरछी से उसका काम तमाम कर दिया। उधर हमारे जरनैल

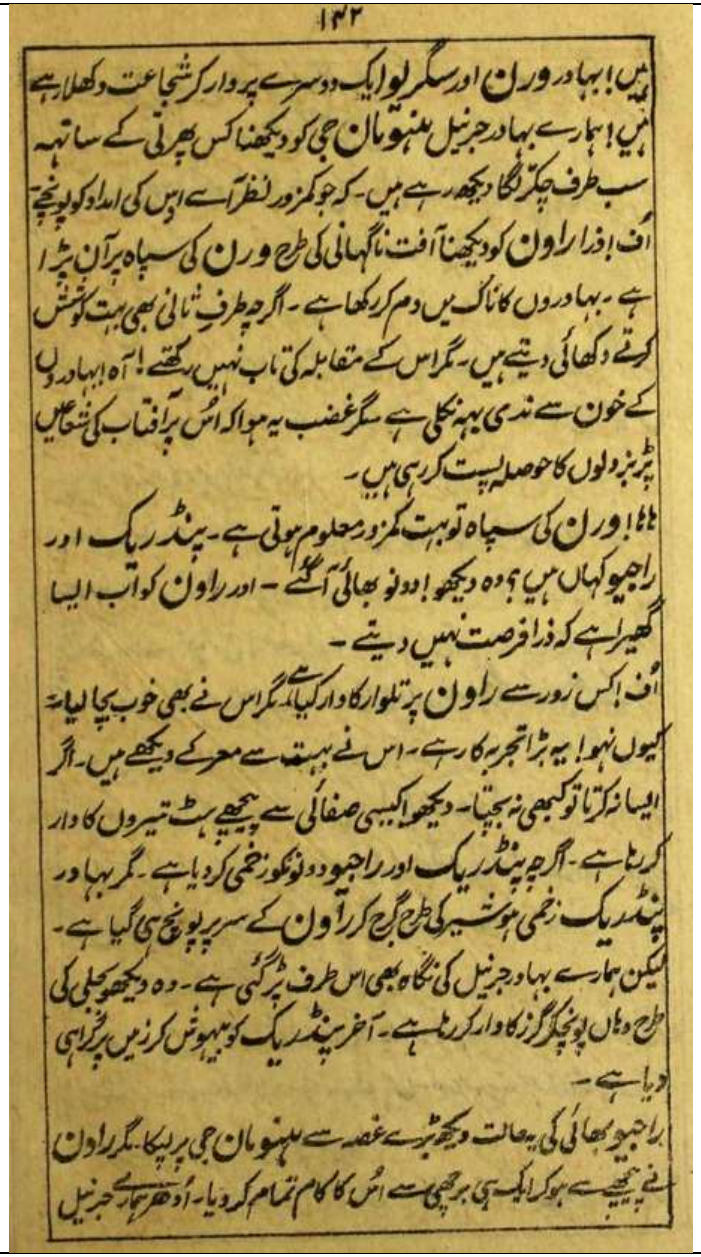

ہیں! بہادر ورن اور سگریو ایک دوسرے پر وار کر شجاعت دکھلا رہے
ہیں! ہمارے بہادر جرنیل ہنومان جی کو دیکھنا کس پھرتی کے ساتھ
سب طرف چکر لگا دیکھ رہے ہیں۔ کہ جو کمزور نظر آئے اس کی امداد کو پہنچے
اُف! ذرا راون کو دیکھنا آفت ناگہانی کی طرح ورن کی سپاہ پر آن پڑا
ہے۔ بہادروں کا ناک میں دم کر رکھا ہے۔ اگرچہ طرف ثانی بھی بہت کوشش
کرتے دکھائی دیتے ہیں۔ مگر اس کے مقابلہ کی تاب نہیں رکھتے! آہ! بہادروں
کے خون سے ندی بہہ نکلی ہے۔ مگر غضب یہ ہوا کہ اُس پر آفتاب کی شعاعیں
پڑ بزدلوں کا حوصلہ پست کر رہی ہیں۔

ہا ہا! ورن کی سپاہ تو بہت کمزور معلوم ہوتی ہے۔ پنڈریک اور
راجیو کہاں ہیں؟ وہ دیکھو! دونو بھائی آ گئے۔ اور راون کو اب ایسا
گھیرا ہے کہ ذرا فرصت نہیں دیتے۔

اُف! کس زور سے راون پر تلوار کا وار کیا ہے۔ مگر اس نے بھی خوب بچا لیا۔
کیوں نہو! یہ بڑا تجربہ کار ہے۔ اس نے بہت سے معرکے دیکھے ہیں۔ اگر
ایسا نہ کرتا تو کبھی نہ بچتا۔ دیکھو! کیسی صفائی سے پیچھے ہٹ تیروں کا وار
کر رہا ہے۔ اگرچہ پنڈریک اور راجیو دونو کو زخمی کر دیا ہے۔ مگر بہادر
پنڈریک زخمی ہو شیر کی طرح گرج کر راون کے سر پر پونچ ہی گیا ہے۔
لیکن ہمارے بہادر جرنیل کی نگاہ بھی اس طرف پڑ گئی ہے۔ وہ دیکھو بجلی کی
طرح وہاں پونچ کر گرز کا وار کر رہا ہے۔ آخر پنڈریک کو بیہوش کر زمین پر گرا ہی
دیا ہے۔

راجیو بھائی کی یہ حالت دیکھ بڑے غصہ سے ہنومان جی پر لپکا۔ مگر راون
نے پیچھے سے ہو کر ایک ہی برچھی سے اُس کا کام تمام کر دیا۔ اُدھر ہمارے جرنیل

ने जब पुण्डरीक के हाथ पाँव बांध दिए तो वो बडी हैरानगी से इसकी तरफ देखता हुआ बोला।

बोला तब ये वरुण सत बालक तेरो वेश
क्या नाम तुम्हारा कुँवरजी कौन पिता और देश
हनुमान जी
पिता हमारा पवन है रत्नपुर नाम ग्राम
न छोडूँ शत्रु ज्यूँ दिखे हनुवंत मेरा नाम
लिया जन्म लग वंश में मम प्रतिज्ञा जान
मारूँ शत्रु रण दिखे नहीं तो तजूँ प्राण

आह! पुण्डरीक को परेशानी की हालत मे देखकर वरुण की आँखो के आगे अंधेरा छा गया। बेखुदी के आलम में हो बरछी ले कर इस तरफ को बढा। मगर अब क्या हो सकता है किस्मत हार वीच की है। मुक्कदर पलट गया है। योंही उसने इस तरफ का रुख किया वही सुग्रिव ने उस वक्त को गनीमत जान नेजे की नोक से जख्मी कर पकड लिया। वरुण की अफसोस नाक हालत देखकर बुजदिलों के होश उडे। हथियारों को फेंक कर भागते नजर आए। मगर दिलावराने जंग बराबर वार करते रहे। इतने मे फतह का फरेरा हवा में उडता हुआ नजर पडा, जिसको देखकर वो मैदान जो थोडी देर पहले तलवारो की खडाखड से गूँज रहा था सुनसान हो गया। और रावण की सिपाह खुशी के नारे बुलन्द करती हुई कैम्प को वापिस आई। आह! जिस वक्त वरुण सरन्गो परेशान सूरत बनाए पुण्डरीक के साथ रावण के रुबरू हाजिर हुआ सबके दिल उसकी गर्दिश अयाम को देख धडक उठे। ईश्वर करे कि मुसीबत की घडी दुश्मन को भी नसीब न हो। देखिए ये वही राजा वरुण है जो कल मालिक तख्तोताज था। और आज कैसी बेकसी की हालत में हो रहा है।

نے جب پنڈریک کے ہاتھ پاوں باندھ دئیے تو وہ بڑی حیرانگی سے
اس کی طرف دیکھتا ہوا بولا۔ ؎

بولا تب یہ ورن ست بالک تیرو دیس کیا نام تمہارا کنور جی کون پتا اور دیس
ہنومان جی ؎
پتا ہمارا پون ہے، رتن پور نام گرام نہ چھوڑوں شتر وئید کھے ہنونت میرا نام
لیا جنم لگ ونش میں مم پرتگیا جان مارون شتر ورن رکھے ہیں تو تجون پران

آہ! پنڈریک کو پریشانی کی حالت میں دیکھکر ورن کی آنکھوں کے آگے
اندھیرا چھا گیا۔ بیخودی کے عالم میں ہو برچھی لے کر اس طرف کو بڑھا۔ مگر اب
کیا ہو سکتا ہے۔ قسمت ہار دیچکی ہے مقدر پلٹ گیا ہے۔ یونہی اس نے
اس طرف کا رخ کیا وہیں سگریو نے اس وقت کو غنیمت جان نیزہ کی نوک
سے زخمی کر پکڑ لیا!

ورن کی افسوسناک حالت دیکھکر نیزدلوں کے ہوش اوڑ سے ہتھیاروں
کو پھینک بھاگتے نظر آئے۔ مگر دلاوران جنگ برابر وار کرتے رہے۔ اتنے
میں فتح کا پھریرا ہوا میں اوڑتا ہوا نظر پڑا۔ جس کو دیکھکر وہ میدان جو تھوڑی
دیر پہلے تلواروں کی کھٹا کھٹ سے گونج رہا تھا سنسان ہو گیا۔ اور راون
کی سپاہ خوشی کے نعرے بلند کرتی ہوئی کیمپ کو واپس آئی۔

آہ! جس وقت ورن سرنگوں پریشان صورت بنائے پنڈریک کے
ساتھ راون کے روبرو حاضر ہوا سب کے دل اس کی گردش ایام کو دیکھ دھڑک
اٹھے!!!

اللہ کرے کہ مصیبت کی گھڑی دشمن کو بھی نصیب نہ ہو۔ دیکھئے یہ وہی راجہ ورن
ہے جو کل مالک تخت و تاج تھا۔ اور آج کیسی بیکسی کی حالت میں ہو رہا ہے۔

अगरचा इजनीर बेटे का गम उसके दिल को कबाब की तरह सूखता कर रहा है लेकिन ये खूने जिगर पी पी कर अतश गम को सर्द आहो से फर्द करता हुआ चुप चाप मोदब दस्त बस्ता सर तसलीम खम कर खडा है।

रावण कुछ देर उसकी तरफ देखने के बाद "वरुण कहो क्या हाल है?"

वरुण सर नीचे झुका खामोश खडा है।

रावण "अब खामोश क्यों हो? तुम को अच्छी तरह मालूम है कि इंद्र यम और कुबेर वगैहरा तो मेरी पनाह मे आए और तुम ऐसे सर कशी हो गए। अफसोस तुमको उनकी तरफ देख कर भी कुछ ख्याल न आया। बल्कि मेरे मंत्री भेजने पर भी कुछ गौर न किया।"

वरुण निहायत धीमी आवाज से "ये सब मेरी ही नादानी का नतीजा है। मुझपर रहम किजिए। मैंने अपनी किए की सजा पाई।"

रावण "इतनी जल्दी! तुम तो कहते थे कि मैं वरुण हूँ मुझको और न ख्याल करना।"

वरुण सर्द आह भर कर शरम से सर नीचे झुका लिया और कुछ जवाब न दिया। तब हनुमान और सुग्रीव वगैहरा ने दरम्यान मे पड कर बेहद मुशकिल वरुण को माफी दिलाई। और आइन्दा के लिए शरायत मुकर्रर कर वरुण से मुखातिब होकर कहा "जब महाराज तुम को याद करे फौरन हाजिर होना होगा वरना याद रहे फिर ऐसा मौका कभी न दिया जावेगा।"

वरुण इन सब का निहायत शुक्र गुजार हो दुरमती नगर को वापिस गया। और रावण ने खुशी खुशी लंका का रास्ता लिया। और हर एक को खलात इता कर वहीं से रुखसत किया।

اگرچہ عزیز بیٹے کا غم اس کے دل کو کباب کی طرح سوختہ کر رہا ہے۔ لیکن یہ خون جگر پی پی کر آتش غم کو سرد آہوں سے فرد کرتا ہوا چپ چاپ مودب دست بستہ سر تسلیم خم کر کھڑا ہے۔

راون۔ (کچھ دیر اس کی طرف دیکھنے کے بعد) ورن کہو کیا حال ہے؟

ورن۔ سر نیچے جھکا خاموش کھڑا ہے۔

راون۔ اب خاموش کیوں ہو؟ تم کو اچھی طرح معلوم ہے کہ اندر۔ یم اور کبیر وغیرہ تو میری پناہ میں آئے اور تم ایسے سرکش ہو گئے! افسوس! تمکو ان کی طرف دیکھ کر بھی کچھ خیال نہ آیا! بلکہ میرے منتری بھیجنے پر بھی کچھ غور نہ کیا!

ورن۔ (نہایت دھیمی آواز سے) یہ سب میری ہی نادانی کا نتیجہ ہے۔ مجھ پر رحم کیجیے! میں نے اپنے کئے کی سزا پالی۔

راون۔ اتنی جلدی! تم تو کہتے تھے کہ میں ورن ہوں۔ مجکو اور نہ خیال کرنا۔

ورن۔ (سرد آہ بھر کر) شرم سے سر نیچے جھکا لیا۔ اور کچھ جواب نہ دیا تب ہنومان اور سگریو وغیرہ نے درمیان میں پڑ کر بعد مشکل ورن کو معافی دلائی۔ اور آیندہ کے لئے شرائط مقرر کر ورن سے مخاطب ہو کر کہا! جب مہاراج تم کو یاد کریں فوراً حاضر ہونا ہوگا۔ ورنہ یاد رہے پھر ایسا موقعہ کبھی نہ دیا جاویگا

ورن ان سب کا نہایت شکر گذار ہو دُرمتی نگر کو واپس گیا۔ اور راون نے خوشی خوشی لینکا کا راستہ لیا۔ اور ہر ایک کو خلعت عطا کر وہیں سے رخصت کیا۔

बाब (अध्याय) उनतिसवाँ

मै इसको कब तक कुँवारी रखूँगी

हमारा ख्याल हमको लेकर शहर किष्किंधा में, जो मद्रास के शमालो मगरिब (उत्तर पश्चिम) और हैदराबाद के जुनूब (दक्षिण) में जेर अहतमाम बमोजिब रामायण को लायक इजीनियर विश्वकर्मा के तामीर कराया गया था, उस वक्त पहुँचा है जब चंद नौजवान लडकिया जर्कबर्क पोशाके पहने पद्मरागा[१] के कमरे में बैठी हुई बातें कर रही हैं। जिन की गुफ्तगू को सुनकर हमारे कान भी उसी तरफ रुजू हो गए हैं। सुनिए पद्मरागा बालसुन्दरी से क्या कह रही है

पद्मरागा "सखी औरत और खाविंद का रिश्ता मानिन्द (जैसे) बादशाह और वजीर के है। जिस घर मे इन दोनो का इत्तफाक है वही बाइसे खुशनुदी दीनी दुनियावी तरक्की खानदान है। और एक दूसरे से बदगुमान रहना गोया बरबादी खानदान जवाल नगनामूस कुर्बत रंजो आलम है। इसलिए औरत क्या मर्द दोनों का फर्ज है कि एक दूसरा मुहब्बत से काम ले, दिलोजान से उल्फत (प्रेम) करे। अगर कोई ऐसी भी आदत हो जो दूसरे के बरखिलाफ हो उसके तरक करने कोशिश करे। वरना याद रहे बडी दिक्कत पेश आएगी। अजीज जिन्दगी भी जान का बबाल हो तनह हो जाएगी।" बालसुन्दरी कुछ पूछने को थी कि किसी के आने की आहट मालूम हुई। झिझक कर रह गई और सब बरामदे की तरफ देखने लग पडे कि इतने मे पद्मरागा की

१ सुग्रीव की लडकी का नाम है

باب انتیسواں

میں اس کو کب تک کنواری رکھونگی

ہمارا خیال ہم کو لیکر شہر کسکندا میں جو مدراس کے شمال و مغرب اور حیدرآباد کے جنوب میں زیر اہتمام بموجب رامایں کے لایق انجنیر بسوکرمان کے تعمیر کرایا گیا تھا اُس وقت پونچا ہے جب چند نوجوان لڑکیاں زرق برق پوشاکیں پہنے پدم[۱] راگا کے کمرے میں بیٹھی ہوئی باتیں کر رہی ہیں۔ جن کی گفتگو کو سنکر ہمارے کان بھی اُسی طرف رجوع ہو گئے ہیں سنئے پدم راگا بال سُندری سے کیا کہہ رہی ہے۔

پدم راگا۔ سکھی عورت اور خاوند کا رشتہ مانند بادشاہ اور وزیر کے ہے جس گھر میں ان دونوں کا اتفاق ہے وہی باعث خوشنودی دینی و دنیاوی ترقی خاندان ہے۔ اور ایک دوسرے سے بدگمان رہنا گویا بربادی خاندان زوال ننگ ناموس قربت رنج والم ہے۔ اس لئے عورت کیا مرد دونوں کا فرض ہے کہ ایک دوسرا محبت سے کام لے۔ دل و جان سے الفت کرے اگر کوئی ایسی بھی عادت ہو جو دوسرے کے برخلاف ہو اُس کو ترک کرنے کی کوشش کرے۔ ورنہ یاد رہے بڑی دقت پیش آئیگی۔ عزیز زندگی بھی جان کا وبال ہو تلخ ہو جائیگی۔

بال سندری کچھ پوچھنے کو تھی کہ کسی کے آنے کی آہٹ معلوم ہوئی جھجک رہگئی اور سب برآمدے کی طرف دیکھنے لگ پڑیں کہ اتنے میں پدم راگا کی

۱ سگریو کی لڑکی کا نام ہے

वालदा सामने आती हुई नजर पडी। तब तो सब दम बखुद हो नीचे सर झुका खामोश हो गई। मगर पद्मरागा ने जल्दी से उठकर वालदा को प्रणाम किया और बैठने के वास्ते प्रार्थना की। लेकिन रानी लडकियों को देख वहाँ ज्यादा ठहरना मुनासिब ख्याल न कर कुछ सोचती हुई अपने कमरे को वापिस जा रही है। और अब दिल ही दिल में यूँ कह रही है। मैं कब तक इसको कुँवारी रखूँगी। गो ये बेचारी निहायत सीधी सादी है लेकिन मेरा धर्म नहीं कि अब खामोश रहूँ और इसकी शादी का फिक्र न करूँ। जब तक शाम न हुई रानी इसी फिक्र में मुबतला रही। जब सुग्रीव महल में आया कहने लगी।

रावी नाजरीन! आप ये ख्याल न करे कि पद्मरागा शोख दीदा है या आगाजे जवानी है, जो ऐसी बातों में मशगूल है। नहीं हर्गिज नहीं! ये बडी नेक खफलत धर्म के पालने वाली शरम हजूर लडकी है। जब कभी इसको सखी सहेलियों से बात करने का मौका मिला तब ही उनको नसीहत आमेज बातें और सत शास्त्रो का उपदेश देना शुरु कर दिया।

रानी "स्वामीजी! कुछ पद्मरागा का भी फिक्र है कि नहीं? उसकी हमउम्र लडकियाँ तमाम ब्याही गई हैं और आपने अब तक तलाश भी नहीं की।"

सुग्रीव "प्रियजी! मुझको इस बात का खुद ख्याल है मगर क्या करूँ कोई लडका लायक नजर नहीं आता। और ऐसे वैसे लडके के साथ शादी करने को दिल नहीं चाहता। क्योकि इसकी तमाम जिन्दगी की खुशी का मजार हमारी इस वक्त की सोच और विचार पर मुनहसिर है।"

रानी "जो कुछ आपने फरमाया दुरुस्त है। मगर अब खामोश रहने का भी वक्त नहीं। और वेद मुकद्दस के भी बरखिलाफ है क्योंकि इसका ब्रह्मचर्य पूरा हो चुका है।"

والدہ سامنے آتی ہوئی نظر پڑی تب تو سب دم بخود ہو نیچے سر جھکا خاموش
ہو گئیں مگر پدم راگا نے جلدی سے اُٹھکر والدہ کو پرنام کیا۔ اور بیٹھنے کیواسطے
پرارتھنا کی۔ لیکن رانی لڑکیوں کو دیکھ وہاں زیادہ ٹھہرنا مناسب خیال نہ کر
کچھ سوچتی ہوئی اپنے کمرے کو واپس جا رہی ہے۔ اور اب دل ہی دل میں
یوں کہہ رہی ہے "میں کب تک اس کو کنواری رکھوں گی۔ گو یہ بیچاری نہایت
سیدھی سادی ہے۔ لیکن میرا دھرم نہیں کہ اب خاموش رہوں اور
اور اس کی شادی کا فکر نہ کروں"۔ جب تک شام نہ ہوئی رانی اسی فکر میں مبتلا
رہی۔ جب سگریو محل میں آیا کہنے لگی

راوی۔ ناظرین! آپ یہ خیال نہ کریں کہ پدم راگا شوخ دیدہ ہے یا آغاز
جوانی ہے جو ایسی باتوں میں مشغول ہے۔ نہیں! ہرگز نہیں!۔ یہ بڑی نیک
خصلت دھرم کے پالنے والی شرم حضور لڑکی ہے۔ جب کبھی اس کو
سکھی سہیلیوں سے بات کرنیکا موقعہ ملا تب ہی اُن کو نصیحت آمیز باتیں اور
ست شاستروں کا اوپدیش دینا شروع کر دیا!

رانی۔ سوامی جی! کچھ پدم راگا کا بھی فکر ہے کہ نہیں؟ اُس کی ہم عمر لڑکیاں
تمام بیاہی گئی ہیں اور آپ نے ابتک بر کی تلاش بھی نہیں کی۔

سگریو۔ پریہ جی! مجکو اس بات کا خود خیال ہے مگر کیا کروں۔ کوئی لڑکا لایق
نظر نہیں آتا۔ اور ایسے ویسے لڑکے کے ساتھ شادی کرنے کو دل نہیں چاہتا
کیونکہ اس کی تمام زندگی کی خوشی کا مدار ہماری اسی وقت کی سوچ اور وچار پر
منحصر ہے۔

رانی۔ جو کچھ آپ نے فرمایا درست ہے۔ مگر اب خاموش رہنے کا بھی وقت
نہیں۔ اور وید مقدس کے بھی برخلاف ہے۔ کیونکہ اس کا برہمچریہ پورا ہو چکا ہے۔

रानी की बातें सुनकर सुग्रीव निहायत मुतफिक्र हो गया। और बहुत देर तक आलमे सकूत में रहा। दफतन जो कुछ ख्याल दिल मे आ गया तो कहने लगा।

सुग्रीव खुशी के लहजे में "आहा! खूब याद आ गया पवन का लडका हनुमान बडा दाना और आलिम है। और बहादुर भी अव्वल दर्जे का है। अलबत्ता उसके वस्फ (गुण) मेरे दिल पसन्द हैं। शायद उसका जिक्र मैंने तुमसे किया था।"

रानी "वही जो तुम्हारे साथ पिछली दफा वरुण के मुकाबले में शरीक था।"

सुग्रीव "हाँ हाँ वही वही।"

रानी "तो जब आपको उस पर इतमिनान है और हर तरह से तसल्ली है तो फिर देर क्यों करते हो?"

सुग्रीव "नहीं प्रियजी मैं सुबह ही मंत्री को भेज दूँगा। आप तसल्ली रखें।"

दूसरे रोज सुबह होते ही एक मंत्री को रत्नपुर रवाना किया।

बाब (अध्याय) तीसवाँ

गृहस्थ आश्रम सबसे अफजल है

रत्नपुर के राज मन्दिर के बाएँ तरफ एक आलिशान बारादरी है जिसको पवनजी ने मुख्तलिफ (अलग अलग) जगह के कारीगरों को बुलवा और बहुत सा रुपया खर्च करके बडे शौक से तैयार कराया है। बारादरी मजकोरकी चोली छत सुनहरी गुलकारियाँ और जा बजा शीशों से आरास्ता है। चूने की दिवारे निहायत साफ और सुथरी है। जिन को देख कर संगेमरमर का शक हो जाता है। और इन पर बेल बूटे ऐसे खूबसूरती और नजाकत के साथ बनाए गए है कि दूर से

رانی کی باتیں سُنکر سگریو نہایت متفکر ہوگیا اور بہت دیر تک عالم سکوت میں رہا۔ دفعتاً جو کچھ خیال دل میں آگیا تو کہنے لگا۔

سگریو۔ (خوشی کے لہجہ میں) آہا! خوب یاد آگیا۔ پون کا لڑکا ہنومان بڑا دانا اور عالم ہے۔ اور بہادر بھی اول درجہ کا ہے۔ البتہ اُس کے وصف میرے دل پسند ہیں۔ شاید اس کا ذکر میں نے تم سے کیا تھا۔

رانی۔ وہی جو تمھارے ساتھ پچھلی دفعہ ورن کے مقابلہ میں شریک تھا۔

سگریو۔ ہاں! ہاں! وہی وہی۔

رانی۔ تو جب آپ کو اُس پر اطمینان ہے اور ہر طرح سے تسلی ہے تو پھر دیر کیوں کرتے ہو؟

سگریو۔ نہیں پریہ جی! میں صبح ہی منتری کو بھیجدوں گا۔ آپ تسلی رکھیں۔

دوسرے روز صبح ہوتے ہی ایک منتری کو رتن پور روانہ کیا۔

باب تیسواں

گرہست آشرم سب سے افضل ہے

رتن پور کے راج مندر کے بائیں طرف ایک عالیشان بارہ دری ہے جس کو پون جی نے مختلف جگہ کے کاریگروں کو بلوا اور بہت سا روپیہ خرچ کرکے بڑے شوق سے تیار کرایا ہے۔ بارہ دری مذکور کی چولی چھت سنہری گلکاریاں اور جابجا شیشوں سے آراستہ ہے۔ چونے کی دیواریں نہایت صاف اور ستھری ہیں۔ جن کو دیکھکر سنگ مرمر کا شک ہوتا ہے۔ اور ان پر بیل بوٹے ایسی خوبصورتی اور نزاکت کے ساتھ بنائے گئے ہیں کہ دور سے

गुलजार नजर आता है।

आहा! सब्ज सब्ज पत्तों और नाजुक पतली डालियों मे सुर्ख बसन्ती और अदवे रंग बिरंगे केसर फूल क्या खुशनुमा मलूम होते हैं। और बाजे शगूफा जो अभी अच्छी तरह से नहीं खिले, मगर उस जोगी की तरह जो परमात्मा के ध्यान में कुछ अरसा के लिए आँखे बन्द करके मग्न रहता है और बाद में प्रेम भरी आँखे खोल कर दुनिया को देखता है, थोडे खिले हुए दिखाई देते हैं। सिर्फ यही नहीं इन पर छोटे छोटे जानवर भी बडी खूबी के साथ नजर आते हैं कि देखने वाला हैरान रह जाता है।

नीचे सुर्ख मखमली फर्श जिसके हाशिये पर कलाबतों का काम और ऐन दरमयान मे एक गोल चक्र बना हुआ है, जो पैमाइश के लिहाज से चार पाँच गज से कम नहीं। इस पर कारीगर ने जरी के बेल बूटे बना कर दस्तकारी हुनर में कमाल ही कर दिखाया है। इस गोल चक्र के शमाल की तरफ एक जडाऊँ स्वर्ण की चौकी पर सब्ज मखमल का गदेला बिछा हुआ और अतलस का गाऊ तकिया धरा है, जिनका सहारा लिए बदन के निचले हिस्से पर दुशाला फैलाए पवनजी बैठे कुछ सोच रहे हैं। और बाएँ तरफ प्रधान रत्नवीर कागज हाथ मे लिए पढ रहा है। और सामने जुनूब की तरफ एक बडा दरवाजा आमोदरख्त का है जहाँ दो दरबान वर्दी पहने खडे हैं।

एक शख्स दरमयाना कद सफेदरेश सर पर गोल चक्करदार पगडी बांधे और अंगरखा पहने ढीली धोती को पाँवों से फटकारता हुआ आया और इस बडे दरवाजे पर पहुँच दरबानो से कुछ दरयाफ्त कर बारादरी के अंदर दाखिल हुआ। और झुक कर पवनजी को प्रणाम किया।

گلزار نظر آتا ہے۔

آہا! سبز سبز پتیوں اور نازک پتلی ڈالیوں میں سُرخ۔ بسنتی اور اودے رنگ برنگ کے پھول کیا خوشنما معلوم ہوتے ہیں۔ اور بعضے شگوفہ جو ابھی اچھی طرح سے نہیں کھلے مگر اُس جوگی کی طرح جو پرماتما کے دھیان میں کچھ عرصہ کے لئے آنکھیں بند کر کے مگن رہتا ہے اور بعد میں پریم بھری آنکھیں کھول کر دنیا کو دیکھتا ہے تھوڑے کھلے ہوے دکھائی دیتے ہیں۔ صرف یہ ہی نہیں۔ ان پر چھوٹے چھوٹے جانور بھی بڑی خوبی کے ساتھ نظر آتے ہیں کہ دیکھنے والا حیران رہجاتا ہے۔

نیچے سُرخ مخملی فرش جس کے حاشیہ پر قلابتو کا کام۔ اور عین درمیان میں ایک گول چکر بنا ہوا ہے۔ جو پیمایش کے لحاظ سے چار پانچ گز سے کم نہیں۔ اس پر کاریگر نے زری کے بیل بوٹے بنا کر دستکاری کے ہنر میں کمال ہی کر دکھایا ہے اس گول چکر کے شمال کی طرف ایک جڑاؤ سونے کی چوکی پر سبز مخمل کا گدیلا بچھا ہوا اور اطلس کا گاؤ تکیہ دھرا ہے جس کا سہارا لئے اور بدن کے نیچلے حصہ پر دوشالا پھیلائے پون جی بیٹھے کچھ سوچ رہے ہیں اور بائیں طرف پردھان رتن سبیر کاغذ ہاتھ میں لئے پڑھ رہا ہے۔ اور سامنے جنوب کی طرف ایک بڑا دروازہ آمد و رفت کا ہے جہاں دو دربان وردی پہنے کھڑے ہیں۔

ایک شخص درمیانہ قد سفید ریش سر پر گول چکردار پگڑی باندھے اور انگرکھا پہنے ڈھیلی دھوتی کو پاؤں سے پھٹکارتا ہوا آیا۔ اور اس بڑے دروازہ پر پہرے دربانوں سے کچھ دریافت کر بارہ دری کے اندر داخل ہوا اور جھک کر پون جی کو پرنام کیا۔

१४९

पवनजी जरा सर उठाकर “आहा! चंद्रगती तुम कहाँ! बडी मुद्दत के बाद तुम को देखा है।”

चंद्रगती हाथ जोडकर “एक जरूरी काम के लिए आप की खिदमत में हाजिर हुआ हूँ।”

पवनजी हाथ का इशारा करके “बैठिए। कहो तुम्हारा राजा तो अच्छा है?”

चंद्रगती “महाराज! सब आपकी कृपा है।”

पवनजी “कहिए वो कौन सा काम है जिसने आपको आने पर आमादा किया?”

चंद्रगती “महाराज! राजा सुग्रीव की बेटी पद्मरागा जो हमसिफ्त मौसूफ लडकी है उसके वर की जुस्तजू में थे कि आप के कुँवर हनुमान जी के बहादुराना जौहरों का जिक्र सुनकर सबने यही मुनासिब ख्याल किया कि पहले आप से अर्ज की जावे कि आप कुँवरजी की शादी की निसबत क्या ख्याल रखते हैं।”

पवनजी खुश होकर “ओहो! पद्मरागा! मैं बडी खुशी से उस के साथ अपने कुँवर की शादी करने को तौयार हूँ।”

चंद्रगती “तो महाराज हमारी तरफ से भी कुछ देर नहीं।”

मजकूराबाला गुफ्तगू को सुनकर हनुमान जी ने जो पास ही बैठे हैं न जाने क्या सोच कर या शरम से सरको नीचे झुका लिया है। और बडी आहिस्ता से कह रहे हैं “महाराज! मुझको शादी की इच्छा नहीं।” ज्यूँही इनकी आवाज पवनजी के कान में पहुँची बडी हैरानगी से बोले।

पवनजी “क्यों क्या बाइस! तुम्हारा ब्रह्मचर्य पूरा हो चुका। शारीरिक, मानसिक और आत्मिक धर्म को पालन कर चुके। फिर गृहस्थ से इंकार क्यों?”

हनुमान “इस आश्रम में मनुष्य को बहुत बन्धन पड जाते हैं। और कई किस्म

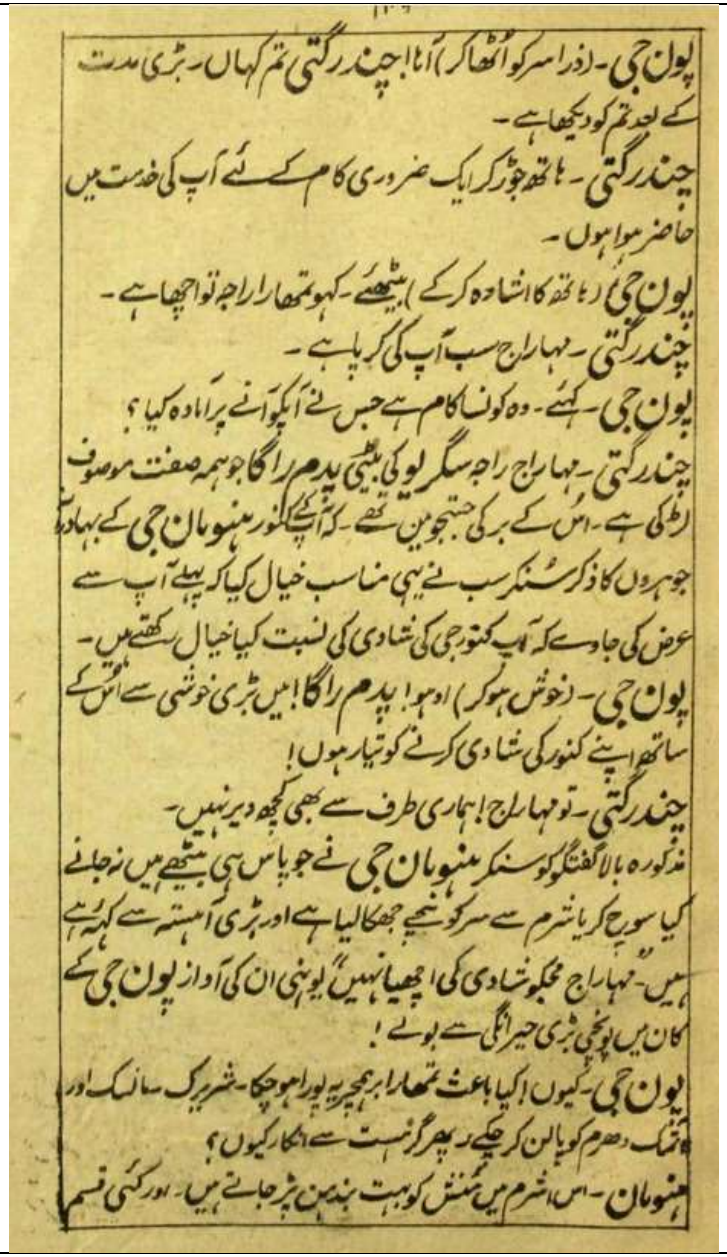

پون جی۔ (ذرا سر کو اٹھا کر) آہا! چندر گتی تم کہاں۔ بڑی مدت کے بعد تم کو دیکھا ہے۔

چندر گتی۔ ہاتھ جوڑ کر ایک ضروری کام کے لئے آپ کی خدمت میں حاضر ہوا ہوں۔

پون جی (ہاتھ کا اشارہ کر کے) بیٹھئے۔ کہو تمھارا راجہ تو اچھا ہے۔

چندر گتی۔ مہاراج سب آپ کی کرپا ہے۔

پون جی۔ کہئے۔ وہ کونسا کام ہے جس نے آپکو آنے پر آمادہ کیا؟

چندر گتی۔ مہاراج راجہ سگریو کی بیٹی پدم راگا جو ہمہ صفت موصوف لڑکی ہے۔ اس کے بر کی جستجو میں تھے۔ کہ آپکے کنور ہنومان جی کے بہادرانہ جوہروں کا ذکر سنکر سب نے یہی مناسب خیال کیا کہ پہلے آپ سے عرض کی جاوے کہ آپ کنور جی کی شادی کی نسبت کیا خیال رکھتے ہیں۔

پون جی۔ (خوش ہوکر) اوہو! پدم راگا! میں بڑی خوشی سے اس کے ساتھ اپنے کنور کی شادی کرنے کو تیار ہوں!

چندر گتی۔ تو مہاراج! ہماری طرف سے بھی کچھ دیر نہیں۔

مذکورہ بالا گفتگو کو سنکر ہنومان جی نے جو پاس ہی بیٹھے ہیں نہ جانے کیا سوچ کر یا شرم سے سر کو نیچے جھکا لیا ہے اور بڑی آہستہ سے کہہ رہے ہیں۔ "مہاراج مجکو شادی کی اچھا نہیں" یونہی ان کی آواز پون جی کے کان میں پونچی بڑی حیرانگی سے بولے!

پون جی۔ کیوں! کیا باعث تمھارا برہمچریہ پورا ہو چکا۔ شریرک سانسک اور آتمک دھرم کو پالن کر چکے۔ پھر گرہست سے انکار کیوں؟

ہنومان۔ اس آشرم میں منش کو بہت بندھن پڑ جاتے ہیں۔ اور کئی قسم

के विकार होते हैं। इसलिए मैं इस में प्रवेश नहीं चाहता।"

पवनजी "बेटा क्या कहते हो? ये ही आश्रम सब आश्रमों से आला है। जिसके जरिये इंसान हर किस्म का उपकार कर सकता है। ब्रह्मचारी की हालत में तुम कुछ भी नहीं कर सकते। हाँ! जो बाते इस आश्रम मे इंसान के दिखाये होते हैं उनका ख्याल रखना जरूरी है। सो हमने पहले ही उनको सोच लिया है। ईश्वर की कृपा से खानदान नेक और आरोग्या है। लडकी धर्म के पालने वाली और विद्वान है।"

हनुमान "महाराज! जो आपने फरमाया दुरुस्त है। लेकिन मेरी तबीयत को शादी से कुछ नफरत ही हो गई है।"

पवनजी तेवर बदल कर "कुँवरजी बडे बडे ऋषि मुनि इस आश्रम में पैदा हुए। वेद और शास्त्रों ने इस आश्रम को सब से तरजीह दी है। एक यही आश्रम है जिस में लोक और परलोक दोनो सुधर सकते हैं। अफसोस तुम ऐसे विद्वान होकर इंकार करते हो।"

हनुमान जी ने जब देखा कि पवनजी इस बात पर जोर दिए जाते है। और उनका हुक्म न मानना, वेद और शास्त्रो की मर्यादा को तोडना मेरी जिन्दगी पर धब्बा लाएगा, ये सोचकर खामोश हो गए।

हनुमान को खामोश देखकर पवनजी ने पद्मरागा की तस्वीर उसके हाथ मे देकर कहा "ये राजा सुग्रीव बिरादर बाली वाली किष्किंधा की लडकी है, जिसके साथ तुम्हारी निस्बत की तजवीज करते हैं।" इस बात को सुनकर हनुमान जी के दिल में न जाने क्या ख्याल गुजरा कि एक दफा चंद्रगती की तरफ देखा और बाद मे तस्वीर को पवन जी के आगे रख सर झुका लिया। बस फिर क्या था वहीं प्रधान रत्नवीर ने मुबारिकबाद की आवाज बुलन्द की और अब सब तरफ से यही आवाज

کے دکار ہوتے ہیں۔ اس لئے میں اس میں پرویش کرنا نہیں چاہتا!

پون جی۔ بیٹا کیا کہتے ہو؟ یہ ہی آشرم سب آشرموں سے اعلےٰ ہے جس کے ذریعہ انسان ہر قسم کا اوپکار کر سکتا ہے۔ برہمچاری کی حالت میں تم کچھ بھی نہیں کر سکتے۔ ہاں! جو باتیں اس آشرم میں انسان کے لئے دکھیا ئی ہوتے ہیں اون کا خیال رکھنا ضروری ہے! سو ہم نے پہلے ہی اُن کو سوچ لیا ہے! الیشور کی کرپا سے خاندان نیک اور آروگیہ ہے۔ لڑکی دھرم کے پالنے والی اور ودوان ہے۔

ہنومان۔ مہاراج! جو آپ نے فرمایا درست ہے۔ لیکن میری طبیعت کو شادی سے کچھ نفرت ہی ہوگئی ہے۔

پون جی۔ (تیور بدل کر) کنور جی! بڑے بڑے رشی مُنی اسی آشرم میں پیدا ہوئے۔ وید اور شاستروں نے اسی آشرم کو سب سے ترجیح دی ہے! ایک یہ ہی آشرم ہے جس میں لوک اور پرلوک دونوں سدھر سکتے ہیں۔ افسوس! تم ایسے ودوان ہو کر انکار کرتے ہو!

ہنومان جی نے جب دیکھا کہ پون جی اسی بات پر زور دے جاتے ہیں اور ان کا حکم نہ ماننا وید اور شاستروں کی مرادا کو توڑنا میری زندگی پر دھبہ لائیگا یہ سوچکر خاموش ہو گئے۔

ہنومان کو خاموش دیکھکر پون جی نے پدم راگا کی تصویر اُس کے ہاتھ میں دیکر کہا۔ "یہ راجہ سگریو برادر بالی والی کسکندا کی لڑکی ہے جسکے ساتھ تمھاری نسبت کی تجویز کرتے ہیں! اس بات کو سُنکر ہنومان جی کے دل میں نہ جانے کیا خیال گذرا کہ ایک دفعہ چندر گتی کی طرف دیکھا اور بعد میں تصویر کو پون جی کے آگے رکھ سر جھکا لیا۔ بس پھر کیا تھا وہیں پر دھان رتن جی نے مبارک باد کی آواز بلند کی اور اب سب طرف سے یہی آواز

आ रही है।

दूसरे रोज सुबह होते ही पवनजी ने हमारे बहादुर जरनैल की तस्वीर चंद्रगती को दे विदा कर ताकीद की कि जल्दी मशवरा कर शगुन भिजवा दे।

बाब (अध्याय) इकतीसवाँ

दिल की मुराद बर आई

गो शहर किष्किंधा के हर एक मकान की इमारत और शहर की बनावट काबिले दीद है लेकिन हमारा मतलब तो उन शाही महलात से है जो पवाकरनी[१] दरवाजे के मुतसिल वाकह हैं।

आहा! जैसे पवाकरनी दरवाजे से शहर मे दाखिल हुए एक फराख (विस्तृत) बाजार नजर पडा जिसके दोनो तरफ दुकानें और आलीशान इमारतें नजर आ रही हैं। बाजार की सफाई का ये आलम है कि एक तिनका भी नजर नहीं आता। गर्दोगुबार का तो नमोनिशान नहीं। खासा उम्दा सुर्ख पत्थर का फर्श है। दोनो तरफ कहीं कहीं दरख्त भी नजर आते हैं जो बाजार के सीन को और भी खूबसूरत बना रहे हैं। और आने जाने वालो का हुजूम तो कशरत से है। थोडी दूर आगे बढकर बाजारा का खातमा है और एक वसीह फराख चौक दिखाई देता है। जिस मे एक खुशनुमा फुलवाडी लगी हुई है और तरह तरह के खुशबुदार फूल खिले हुए नजर आ रहे हैं। इस फुलवाडी के ऐन मुकाबले ने एक बडा फाटक है जहाँ दोनो तरफ दो सिपाही नंगी तलवारे लिए पहरा दे रहे हैं। दरवाजे पर सुनहरी काम

१ इस दरवाजे से पम्पा नदी या पवाकरनी को रास्ता जाता है

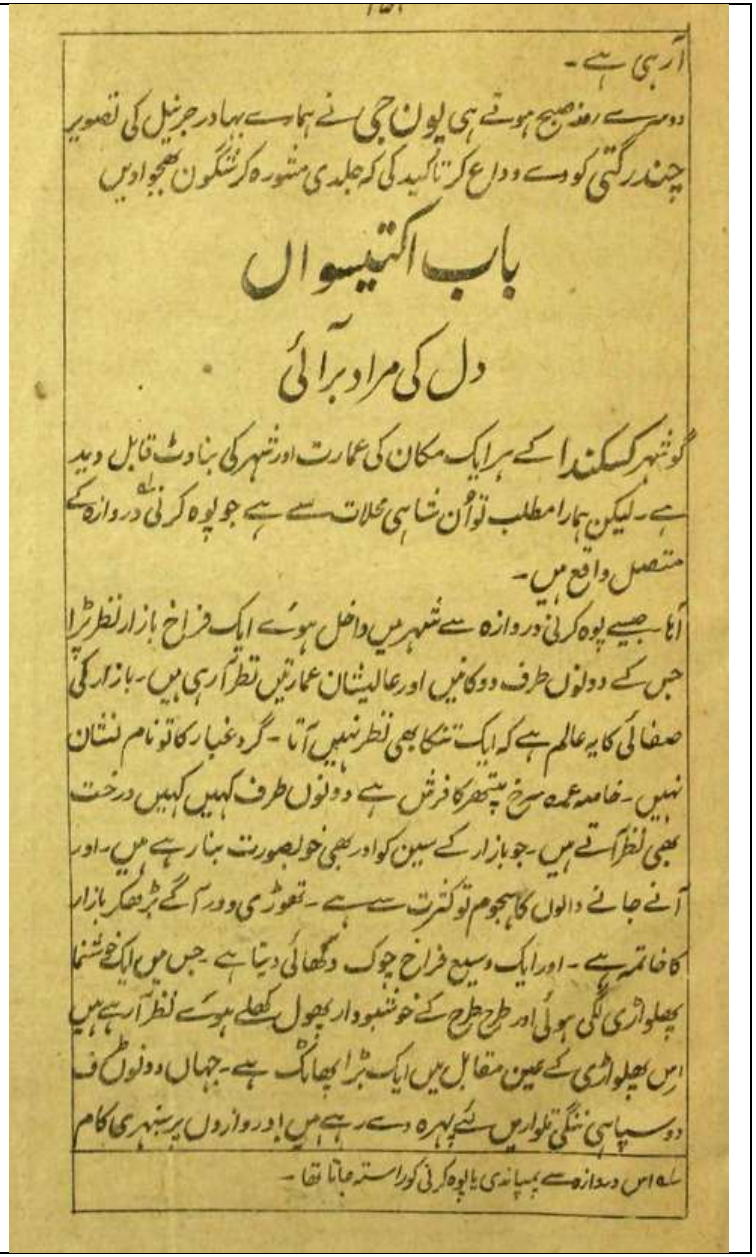

آ رہی ہے۔

دوسرے روز صبح ہوتے ہی یون جی نے ہمارے بہادر جرنیل کی تصویر چندر گتی کو دے وداع کر تاکید کی کہ جلدی مشورہ کر شگون بھجوا دیں

باب اکتیسواں

دل کی مراد بر آئی

گو شہر کسکندا کے ہر ایک مکان کی عمارت اور شہر کی بناوٹ قابل دید ہے۔ لیکن ہمارا مطلب تو اُن شاہی محلات سے ہے جو پوہ کرنی[۱] دروازہ کے متصل واقع ہیں۔

آہا۔ جیسے پوہ کرنی دروازہ سے شہر میں داخل ہوئے ایک فراخ بازار نظر پڑا جس کے دونوں طرف دوکانیں اور عالیشان عمارتیں نظر آ رہی ہیں۔ بازار کی صفائی کا یہ عالم ہے کہ ایک تنکا بھی نظر نہیں آتا۔ گرد غبار کا تو نام نشان نہیں۔ خاصہ عمدہ سرخ پتھر کا فرش ہے دونوں طرف کہیں کہیں درخت بھی نظر آتے ہیں۔ جو بازار کے سین کو اور بھی خوبصورت بنا رہے ہیں۔ اور آنے جانے والوں کا ہجوم تو کثرت سے ہے۔ تھوڑی دور آگے بڑھکر بازار کا خاتمہ ہے۔ اور ایک وسیع فراخ چوک دکھائی دیتا ہے۔ جس میں ایک خوشنما پھلواڑی لگی ہوئی اور طرح طرح کے خوشبودار پھول کھلے ہوئے نظر آ رہے ہیں اس پھلواڑی کے عین مقابل میں ایک بڑا پھاٹک ہے۔ جہاں دونوں طرف دو سپاہی ننگی تلواریں لئے پہرہ دے رہے ہیں اور دروازوں پر سنہری کام

۱ اس دروازہ سے پمپا ندی یا پوہ کرنی کو راستہ جاتا تھا۔

क्या गजब का है कि सूरज की रोशनी में उस तरफ देखना मुहाल है। आँखे चुंधिया जाती हैं। क्या ताकत कोई नजर भर कर उस तरफ देख सके। गो दिवारें चूने की बनी हैं लेकिन इनकी सफाई देखकर संगेमरमर भी शर्मिन्दा होता है। इस फाटक के अन्दर जाने से दो बुलन्द आलीशान महल एक ही वजह के नजर आते हैं। अब हम दाएँ हाथ के महल को छोड कर बाएँ की तरफ जाकर क्या देखते हैं कि एक दालान में जो अपनी निराली वजह के बाइस बेनजीर और पुराने ऋषि मुनियों और शूरवीरों की तस्वीरो से आरास्ता है। कीमख्वाब के गदेले पर राजा सुग्रीव और उनकी रानी बैठी हुई जेल की गुफ्तगू कर रही हैं।

रानी "स्वामीजी! चंद्रगती तो अब तक वापिस नहीं आया।"

सुग्रीव "आठ रोज हो गए। आज तो जरूर आना चाहिए।"

रानी "किसी को भेजकर उसके घर से खबर तो मंगा लिजिए। मुझको इस बात की बडी फिक्र लगी हुई है। देखे क्या जवाब लाता है।"

इतने में दरबान ने आकर अर्ज की कि मंत्री चंद्रगती खिदमत में हाजिर होने के लिए दरवाजे पर मुंतजिर हुक्म का खडा है।

सुग्रीव "खूब! उनको इस जगह भेज दो।"

थोडी देर के बाद चंद्रगती हाजिर हुआ और हाथ जोड आदाब बजा कर बोला "महाराज! मुबारिक हो! दिल की आरजू पूरी हुई।" ये कहकर हनुमान जी की तस्वीर देकर वहाँ का सब हाल बयान किया। और थोडी देर के बाद अपने घर को चला गया।

सुग्रीव बडी खुशी से तस्वीर हाथ मे लेकर "प्रियजी! देखो कैसा खूबसूरत जवान है।"

रानी "महाराज! तस्वीर से तो ऐसा ही जाहिर होता है।"

کیا غضب کا ہے۔ کہ سورج کی روشنی میں اُس طرف دیکھنا محال ہے۔ آنکھیں چوندھیا جاتی ہیں۔ کیا طاقت کوئی نظر بھر کر اُس طرف دیکھ سکے۔ گو دیواریں چونے کی بنی ہیں لیکن ان کی صفائی دیکھکر سنگ مرمر بھی شرمندہ ہوتا ہے۔ اس پھاٹک کے اندر جانے سے دو بلند عالیشان محل ایک ہی وضع کے نظر آتے ہیں۔ اب ہم دائیں ہاتھ کے محل کو چھوڑ کر بائیں کی طرف جاکر کیا دیکھتے ہیں کہ ایک دالان میں جو اپنی نرالی وضع کے باعث بے نظیر اور پورانے رشی مُنیوں اور شوربیروں کی تصویروں سے آراستہ ہے۔ کیمخواب کے گدیلے پر راجہ سگریو اور ماس کی رانی بیٹھی ہوئی ذیل کی گفتگو کر رہی ہے۔

رانی۔ سوامی جی! چندرگتی تو ابتک واپس نہیں آیا؟

سگریو۔ آٹھ روز ہوگئے۔ آج تو ضرور آنا چاہیئے!

رانی۔ کسی کو بھیجکر اُس کے گھر سے خبر تو منگا لیجئے۔ مجکو اس بات کی بڑی فکر لگی ہوئی ہے۔ دیکھیں کیا جواب لاتا ہے۔

اتنے میں دربان نے آکر عرض کی کہ منتری چندرگتی خدمت میں حاضر ہونے کے لئے دروازہ پر منتظر حکم کا کھڑا ہے۔

سگریو۔ خوب! اُس کو اس جگہ بھیجدو۔

تھوڑی دیر کے بعد چندرگتی حاضر ہوا اور ہاتھ جوڑ آداب بجا کر بولا۔ مہاراج مبارک ہو۔ دل کی آرزو پوری ہوئی۔ یہ کہکر ہنومان جی کی تصویر دیکر وہاں کا سب حال بیان کیا۔ اور تھوڑی دیر کے بعد اپنے گھر کو چلا گیا۔

سگریو۔ بڑی خوشی سے تصویر ہاتھ میں لیکر پریہ جی دیکھو کیسا خوبصورت جوان ہے۔

رانی۔ مہاراج تصویر سے تو ایسا ہی ظاہر ہوتا ہے۔

१५३

सुग्रीव "प्रियजी! अभी बहुत से वस्फ ऐसे हैं जो इस तस्वीर से जाहिर नहीं होते। वो देखने से तालुक रखते हैं। सो मैंने उनमे बखूबी तसल्ली कर ली है। आप वेदवंती[१] को ये तस्वीर दे, प्यारी पद्मरागा के पास भेजकर उसकी मंशा दरयाफ्त करें।"

नाजरीन! इस वक्त पण्डिता वेदवती को बुलाकर पद्मरागा के पासा भेजा गया। हुस्ने इत्तफाक से जिस वक्त वो (वेदवंती) पद्मरागा के कमरे मे गई तो क्या देखती है वो अकेली बैठी हुई ऋग्वेद के किसी एक मण्डल का मुतालिया कर रही है। सर के बाल बिखरे हुए गरदन पर लटक रहे हैं। और कुछ सर को नीचे झुकाने से आगे की तरफ पडकर रुखसारों (गालो) को छुपा रहे हैं।

ज्योंहि किसी के आने की आहट पाई झट बालों को दोनो हाथ से पीछे हटा, ओढनी को दुरुस्त कर दरवाजे की तरफ देखा तो अपनी पण्डितानी को पाया। हँस कर बोली "माताजी! आइये" ये कहकर अपने आसन पर बैठा लिया।

वेदवती "बेटी! ये क्या मुतालिया कर रही हो?"

पद्मरागा किताब को उसके सामने कर के "ऋग्वेद के इस मण्डल को देख रही हूँ। मगर इस श्लोक के अर्थ अच्छी तरह मेरी समझ में नहीं आते। कृपा करके आप बतलाए।"

वेदवंती ने किताब को हाथ मे लेकर उस श्लोक के अर्थ, जो कला कौशल के सिलसिले पर थे, पद्मरागा को समझाए। और बाद में हनुमान जी की तसवीर दिखलाकर कहने लगी

१ वेदवंती पद्मरागा की मौलिमा (शिक्षक) है जिससे वो संस्कृत विद्या की तालीम पाती है

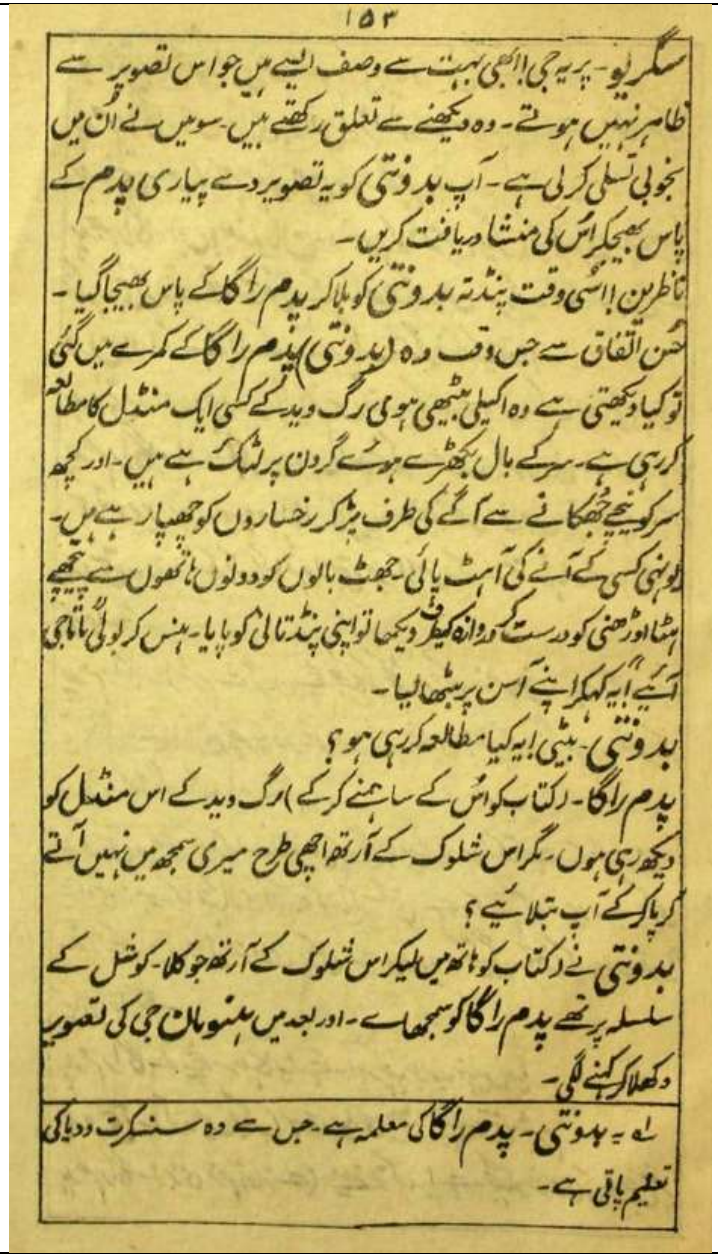

١٥٣

سگریو - پریہ جی! ابھی بہت سے وصف ایسے ہیں جو اس تصویر سے ظاہر نہیں ہوتے - وہ دیکھنے سے تعلق رکھتے ہیں - سو میں نے ان میں بخوبی تسلی کر لی ہے - آپ بدونتی کو یہ تصویر دے پیاری پدم کے پاس بھیجکر اس کی منشا دریافت کریں -

ناظرین! اسی وقت پنڈتہ بدونتی کو بلاکر پدم راگا کے پاس بھیجا گیا - حسن اتفاق سے جس وقت وہ (بدونتی) پدم راگا کے کمرے میں گئی تو کیا دیکھتی ہے وہ اکیلی بیٹھی ہوی رگ وید کے کسی ایک منڈل کا مطالعہ کر رہی ہے - سر کے بال بکھرے ہوئے گردن پر لٹک رہے ہیں - اور کچھ سر کو نیچے جھکانے سے آگے کی طرف پڑکر رخساروں کو چھپا رہے ہیں - یونہی کسی کے آنے کی آہٹ پائی - جھٹ بالوں کو دونوں ہاتھوں سے پیچھے ہٹا اوڑھنی کو درست کر دروازہ کیطرف دیکھا تو اپنی پنڈتانی کو پایا - ہنس کر بولی ماتاجی آئیے! یہ کہکر اپنے آسن پر بٹھا لیا -

بدونتی - بیٹی! یہ کیا مطالعہ کر رہی ہو؟

پدم راگا - (کتاب کو اس کے سامنے کر کے) رگ وید کے اس منڈل کو دیکھ رہی ہوں - مگر اس شلوک کے آرتھ اچھی طرح میری سمجھ میں نہیں آتے کرپا کر کے آپ بتلائیے؟

بدونتی نے (کتاب کو ہاتھ میں لیکر اس شلوک کے آرتھ جو کلا - کوشل کے سلسلہ پر تھے پدم راگا کو سمجھائے - اور بعد میں ہنومان جی کی تصویر دکھلاکر کہنے لگی -

[١] بدونتی - پدم راگا کی معلمہ ہے - جس سے وہ سنسکرت ودیا کی تعلیم پاتی ہے -

वेदवंती "देखो ये कैसी उम्दा तस्वीर किसी बहादुर मनुष्य की है।"

पद्मरागा "हाँ माताजी! वाकई ये बडा शूरवीर मालूम होता है। इसका नाम क्या है?"

वेदवंती "इसका नाम हनुमान बतलाते हैं।"

पद्मरागा "ऐं हनुमान!" तस्वीर को हाथ मे लेकर "क्या ये वही है जिसका जिक्र पिताजी करते थे कि उनके साथ जंग मे शरीक था। और जिसने वरुण और उसके लडके पुण्डरीक को गिरफ्तार किया था।"

वेदवंती "हाँ वही वही! क्या तुम इस तस्वीर को अपने पास रखना चाहती हो?"

पद्मरागा "हाँ मुझको दे दें। मैं अपने कमरे मे रखूँगी। वहाँ और बहुत सी तस्वीरें बहादुरों और विद्वानों की हैं। ऐसे शख्स दुनिया में बहुत कम होते हैं।"

वेदवंती जरा मुस्करा कर "क्या तुम चाहती हो कि इसके साथ तुम्हारी शादी की जाए।"

पद्मरागा शरम से गरदन नीचे झुका कर कुछ देर तक खामोश रहने के बाद बडी आहिस्तगी से "माताजी! फिर ये जिक्र न करना। मैं शादी नहीं करूँगी" और तस्वीर को उसके आगे रख दिया।

वेदवंती "बेटी क्या कहा! ब्याह नहीं करूँगी? भला ये हो सकता है कि तुम्हारी शादी न हो। क्या तुम्हारी वलदा गवारा कर सकती है कि तुम कुँवारी रहो? किसी ने आज तक अपनी लडकी कुँवारी रखी है जो वो रखेंगी। आखिर एक दिन तो ब्याह किया ही जाएगा।"

पद्मरागा ने नीचे सर झुका लिया है और कुछ ही जवाब नहीं दिया।

वेदवंती गोद मे लेकर "मेरी प्यारी बेटी मुझसे इतनी शरम।"

पद्मरागा बडी नरम आवाज से "मैंने तो कह दिया है मुझको शादी की ख्वाहिश नहीं।"

بدونتی - دیکھو یہ کیسی عمدہ تصویر کسی بہادر منش کی ہے۔

پدم راگا - ہاں ماتاجی! واقعی یہ بڑا شور بیر معلوم ہوتا ہے۔ اسکا نام کیا ہے؟

بدونتی - اس کا نام ہنومان بتلاتے ہیں!

پدم راگا - ایں! ہنومان - (تصویر کو ہاتھ میں لیکر) کیا یہ وہی ہے جس کا ذکر پتاجی کرتے تھے۔ کہ ان کے ساتھ جنگ میں شریک تھا۔ اور جس نے ورن اور اس کے لڑکے پنڈریک کو گرفتار کیا تھا!

بدونتی - ہاں وہی وہی! کیا تم اس تصویر کو اپنے پاس رکھنا چاہتی ہو؟

پدم راگا - ہاں! مجکو دیدو میں اپنے کمرے میں رکھوں گی۔ وہاں اور بہت سی تصویریں بہادر اور ودوانوں کی ہیں۔ ایسے شخص دنیا میں بہت کم ہوتے ہیں!

بدونتی - (ذرا مسکرا کر) کیا تم چاہتی ہو۔ کہ اس کے ساتھ تمہاری شادی کی جائے۔

پدم راگا - (شرم سے گردن نیچے جھکا کر کچھ دیر تک خاموش رہنے کے بعد بڑی آہستگی سے) ماتاجی پھر یہ ذکر نہ کرنا۔ میں شادی نہیں کرونگی۔ اور تصویر کو اوس کے آگے رکھدیا۔

بدونتی - بیٹی! کیا کہا۔ بیاہ نہیں کرونگی؟ بھلا یہ ہوسکتا ہے۔ کہ تمہاری شادی نہ ہو۔ کیا تمہاری والدہ گوارا کرسکتی ہے۔ کہ تم کنواری رہو؟ کسی نے آجتک اپنی لڑکی کنواری رکھی ہے۔ جو وہ رکھیگی۔ آخر ایک دن تو بیاہ کیا ہی جائیگا۔

پدم راگا نے نیچے سر جھکا لیا ہے۔ اور کچھ جواب نہیں دیا

بدونتی - (گود میں لیکر) میری پیاری بیٹی مجھسے اتنی شرم

پدم راگا - (بڑی نرم آواز سے) میں نے تو کہدیا ہے۔ مجھکو شادی کی خواہش نہیں

वेदवंती तस्वीर पद्मरागा को दिखला कर “बेटी देखो इसे! ऐसा लायक वर मिलना फिर मुश्किल होगा। तुम खुद विद्वान हो। जरा सोच समझकर जवाब दो।”

पद्मरागा गोद से परे हटकर “माताजी! आज आपको क्या हो गया है। जो बार बार इस बात का जिक्र करती हो।”

ये कहा और तस्वीर को उसके हाथ से लेकर नीचे रख दिया और अब दबी हुई नजर से उसको देख रही है।

वेदवंती पद्मरागा के मुँह को हाथ से ऊँचा कर और उसकी तरफ मुखातिब होकर “बीबी पद्म! क्यों शरमाती है? इसमें कोई ऐब की बात नहीं।”

ये सुनकर पद्मरागा ने मुस्करा कर मुँह फेर लिया। तब वेदवंती मालूम कर गई कि ये इसको चाहती है। लेकिन चूँकि ये लडकी बडी शरम हुजूर है कभी भी अपने मुँह से जाहिर नहीं करेगी। ये सोचकर पद्मरागा का माथा चूमा। और आसीस देकर उसकी वालदा को आकर मुबारिकबाद दी।

नाजरीन! इस वक्त सुग्रीव अपनी दिली आरजू की कामयाबी देखकर निहायत खुश हुआ। फौरन ब्याह की तैयारी का हुक्म दिया। और घर घर मंगलाचार होने लगा। पण्डित को बुला मशवरा कर तारीख शादी की मुकर्रर की। और शगुन दे गजेन्द्र को रत्नपुर रवाना किया। और चंद्रगति को मोती महल आरास्ता करने का हुक्म दिया।

बाब (अध्याय) बतीसवाँ

शादी

सुबह का सुहाना वक्त है। ठण्डी ठण्डी हवा चल रही है। और

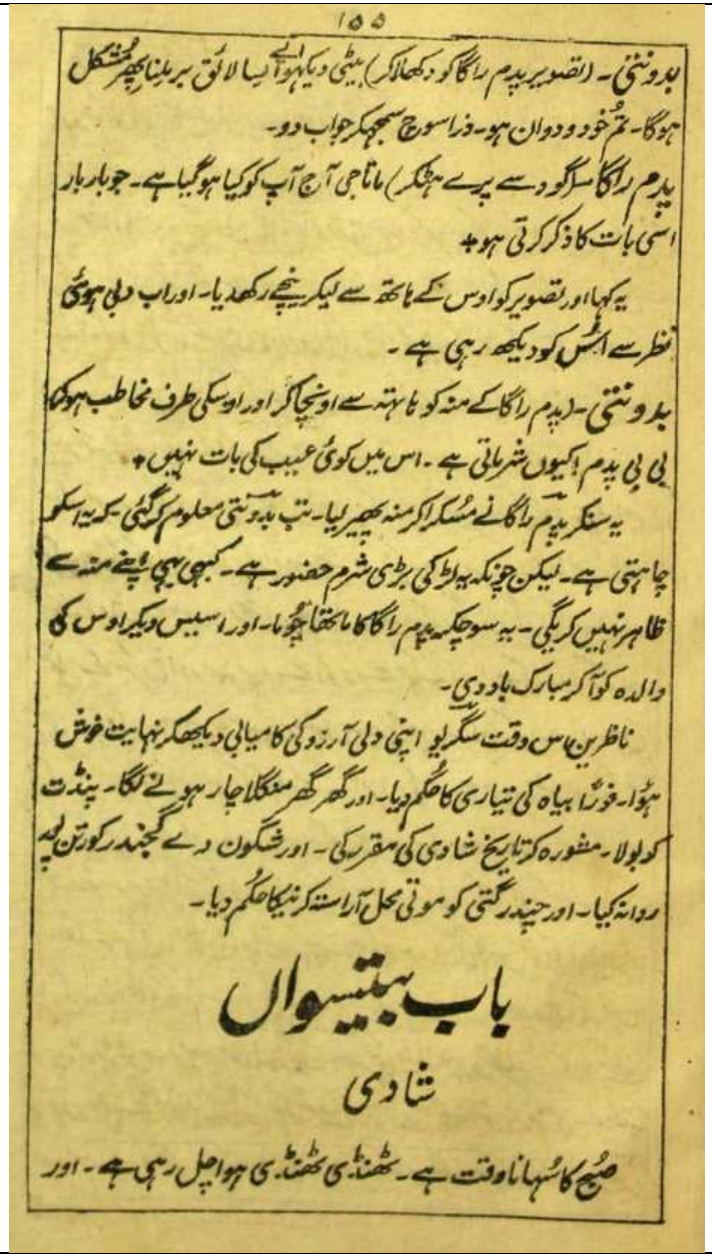

بدونتی۔ (تصویر پدم راگا کو دکھلاکر) بیٹی دیکھو ایسا لائق بر ملنا پھر مشکل ہوگا۔ تم خود دودان ہو۔ ذرا سوچ سمجھکر جواب دو۔

پدم راگا (گود سے پرے ہٹکر) ماتاجی آج آپ کو کیا ہوگیا ہے۔ جو بار بار اسی بات کا ذکر کرتی ہو۔

یہ کہا اور تصویر کو اوس کے ہاتھ سے لیکر نیچے رکھدیا۔ اور اب دبی ہوئی نظر سے اُس کو دیکھ رہی ہے۔

بدونتی۔ (پدم راگا کے منہ کو ہاتھ سے اونچا کر اور اوسکی طرف مخاطب ہوکر) بی بی پدم! کیوں شرماتی ہے۔ اس میں کوئی عیب کی بات نہیں۔

یہ سنکر پدم راگا نے مسکرا کر منہ پھیر لیا۔ تب بدونتی معلوم کر گئی۔ کہ یہ اسکو چاہتی ہے۔ لیکن چونکہ یہ لڑکی بڑی شرم حضور ہے۔ کبھی بھی اپنے منہ سے ظاہر نہیں کریگی۔ یہ سوچکر پدم راگا کا ماتھا چوما۔ اور اسیس دیکر اوس کی والدہ کو آکر مبارک باد دی۔

ناظرین اس وقت سگریو اپنی دلی آرزو کی کامیابی دیکھکر نہایت خوش ہوا۔ فوراً بیاہ کی تیاری کا حکم دیا۔ اور گھر گھر منگلاچار ہونے لگا۔ پنڈت کو بلا۔ مشورہ کر تاریخ شادی کی مقرر کی۔ اور شگون دے گجندر کو رتن پور روانہ کیا۔ اور چندر گتی کو موتی محل آراستہ کرنیکا حکم دیا۔

باب بتیسواں

شادی

صبح کا سہانا وقت ہے۔ ٹھنڈی ٹھنڈی ہوا چل رہی ہے۔ اور

नसीम शहरी के खुशगवार झोंके जादू का काम कर रहे हैं। लेकिन एक बरात मे शामिल होने का शौक है जो गुदगुदा कर बेदार कर रहा है। और सोने वाले अंगडाईया ले लेकर उठ रहे हैं।

बेशुमार हाथी और घोडें सजसजाकर राज मंदिर के बाहर खडे हैं। जिन पर विद्याधर[१] और उनके लडकें आ आ कर सवार हो रहे हैं। इस वक्त का नजारा काबिले दीद है। आगे आगे हाथियों के सुनहरी हूदो मे छोटे छोटे लडके बैठे हुए एक दूसरे को छेड छाड कर कैसे खुश हो रहे हैं कि एक दम भर तो चैन नहीं लेते। इनके बाद बडे बडे शूरवीर और बहादुर घोडों पर सवार हैं। जिनके घोडे बहुत चाहते हैं कि वो अपनी तेज रफ्तारी कि जौहर दिखाए लेकिन ये उन को इजाजत नहीं देते। और एक दूसरे से मजाक उडाते हुए जा रहे हैं। रथ और बहाया, जिन के रंग बिरंगी अतलस और मखमल के सुर्ख और सब्ज परदे दूर से चमककर बरात की रौनक को और भी दोबाला कर रहे हैं, सब बरातियो से पुर हैं। इनके दरमियान में एक सुखपाल है जिसको कहार मस्तानों की तरह झूमते हुए उठाए हुए ले जारहे हैं। और इसके बीच में हमारे बहादुर जरनैल गारो तकिया लगाए सर पर जडाऊँ मुकुट रखे बैठे हैं। आहा! सुखपाल की खूबसूरती देखकर तो हर एक लट्टू हुआ जाता है। इसकी स्वर्ण की कलशनुमा चोटी जिस पर कारीगर ने जडाऊँ काम इस खूबी से किया है कि जहाँ सूरज की किरणें इस पर पडे ऐसी चमकदार रंग अमेजी शवाएँ निकले कि देखने वालो के लिए मकनातीसी का काम कर गई। जिस की निगाह इस पर पडी बेइख्तियार

१ वानरदीप मे जो शख्स विद्या हासिल करता है उसको खिताब विद्याधर का दिया जाता रहता

نسیم سحری کے خوشگوار جھونکے جادو کا کام کر رہے ہیں۔ لیکن ایک برات میں شامل ہونیکا شوق ہے۔ جو گدگدیا کر بیدار کر رہا ہے۔ اور سونے والے انگڑائیاں لے لیکر اُٹھ رہے ہیں۔

بیشمار ہاتھی اور گھوڑے سج سجا کر راج مندر کے باہر کھڑے ہیں۔ جن پر ودیا دھر[1] اور اون کے لڑکے آ آ کر سوار ہو رہے ہیں۔ اس وقت کا نظارہ قابل دید ہے۔ آگے آگے ہاتھیوں کے سنہری ہودوں میں چھوٹے چھوٹے لڑکے بیٹھے ہوئے ایک دوسرے کو چھیڑ چھاڑ کر کیسے خوش ہو رہے ہیں۔ کہ ایک دم بھر تو چین نہیں لیتے۔ اِن کے بعد بڑے بڑے شور ببر اور بہادر گھوڑوں پر سوار ہیں۔ جنکے گھوڑے بہت چاہتے ہیں۔ کہ وہ اپنی تیز رفتاری کے جوہر دکھائیں لیکن یہ اُن کو اجازت نہیں دیتے۔ اور ایک دوسرے سے مذاق اُڑاتے ہوئے جا رہے ہیں۔ رتھ اور بہلیاں جن کے رنگ برنگی اطلس اور مخمل کے سُرخ اور سبز پردے دُور سے چمک کر برات کی رونق کو اور بھی دوبالا کر رہے ہیں۔ سب براتیوں سے پُر ہیں۔ ان کے درمیان میں ایک سُکھ پال ہے۔ جس کو کہار مستانوں کی طرح جھومتے ہوئے اُٹھائے ہوئے لیجا رہے ہیں۔ اور اس کے بیچ میں ہمارے بہادر جرنیل گاؤ تکیہ لگائے سر پر جڑاؤ مکٹ رکھے بیٹھے ہیں۔ آہا! سکھپال کی خوبصورتی دیکھکر تو ہر ایک لٹو ہوا جاتا ہے۔ اسکی سورن کی کلس نما چوٹی جس پر کاریگر نے جڑاؤ کام اس خوبی سے کیا ہے۔ کہ جہاں سورج کی کرنیں اس پر پڑیں۔ ایسی چمکدار رنگ امیزی شعاعیں نکلیں۔ کہ دیکھنے والوں کے لئے مقناطیسی کام کر گئیں۔ جس کی نگاہ اس پر پڑی بے اختیار

[1] بانردیپ میں جو شخص ودیا حاصل کرتا تھا۔ اوسکو خطاب ودیا دھر کا دیا جاتا تھا۔

नजदीक आ देखने की कोशिश की।

गो बरात पहले की बेशुमार है लेकिन इस मकनातिसी कशिश ने तमाशबीनों का वो हुजूम कर दिया कि चलना दुश्वार हो गया। गर्ज बडे करकफुर से मंजिले तय करते हुए बरात दुसरे रोज शाम के वक्त किष्किंधा मे पहुँची। बरात के शहर में दाखिल होते ही तमाम मर्दो औरत जो मुद्दत से इसका इन्तजार कर रहे थे जमह हो गए। जिस किसी की निगाह दुल्हा पर पडी तो कशरते हुजूम से दम निकल रुह पर वाज कर गया मगर आँखो की स्याह पुतली हर्गिज न फिरी। स्त्रियों के वास्ते जो मकानों की छतों पर खडी देख रही हैं हनुमानजी की मोहनी सूरत ने मकनातिसी से बढकर काम लिया। ज्योंहि उन की नजर इनकी भोली भाली सूरत पर पडी ऐसी टिकटिकी बंधी कि बालक गोद से गिर चिल्ला रहे हैं और वो बेखबर खडी देख रही हैं।

जब बरात राजमहल के करीब पहुँची राजा सुग्रीव प्रधान और मंत्री वगैहरा को साथ ले पेशवाई को आया। और रस्म मिलनी की अदा कर हजाम को मनचादरो से मालामाल कर दिया। और मोती महल में, जो पहले ही से बडे बडे महात्माओं और शूरवीरों की तस्वीरों से आरास्ता है, बरात को उतार दिया। सबसे पहले हनुमान जी को एक सोने की चौकी जिसपर रेशमी गदेला पडा हुआ है ला बैठाया है। और अब सब बराती बडी आन बान से बैठ रहे हैं। थोडी देर के बाद तरह तरह के खाने शीरे और चटपटे नमकीन बरातियों के आगे रखे गए जिन की तशरीह (व्याख्या), करने से नाजरीन का दिल ललचाएगा और हाथ कुछ भी न आएगा, मुनासिब ख्याल न किया।

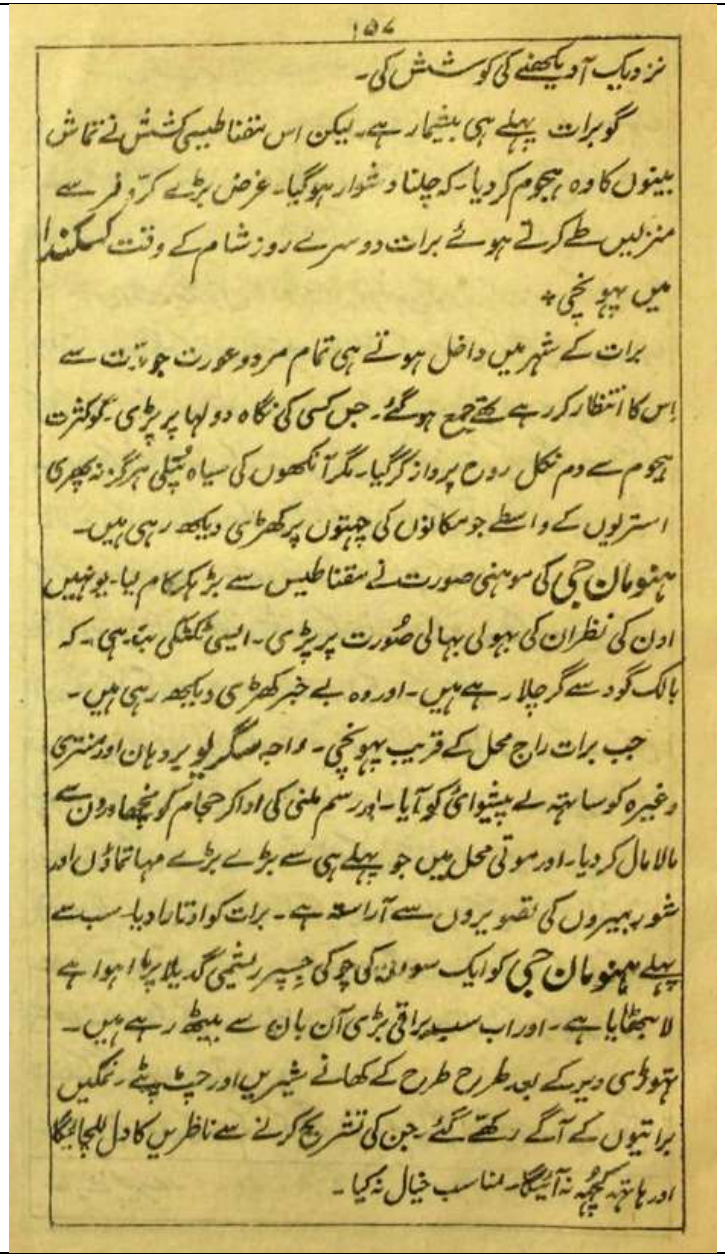

نزدیک آ دیکھنے کی کوشش کی۔

گو برات پہلے ہی بیشمار ہے۔ لیکن اس مقناطیسی کشش نے تماش بینوں کا وہ ہجوم کر دیا۔ کہ چلنا دشوار ہو گیا۔ غرض بڑے کروفر سے منزلیں طے کرتے ہوئے برات دوسرے روز شام کے وقت کسکندا میں پہونچی۔

برات کے شہر میں داخل ہوتے ہی تمام مرد و عورت جو مدت سے اس کا انتظار کر رہے تھے جمع ہو گئے۔ جس کسی کی نگاہ دولہا پر پڑی۔ گو کثرت ہجوم سے دم نکل روح پرواز کر گیا۔ مگر آنکھوں کی سیاہ پتلی ہرگز نہ پھری استریوں کے واسطے جو مکانوں کی چھتوں پر کھڑی دیکھ رہی ہیں۔ ہنومان جی کی موہنی صورت نے مقناطیس سے بڑھکر کام کیا۔ جونہیں اون کی نظر ان کی بھولی بھالی صورت پر پڑی۔ ایسی ٹکٹکی بندھی۔ کہ بالک گود سے گر چلا رہے ہیں۔ اور وہ بے خبر کھڑی دیکھ رہی ہیں۔

جب برات راج محل کے قریب پہونچی۔ راجہ سگریو پردھان اور منتری وغیرہ کو ساتھ لے پیشوائی کو آیا۔ اور رسم ملنی کی ادا کر حجام کو نچھاوروں سے مالامال کر دیا۔ اور موتی محل میں جو پہلے ہی سے بڑے بڑے مہاتماؤں اور شوربیروں کی تصویروں سے آراستہ ہے۔ برات کو اتار دیا۔ سب سے پہلے ہنومان جی کو ایک سونے کی چوکی جسپر ریشمی گدیلا پڑا ہوا ہے لا بٹھایا ہے۔ اور اب سب براتی بڑی آن بان سے بیٹھ رہے ہیں۔ تھوڑی دیر کے بعد طرح طرح کے کھانے شیریں اور چٹپٹے نمکین براتیوں کے آگے رکھے گئے۔ جن کی تشریح کرنے سے ناظرین کا دل للچائیگا اور ہاتھ کچھ نہ آئیگا۔ مناسب خیال نہ کیا۔

१५८

जब इन अजीब खानों से बरात ने हाथ उठाया, तो लग्न का वक्त करीब पा वेदी के नीचे स्वर्ण की चौकी पर हनुमान जी को ला बैठाया। और सखी सहेलियों ने पद्मरागा को नहला जेवर और कपडों से आरास्ता कर हनुमानजी के बाएँ तरफ बैठला गठजोड किया।

इस वक्त पण्डितों का दुल्हा और दुल्हन को वेदों कत मत अकोल उन के फरानिज से आगाह करना, और स्त्रियो का ईश्वर की स्तुति के भजन गा इन दोनों की उम्र दराजी के लिए ईश्वर से प्रार्थना करना क्या ही शोभा दे रहा है। आहा! अब हवनकुण्ड मे केसर कस्तूरी गही और मुख्तलिफ किस्म की सुगंधित सामग्री डाल हवन कर दूल्हा और दुल्हन के हाथ मे धान की पहेलियाँ दे भँवरिया, की रस्म हो रही है। स्त्रियों का वो गीत गाना जिसका खुलासा ये है 'ऐ मेरे माता पिता प्यारे भाई मुझको इस अजनबी शख्स के हवाले, जिसको मैने कभी नहीं देखा और न ही इसके मिजाज से वाकिफ हूँ, क्यों करते हो?'

नाजरीन! छः भँवरियो तक तो इस तरह के गीत गाती रही। मगर सातवीं भँवरी पर जब उन्होने ये गीत गाया जिसका खुलासा ये है ऐ पति मैं अब तेरी हो चुकी हूँ। मेरे माता पिता और किसी रिश्तेदार का अब मेरे पर कुछ भी जोर नहीं रहा और मेरी जिन्दगी का मदार आप पर है। चाहे सख्ती से पेश आओ या नरमी से मैं आपकी शरण हूँ। नाजरीन! इन गीतो ने सुग्रीव के दिल को हिला दिया। न सिर्फ उसके बल्कि सब हाजरीन ने आंसू बहा बतला दिया कि लडकियाँ माँ बाप के घर मेहमान होती हैं। जब भँवरियो की रस्म अदा कर चुके तो पद्मरागा को सखी सहेलियाँ ले गई।

१ याने फेरे

۱۵۸

جب ان عجیب کھانوں سے برات نے ہاتھ اُٹھایا۔ تو لگن کا وقت قریب پابیدی کے نیچے سورن کی چوکی پر ہنومان جی کو لا بٹھایا۔ اور سکھی سہیلیوں نے پدم راگا کو نہلا زیور اور کپڑوں سے آراستہ کر ہنومان جی کے بائیں طرف بٹھلا گٹھ جوڑ کیا۔

اس وقت پنڈتوں کا دولہا اور دولہن کو وید وکت مت انکول اون کے فرائض سے آگاہ کرنا اور استریوں کا ایشور کی اوستتی کے بھجن گا ان دونوں کی عمر درازی کے لئے ایشور سے پرارتھنا کرنا کیا ہی شوبھا دے رہا ہے۔ آہا! اب ہون کنڈ میں کیسر۔ کستوری۔ گہی اور مختلف قسم کی سوگندھت سامگر ڈال ہون کر دولہا اور دولہن کے ہاتھ میں دھان کی پہلیاں دے بھوریوں[1] کی رسم ہو رہی ہے۔ استریوں کا وہ گیت گانا جس کا خلاصہ یہ ہے۔ اے میرے ماتا پتا و بھائی مجکو اس اجنبی شخص کے حوالے جسکو میں نے کبھی نہیں دیکھا اور نہ ہی اس کی مزاج سے واقف ہوں کیوں کرتے ہو۔

ناظرین چھ بھوریوں تک تو اس طرح کے گیت گاتی رہیں۔ مگر ساتویں بھوری پر جب اونہوں نے یہ گیت گایا۔ جسکا خلاصہ یہ ہے۔ اے پتی! میں اب تیری ہو چکی ہوں۔ میرے ماتا پتا اور کسی رشتہ دار کا اب میرے پر کچھ زور نہیں رہا۔ اور میری زندگی کا مدار آپ پر ہے۔ چاہے سختی سے پیش آؤ یا نرمی سے میں آپ کی شرن ہوں۔ ناظرین ان گیتوں نے سگریو کے دل کو ہلا دیا نہ صرف اس کے بلکہ سب حاضرین کے آنسو بہا بتلا دیا۔ کہ لڑکیاں ماں باپ کے گھر مہمان ہوتی ہیں۔

جب بھوریوں کی رسم کو ادا کر چکے۔ تو پدم راگا کو سکھی سہیلیاں لے گئیں

[1] یعنے پھیرے۔

और हनुमान जी मोती महल में आ विराजमान हुए। तीन रोज तक बरात खातिर तव्वजह से रखी गई। किसी को शिकायत करने का मौकह न मिला। चौथे रोज बेशुमार दहेज दे बरात को विदा करने लगे, तो पद्मरागा जो दो रोज पहले ही से रो रोकर अपना हाल तबाह कर रही थी चलने का नाम सुन बेहोश हो जमीन पर गिर पडी। मोहनी ने उसी दम उठा गोद में बैठा लिया और बोली

"सखी! क्यों इतना घबराती है? रो रो बेहाल होती है। सच है माँ बाप की जुदाई किसको भाती है। पर क्या करें हम सब के लिए ये ही तबाही। बारी बारी गरदन झुका हम सब चली जाएँगी। लडकपन का जमाना, माता पिता का प्यार जब भी याद आएगा, आंसू बहाएँगी। लडकियाँ माँ बाप के घर मेहमान होती हैं। क्या अमीर क्या गरीब किसी के घर नहीं समाती। हाँ इतना जरूर है, माँ बाप ने वर घर देखकर ब्याह किया तो लडकी सुख पा खुश रहती, नहीं तो खूने जिगर पी किस्मत को रोती है। प्यारी सखी तुझको तो घबराना उचित नहीं। अञ्जना देवी जैसी सास किसने पानी है। शील स्वभाव गुणवान और अति स्यानी है। प्यारी हनुमानजी की दुल्हन कहलाओगी उन से प्रीत लगा हम सब को भूल जाओगी।"

निर्मला "सखी! यही तो पद्मरागा की चतुराई है। कल बालसुन्दरी को उपदेश दे समझा रही थी। स्त्री पुरुष का धर्म बतला रही थी। आज अपनी बारी आई तो रो रो कर हमको डरा रही है। माँ बाप की मुहब्बत बतला रही है। सच पूछो तो ये सिर्फ जाहिरदारी है। दिल मे तो बस दूल्हा की सूरत प्यारी है।"

निर्मला की बाते सुनकर पद्मरागा ने शरमा कर मुँह फेर लिया और धीमी आवाज से कहने लगी "सखी! तुम को तो दिल्लगी सूझती है और मेरे जी को बन रही है। मुझको तो वहाँ जाना होगा जहाँ अपना न बेगाना होगा।"

اور ہنومان جی موتی محل میں آبراجمان ہوئے۔
تین روز تک برات بڑی خاطر تواضع سے رکھی گئی۔ کسی کو شکایت کرنیکا
موقع نہ ملا۔ چوتھے روز بیشمار دہیز دے برات کو وداع کرنے لگے۔ تو پدم راگا
جو دو روز پہلے ہی سے رو رو کر اپنا حال تباہ کر رہی تھی چلنے کا نام سن
بیہوش ہو زمین پر گر پڑی۔ موہنی نے اُسی دم اُٹھا گود میں بٹھا لیا۔
اور بولی سکھی! کیوں اتنا گھبراتی ہے رو رو بیحال ہوتی ہے۔ سچ ہے۔ ماں
باپ کی جدائی کس کو بھائی ہے۔ پر کیا کریں ہم سب کے لئے یہ ہی تباہی۔ باری
باری گردن جھکا ہم سب چلی جائینگی۔ لڑکپن کا زمانہ ماتا پتا کا پیار جبھی یاد
آئیگا۔ آنسو بہائینگی۔ لڑکیاں ماتا پاپ کے گھر مہمان ہوتی ہیں۔ کیا امیر کیا
غریب کسی کے گھر نہیں سماتیں۔ ہاں اتنا ضرور ہے۔ ماں باپ نے بر گھر
دیکھکر بیاہ کیا۔ تو لڑکی سکھ پا خوش رہتی ہے۔ نہیں تو خونِ جگر پی قسمت
کو روتی ہے۔ پیاری سکھی تجھکو تو گھبرانا اوچت نہیں۔ انجنا دیوی جیسی
ساس کس نے پائی ہے۔ جو شیل سبھاگنوں اور اتی سیانی ہے۔ پیاری!
ہنومان جی کی دولہن کہلاؤگی۔ اون سے پریت لگا ہم سب کو بھول جاؤگی
نرملا! سکھی یہی تو پدم راگا کی چترائی ہے۔ کل بال سندری کو اوپدیش
دے سمجھا رہی تھی۔ استری دھرم کا دھرم بتلا رہی تھی۔ آج اپنی باری آئی
تو رو رو کر ہم کو ڈرا رہی ہے۔ ماں باپ کی محبت بتلا رہی ہے۔ سچ پوچھو
تو یہ صرف ظاہرداری ہے۔ دل میں تو بس رہی دولہا کی صورت پیاری ہے
نرملا کی باتیں سُنکر پدم راگا نے شرما کر منہ پھیر لیا۔ اور دھیمی آواز سے
کہنے لگی) "سکھی تم کو تو دل لگی سوجھی ہے۔ اور میرے جی کو بن رہی ہے
مجھکو تو وہاں جانا ہوگا۔ جہاں اپنا نہ بیگانہ ہوگا۔

इतने में सुग्रीव महल में आया और पद्मरागा को रोती देख आंसू बहा छाती से लगा कर बोला।

सुग्रीव "बेटी! रो रो कर परेशान होती है। भला तेरी जुदाई मैं गवारा कर सकता हूँ? लेकिन क्या करूँ मजबूर हूँ। दुनिया की रस्मो जंजीर से पाबन्द हूँ। मेरी तो कुछ हकीकत नहीं बडे बडे महाराजो के घर भी तो लडकियों की समाई नहीं। तुम खुद विद्वान हो। मेरे कहने की जरूरत नहीं। परमपिता परमात्मा तुमको हमेशा खुश रखे।" ये कहा और पद्मरागा को सुखपाल में सवार किया। और हाथ जोडकर पवनजी और हनुमान को उसकी सोंपना की।

नाजरीन! जिस वक्त पद्मरागा को सुखपाल में बैठाया गया उसने जार जार रोना शुरु कर दिया। जिस की गिरयाजारी को सुनकर सबके आंसू बेइख्तियार निकल पडे। ज्योंहि बरात यहाँ से रवाना हुई सबके चेहरो पर उदासी की घटा छा गई। जहाँ तक निगाह ने काम दिया देखते रहे। और आंसू बहा दिल के अरमान निकालते रहे। आह! ये क्या अफसोसनाक नजारा है। जबकि हम अपने लख्ते जिगर को उस अजनबी के साथ शास्त्रों की पाबन्दी से विदा करते हैं, जिसकी उसने पहले कभी शक्ल भी नहीं देखी। और उसकी आइन्दा जिन्दगी का मदार उसी पर छोड देते हैं।

اتنے میں سگریو محل میں آیا۔ اور پدم راگا کو روتی دیکھ آنسو بہا
چھاتی سے لگا کر بولا۔

سگریو۔ بیٹی کیوں رو رو کر پریشان ہوتی ہے۔ بھلا تیری جدائی میں
گوارا کر سکتا ہوں۔ لیکن کیا کروں مجبور ہوں۔ دنیا کی رسموں سے پابند
زنجیر ہوں۔ میری تو کچھ حقیقت نہیں۔ بڑے بڑے مہاراجوں کے گھر
بھی تو لڑکیوں کی سمائی نہیں۔ تم خود ودوان میرے کہنے کی ضرورت نہیں!
پرم پتا پرماتما تمکو ہمیشہ خوش رکھیں۔

یہ کہا۔ اور پدم راگا کو لا کر سکھپال میں سوار کیا۔ اور ہاتھ جوڑ کر پون جی
اور ہنومان کو اوس کی سونپنا کی۔

ناظرین! جس وقت پدم راگا کو سکھپال میں بٹھایا گیا۔ اوس نے
زار زار رونا شروع کر دیا۔ جس کی گریہ زاری کو سنکر سب کے آنسو بے اختیار
نکل پڑے۔ یونہی برات یہاں سے روانہ ہوئی۔ سب کے چہروں پر اداسی کی گھٹا چھا گئی
جہانتک نگاہ نے کام دیا دیکھتے رہے۔ اور آنسو بہا دل کے ارمان نکالتے
رہے۔

آہ یہ کیا افسوس ناک نظارہ ہے۔ جبکہ ہم اپنے لخت جگر کو اوس اجنبی
کے ساتھ شاستروں کی پابندی سے وداع کرتے ہیں۔ جسکی اوس نے پہلے
کبھی شکل بھی نہیں دیکھی۔ اور اوسکی آیندہ زندگی کا مدار اوسی پر چھوڑ
دیتے ہیں!!

१६१

बाब (अध्याय) तेतीसवाँ

मुबारिक हो डोली आ गई

डोली की आमद आमद सुनकर छोटे बडे आदमी, मर्द और औरत, बूढे और जवान रत्नपुर की गली कूँचों से निकल निकल कर मशरिकि दरवाजे की तरफ जा रहे हैं। मगर अमीरों की औरतें पालकी में सवार हो और बाज पैदल उम्दा उम्दा जेवर और बेशकीमती रंगबिरंगी कपडों से आरास्ता हो अञ्जना देवी के महल को आ रही हैं। आहा! अञ्जना देवी का महल भी एक निराली वजह का है। पहले एक बडा चोबी फाटक है। गोया यही महल का सदर दरवाजा है जिससे गुजर कर अंदर दाखिल होते ही चंद बरामदे दिखाई देते हैं। हर एक बरामदे के मुतालिक एक एक छोटा सा मुख्तसर मकान भी नजर आता है।

बाजों में तो औरतें बैठी नजर आ रही हैं। कोई रोटी पकाने में मशगूल है कोई आटा गूंध रही है। शायद ये उन सिपाहियों की औरतें हैं जिन की मुलाजमत का तालुक इस महल से है। बेशक यही दुरुस्त है। वो देखो एक सिपाही जिसकी वर्दी चारपाई पर पडी है और खुद खाना खा रहा है।

इन बरामदों के दरमियान मे से एक और दरवाजा नजर आता है। जिसके अंदर जाते ही एक फुलवाडी दिखाई देती है जिस में तरह तरह के खुशबुदार फूल, सफेद सुर्ख और बसन्ती रंग के खिले हुए नजर आ रहे हैं। ईश्वर जाने इस में क्या भेद है कि एक दफा फुलवाडी पर नजर पडी तो फिर पलटने का

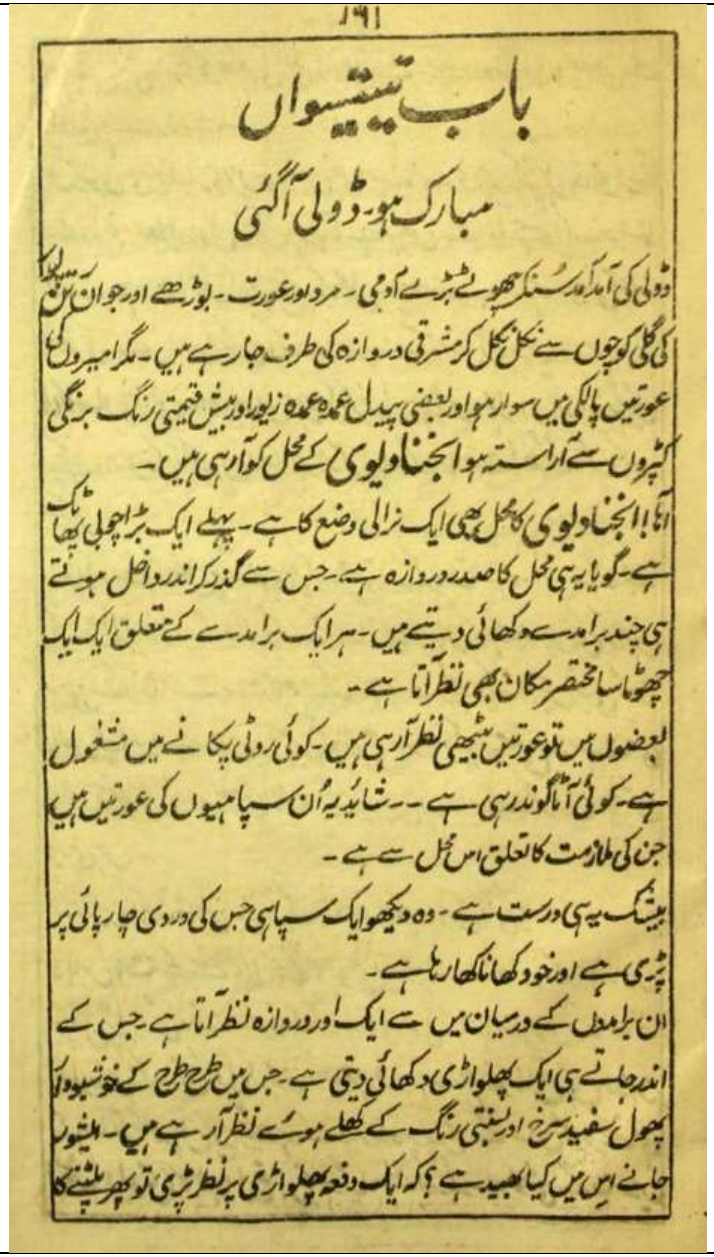

۱۶۱

باب تیتیسواں

مبارک ہو۔ ڈولی آگئی

ڈولی کی آمد آمد سنکر چھوٹے بڑے آدمی۔ مرد اور عورت۔ بوڑھے اور جوان رتن پور کی گلی کوچوں سے نکل نکل کر مشرقی دروازہ کی طرف جا رہے ہیں۔ مگر امیروں کی عورتیں پالکی میں سوار ہو اور بعضی پیدل عمدہ عمدہ زیور اور بیش قیمتی رنگ برنگی کپڑوں سے آراستہ ہو انجناولوی کے محل کو آرہی ہیں۔

آہا! انجناولوی کا محل بھی ایک نرالی وضع کا ہے۔ پہلے ایک بڑا چوبی پھاٹک ہے۔ گویا یہی محل کا صدر دروازہ ہے۔ جس سے گذر کر اندر داخل ہوتے ہی چند برامدے دکھائی دیتے ہیں۔ ہر ایک برامدے کے متعلق ایک ایک چھوٹا سا مختصر مکان بھی نظر آتا ہے۔

بعضوں میں تو عورتیں بیٹھی نظر آرہی ہیں۔ کوئی روٹی پکانے میں مشغول ہے۔ کوئی آٹا گوندرہی ہے۔ شائد یہ ان سپاہیوں کی عورتیں ہیں جن کی ملازمت کا تعلق اس محل سے ہے۔

بیشک یہی درست ہے۔ وہ دیکھو ایک سپاہی جس کی وردی چارپائی پر پڑی ہے اور خود کھانا کھا رہا ہے۔

ان برامدوں کے درمیان میں سے ایک اور دروازہ نظر آتا ہے۔ جس کے اندر جاتے ہی ایک پھلواڑی دکھائی دیتی ہے۔ جس میں طرح طرح کے خوشبودار پھول سفید سرخ اور بسنتی رنگ کے کھلے ہوئے نظر آرہے ہیں۔ نہیں جانے اس میں کیا بھید ہے؟ کہ ایک دفعہ پھلواڑی پر نظر پڑی تو پھر پلٹنے کا

नाम नहीं लेती और आँख खुली की खुली रह जाती है। जैसे वो नर्गिस का फूल सामने दिखाई दे रहा है। उस छोटी सी फुलवाडी मे रोशे भी बहुत उम्दा बनी है कि चहल कदमी करते करते दिमाग मोतर और दिलखुश हो जाता है। इसके सामने एक खुशनुमा इमारत है जो अञ्जना देवी के महल से मंसूब (समर्पित) है। इसकी छत पत्थर की है। और चार बुर्ज एक दूसरे के मुकाबिल पर है जिन पर स्वर्ण की कलियाँ बनी हैं। आहा! जहाँ सूरज की किरणें इन पर पडी हजारों और पैदा हो गईं। देखने वालो की आँखो को चकाचौंध कर दिया। क्या ताकत नजर उठा कर देख सके। दरवाजे से दाखिल होते ही एक छोटा सा कमरा मिलता है। इसके बाद एक बडा कमरा और आगे जाकर एक बडा भारी दालान है जिसकी आराइश (अलंकरण) मे बहुत नफासत से काम लिया गया है। और नीचे एक बेखकीमती सुर्ख कालीन बिछा हुआ है जिस पर अञ्जना देवी, रानी कितुमती और बहुत सी औरतें बैठी हैं और बाजी अभी आ आ कर बैठ रही है। और गा बजा कर दिल खुश कर रही हैं।
इतने मे एक दासी ने आकर कहा "मुबारिक हो डोली आ गई।" आहा! इस बात के सुनते ही अञ्जना देवी का कलेजा मारे खुशी के सीने में उछल पडा। उसी वक्त ईश्वर के गुण आबाद गाती हुई तमाम स्त्रियों के साथ फुलवाडी तक आई होगी कि बडी धूमधाम से हनुमान जी दुल्हन के साथ सुखपाल मे बैठे हुए दरवाजे पर पहुँच गए। उनको देखते ही अञ्जना देवी का चेहरा बाग बाग हो गया है और मारे खुशी के जाम में

نام نہیں لیتی۔ اور آنکھ کھلی کی کھلی رہجاتی ہے۔ جیسے وہ نرگس کا پھول سامنے دکھائی دے رہا ہے۔
اس چھوٹی سی پھلواڑی میں روشیں بھی بہت عمدہ بنی ہیں کہ چہل قدمی کرتے کرتے دماغ معطر اور دل خوش ہوجاتا ہے۔ اس کے سامنے ایک خوشنما عمارت ہے۔ جو انجنا دیوی کے محل سے منسوب ہے۔ اسکی چھت پتھر کی ہے۔ اور چار برج ایک دوسرے کے مقابل پر ہیں۔ جن پر سونے کی کلسیاں بنی ہیں۔ اہا! جہاں سورج کی کرنیں ان پر پڑیں ہزاروں اور پیدا ہوگئیں دیکھنے والوں کی آنکھوں کو چکا چوند کر دیا۔ کیا طاقت نظر اٹھا کر دیکھ سکیں۔
دروازہ سے داخل ہوتے ہی ایک چھوٹا سا کمرہ ملتا ہے۔ اس کے بعد ایک بڑا کمرہ اور آگے جاکر ایک بڑا بھاری دالان ہے۔ جس کی آرائش میں بہت نفاست سے کام لیا گیا ہے۔ اور نیچے ایک بیش قیمتی سرخ قالین بچھا ہوا ہے۔ جس پر انجنا دیوی رانی کیتومتی اور بہت سی عورتیں بیٹھی ہیں۔ اور بعضی ابھی آکر بیٹھ رہی ہیں۔ اور گا بجا کر دل خوش کر رہی ہیں۔
اتنے میں ایک داسی نے آکر کہا۔ مبارک ہو! ڈولی آگئی!
اہا! اس بات کے سنتے ہی انجنا دیوی کا کلیجہ مارے خوشی کے سینے میں اوچھل پڑا۔ اسی وقت ایشور کے گنا باد گاتی ہوئی تمام استریوں کے ساتھ پھلواڑی تک آئی ہوگی کہ بڑی دھوم دھام سے ہنومان جی دولہن کے ساتھ سکھ پال میں بیٹھے ہوئے دروازہ پر پہونچ گئے۔ ان کو دیکھتے ہی انجنا دیوی کا چہرہ باغ باغ ہوگیا ہے اور مارے خوشی کے جامہ میں

फूला नहीं समाती। और बार बार ईश्वर के हुजूर में सर झुका उसका धन्यवाद कर रही है। बसन्तमाला ने सहारा देकर पद्मरागा को सुखपाल से नीचे उतारा। और अञ्जना देवी ने दूल्हा और दुल्हन के सर से पानी वार कर पिया। और सब स्त्रियों के साथ ईश्वर के गुण आबाद गाती हुई पद्मरागा को दालान में लाई। आहा! इस वक्त चारों तरफ से मुबारिक बाद की आवाज आ रही है। और हर एक दुल्हन को देख खुश हो तारीफ कर रही है।

अञ्जना मन में मग्न हो गाती मंगलाचार
दीन दुहाई नगर की आई सब मिल नार
धन धन तुझको अञ्जना धन ये हनु कुमार
ऐसी सुन्दर पद्मनी जिसने ब्याही नार
जा नयन मृग से मोहक मस्तक चँद्र समान
दुल्हा दुल्हन प्यारी में भरे खुश राखे भगवान

नाजरीन! गो ये दालान बडा फराख और वसीह है लेकिन इस वक्त तो तिल भर जगह खाली नजर नहीं आती। तमाम औरतों से पुर है। हमारे बहादुर जरनैल भी न जाने कहाँ और किस वक्त चले गए जो नजर नहीं आते। इसलिए इस कदर स्त्रियों का हुजूम देखकर हम को भी शरम दामनगीर है। और इसानियत से भी बाईद है कि अब हम यहाँ अकेले ठहरे। इसलिए सबको आदाब करते हुए कुछ अरसे के लिए जाते हैं।

बाकी आइन्दा

ठाकुर सुखराम दास

१४ दिसम्बर १९००

پھولی نہیں سماتی اور بار بار ایشور کے حضور میں سر جھکا اس کا دھنباد کر رہی ہے۔ بسنت مالا نے سہارا دیکر پدم راگا کو سکھ پال سے نیچے اوتارا اور انجنا دیوی نے دولہا اور دولہن کے سر سے پانی وار کر پیا اور سب استریوں کے ساتھ ایشور کے گُنا باد گاتی ہوئی پدم راگا کو دالان میں لائی۔ اہا! اس وقت چاروں طرف سے مبارکباد کی آواز آ رہی ہے۔ اور ہر ایک دولہن کو دیکھ خوش ہو تعریف کر رہی ہے۔ ؎

انجنا من میں مگن ہو گاتی منگل چار — دین ودہائی نگر کی آئی سب مل نار
دھن دھن تجکو انجنا دھن یہ ہنو کمار — ایسی سندر پدمنی جس نے بیاہی نار
جا نین مرگ سے اوہک ہیں مستک چندر سمان — دولہا دولہن پیاری اس بھر خوش رکھے بھگوان

ناظرین! گو یہ دالان بڑا فراخ اور وسیع ہے۔ لیکن اس وقت تو تل بھر جگہ خالی نظر نہیں آتی۔ تمام عورتوں سے پُر ہے۔ ہمارے بہادر جرنیل بھی نہ جانے کہاں اور کس وقت چلے گئے جو نظر نہیں آتے۔ اس لئے اِس قدر استریوں کا ہجوم دیکھکر ہم کو بھی شرم دامنگیر ہے۔ اور انسانیت سے بھی بعید ہے کہ اب ہم یہاں اکیلے ٹھریں۔ اِس لئے سب کو آداب کرتے ہوئے کچھ عرصہ کے لئے جاتے ہیں۔

(باقی آیندہ)

ٹھاکر سکھرام داس

۱۴ دسمبر ۱۹۰۰ء

मुसन्निफ शंकर दास साहिब मुतखल्लिस बा आसी

गुफतगू तेरी खलकत होगी सारी फैजयाब
खत्म हुई रासती को लेके यह नादिर किताब
कह दिया हाथ फने यूँ तारिख इसको कान में
बाद अज सदी उन्निसवी माहे जून का दर हिसाब

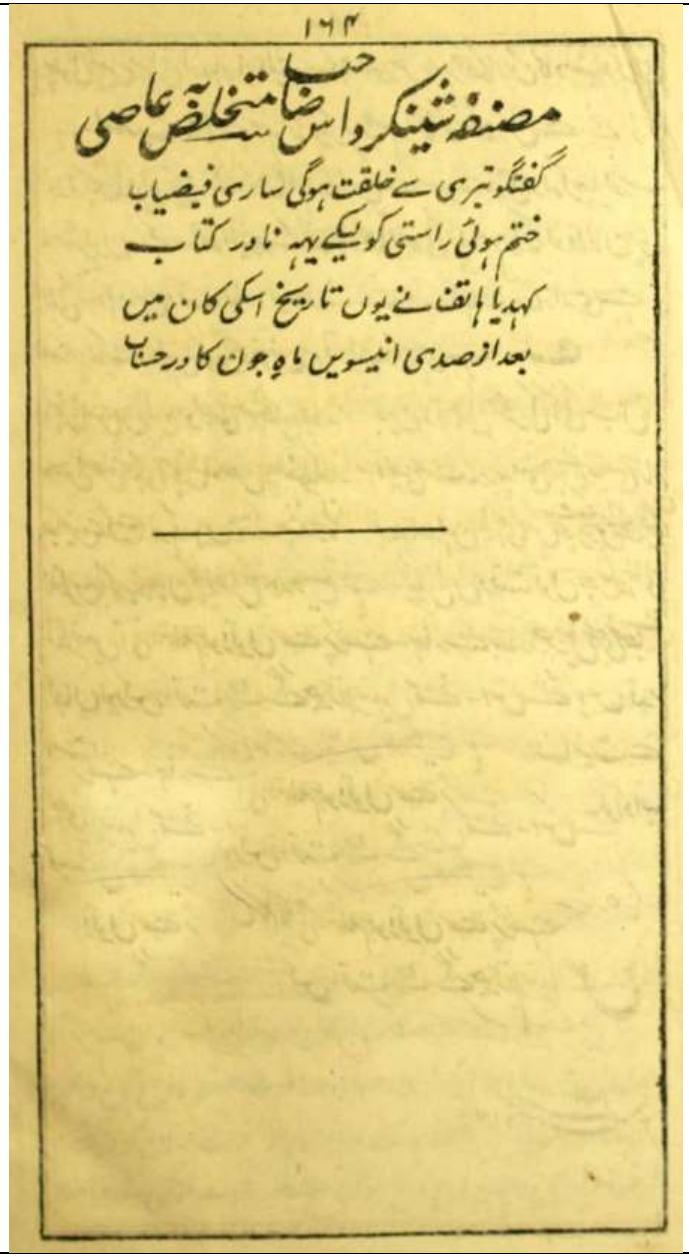

مصنفہ شنکر داس صاحب متخلص بہ عاصی

گفتگو تیری سے خلقت ہوگی ساری فیضیاب
ختم ہوئی راستی کو لیکے یہہ نادر کتاب
کہدیا ہاتف نے یوں تاریخ اسکی کان میں
بعد از صدی انیسویں ماہ جون کا در حساب

१६५

इत्तला

हमने असहाब बेरो निजात की सहुलियत के लिए ये इन्तजाम भी किया है कि कुतब अज किस्म नावल शोशल मजहबी और किस्सा कहानी वगैहरा जिसकी फरमाइश हमारे नाम आवे बाजार से किफायत खरीद कर के रवाना की जावेगी। मामला बिल्कुल साफ होगा। किसी किस्म की धोखे की उम्मीद नहीं की जा सकती। असहाब बीरू नजात एक दफा आजमा कर हमारी तहरीर की तसदीक फरमावें। फरमाइश की तामील नकद कीमत मोसूल होने या वेलियो ये अपील की इजाजत की बगैर न होगी।

पता ये है

अलमशहूर

ठाकुर सुखराम दास

मुलाजिम अलायंस बैंक लाहोर

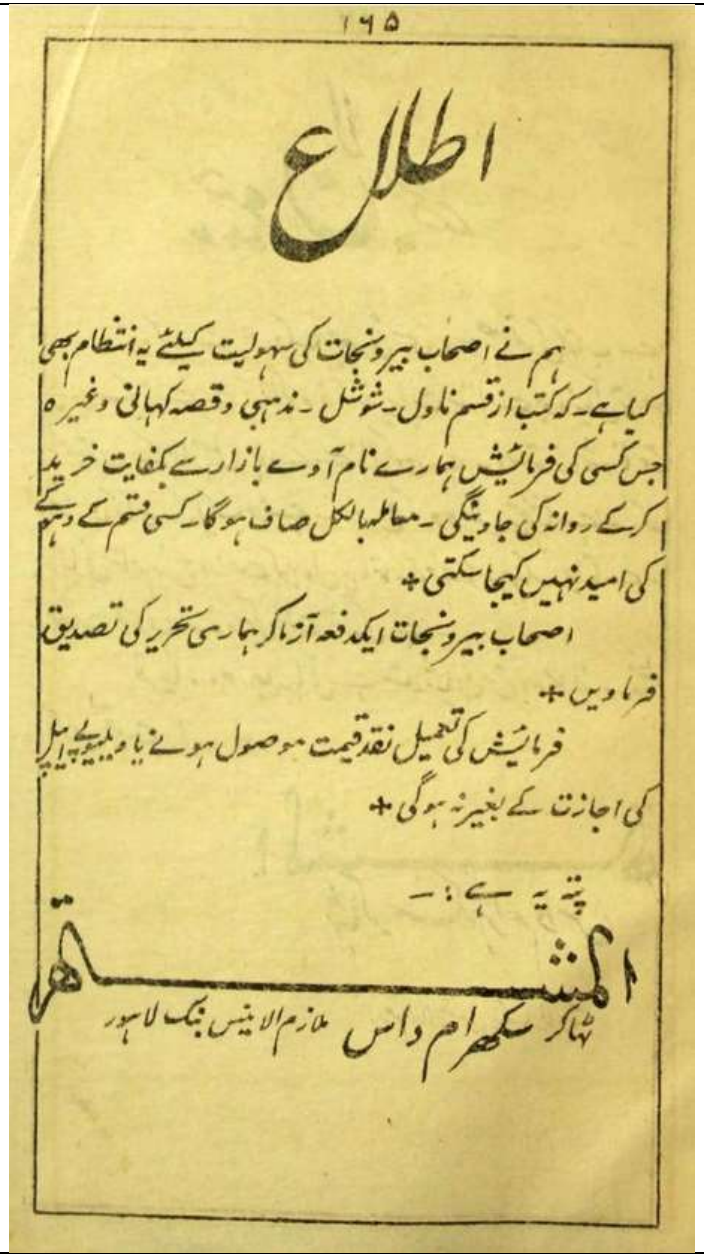

١٦٥

اطلاع

ہم نے اصحاب بیرونجات کی سہولیت کیلئے یہ انتظام بھی
کیا ہے۔ کہ کتب از قسم ناول۔ شوشل۔ مذہبی و قصہ کہانی وغیرہ
جس کسی کی فرمائش ہمارے نام آوے بازار سے بکفایت خرید
کرکے روانہ کی جاوینگی۔ معاملہ بالکل صاف ہوگا۔ کسی قسم کے دھوکے
کی امید نہیں کیجا سکتی +
اصحاب بیرونجات ایکدفعہ آزما کر ہماری تحریر کی تصدیق
فرماویں +
فرمائش کی تعمیل نقد قیمت موصول ہونے یا ویلیو پے ایبل
کی اجازت کے بغیر نہ ہوگی +

پتہ یہ ہے :-

المشتہر

ٹھاکر سکھرام داس ملازم الائنس بنک لاہور

१६६

जीवन लाभ

ये क्या है? एक छोटी सी ३२ सफे की किताब है। जिसके पढने से आत्मा को वो आनन्द प्राप्त होता है जो दुनिया की तमाम नैमतों के हासिल होने से ना मुमकिन है। स्तोत्र दशुनाथ जो इस किताब की एक जुज है रूह को वो सरूर बख्शता है कि दुनिया की तमाम रंजो राहत को भूल परमात्मा के हुजूर सर झुक जाता है। भगत जनों ने उसकी बहुत कदर की है।

तकरीबन २०० जिल्द बाकी हैं। मतलाशयान हक इसका जरूर मुलाहिजा करें।

कीमत १

अलमशहूर

ठाकुर सुखराम दास

मुलाजिम अलायंस बैंक लाहोर

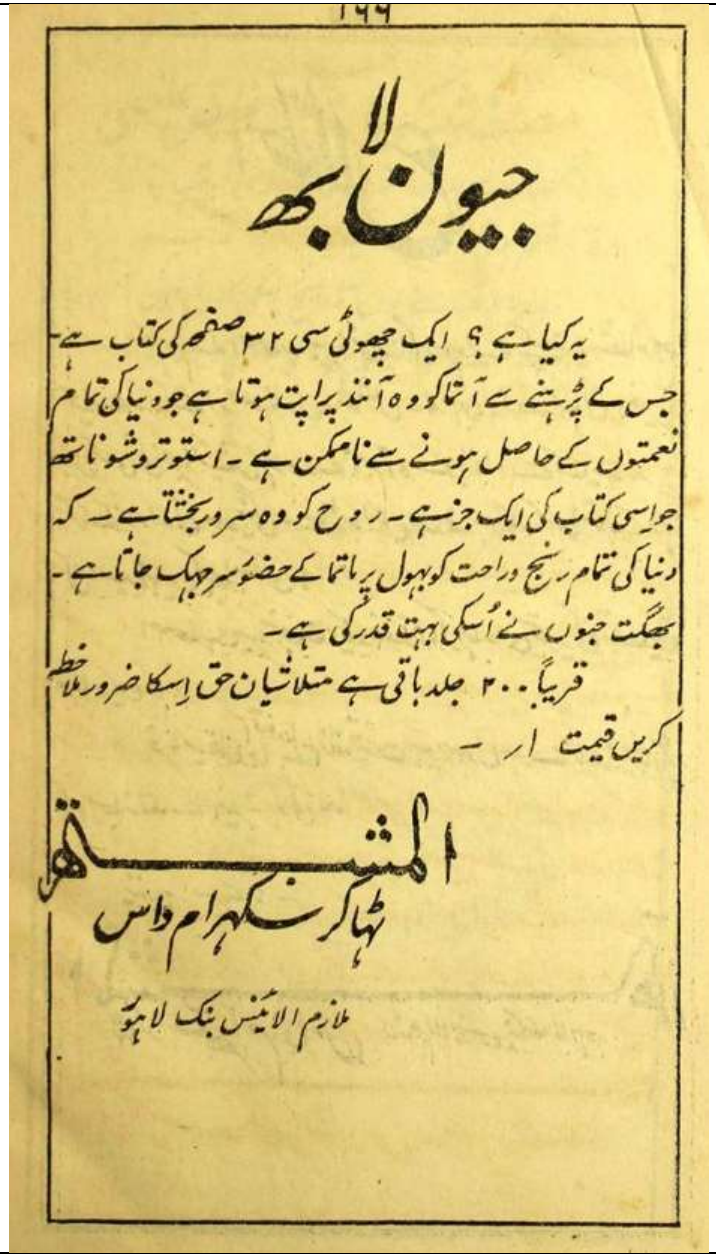

۱۶۶

جیون لابھ

یہ کیا ہے ؟ ایک چھوٹی سی ۳۲ صفحہ کی کتاب ہے۔
جس کے پڑھنے سے آتما کو وہ آنند پراپت ہوتا ہے جو دنیا کی تمام
نعمتوں کے حاصل ہونے سے ناممکن ہے۔ استوتر دشوناتھ
جو اسی کتاب کی ایک جز ہے۔ روح کو وہ سرور بخشتا ہے۔ کہ
دنیا کی تمام رنج و راحت کو بھول پرماتما کے حضور سر جھک جاتا ہے۔
بھگت جنوں نے اُسکی بہت قدر کی ہے۔
قریباً ۲۰۰ جلد باقی ہے متلاشیان حق اِسکا ضرور ملاحظہ
کریں قیمت ار۔

المشتہر

ٹھاکر سکھرام داس

ملازم الائینس بنک لاہور

शुक्रिया

हजार हजार शुक्र और धन्यवाद है उस परमात्मा का जिसके अनुग्रह से मैं अपने उस इरादे को जो जून १८९८ मे किया था आज कामयाब देखता हूँ। अगरचा कई किस्म कि रुकावटे, दिक्कते और दिलशकुनिदी पेश आई कि ऐसे अहम काम को मैं नाचीज, जो इस सीजा से बिल्कुल बे बहरा और नातजुर्बेकार हो, क्योंकर सर अजाम दूँगा। लेकिन एक ताकत थी जो मेरे दिल को उकसा रही थी और कमर हिम्मत मनसूबा कर रही थी। घबराए नहीं मैं बतलाता हूँ। वो बहादुर बोनापार्ट के इस फिक्रे की कि दुनिया मे कोई बात नमुमकिन नहीं तसदीक थी जिस को लेकर मै ईश्वर पर भरोसा रखता हुआ काम करता रहा और कामयाब हुआ। उम्मीद है कि नाजरीन नुक्ताचीनी से परहेज कर असल मतलब की तरफ रुजू होकर मेरी मेहनत की दाद देकर हौसला अफजाई करेंगे। दूसरे हिस्से के जो निहायत अजीबोगरीब तैयार है छपवाने पर आमादा करेंगे जो एक सौ दरख्वास्त के आने पर शुरु किया जावेगा।

अलमशहूर

ठाकुर सुखराम दास

मुलाजिम अलायंस बैंक लाहोर

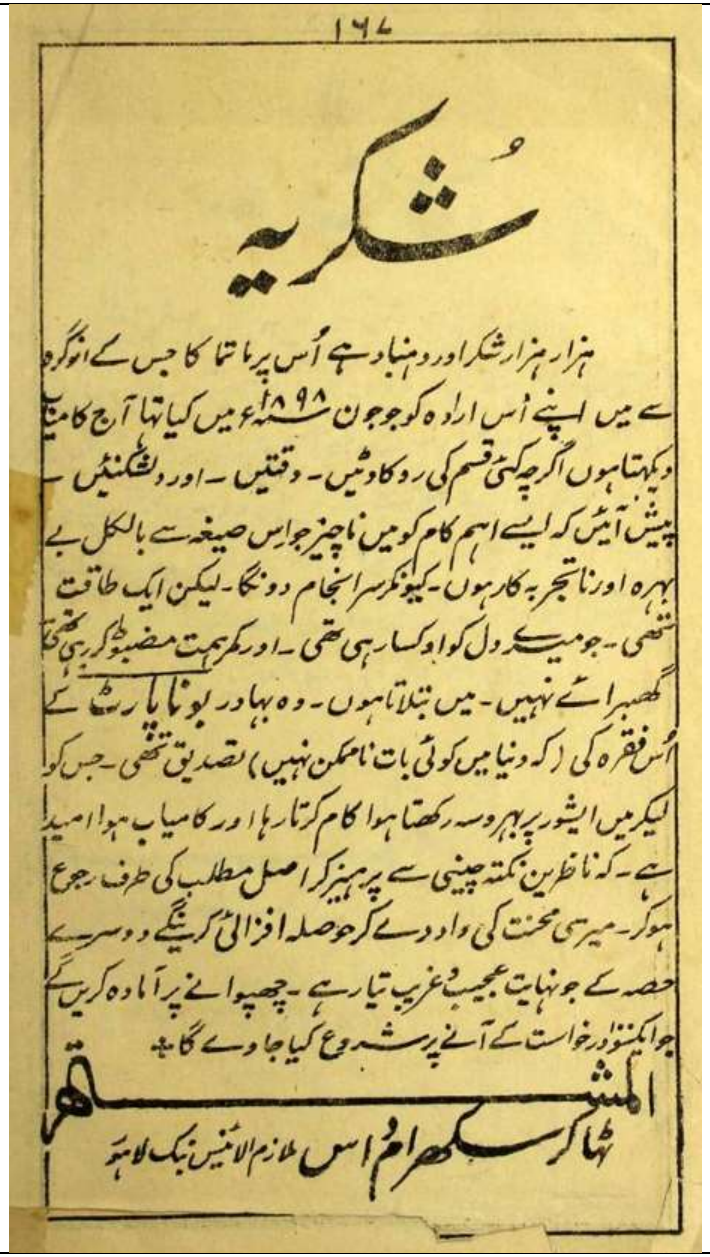

١٦٧

شکریہ

ہزار ہزار شکر اور دہنباد ہے اُس پرماتما کا جس کے انوگرہ
سے میں اپنے اُس ارادہ کو جو جون ۱۸۹۸ء میں کیا تھا آج کامیاب
دیکھتا ہوں اگرچہ کئی قسم کی روکاوٹیں - دقتیں - اور دلشکنیاں
پیش آئیں کہ ایسے اہم کام کو میں ناچیز جو اس صیغہ سے بالکل بے
بہرہ اور ناتجربہ کار ہوں - کیونکر سرانجام دونگا - لیکن ایک طاقت
تھی - جو میرے دل کو اوکسا رہی تھی - اور کمر ہمت مضبوط کر رہی تھی کہ
گھبرائے نہیں - میں بتلاتا ہوں - وہ بہادر بونا پارٹ کے
اُس فقرہ کی (کہ دنیا میں کوئی بات ناممکن نہیں) تصدیق تھی - جس کو
لیکر میں ایشور پر بھروسہ رکھتا ہوا کام کرتا رہا اور کامیاب ہوا امید
ہے - کہ ناظرین نکتہ چینی سے پرہیز کر اصل مطلب کی طرف رجوع
ہوکر - میری محنت کی داد دے کر حوصلہ افزائی کرینگے دوسرے
حصہ کے جو نہایت عجیب و غریب تیار ہے - چھپوانے پر آمادہ کریں گے
جو ایکسو درخواست کے آنے پر شروع کیا جاوے گا ٭

المشتہر

ٹھاکر سکھرام داس ملازم الائنس بنک لاہور